

श्री कुलजम सरूप साहेब

मारफत सागर

(टीका एवं भावार्थ सहित)

टीकाकर्ता
राजन स्वामी
एवं
नरेश टण्डन

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
जिला-सहारनपुर (उ. प्र.), भारत

प्रकाशक:

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट
सरसावा, जिला-सहारनपुर (उ. प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 91-7088120381
वेबसाइट : www.spjin.org

सर्वाधिकार :

© प्रकाशकाधीन इस पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री सत्वाधिकारी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा के पास सुरक्षित है। अतः किसी भी व्यक्ति व संस्था के द्वारा इस पुस्तक का नाम, फोटो, कवर डिजाइन एवं प्रकाशित सामग्री इत्यादि को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र या वेबसाइट में प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक की अनुमति लेना अनिवार्य है, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे खर्चे के जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमे के लिए न्याय क्षेत्र सरसावा, जिला-सहारनपुर ही होगा।

प्रथम संस्करण : १०००

बुद्ध जी शाका ३४३
विक्रम संवत् २०७८
ईस्वी सन् २०२१
ISBN : 978-93-85094-39-2

न्योछावर : रू. 180

मुद्रक :

ज्ञानपीठ मुद्रणालय
सरसावा, जिला-सहारनपुर

अनुभूमिका

प्राणाधार श्री सुन्दरसाथ जी! अक्षरातीत श्री राज जी के दिल में इल्म के अनन्त सागर हैं। उनकी एक बूंद महामति के धाम-हृदय में आयी, जो सागर का स्वरूप बन गई, इसलिये कहा गया 'नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी रोसन' अर्थात् ज्ञान के सागर के रूप में यह तारतम वाणी है, जो मारिफत के ज्ञान का सूर्य है। यह ब्रह्मवाणी सबके हृदय में ब्रह्मज्ञान का उजाला करती है।

'हक इल्म से होत है, अर्स बका दीदार' का कथन अक्षरशः सत्य है। इस ब्रह्मवाणी की अलौकिक ज्योति सुन्दरसाथ के हृदय में माया का अन्धकार कदापि नहीं रहने देगी। इस ब्रह्मवाणी की थोड़ी-सी अमृतमयी बूंदों का भी रसास्वादन करके जीव अपने लिये ब्रह्म साक्षात्कार एवं अखण्ड मुक्ति का दरवाजा खोल सकता है।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये यह आवश्यक है कि अनेक भारतीय भाषाओं में अवतरित इस ब्रह्मवाणी की टीका सरल भाषा में प्रस्तुत हो। यद्यपि वर्तमान में अनेकों सम्माननीय मनीषियों की टीकायें प्रचलित हैं, किन्तु ऐसा अनुभव किया जा रहा था कि एक ऐसी भी टीका हो, जो विश्लेषणात्मक हो, सन्दर्भ, भावार्थ, स्पष्टीकरण एवं टिप्पणियों से युक्त हो।

मुझ जैसे अल्पज्ञ एवं अल्प बुद्धि वाले व्यक्ति के लिये यह कदापि सम्भव नहीं था, किन्तु मेरे मन में अचानक ही यह विचार आया कि यदि कबीर जी और ज्ञानेश्वर जी जैसे संत अपने योगबल से भैसे से वेद मन्त्रों का उच्चारण करवा सकते हैं, तो मेरे प्राणवल्लभ अक्षरातीत मेरे से टीका की सेवा क्यों नहीं करवा सकते? इसी आशा के साथ मैंने अक्षरातीत श्री जी के चरणों में अन्तरात्मा से प्रार्थना की।

धामधनी श्री राजश्यामा जी एवं सद्गुरु महाराज श्री रामरतन दास जी की मेहर की छांव तले मैंने यह कार्य प्रारम्भ किया। सरकार श्री जगदीश चन्द्र जी की प्रेरणा ने मुझे इस कार्य में दृढ़तापूर्वक जुटे रहने के लिये प्रेरित किया। इन सबका प्रतिफल यह टीका है।

सभी सम्माननीय पूर्व टीकाकारों के प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए मैं आशा करता हूँ कि यह टीका आपको रुचिकर लगेगी। सभी सुन्दरसाथ से निवेदन है कि इसमें होने वाली त्रुटियों को सुधार कर मुझे भी सूचित करने की कृपा करें, जिससे मैं भी आपके अनमोल वचनों से लाभ उठा सकूँ एवं अपने को धन्य-धन्य कर सकूँ।

आप सबकी चरण-रज

राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
जिला-सहारनपुर (३० प्र०), भारत

अनुक्रमणिका

प्र. सं.	विषय	पृष्ठ
१.	पेहेले कहूँ अव्वल की.....	१२
२.	एक बूंद आया हक दिल से.....	३२
३.	फिरके नारी तो कहे.....	४६
४.	जो लों पट न खोल्या बका का.....	८७
५.	तीनों फिरस्तों का बेवरा.....	१२२
६.	जैसा अमल रात का.....	१४५
७.	मांगी रसूले रेहेमत.....	१५७
८.	आए लिखे बड़ी दरगाह से.....	१६४
९.	चारों निसान ए कहे.....	१६०
१०.	जाए इलम पोहोच्या हक का.....	२१६
११.	कह्या झण्डा उठया ईमान का.....	२३३
१२.	फरदा रोज पेहेले कह्या.....	२४१
१३.	भाई मंहमद के मोमिन.....	२५४
१४.	तो असराफिलें आखिर.....	२८३
	मसौदा.....	३११

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भाए, सब विध वतन सहीत ।।

॥ मारिफत सागर ॥

मारिफत (मारिफत) प्राणेश्वर अक्षरातीत का हृदय है। वह परमधाम की वहदत, खिल्वत, निस्वत और हकीकत का आधार है। आत्मा का सर्वोच्च श्रृंगार है। अध्यात्म का सर्वोच्च शिखर है और जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य। इसको जानने के लिये ही यह संसार बना और इसको जाने बिना इस खेल की कोई सार्थकता ही नहीं। अनादि काल से इसी मारिफत को अक्षरातीत ने अपनी आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी और आत्माओं से छिपाया था। पल मात्र में अनन्त ब्रह्माण्डों का सृजन करने वाले अक्षर ब्रह्म इसी मारिफत को जानने के लिये तरसते रहे हैं। सच तो यह है कि हम जिन श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं को अनादि काल से अपने प्राणेश के साथ प्रेम और आनन्द की लीला करने वाला कहते हैं और अक्षर ब्रह्म को सृष्टि रचने वाला कहते हैं, उनके अस्तित्व का आधार भी यह मारिफत ही है।

मारिफत का ज्ञान बौद्धिक विलास नहीं, शब्द रचना का मोहक श्रृंगार भी नहीं। यह तो परमधाम के अनन्त प्रेम, अनन्त सौन्दर्य और अनन्त आनन्द का वह घनीभूत रूप है जिसे आज तक कोई भी जान नहीं सका था। इसी मारिफत सागर की एक बूंद सिरदार महमत साहिबुजमाँ स्वरूप श्री महामति जी के धाम हृदय में प्रवेश करती है और कहती है- “महामति! मैं वहदत (एकत्व) की मारिफत से आयी हूँ। तुम्हारे हृदय को भी मारिफत सागर बनाना मेरा लक्ष्य था। मैंने तुम्हारे हृदय को मारिफत सागर बनाकर रास से कयामतनामा तक के ग्रन्थों में पुकार-पुकार यही कहा है कि परमधाम के मारिफत सागर में और मेहमत स्वरूप महामति के हृदय में विराजमान मारिफत सागर में कोई भेद नहीं है किन्तु अन्धों और बहरों की इस स्वाप्निक सृष्टि में ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों के अतिरिक्त मेरी पुकार सुनने वाला कोई नहीं है। अन्त में, विवश होकर मुझे यह ‘मारिफत सागर’ ग्रन्थ ही अवतरित करना पड़ा क्योंकि मैंने अपने दिव्य चक्षुओं से देखा है कि जागनी रास का तपता हुआ सूरज अब अस्ताचल की तैयारी कर

रहा है। यदि इस समय भी कोई मेरे द्वारा कहे गये 'मारिफत सागर' ग्रन्थ से तुम्हारे मारिफत के स्वरूप की पहचान कर लेगा, उसका जीवन धन्य-धन्य हो जायेगा। दीन (मजहब) का झण्डा लेकर जो कट्टरता की आंधी में खून की नदियां बहाने का दिवा स्वप्न देखते हैं उनमें सद्बुद्धि का संचार करके कुर्आन शरीफ की साक्षी से उनका कल्याण करने की मेरी इच्छा है। उसी इच्छा से प्रकट होने वाले मारिफत सागर की इन लहरों का रसास्वादन करने के लिये मैं सारे संसार का आह्वान कर रही हूँ।”

**ढूँढे सबे मेयराज को, सबे मेयराज में सब।
सो सबे मेयराज जाहेर करी, सो सब मेयराज देखसी अब।।**

आज सम्पूर्ण इस्लामिक जगत दर्शन की उस रात्रि के रहस्य को जानना चाह रहा है, जिसमें मुहम्मद साहब (स. अ. व. व.) को परब्रह्म का साक्षात्कार हुआ था। उस साक्षात्कार में उन्होंने परब्रह्म से जो ६० हजार हस्फ बातें की उसमें सम्पूर्ण आध्यात्मिक तत्व ज्ञान निहित है। श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर स्वयं परब्रह्म ने दर्शन की रात्रि के रहस्य को स्पष्ट करते हुए हकीकत और मारिफत के उन तथ्यों पर प्रकाश डाला है जो ६० हजार हस्फों में छिपे थे, किन्तु अब तक स्पष्ट नहीं हो सके थे। अब सारा संसार भी श्री कुलजम सरूप के माध्यम से दर्शन के रहस्य के साथ उस सर्वोच्च आध्यात्मिक तत्व ज्ञान को जान जायेगा जिसे मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने स्वयं परब्रह्म के मुख से सुना था।

मसौदा (मसविदा) मसौदः

(ए किताब मारिफत सागर जो हकताला के हुकम से पैदा हुई, हादी के दिल पर आप बैठ के बिगर हिजाब बारीक बातें “चौपाई” मुंह से केहेलवाई। सो कलाम ज्यों आवते गए, सो यारों ने लिखे और फिर हादी प्यार से सुनते गए। सो सुन सुन के, हुकम से हाल अपने पर, अर्स बका लाहूती का लेते गए और जामा नाजुक होता गया। सो इहाँ ताई के, आखिर इस आलम नासूत सेती कूच करके, अपने रूहानी आलम बका वतन हमेसगी, असली मिलाप के आराम पकड़चा और ए “चौपाई” जो नाजिल होती गई थी सो मसौदे

ज्यों ही के त्यों ही रहे। सो अब हक हादी के हुकम से मोमिनो ने इस के बाब बांधे हैं, माफक अकल अपनी के पर ए जो “चौपाई” हादी ने फुरमाई थीं, तिन में एक हरफ ज्यादा या कम नहीं किए अब मोमिन इन “चौपाइयों” के हरफ-हरफ के माएने मगज, जाहेर के और बातून के लेय के हक के हुकम से हादी के कदमों कदम धरेंगे, किस वास्ते की मोमिन हादी के अंग नूर हैं और नूर बिलंद से उतरे हैं, तो चढ़ना इनों को जरूर है और अर्स बका के पट हादी ने, इलम लदुन्नी से खोल दिए हैं और आप हक के नाजी फिरके को हिदायत करके, निसबत मोमिन असलू तन, जो बीच अर्स के हक हादी के कदम तले बैठे हैं, सो देखाए दई है रूह की नजर से। जिनसों हक ताला ने बका खिलवत बीच, कौल अलस्तो बे रब्ब कुम का किया, तब कालू बला भी रूह मोमिनो ने कह्या है और कलाम अल्ला और हदीसों, और कैयों किताबों के बातूनी मगज माएने। हादी ने वारस मोमिनो को, रूह की नजर खोल के दिल हकीकी पर साहेदियों सेती नकस किया है और दिल अर्स कह्या है और दुनियां मुरदार भी नजीक मोमिनो के हैं। तिस वास्ते जो हादी तुमको बुलावने आए थे। सो पट बका का खोल के आगे से केतेक यारों को लेके पधारे हैं। तो मोमिनो को जरूर कदमों कदम धरना है। हुक्म हक हादी के सेती।)

भावार्थ- इस ‘मारिफत सागर’ ग्रन्थ का अवतरण अक्षरातीत परब्रह्म के आदेश से हुआ है। मेहमत स्वरूप श्री महामति जी के धाम हृदय में धामधनी अपने आवेश स्वरूप से साक्षात् विराजमान होकर एकाकार हुए तथा कुर्आन की गुह्यतम् बातों को मेहमत स्वरूप श्री महामति जी के मुख से चौपाइयों के रूप में प्रत्यक्ष कहलवाये। जैसे-जैसे चौपाइयों के रूप में अमृतमयी शब्दों का अवतरण होता गया, उसे सुन्दरसाथ लिखते गये। तत्पश्चात् श्री जी ने उन्हीं शब्दों को पुनः सुना। उसे सुनकर श्री जी की सुरता परब्रह्म के आदेश से निरन्तर अखण्ड परमधाम के रंगमहल-मूल मिलावे में इस प्रकार रहने लगी कि उन्हें अपने शरीर की कोई सुधि ही नहीं रहती थी। वि. सं. १७४८ में इस ‘मारिफत सागर’ ग्रन्थ के अवतरण के पश्चात् अन्य कोई भी ग्रन्थ नहीं उतरा। केवल धाम चलने अर्थात् अपनी अन्तर्दृष्टि से परमधाम के देखने से सम्बन्धित कुछ कीर्तन उतरे। इन कीर्तनों में श्री महामति जी की आत्मा पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि-

**अब हम रहयो न जावही, मूल मिलावे बिन ।
हिरदे चढ़-चढ़ आवहीं, संसार लगत अगिन ॥**

दिन-प्रतिदिन वे शरीर और संसार भाव से पूर्णतया हटकर परमधाम के भावों में इतने डूबते गये कि उन्होंने वि. सं. १७५१ में श्रावण मास की तीज-चौथ को अपनी सूरता को इस नश्वर संसार से हटाकर मूल मिलावे में पूर्णतया केन्द्रित कर दिया और महाराजा छत्रसाल जी को जागनी लीला का नेतृत्व सौंप कर स्वयं परमधाम के आनन्द में डूबे रहने लगे।

**महाराजा जी सों कहा, एक देखत हो तुम ।
तिस वास्ते सेवा साथ की, सौंप चलत हैं हम ॥ बी. सा.**

किन्तु ऐसा नहीं समझ लेना चाहिये कि श्री महामति जी का शरीरान्त हो गया। पंचमी को श्री जी के समाधिस्थ तन को गुम्मत जी में झूले पर पधराया गया तथा उनके सिंहासन पर ब्रह्मवाणी श्री कुल्लुम स्वरूप को उनके वाङ्मय कलेवर के स्वरूप में पधराकर पूर्व की भांति ही सेवा, चर्चा आदि की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी।

यद्यपि श्री जी की अन्तर्धान लीला की बात सुनकर बहुत से सुन्दरसाथ ने विरह में अपना तन छोड़ दिया था किन्तु कुछ विशिष्ट कार्यों के लिये श्री जी ने महाराजा छत्रसाल जी, लाल दास जी, मुकुन्द दास जी, केशव दास जी आदि ब्रह्ममुनियों को अपने देह त्याग की स्वीकृति नहीं दी किन्तु उनकी विरह व्यथा को शान्त करने के लिये एक वर्ष तक प्रत्यक्ष रूप से दर्शन देकर उनकी जिज्ञासाओं का सामाधान करते रहे। किन्तु बाद में सांसारिक लोगों के कारण उस दिव्य लीला में बाधा पड़ने लगी जिसके परिणाम स्वरूप श्री जी ने उस अलौकिक लीला का अन्तर्धान कर लिया (छिपा लिया)।

यद्यपि बलि, व्यास, विभीषण, परशुराम, हनुमान, कृपाचार्य तथा अश्वत्थामा को कल्पान्त तक चिरंजीवी रहने का वर प्राप्त है किन्तु इन्हें भी प्रकृति की मर्यादाओं का उल्लंघन करने का एक सीमा से अधिक का अधिकार नहीं है। सच्चिदानन्द परब्रह्म ने जिस तन में विराजमान होकर प्रत्यक्ष रूप से लीला की हो, उसकी स्थिति सांसारिक महापुरुषों से भिन्न है। उन्हें प्रकृति के नियमों के बन्धन में नहीं बांधा जा सकता, किन्तु उन्होंने अपनी अन्तर्धान लीला इसलिये की जिससे ब्रह्ममुनियों के द्वारा छठे दिन की

जागनी लीला का प्रारम्भ हो सके।

यह उन सुन्दरसाथ का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है जो श्री प्राणनाथ जी का धामगमन मनाते हैं और कहते हैं कि श्री प्राणनाथ जी हमें छोड़कर परमधाम चले गये। वे अपनी साक्षी में इसी मारफत सागर ग्रंथ के अन्त में लिखे मसौदे को उद्धृत करते हैं— ‘केतेक यारों को लेय के आप अर्स सिधारे’ और अपने जो तन हैं, तिनको बुलावते हैं। इस तथ्य को यदि हम तारतम ज्ञान के प्रकाश में देखें तो यही सिद्ध होता है कि कुछ सुन्दरसाथ को छोड़कर तथा कुछ को साथ लेकर परमधाम जाना सम्भव ही नहीं है क्योंकि ‘पौढ़े भेले जागसी भेले’ (क. हि.) का कथन मिथ्या हो जायेगा। क्या श्री जी सकुण्डल, शकुमार एवं चालीस जुत्थों के प्रमुखों को आत्माओं सहित छोड़कर मात्र कुछ आत्माओं को लेकर जा सकते हैं? यदि ऐसा है तो “खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन” का क्या अर्थ होगा? ‘महंमद ले चले उमत खास, पहुँचे जहां साहेब विलास’ एवं ‘अब हम धाम चले’ जैसी चौपाईयों का आशय भी ध्यान (चितवनी) द्वारा परमधाम जाने से है, शरीर छोड़कर जाने से नहीं। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न खड़ा होता है कि क्या परमहंस महाराज श्री केशव दास जी का कथन मिथ्या है?

किसी भी परमहंस के कथन को मिथ्या कहना कदापि उचित नहीं है किन्तु उनके कथनों का बाह्य अर्थ न लेकर आन्तरिक (सूक्ष्म) अर्थ लेना चाहिए तथा उसकी संगति तारतम ज्ञान के मूल सिद्धान्तों के अनुसार होनी चाहिए। श्री कुलजुम स्वरूप के ‘शृंगार’ ग्रन्थ का कथन है कि ‘उपर तले अर्स न कह्या, अर्स कह्या मोमिन कलूब’ से यह स्पष्ट होता है कि परमधाम का तात्पर्य केवल हृद-बेहृद से परे का ही परमधाम नहीं है, अपितु ब्रह्मात्मा का हृदय ही उसका धाम होता है।

इन सुपन देह माफक, हकें दिल में किया प्रवेस । (श्रृं. 21/92)

इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान । (खु. 3/60)

दिन मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम । (श्रृं. 2/1)

अर्स तुमारा मेरा दिल है, इत आए करो आराम । (सागर, 8/1)

उपरोक्त कथन यही दर्शाते हैं कि अन्तर्धान लीला के पश्चात् भी श्री महामति जी की आत्मा ने श्री मिहिरराज जी के तन को छोड़ा नहीं अपितु उसी तन से उनकी लीला

अब तक चलती रही है और जब तक यह ब्रह्माण्ड रहेगा तब तक श्री जी किसी भी आत्मा को अकेले छोड़कर परमधाम नहीं जा सकते।

जब मुसाफ हादी गिरो चली, तब पीछे दुनी क्यों कर ।

खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर । (खुलासा, 2/33)

मोमिनों की छठे दिन की लीला में तारतम ज्ञान के प्रकाश में अपने धाम हृदय में अपने प्राणेश्वर का अनुभव करना ही सबके धाम हृदय में श्री जी का विराजमान होना है। श्री जी की अन्तर्धान लीला के पश्चात् जिन सुन्दरसाथ ने विरह में अपना तन छोड़ा, वे परमधाम नहीं गये अपितु श्री महामति जी मेहमत स्वरूप के धाम हृदय में विराजमान श्री राज जी के चरणों में ही गये।

जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी माहें ।

पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें ।। (छो. कया. 1/87)

‘केतेक यारों को लेय के, आप अर्स सिधारे’ का यही आशय है। श्री कुल्जुम स्वरूप उनका वाङ्मय कलेवर है, जिसके द्वारा वे ब्रह्मात्माओं के हृदय में परमधाम का ज्ञान प्रकाशित कर उन्हें संसार का मोह छोड़कर प्राणेश्वर अक्षरातीत के प्रेम में डूबने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। इसे ही उनके द्वारा बुलाना कहा जायेगा।

इस प्रकार, मारिफत सागर से पहले लिखे हुए मसौदे में जो लिखा है- ‘सो इहां ताई के, आखिर इस आलम नासूत सेती कूच करके, अपने रूहानी आलम बका वतन हमेसगी, असली मिलाप के आराम पकड़या’ का यही अभिप्राय समझना चाहिए कि श्री जी ने अब तक अपने तन से प्रत्यक्ष रूप से होने वाली लीला को अदृश्य कर लिया तथा गुम्मत जी में झूले के सिंहासन पर विराजमान होकर समाधिस्थ हो गये। श्री महामति जी की आत्मा परमधाम के पच्चीस पक्षों तथा मूल मिलावे के आनन्द में निरन्तर डूबी रहने लगी।

मसौदे के कथन से ऐसा कभी भी स्थूल अर्थ नहीं लेना चाहिए कि श्री जी इस नश्वर संसार को छोड़कर आत्माओं के मूल निवास अखण्ड परमधाम चले गये और मूल मिलावे में जागृत होकर आनन्द मग्न रहने लगे। यदि ऐसा मानते हैं तो सम्पूर्ण श्री कुल्जुम स्वरूप के मूल सिद्धान्तों से विरोध होगा, जो कदापि उचित नहीं होगा।

पांचवें दिन की लीला में श्री महामति जी के तन से श्री कुलजुम स्वरूप की जो भी चौपाइयां अवतरित हुई थी, उनके लेख में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया। अब श्री राजश्यामा जी के आदेश से ब्रह्ममुनियों ने अपनी बुद्धि के अनुसार प्रकरणबद्ध किया है किन्तु श्री जी के मुखारविन्द से जो चौपाइयां अवतरित हुईं उनमें एक भी शब्द को न तो कम किया गया और न ही बढ़ाया गया। अब सुन्दरसाथ प्रत्येक चौपाई के एक-एक शब्द के बाह्य और आन्तरिक गुह्यार्थ को लेकर मूल स्वरूप श्री राज जी आदेश से उसी मार्ग का अनुसरण करेंगे जिस पर स्वयं श्री जी ने चल कर दिखाया है।

ब्रह्ममुनि श्यामा जी के हृदय के नूर हैं और परमधाम से आये हैं, इसलिये इन्हें अनिवार्य रूप से पुनः निज घर जाना होगा। श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान से सबके लिये अखण्ड परमधाम का द्वार खोल दिया है। सुन्दरसाथ का समूह ही परमधाम की ओर अपने कदम बढ़ाने वाला है, अतः श्री जी का निर्देश भी इन्हीं के लिये है। परमधाम के मूल मिलावे में ब्रह्मात्माओं के मूल तन (परात्म) हैं जो श्री राजश्यामा जी के चरणों में बैठकर सूरता द्वारा माया का खेल देख रहे हैं। चितवनी के माध्यम से सुन्दरसाथ की आत्मिक दृष्टि को खोल कर श्री जी ने मूल मिलावे का साक्षात्कार करा दिया है।

इन ब्रह्मात्माओं से श्री राज जी ने मूल मिलावे में पूछा था कि “अलस्तू बिर्बिबुं” (कुरान पारः ७ आयत १७२) जिसका आशय था - क्या मैं तुम्हारा प्रियतम (रब) नहीं हूँ? प्रत्युत्तर में आत्माओं ने खेल में आते समय यही कहा था “कालू वला” कि निश्चित रूप से निःसंदेह आप ही हमारे प्राणेश्वर हैं। श्री जी ने कुर्आन-हदीसों तथा वेदादि कई अन्य धर्मग्रन्थों के गुह्य भेदों को ब्रह्ममुनियों के लिये प्रकट कर दिया है क्योंकि एकमात्र ये ही उसके उत्तराधिकारी हैं। इन ब्रह्ममुनियों का हृदय पूर्णरूपेण सत्य है, अतः इनके हृदय को ही धाम कहलाने की शोभा प्राप्त है। इनकी आत्मिक दृष्टि को खोलकर श्री प्राणनाथ जी ने धर्मग्रन्थों की साक्षी से अपनी तथा परमधाम की पहचान दी है। इन ब्रह्मसृष्टियों के लिये यह सारा संसार नश्वर है। यही कारण है कि श्री प्राणनाथ जी का आगमन इस संसार में ब्रह्मात्माओं को जगाने के लिये ही हुआ है। अतः उन्होंने सुन्दरसाथ के लिये तारतम ज्ञान तथा चितवनी के द्वारा परमधाम के दर्शन का मार्ग बता दिया है। उनकी अन्तर्धान लीला पर विरह में कुछ सुन्दरसाथ ने भी अपना तन छोड़ दिया

है। अब श्री राजश्यामा जी के आदेश से ब्रह्ममुनियों को प्रेम का वही मार्ग अपनाना है जो धामधनी ने हमें बताया है।

खिलवत की रद बदलें

(मूल मिलावे में होने वाला प्रेम- संवाद)

“खिल्वत” अरबी भाषा में विवादित स्थल को एवं “खल्वत” एकान्त को कहा जाता है।

पेहेले कहूँ अव्वल की, हक हादी हुकम।

मोमिन दिल अर्समें, हकें धरे कदम॥१॥

मेहमत साहिब स्वरूप श्री महामति जी कहते हैं कि मैं अपने जीवन के आधार श्री राज श्यामा जी के आदेश से सबसे पहले मूल मिलावे में होने वाले प्रेम संवाद का वर्णन उन ब्रह्मात्माओं से करने जा रहा हूँ जिनके धाम हृदय में प्राणेश्वर अक्षरातीत ने अपने चरण कमल विराज रखे हैं।

जो कहाँ आयतों हदीसों, और किताबों बोल।

जिन पर मोहोर महंमद की, सो कहूँ फुरमाए कौल॥२॥

कुर्आन मजीद की आयतों, हदीसों तथा अन्य ग्रन्थों के कथनों के आधार पर मैं कह रहा हूँ, जिन पर पैगंबर-ए-इस्लाम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि वसल्लम (स. अ. व. व.) के द्वारा सत्यता की मुहर (प्रमाणिकता) लगी है।

एक दूजी को मनसूख, करे आयत आयत को।

तिस वास्ते लेऊं चुन चुन, जो सिरे रखी सबमों॥३॥

कुर्आन पाक का अवतरण भिन्न-भिन्न प्रसंगों और परिस्थितियों में हुआ है जिनके कारण एक आयत का कथन दूसरी आयत के कथन से नहीं मिलता है। अतः मैं चुन-चुनकर उन्हीं आयतों का उद्धरण देकर आपको बताऊंगा, जिनमें सार्वकालिक सत्य का उद्घोष है।

भावार्थ- उपरोक्त कथन से यह संशय होता है कि जब परब्रह्म (अल्लाहतआला) सर्वज्ञ है और कुर्आन में उन्हीं के वचन हैं तो उनमें विरोधाभास क्यों है? एक आयत का कथन दूसरी आयत के विपरीत क्यों हैं? **उदाहरणार्थ:-** पार: १ अलिफ लाम मीम सूरत बकरति २, आयत १०६ “मा नन्सख् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा जअति बिखेरिभिन्हा म्म मिसूलिहा अलम् तडलम् अन्नल्लाह अल्ला कुल्लि शैइन् कदीर रुन्” अर्थात् हम जिस आयत को रद्द कर देते हैं या अपनी बुद्धि से उतार देते हैं तो उससे भी अच्छी या वैसी ही आयत ले आते हैं। तुमको पता नहीं है कि खुदा प्रत्येक पर समर्थवान हैं।

पार : २ सयकूल आयत १४४ “कद नरा तकल्लुब वज्हिक फिस्समाइ... निगाफिलिन् अम्मा यऽमलून” अर्थात् ऐ मुहम्मद! हम आपका आकाश की ओर मुँह फेरना देख रहे हैं। तुम जहां पर देखना पसंद करते हो, हम तुमको उस तरफ फेर देंगे। तुम लोग जहां भी रहो, अपनी दृष्टि खुदा की ओर किया करो। जिनको भी कुर्आन मिला हुआ है, उनको पता है कि उनको क्या करना है। तुम लोग जो कुछ भी कर रहे हो, उससे खुदा अनभिज्ञ नहीं है।

आयत ११५ “ व लिल्लाहिलत - मशिरकु वल्मगिरिबु.... वासिअुन अलीमून” अर्थात् पूर्व हो या पश्चिम, तुम जिस ओर भी अपना मुँह करते हो, सब जगह परब्रह्म ही हैं। सभी जगह परब्रह्म को जानकर सावचेत हो जाओ।

आयत ११६-१२० “इन्ना अर्सलनाक बिलहक्कि कद् बशीरंव्व नजीरन.... लक मिनल्लाहि मिंव्वलियिंव्व ला नसीरिन्” अर्थात् ऐ पैगम्बर! हमने तुमको सबकी बात और मंगल समाचार देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है। तुमसे दोजख की राह अपनाने वाले लोगों की बाबत कुछ पूछताछ नहीं होगी। तुम किसी की भी पैरवी मत करो। इन लोगों को कहना कि जो खुदा की हिदायत है और तुम्हारे पास जो खुदा का इल्म आ चुका है, उसके अनुसार चलो, क्योंकि खुदा के कोप से बचाने वाला न तो कोई तुम्हारा दोस्त है और न ही कोई मददगार।

दोनों आयतों में पूर्व-पश्चिम, पुनः पश्चिम की दिशा में चिंतन प्रार्थनारत होने का विरोधाभास है। निःसंदेह प्रथम आयत का खण्डन द्वितीय आयत-वचन ने कर दिया

है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न आयतें हैं।

सो सुध पाइए लदुन्नी से, देखे ना उपली नजर।
सो सिफली के दिल मजाजी, बिन इलम देखे क्योंकर ॥४॥

मोह सागर से उत्पन्न होने (कुंन की पैदाइश) वाले संसार के जीवों का हृदय भी झूठा होता है। भला वे बिना तारतम ज्ञान के कुर्आन में छिपे हुए सत्य को कैसे पा सकते हैं? तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही कुर्आन की आयतों के वास्तविक आशय का बोध होता है, शब्दों के बाह्य अर्थ से नहीं।

हुकमे कहूं ता दिन की, जो हक हादी रूहों खिलवत।
अबलों जाहेर न काहूं, ए बका मता वाहेदत ॥५॥

अब मैं परब्रह्म के आदेश से उस समय का प्रसंग बता रहा हूँ, जो परमधाम के मूल मिलावे में श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं के मध्य प्रेम संवाद के रूप में घटित हुआ था। यह ज्ञान उस स्वलीला अद्वैत अखण्ड परमधाम का है जिसमें एकत्व (वहदत) एकदिली की लीला है। इस ज्ञान को आज दिन तक संसार में किसी ने भी प्रकट नहीं किया था।

जब नहीं कछू पैदा हुआ, जिमी या आसमान।
और ना कछू चौदे तबक, फरिस्ते दुनी जहान ॥६॥

यह उस समय का प्रसंग है जब न तो आकाश (आसमान) की उत्पत्ति हुई थी और न इस पृथ्वी (धरती) की। न तो चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड था, न देवगण और न ही यह दिखने वाला संसार।

ना तब चारों चीज को, किनहूं समारे।
ना कछू चाँद तब सूरज, ना पैदा सितारे ॥७॥

उस समय तक शेष चार तत्वों - वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी - का उद्भव नहीं हुआ था। तब सूर्य, चन्द्रमा तथा तारागण भी उत्पन्न नहीं हुए थे।

ना कोई कहे बेचून को, नाहीं बेचगून।

ना केहेने वाला बेसबी का, नाहीं बेनिमून ॥८॥

उस समय कोई ऐसा ज्ञानी भी नहीं था जो परब्रह्म को अवर्णनीय, शब्दातीत, अनुपम और अद्वितीय के रूप में पारिभाषित करता।

भावार्थ- चूं का अर्थ होता है प्रत्यक्ष अनुभूत होने वाला । इस आधार पर बेचूँ का अर्थ होता है इन्द्रियों से प्रत्यक्ष न होने वाला। इस प्रकार, परब्रह्म को निराकार नहीं कहा जा सकता। इसी तरह, बेचगून का तात्पर्य शब्दातीत से है। इसे निर्गुण कहना उचित नहीं।

ना खाली तब हवा सुन्य, नाहीं ला मकान।

ना कछू किया तब हुकम, ए जो कह्या कुंन सुभान ॥९॥

उस समय हिन्दू धर्मग्रन्थों में वर्णित महाशून्य (निराकार) या कुर्आन में कथित ला मकाँ भी नहीं था। उस समय तक श्री राज जी ने सृष्टि बनने के लिये “कुंन” (होजा) का भी आदेश नहीं दिया था।

एक बका नूर-मकान, आगूं नूरतजल्ला।

रह्या जबराईल हद नूर की, आगूं पोहोंचे रसूल अल्ला ॥१०॥

निराकार से परे अखण्ड अक्षर धाम (बेहद मण्डल) है, जिसके आगे अक्षरातीत का परमधाम है। मेयरज के समय जिब्रील फरिश्ता बेहद मण्डल की अन्तिम सीमा सत्स्वरूप तक जाकर रुक गया। मुहम्मद साहब इससे और आगे परमधाम में गये।

भावार्थ- परमधाम के अन्दर ही अक्षर धाम है, जिसमें अक्षर ब्रह्म का मूल निवास है। अक्षर ब्रह्म की लीला बेहद मण्डल में होती है जिसे कतेब पक्ष में जबरूत कहते हैं। सभी आठों सागरों में ब्रह्मात्माओं तथा श्री राज श्यामा जी की प्रेममयी लीला होती है, अतः नूर मकान या जबरूत को ही अक्षर का लीला धाम या अक्षर धाम समझना चाहिये। परमधाम में अक्षरातीत के रंगमहल के सम्मुख जो अक्षर ब्रह्म का रंगमहल है, उसे ही प्रायः अक्षर धाम कह दिया जाता है किन्तु वह अक्षर ब्रह्म के निवास का स्थान है, लीला का नहीं। अक्षर ब्रह्म के अहम् का स्वरूप सत्स्वरूप है जो बेहद की अन्तिम सीमा है। इसमें ही जिब्रील तथा अम्नाफील का मूल निवास है।

जबरूत लाहूत दोऊ बका, हादी रूहें लेवें लज्जत।

ए पातसाही हक की, बीच नूर वाहेदत॥११॥

बेहद मण्डल (अक्षर धाम) तथा परमधाम दोनों ही अखण्ड है। इस परमधाम में श्यामा जी तथा ब्रह्मात्मायें श्री राज जी के साथ अनन्त प्रेम एवं आनन्द का रसपान करती हैं। सम्पूर्ण परमधाम में अक्षरातीत की लीला का स्वामित्व है जिसमें अक्षर ब्रह्म भी सत् की वहदत (एकत्व) में है।

भावार्थ- श्री राज जी, श्यामा जी, ब्रह्मात्मायें तथा अक्षर ब्रह्म की आनन्द शक्ति की लीला आनन्द के एकत्व में होती है तथा अक्षरातीत का सत् अंग होने से अक्षर ब्रह्म को सत् के एकत्व (वहदत) एकदिली में कहा जाता है। इस तथ्य की सार्थकता को खिलवत ग्रंथ की यह चौपाई पुष्ट करती है-

जो पेहेले लई हकें दिल में, पिछे आई माहें नूर।

तिन पीछे हादी रुहन में, ए जो हुआ जहूर॥ (खिलवत, 6/44)

जब न्यामत पाई हक की, खुली मुसाफ हकीकत।

तब सब विध पाइए, हक अर्स मारफत॥१२॥

जब श्री राज जी की अखण्ड निधि के रूप में तारतम ज्ञान की प्राप्ति हुई तो उससे कूर्आन की वास्तविकता उजागर हो गयी। इसी से अक्षरातीत तथा परमधाम की हर प्रकार से पूर्ण पहचान होती है।

भावार्थ- सब विध की पहचान का तात्पर्य है ज्ञान से, प्रेम से, अनुभव से और पूर्ण साक्षात्कार से प्रियतम की पहचान होना।

जिन को हक मेहेरसों, आप करें हिदायत।

सो सबे विध बूझहीं, अर्स बका निसबत॥१३॥

जिन ब्रह्मात्माओं के ऊपर अक्षरातीत प्राणेश्वर की पूर्ण कृपा (मेहर) होती है, उन्हें धामधनी अन्तःप्रेरणा द्वारा स्वयं निर्देश देते हैं। वे ब्रह्मात्मायें हकीकत (सत्य, ज्ञान) एवं मारिफत (परम सत्य, विज्ञान) दोनों ही दृष्टियों से अखण्ड परमधाम और अपने मूल सम्बन्ध को जानती हैं।

**अर्स दिल एही हकीकी, अर्स रूहें मोमिन।
रहें दरगाह बीच असल, सूरत अर्स तन॥१४॥**

इस संसार में अवतरित होने वाले ब्रह्ममुनियों का हृदय ही प्रियतम अक्षरातीत का धाम होता है और सत्य होता है। इनका मूल तन परात्म है जो परमधाम में हैं। वही यथार्थ है तथा अखण्ड कहा जाता है।

**खासलखास रूहें कहीं, ए अहमद उमत।
भाई कहे महंमद के, हक खासी खिलवत॥१५॥**

जीव सृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि से भी अलग इन आत्माओं को अति विशिष्ट कहा जाता है। ये परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी की अंगरूपा हैं। इन्हें ही मुहम्मद स. अ. व. व. ने अपना भाई भी कहा है (बड़ी हदीस में)। ये श्री राज जी के सम्मुख मूल मिलावे में बैठी हुई हैं।

**देखो बड़ाई महंमद, मासूक केहेवें हक।
इन के सरभर दूसरा, कोई नहीं बुजरक॥१६॥**

हे साथ जी! श्यामा जी की महिमा तो देखिए, जिन्हें श्री राज जी ने अपना मासूक (प्रियतम) कहा है। निश्चित रूप से इनके समान किसी अन्य को महान नहीं कहा जा सकता।

**दो हिजाब जर मोती के, बीच राह साल सत्तर।
हक महंमद दोऊ हिजाब में, आखिर बातें करी इन बेर॥१७॥**

जब मुहम्मद सल्ल. (साहब) को मे'राज (मेयरारज) हुआ और वे मूल मिलावे में पहुंचे तो दोनों (श्री राज जी तथा मुहम्मद स. अ. व. व.) के बीच दो पर्दों का अन्तर था। एक पर्दा जरी स्वर्णमयी था तो दूसरा श्वेत मोतियों का था। दोनों के बीच ७० वर्ष का मार्ग था। इन्हीं दोनों पर्दों के बीच श्री राज जी तथा मुहम्मद साहब (अक्षर ब्रह्म की आत्मा) के बीच ६० हजार हस्कों में बातें हुई।

भावार्थ- वि. स. १६३८ में श्यामा जी ने श्री देवचन्द्र जी का पहला तन धारण किया। दूसरे तन की लीला में वि. सं. १७४८ तक मारिफत सागर का अवतरण हुआ।

इस समयान्तराल में ७० वर्ष की अवधि पूर्ण हो जाती है अर्थात् दोनों पदों (तनों का आवरण) को पार करने के पश्चात् मारिफत की अवस्था आ जाती है जिसमें दोनों स्वरूप एक हो जाते हैं।

उपरोक्त कथानक का आशय यह है कि वि. सं. १७४८ तक सम्पूर्ण कुल्जुम स्वरूप का अवतरण होने के पश्चात् श्री महामति जी मेहमत स्वरूप अर्थात् हजरत आखरूल इमाम मेहमत साहिबुज्जमा यानि इमाम आखरूल मुहम्मद महदी अजल्लाह तआला पाक व फर्जहु अल शरीफ। और मूल स्वरूप श्री राज जी में कोई भेद नहीं रह गया।

**ए लिख्या सिपारे आममें, करी बातें हक महंमद।
सो मोमिन आयत देख के, सक सुभे करें रद।।१८।।**

यह प्रसंग कुर्आन के तीसवें पारे (अम्म सियोर) में लिखा हुआ है। उसमें यह वर्णन है कि सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि वसल्लम मुहम्मद साहब तथा अल्लाहतआला के बीच ६० हजार हस्फ बातें हुई। ब्रह्ममुनि उस आयत को देखकर अपना संशय मिटा लेंगे।

भावार्थ- कुर्आन के पा. ३० सू. ६७ आ. १-५ में कहा गया है कि “इन्ना अन्जलूनाहु फी लैलतिल् - कद्रि (१) व मा अद्राक मा लैलतुल् - कादिर (२) लैलतुल् - कद्रि खैरुम् - मिन् अल्फि शहरिन् (३) तनज्जलुल्-मलाअिकतु वरूहु फीहा बिअिज्नि रब्बिहिम् जिन् कुल्लि अम्रिन् (४) सलामुन् हिय हत्ता मत्लअिल - फज्रि (५)।

हमने यह कुर्आन कद्र की रात से उतारना शुरू किया और तू क्या जाने कद्र की रात क्या है? कद्र की रात हजार महीनों से बढ़कर है। उसमें फरिश्ते और रूह अपने परवरदिगार की आज्ञा से जमीन पर उतरते हैं, हर काम पर सलामती वह रात ऊषाकाल तक सलामती की रहती है।

कुर्आन पारा: - ३ तिल्करसूल सूरत आयत १-७ कस्सुल अंबिया पृष्ठ- १८२-८३
“और हक सुब्हान तआला ने आ हजरत सल्ल. से ६०,००० कलाम जाहिर किया ३०,००० मजी और ३०,००० गषै।

**हक महंमद के बीच में, कहे आड़े परदे दोए।
सत्तर साल बीच राह कही, जाहेरी माएने निसांक्यों होए॥१९॥**

मुहम्मद साहब तथा श्री राज जी के बीच दो पर्दों का अन्तर कहा गया है। इन दोनों पर्दों को पार करने में ७० वर्ष का समय लगता है। कुर्आन मजीद के इस कथन का बाह्य शब्दार्थ लेने पर भला किसी को कैसे संतुष्टि हो सकती है?

**जो लों मुसाफ हकीकत, खोले नहीं वारस।
कोई पावे ना बिना लदुन्नी, हक महंमद रूहें अर्स॥२०॥**

कुर्आन शरीफ के रहस्यों को स्पष्ट करने का अधिकार मात्र ब्रह्मात्माओं को है। बिना तारतम ज्ञान के कोई भी न तो कुर्आन की यथार्थता को जान सकता है और न ही परमधाम, श्री राज जी, श्यामा जी या ब्रह्मात्माओं के विषय में कुछ जान सकता है।

**ए हादी हमेसगी, अर्स बका हक जात।
नूर रूहें वाहेदत, इत और न कछूए समात॥२१॥**

अखण्ड परमधाम में श्री राज जी, श्यामा जी तथा परब्रह्म स्वरूपा ब्रह्मात्माओं की शाश्वत लीला है। ये तीनों स्वरूप स्वलीला अद्वैत हैं एवं एकत्व में ओतप्रोत हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कोई भी (कालमाया या योगमाया से) वहां प्रवेश नहीं कर सकता है।

**हुई मजकूर अर्समें, सो सब वास्ते इस्क।
अर्स हक हादी रूहें, ए साहेबी बुजरक॥२२॥**

इश्क का निर्णय करने के लिये परमधाम में इश्क-रब्द हुआ। परमधाम में श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मसृष्टियों की अनन्त महिमा है।

**खिलवत हक हादीय की, जो इस्क रूहों असल।
ए बातून बारीक वाहेदत की, इत पोहोंचे ना फना अकल॥२३॥**

परमधाम में श्री राज जी, श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं की खिलवत है जहां केवल इश्क ही इश्क (प्रेम ही प्रेम) है। परमधाम के एकत्व की यह गुह्य बात हैं, जहां स्वप्न की बुद्धि नहीं पहुँच सकती है।

भावार्थ- खिल्वत वह स्थान है, जहां आशिक-माशूक (प्रिया-प्रियतम) के अतिरिक्त अन्य कोई भी न हो। परमधाम में सर्वत्र (रंगमहल सहित २५ पक्षों में) प्रेम की लीला होती है। अतः सम्पूर्ण परमधाम को ही खिल्वत मानना उचित है। गुह्य (बातिनी) रूप से हृदय (दिल) को ही खिल्वत कहते हैं क्योंकि प्रिया-प्रियतम एक-दूसरे के दिल में ही निवास करते हैं।

**रूहों कह्या हक हादीय सों, हम तुमारे आसिक।
तुम हमारे मासूक, इनमें नाहीं सक॥२४॥**

ब्रह्मात्माओं ने श्री राज जी एवं श्यामा जी से कहा कि हम सभी आपकी आशिक हैं और आप हमारे माशूक हैं अर्थात् हम सभी आपसे प्रेम करते हैं। इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

**तब कह्या बड़ीरूहने, इस्क मेरा ताम।
हक रूहों की मैं आसिक, मेरा याहीमें आराम॥२५॥**

यह सुनकर श्यामा जी ने कहा कि इस्क ही मेरा आहार है। श्री राज जी तथा ब्रह्मात्माओं से मैं प्रेम करती हूँ। इसी में मुझे आनन्द मिलता है।

**तब हकें कह्या हादी रूहों को, तुम मासूक मेरे दिल।
इत इस्क मेरा पाए ना सको, जो सहूर करो सब मिल॥२६॥**

तब प्राणेश्वर अक्षरातीत ने श्यामा जी एवं ब्रह्मसृष्टियों से कहा कि तुम सभी मेरी हृदय स्वरूपा हो, प्रियतमा हो। तुम सभी मिलकर भले ही कितना भी चिन्तन क्यों न करो किन्तु इस परमधाम में मेरे इस्क की पहचान नहीं कर पाओगी।

**नूरमकान नूर हक का, जित हैं नूरजलाल।
तिन दिल हकें यों चाह्या, देखें इस्क नूरजमाल॥२७॥**

परमधाम के अन्दर अक्षर धाम (अक्षर ब्रह्म के रंगमहल) में अक्षरातीत के नूर के स्वरूप 'नूरुल अलः नूर' अक्षर ब्रह्म का निवास है। उनके हृदय में श्री राज जी ने यह इच्छा पैदा की कि मैं अक्षरातीत की प्रेममयी लीला देखूँ।

**कैसा इस्क बड़ीरूहसों, कैसा इस्क रूहों साथ।
इस्क हादी का हक से, कैसा हकसों इस्क जमात ॥२८॥**

मैं यह जानना चाहता हूँ कि श्री राज जी, श्यामा जी के साथ कैसा प्रेम करते हैं तथा अपनी आत्माओं के साथ कैसा प्रेम करते हैं? इसी प्रकार श्यामा जी प्राणेश्वर अक्षरातीत से किस प्रकार प्रेम करती हैं तथा ब्रह्मात्मायें भी श्री राज जी से कैसा प्रेम करती हैं?

**ए इस्क रमूज रहे हमेसा, हक हादी रूहन।
एबेवरा क्योए न होवहीं, बीच वाहेदत इस्क पूरन ॥२९॥**

श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मसृष्टियों में प्रेम की यह वार्ता निरन्तर होती रहती थी। परमधाम में सबके हृदय समान हैं अर्थात् श्री राज जी का दिल ही श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं के दिल के रूप में लीला कर रहा है। इस प्रकार, सबके हृदय में प्रेम की समान अवस्था के कारण परमधाम में यह निर्णय हो ही नहीं सकता था कि किसका प्रेम बड़ा है (कौन आशिक है)?

**तब हकें दिल में यों लिया, मैं देखाऊँ अपना इस्क।
और पातसाही अपनी, ए देखें रूहें मुतलक ॥३०॥**

तब धामधनी ने अपने हृदय में यह निर्णय लिया कि मैं अपनी अंगरूपा आत्माओं को अपना प्रेम एवं स्वामित्व दिखाऊँ तब इन्हें निश्चित रूप से पहचान होगी।

**बका अर्स में जुदागी, सो तो कबू न होए।
एबेवरा नहीं वाहेदत में, होए कम ज्यादा बीच दोए ॥३१॥**

अखण्ड परमधाम में कभी वियोग हो ही नहीं सकता। जब दो के बीच कम या अधिक इश्क हो तब तो यह निर्णय किया जा सकता है कि किसका प्रेम अधिक बड़ा है। किन्तु, परमधाम के वहदत (एकत्व) एकदिली में इसका निर्णय होना संभव ही नहीं।

**ए मजकूर अव्वल का, हँसते करें सब कोए।
पर कम ज्यादा वाहेदत में, बेवरा क्योए न होए ॥३२॥**

प्रेम का यह संवाद प्रारंभ से ही चला आ रहा था। सभी हंसते हुए अपने ही प्रेम को बड़ा कहते थे किन्तु परमधाम की वहदत एकत्व (एकदिली) में किसका प्रेम अधिक है और किसका प्रेम कम है, इसका निर्णय कैसे हो सकता था?

**हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन।
ऐसा हक का सुकन, क्यों सहें बन्दे मोमिन।।३३।।**

मैं ही श्यामा जी का प्रेमी हूँ, और ब्रह्मात्माओं का भी। श्री राज जी के मुख से कहे हुए इन शब्दों को भला श्यामा जी और ब्रह्मात्माओं से कैसे सहन किया जा सकता था?

**चाहिए मोमिन आसिक हक के, और आसिक हादी के।
रूहें हादी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।।३४।।**

ब्रह्मात्माओं ने सोचा कि श्री राज जी का ऐसा कहना उचित नहीं है। प्रेम का स्पष्ट विवरण तो यह है कि हम सभी आत्मायें श्री राज जी की आशिक हैं तथा श्यामा जी की भी। इसी प्रकार, हम और श्यामा जी मिलकर श्री राज जी की आशिक हैं।

**वाहेदत कहिए इनको, एक इस्क तन मन।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत में पाव खिन।।३५।।**

वहदत (एकत्व) एकदिली/अद्वैत भी उसी को कहते हैं जिसमें सबके तन की शोभा एक समान हो, सबके मन में एक समान भाव हों तथा सबके हृदय का प्रेम भी समान हो। वहदत के स्वरूपों में चौथाई पल के लिये भी कभी वियोग नहीं होता।

**मैं छिपाऊं तुम को, बैठो पकड़ कदम।
तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो माहें दम।।३६।।**

श्री राज जी कहते हैं कि मेरी अंगरूपा आत्माओं! मैं स्वयं को तुमसे छिपा लेता हूँ। तुम मेरे चरणों को पकड़कर बैठ जाओ। अब बिना प्रेम के मुझसे मिलन नहीं होगा। जब तुम्हारे पास प्रेम आयेगा तो पल भर में ही मुझसे भेंट (साक्षात्कार) हो जायेगी।

उतर जब तुम देखोगे, लैलत कदर के माहें।

और जिमी और आसमान, देखो प्रतिबिम्ब ताहें॥३७॥

जब तुम लैल-तुल-कद्र (महिमामयी रात्रि) में मायावी जगत में जाओगी तो यहां से भिन्न प्रकार की धरती, आकाश एवं अपने नकली मायावी तनों को देखोगी।

फरामोसी क्यों होएसी, क्या जुदे होसी माहें खेल।

तुमको क्यों हम भूलेंगे, ए कैसी है कदर लैल॥३८॥

यह सुनकर ब्रह्मात्माओं ने पूछा कि प्राणेश्वर! आप यह बताइये कि हमारे ऊपर नींद का आवरण क्यों होगा? माया के संसार में हम आपसे अलग क्यों हो जायेगी और आपको क्यों भूल जायेगी? इस प्रकार की महिमामयी रात्रि कैसी है अर्थात् माया का खेल कैसा है?

कह्या हकें रूहन को, तुम उतरो माहें लैल।

बैठो पकड़ कदम, देखोगे माहें खेल॥३९॥

श्री राज जी ने आत्माओं से कहा कि अब तुम माया के संसार में जाओ। तुम मेरे चरणों को पकड़ कर बैठो तो तुम स्वयं को मायावी जगत में पाओगी।

भावार्थ – चरणों को पकड़ कर बैठने का आशय है, माया का खेल देखने की इच्छा से नीचे बैठ जाना।

देखो और जिमीय को, और आसमान।

सो सब फना बीच में, दुनिया सकल जहान॥४०॥

उस माया के खेल में तुम्हें यहां से पूर्णतया भिन्न प्रकार की धरती और आकाश का दृश्य दिखायी देगा। वहां का सम्पूर्ण संसार काल के गाल में समा जाने वाला होगा।

तित कानों सुने जाएंगें, ए जो चौदे तबक।

कोई हमारे अर्स की, तरफ न पावे हक॥४१॥

वहाँ तुम्हें अपने कानों से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड की ही चर्चा सुनायी देगी। वहां के किसी भी व्यक्ति को न तो हमारे परमधाम की जानकारी होगी और न ही मेरी।

देखो जिमी दमी आदमी, खलक तमासा।

एखालीबीच बसत हैं, मुरदों का वासा।।४२।।

वहां की धरती पर रहने वाले मनुष्यों के साथ-साथ तुम तरह-तरह के प्राणियों का नाटक देखोगी। उस संसार में केवल मृत्यु को प्राप्त होने वाले जीवों का ही निवास है।

ए ना कछू पेहेले हुते, ना होसी आखिर।

खेल ऐसा देखो बीच, माहें लैलत कदर।।४३।।

वहां तुम्हें दिखायी देने वाले जीव न तो सृष्टि के पहले थे और न सृष्टि के प्रलय के बाद रहेंगे। तुम्हें मायावी जगत में इस प्रकार का विचित्र खेल दिखायी देगा।

रूहें देखे झूठ फरेब को, कई भांत तमासा।

लाख विधों कई खोजहीं, कोई पावे ना खुलासा।।४४।।

तुम उस मिथ्या जगत में जाकर अनेक प्रकार के नाटक (मिथ्या लीला) को देखोगी। उस संसार के लोग लाखों प्रकार से स्वयं को तथा संसार को जानने का प्रयास कर रहे होंगे। किन्तु किसी को भी उसका रहस्य विदित नहीं होगा।

ए जो दुनी देखो खेलती, आवे जाए हुकम।

झूठा वजूद ना रेहेवहीं, चले कर गिनती दम।।४५।।

तुम्हें जो वहां संसार दिखायी पड़ेगा, उसकी उत्पत्ति और विनाश में मेरा आदेश ही कार्य करता है। वहां किसी का भी पंचभौतिक तन अखण्ड नहीं है। सभी अपनी आयु को पूरी कर अपने नश्वर तन को छोड़ देते हैं।

आवे जाए माहें खेलहीं, अपने बल उमर।

ढूंढ्या फेर न पाइए, ए मुआ क्यों कर।।४६।।

उस संसार में सभी अपनी उम्र के अनुसार जन्म-मरण के खेल में लगे रहते हैं। मरे हुए व्यक्ति को बहुत खोजने पर भी वह नहीं मिलता है। कोई यह भी नहीं जानता है कि कैसे कोई मर जाता है?

कोई आप न चीन्हीं, ना चीन्हे हक वतन।
ना चीन्हे तिन जिमीय को, ऊपर खड़ा है जिन।१४७॥

उस मायावी जगत में न तो किसी को अपनी पहचान होती है, न परब्रह्म की (मेरी) और न ही परमधाम की। वह तो उस संसार को भी यथार्थ रूप से नहीं जानता है जिसमें वह रह रहा है।

कहे हक तुम भूलोगे, उन जिमी में जाए।
रहोगे बीच नासूत के, उतहीं उरझाए।१४८॥

श्री राज जी कहते हैं कि आत्माओं! उस संसार में जाकर तुम मुझे भूल जाओगी। मृत्यु लोक में रहकर तुम पूरी तरह उसमें उलझ जाओगी।

चलना जेता रात का, अमल जो सरीयत।
दिन मारफत हुए बिना, कछुए ना सूझत।१४९॥

वहां भक्ति के नाम पर केवल कर्मकाण्ड का ही प्रचलन होगा। जब तक संसार में परमधाम की पहचान देने वाले पूर्ण ज्ञान का प्रकाश न हो तब तक किसी को भी न तो मेरी पहचान हो सकती है और न ही अपनी।

बिना इस्क सूझे नहीं, ए जो रात का अमल।
ए राह चलसी लग फजर, तोरे के बल।१५०॥

बिना मेरे प्रेम के किसी को भी मायावी जगत की वास्तविकता समझ में नहीं आयेगी। जब तक मेरे द्वारा दिये गये तारतम ज्ञान से अज्ञान-रूपी रात्रि का अन्धकार मिटकर सवेरा नहीं होता, तब तक संसार कर्मकाण्ड के ही मार्ग पर चलता रहेगा।

बातून जब तुम देखोगे, खोलसी रूह नजर।
लैलत कदर के तकरार, तीसरे होसी फजर।१५१॥

जब तुम धर्मग्रन्थों के गुह्य अर्थ को समझोगी तो तुम्हारी आत्मिक दृष्टि खुल जायेगी। लैल-तुल- कदर के तीसरे भाग अर्थात् जागनी लीला में तारतम ज्ञान से अज्ञान-रूपी रात्रि का अन्धकार समाप्त हो जायेगा तथा प्रातः काल का सवेरा हो

जायेगा।

**लिखों हकीकत खिलवत की, आखिर होसी जो सब।
कहां से लिख भेज्या कौन खसमें, कहोगे आए हम कब।।५२।।**

मैं आखिरत (कियामत) के समय खिलवत की सम्पूर्ण यर्थाथता को संकेतों में लिख कर भेजूंगा। उसे पढ़कर तुम यही कहोगी कि किस प्रियतम ने कहाँ से लिख कर यह भेजा है? हम इस संसार में कब आये हैं?

भावार्थ- खिलवत की बातें कुर्आन, हदीस, पुराण संहिता तथा माहेश्वर तन्त्र में है।

**ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल।।५३।।**

अब तुम मेरा प्रेम तो तब पाओगी, जब पहले मुझे भूल जाओ। तुम उस मायावी संसार में जाकर मुझसे अलग हो जाओगी। किन्तु तुम्हें परमधाम तथा अपनी साक्षी देने के लिये तुमसे पहले ही अपना संदेश-वाहक भेज दूंगा।

**रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान।
आए मेरे अर्स की, देसी सब पेहेचान।।५४।।**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) मेरे संदेश-वाहक के रूप में तुम्हारे पास मेरा भेजा हुआ कुर्आन लेकर आयेंगे और तुम्हें मेरे परमधाम की सारी पहचान देंगे।

**तब दिल में राखियो, खबरदारी तुम।
इसारतें कई रमूजें, लिख भेजेगे हम।।५५।।**

उस समय तुम सावधान रहना और परमधाम की पहचान को अपने हृदय में धारण कर लेना। मैं परमधाम की कई गुह्य बातों को संकेतों में लिखकर भेजूंगा।

**तुम पर भेजोंगा फुरमान, मासूक के हाथ।
अर्स कुंजी नूर रोसन, भेजों रूह मेरी साथ।।५६।।**

मैं अपने माशूक मुहम्मद के हाथ कुर्आन भेजूंगा। इसके पश्चात् मैं अपनी आनन्द स्वरूपा श्यामा जी के साथ तारतम ज्ञान रूपी कुंजी भेजूंगा जिससे परमधाम की पहचान होगी।

भावार्थ – उपरोक्त चौपाई में मुहम्मद स. अ. व. व. को ही श्री राज जी ने अपना माशूक कहा है।

**द्वार सबे खोलसी, होसी नूर रोसन।
देखोगे हक सूरत, और असलू तन।।५७।।**

श्री श्यामा जी तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम का यथार्थ मार्ग दर्शायेंगी जिससे तुम्हें मेरी शोभा और अपने मूल तन परात्म को ध्यान द्वारा देखने का अवसर प्राप्त होगा।

भावार्थ— कुंजी के द्वारा सभी द्वारों को खोलना एक आलंकारिक कथन है। द्वार बन्द होने का आशय है— अज्ञानता के अन्धकार के कारण परमधाम की पहचान न होना। ताला बन्द रहने से द्वार भी बन्द रहता है किन्तु तारतम ज्ञान रूपी कुंजी से अज्ञान—रूपी ताला हट जाता है (खुल जाता है) तो द्वार—रूपी अवरोधक न होने से परमधाम का बोध हो जाता है।

**तुम कहोगे कहां खसम, कैसा खेल कौन हम।
देसी साहेदीरसूलरूहअल्ला, जोखिलवत करीहम तुम।।५८।।**

तुम संशयग्रस्त होकर यही कहोगी कि हमें नहीं मालूम है कि परब्रह्म कहाँ है, यह कैसा खेल है और हम कौन है? मुहम्मद सल्ल. (साहब) (स. अ. व. व.) कुर्आन पाक से तथा श्री श्यामा जी (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) तारतम ज्ञान से मूल मिलावे में होने वाले प्रेम-संवाद की साक्षी देंगे।

**हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए-रोए।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए।।५९।।**

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी) तुम्हें रो-रोकर मेरी बातों को बतायेंगे; उसे सुनकर तुम भी रोओगी, किन्तु माया की बेसुधि तब भी नहीं जायेगी।

**तुम कहोगे रसूल को, हम क्यों आए कहां वतन।
मलकूत बिना कछू और है, आगे तो खाली हवा सुन।।६०।।**

तुम मुहम्मद सल्ल. (साहब) से कहोगी कि हमें नहीं मालूम है कि हमारा आगमन यहां क्यों हुआ है, हमें यह भी ज्ञात नहीं है कि हमारा घर कहां है? क्या मलकूत

(बैकुण्ठ) के अतिरिक्त भी कुछ और है? हमें तो ऐसा लगता है कि इसके आगे केवल शून्य निराकार है, अन्य कुछ भी नहीं अर्थात् परमधाम मात्र कल्पना है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में माया के प्रभाव से ब्रह्मसृष्टियों के द्वारा परमधाम के अस्तित्व पर ही संशय किया जा रहा है।

**मैं भेजों रूह अपनी, इलम देसी समझाए।
तब मूल कुल्ल अकल, असराफील ले आए॥६१॥**

मैं अपनी आनन्द स्वरूपा श्यामा जी की आत्मा (श्री देवचन्द्र जी) को तुम्हारे पास भेजूंगा। वे तारतम ज्ञान के द्वारा तुम्हें प्रबोधित करेंगी। इसके पश्चात् अस्माफील फरिश्ता सम्पूर्ण जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम ज्ञान) लेकर आयेगा।

भावार्थ- इस चौपाई के तीसरे चरण में कहा गया है कि 'मूल कुल्ल अकल' अर्थात् अपनी सम्पूर्ण जागृत बुद्धि की शक्ति के साथ अस्माफील फरिश्ता अवतरित होगा। निज बुद्धि परमधाम की आनन्द की वहदत की बुद्धि है जो आत्मा के प्रेम एवं समर्पण के क्षेत्र में कदम बढ़ाने पर श्री राज जी की कृपा (मेहर) से प्राप्त होती है। अस्माफील अक्षर ब्रह्म का फरिश्ता है, अर्थात् अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि है, जबकि निज बुद्धि श्री राज जी, श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं में है।

**आयतें हदीसें रसूल, और किताबें सब।
खोलसी इसारतें रमूजे, होसी पेहेचान तब॥६२॥**

जब अस्माफील के द्वारा कूर्आन की आयतों, मुहम्मद सल्ल. (साहब) की कही हुई हदीसों, एवं अन्य ग्रन्थों में सांकेतिक रूप से कहे गये गुह्य रहस्यों का प्रकटीकरण होगा, तब वास्तविक सत्य की पहचान होगी।

**देखाए फरामोसी तारीकी, ऊपर देऊं मेरा इलम।
जासों मुरदे होवें जीवते, सो दई हाथ हैयाती तुम॥६३॥**

एक ओर तो मैं तुम्हें माया की अज्ञान-रूपी नींद का अनुभव कराऊंगा, तो

दूसरी ओर जागृत बुद्धि का वह अनुपम तारतम ज्ञान भी दूंगा जिससे अज्ञानता के अन्धकार में भटकने वाले (मरे हुए) जीव भी जागृत (जीवित) हो जायेंगे। मैं तुम्हारे ही हाथों उन जीवों को अखण्ड मुक्ति भी दिलाऊंगा।

**जो कछू आखिर होएसी, तुम देत हो आगूं बताए।
सो क्यों हम भूल जाएंगे, जो लेत हैं दिल लगाए॥६४॥**

श्री राज जी की इन बातों को सुनकर ब्रह्मात्माओं ने कहा कि हे प्राणेश्वर! उस मायावी संसार में अन्त में जो कुछ होगा, उसे जब आप पहले ही बता दे रहे हैं और उसे हमने अपने दिल में बसा भी लिया है तो यह कैसे सम्भव है कि हम उसे भूल जायें?

**दूर तो कहूं न करोगे, बैठे कदम तले।
फेरें तुमारा फुरमाया, हम ऐसी क्यों करें॥६५॥**

आप जरा यह बातइये कि जब यहां आपके चरणों में हमारी बैठक है तो कहीं आप हमें अपने से अलग तो नहीं कर देंगे न। हमसे इतनी बड़ी भूल कैसे हो सकती है कि हम आपकी कही हुई बात को न मानें?

**करें हुसियारी आपुस में, हम देखें खेल जुदागी।
देखें हक डारें क्यों जुदागी, हम बैठे सब अंग लागी॥६६॥**

हमें आपस में बहुत ही चतुराई के साथ माया में वियोग का यह खेल देखना है। जब इस मूल मिलावे में हमारे तन एक-दूसरे से लग-लग कर बैठे हैं तो यह देखते हैं कि प्रियतम अक्षरातीत हमें अलग कैसे कर देते हैं?

**इन विध एक दूजी सों, करी सबों मसलहत।
आपन मोमिन सब एक तन, बीच कहां पैठे गफलत॥६७॥**

इस प्रकार सभी आत्माओं ने आपस में एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श किया। उन्होंने सोचा कि जब हम सभी ब्रह्मात्माओं का एक जैसा ही तन है और एक स्वरूप में हमारी बैठक है तो हमारे बीच भूल करने की प्रवृत्ति कहां से आ सकती है?

**मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।
तूं भूले तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए॥६८॥**

सभी ने एक दूसरे से कहा कि यदि माया के संसार में मैं भूल जाती हूं तो तूं मुझे

पल भर में ही सावचेत कर देना (बता देना) और यदि तुम भूलोगी तो निश्चित रूप से मैं तुरन्त ही तुम्हें माया रूपी नींद से जागृत कर दूंगी।

हम देखेंगे हक इस्क, और पातसाही हक।
सो ए आपन मिल देखसी, ऐसा सुख हक का मुतलक।।६९।।

निश्चित ही हमें श्री राज जी के प्रेम तथा स्वामित्व की लीला को देखना है। इस लीला में प्रियतम का कोई विशेष सुख छिपा हुआ है जिसे हमें अवश्य देखना चाहिये।

हक रूहों को देखाइए, बड़ा इस्क हक।
और पातसाही हक की, ए जो बड़ी बुजरक।।७०।।

सभी आत्माओं ने मिलकर श्री राज जी से आग्रह किया कि आप यह अवश्य दिखाईये कि आपका प्रेम हमसे किस प्रकार बड़ा है और आपके स्वामित्व की अनन्तता है अर्थात् आपका ऐश्वर्य अनन्त है।

हम कदम छोड़ के, कहूं जाए न सकें दूर।
बैठे इत देखें सबे, बीच तजल्ला नूर।।७१।।

हमें आपके चरणों को छोड़कर कहीं भी दूर नहीं जाना हैं। हम सभी आत्मायें परमधाम के इसी मूल-मिलावे में बैठे-बैठे माया का खेल देखेंगी।

कहे हक देखो खेल लैल का, बैठे अर्स में इत।
पीछे देखो सरत पर, सूरज मारफत।।७२।।

श्री राज जी कहते हैं कि तुम यहीं परमधाम में बैठे-बैठे माया का खेल देखो। उचित समय पर पूर्ण ज्ञान के सूर्य को उगते हुए देखने का तुम्हें सौभाग्य प्राप्त होगा।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को ही मारिफत (पूर्ण सत्य ज्ञान) का सूर्य कहते हैं। इस ग्रन्थ में कुर्आन की साक्षियों से उनके स्वरूप की पहचान करायी गयी है।

राह रसूल बतावहीं, मेरे अर्स चढ़ उतर।
तब तुम महंमद के, कदम लीजो दिल धर।।७३।।

मुहम्मद साहब मे'राज में अपनी आत्मिक दृष्टि द्वारा परमधाम आयेंगे तथा मेरा

आदेश पालन करने के लिये पुनः संसार में जायेंगे। इस प्रकार, वे क्रियात्मक दृष्टि से परमधाम जाने-आने का जो मार्ग दर्शायेंगे, उसे तुम अपने हृदय में बसा लेना।

**रात अमल तब मेट के, करसी इलम फजर।
देखोगे दिन मारफत, खोल देसी रूह नजर।।७४।।**

श्री प्राणनाथ जी तारतम ज्ञान के द्वारा अज्ञानता का अन्धकार मिटाकर प्रातःकाल का उजाला कर देंगे। इसके पश्चात् तुम्हें पूर्ण ज्ञान का दमकता हुआ दोपहरी का सूर्य दिखाई देगा जो तुम्हारी आत्मिक दृष्टि को खोल देगा।

**रद बदल आपुस में, कर बैठे मजकूर।
कौल किया बीच खिलवत, हकें अपने हजूर।।७५।।**

इस प्रकार आपस में इश्क-रब्द सम्बन्धी बातें कर माया का खेल देखने के लिये ब्रह्मात्मायें बैठ गयीं। तत्पश्चात् मूल मिलावे में श्री राज जी ने अपने सम्मुख बैठी हुई आत्माओं को यह वचन दिया कि मैं तुम्हारा एकमात्र प्रियतम हूँ।

**हकें करी रूहें साहेद, और फरिस्ते साहेद।
आप भी बीच साहेद, कौल किया वाहिद।।७६।।**

प्रियतम अक्षरातीत ने ब्रह्मात्माओं को, ईश्वरीय सृष्टि को तथा जिब्रील एवं अस्माफील फरिस्ते को साक्षी बनाया। स्वयं भी इस बात के साक्षी बने कि उन्होंने कहा है कि एकमात्र मैं ही तुम्हारा प्रियतम हूँ।

भावार्थ- माया का खेल देखने के लिये लैल-तुल-कद्र के तीनों तकरारों (ब्रज, रास एवं जागनी) में ब्रह्म सृष्टियों के साथ ईश्वरीय सृष्टियां भी रही हैं। जिब्रील ने संदेश लाने में विशेष भूमिका का निर्वाह किया तथा अस्माफील ने गुह्य भेदों को स्पष्ट करने में। 'खुलासा' ग्रन्थ का यह कथन भी जिब्रील व अस्माफील को साक्षी रूप में सिद्ध करता है-

**अस्माफील जबराईल, भेज दिया आमिर।
निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बन्दों पर।।(खुलासा, 4/60)**

अतः उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण में कथित साक्षी पात्रों के रूप में ईश्वरीय सृष्टि, जिब्रील तथा अस्माफील सभी होंगे।

इस्क का अर्स अजीममें, रब्द हुआ बिलंद।
तो बेवरा देखाया इस्क का, माहें फरेबी फंद॥७७॥

इस प्रकार परमधाम में बहुत अधिक इस्क-रब्द हुआ। इसलिये अक्षरातीत ने इस्क का निर्णय करने के लिये ब्रह्मात्माओं को माया का यह झूठा खेल दिखाया है।

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार।
होसी हाँसी सब मेयराज में, जिन को नहीं सुमार॥७८॥

प्रियतम अक्षरातीत १२ हजार ब्रह्मात्माओं को अपना हृदय देकर (सम्पूर्ण प्रेम देकर) माया का खेल दिखाने के लिये उनके मध्य सिंहासन पर बैठे हुए हैं। जब परात्म में जागृत होकर ब्रह्मात्मायें अपने प्राणेश्वर को देखेंगी तो माया में भूलने की जो हंसी होगी, उसकी कोई सीमा नहीं है।

भावार्थ- दर्शन (मेयराज) दो प्रकार का है- १. चितवनी द्वारा जो आत्मा से होता है। २. परात्म में जागृत होने के बाद परात्म के तन से होगा। दिल देने का आशय है- अपने दिल के सम्पूर्ण प्रेम को अपने प्रेमास्पद (माशूक) पर समर्पित कर देना।

महामत कहे ए मोमिनो, याद करो खिलवत सुकन।
जो किया कौल अलस्तो-बे-रब, मिल हक हादी रूहन॥७९॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! मूल मिलावे में जब आत्माओं से श्री राज जी ने खेल में आते समय पूछा कि क्या मैं तुम्हारा प्रियतम नहीं हूँ तो इसके उत्तर में सभी ने एक स्वर में कहा था कि निश्चित रूप से एकमात्र आप ही हमारे प्रियतम हैं। मूल मिलावे के इन वचनों को आप याद कीजिए।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ७९ ॥

इलम-ए-लदुन्नी नुकता (नुकतः) तारतम

लदुन्नी का अर्थ होता है, ईश्वर प्रदत्त या परब्रह्म के द्वारा दिया हुआ। नुकता का आशय बूंद मात्र से है। इस सम्बन्ध में 'शृंगार' ग्रन्थ का यह कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है-

एक बूंद आया हक दिल से, तिन कायम किए थिर चर ।

इन एक बूंद की सिफत देखियो, सुख होसी कैसा सागरो बल ॥ (सि, 11/45)

इससे यह स्पष्ट होता है कि इल्म-ए-लदुन्नी, नुक्ता इल्म तथा तारतम ज्ञान तीनों ही एकार्थवाची हैं। इस प्रकरण में इसी की विशेषता दर्शायी गयी है।

**तिस वास्ते दुनी पैदा करी, दई दूर जुदागी जोर ।
हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर ॥१॥**

इस प्रकार, ब्रह्मसृष्टियों को माया का खेल दिखाने के लिये प्रियतम अक्षरातीत ने यह संसार बनाया। यद्यपि उन्होंने अपने से बहुत दूर करके वियोग अवश्य दिया है किन्तु सूक्ष्म रूप से वे हमारी प्राणनली (शाहरग) से भी अधिक निकट हैं। तारतम ज्ञान ने हमें इस रहस्य से अवगत कर दिया है।

**अर्स बका बीच ब्रह्मांड के, सुध चौदे तबकों नाहें ।
सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका माहें ॥२॥**

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में आज दिन तक किसी को भी यह पता नहीं था कि अखण्ड परमधाम कहाँ है? श्री राज जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा अज्ञानता के सभी आवरणों को दूर कर हमें दर्शा दिया कि अखण्ड परमधाम किस प्रकार हमारी प्राणनली से भी अधिक निकट है।

भावार्थ- यद्यपि बिना तारतम ज्ञान के यथार्थ बोध नहीं हो सकता, किन्तु ब्रह्मधाम को अपने हृदय में मानना और समस्त सृष्टि को सूक्ष्म रूप से अपने हृदयाकाश में मानने की परम्परा वैदिक साहित्य में विद्यमान है। इस दिशा में वैदिक मनीषियों का अन्वेषण सराहनीय है। अथर्ववेद के केन सूक्त तथा अथर्ववेदीय केनोपनिषद् में ब्रह्मधाम के विषय में कहा गया है। आठ चक्रों और नव द्वारों वाली ब्रह्मपुरी है, जिसमें आनन्दमयी ज्योति से आवृत हिरण्यमय (स्वर्णमय) कोश है। उसमें सत् + चिद् + आनन्द के त्रैत में तीन अरे-चिद्घन स्वरूप परब्रह्म, उनकी आनन्द शक्ति तथा सत् अंग-विद्यमान है। अत्यधिक तेज से युक्त परब्रह्म के यश से परिपूर्ण उस ज्योतिर्मय अपराजिता ब्रह्म पुरी में ब्रह्म विराजमान है।

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पुरयोध्या ।

तस्यां हिरण्यमः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥

तस्मिन् हिरण्ये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते ।

तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद्वै ब्रह्मविदो (विदुः) ॥

प्रभाजमानां हरिणीं यंशसा संपरीवृताम् ।

पुरं हिरण्ययीं ब्रह्म विवेश अपराजिताम् ॥ (अथर्ववेद 10/2/31-33)

यद्यपि ब्रह्मपुरी नश्वर जगत से परे है किन्तु उसे अपने हृदय मन्दिर में मानने की भावना 'हक नजीक सेहेरग से' के पथ पर चलने की भांति प्रतीत होती है। सामवेदीय छान्दोग्योपनिषद् में तो हृदयाकाश में ब्रह्म सहित अनन्त सृष्टि को भी विद्यमान कह दिया गया है।

अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्
अनन्तराकाशस्तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं तद्वाव विजिज्ञासितव्यमिति ।
अयमाकाशस्तावानेषोऽन्तर्हृदयः आकाश उभे अस्मिन्द्यावापृथिवी अन्तरेव
समाहिते । उभावग्निश्च वायुश्च सूर्याचन्द्रमसाबुधौ विद्युन्नक्षत्राणि ।
यच्चास्येहास्ति यच्च नास्ति सर्वं तदस्मिन् समाहितमिति ॥

छा. उ. (प्र. 8/4, 5)

अर्थात् उदर के ऊपर जो हृदय देश है, उसके बीच में जो गर्त है, उसमें कमल के आकाश वेश्म अर्थात् अवकाश रूप एक स्थान है। उसके बीच में जो सर्वशक्तिमान परमात्मा एक रस व्यापक है, उसमें ध्यान करने पर मिल जाता है। हृदयाकाश में सूर्य, पृथ्वी, अग्नि, चन्द्र, नक्षत्र आदि जितने दिखने वाले और न दिखने वाले पदार्थ हैं, वे सभी उसी की सत्ता में स्थित हैं।

जाहेरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान ।

हक छोड़ नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान ॥३॥

संसार के जीवों की दृष्टि बहिर्मुखी होती है जो सात आकाशों से परे नहीं जा पाती। सच्चिदानन्द परब्रह्म जो प्राणनली से भी अधिक निकट है, उन्हें छोड़कर वे नश्वर एवं जड़ निराकार को ही परमात्मा मानकर उसकी भक्ति करते हैं।

भावार्थ- यदि तारतम ज्ञान का प्रकाश न हो और युगल स्वरूप की धारणा न की जाय तो मात्र अपने हृदय में ज्योति बिंदु की धारणा करने पर परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं हो सकता। क्योंकि हृदय में ध्यान करने की परम्परा तो सृष्टि के प्रारम्भ से ही रही है किन्तु परब्रह्म के धाम एवं स्वरूप का बोध न होने से सभी ने मात्र ज्योतिर्बिन्दु की ही धारणा की जिससे वे परब्रह्म के साक्षात्कार से वंचित रह गये। 'शबे मेयरज' नामक ग्रन्थ में सात आकाशों का वर्णन है जिनसे गुजरते समय मुहम्मद स. अ. व. व. को भिन्न-भिन्न दिव्य शक्तियों तथा पैगम्बरों का साक्षात्कार हुआ। वैदिक दर्शन के अनुसार सात आकाश इस प्रकार माने जा सकते हैं- १. पृथ्वी, जल आदि भूतों में व्याप्त आकाश, २. अणुओं से परे शुद्ध आकाश, ३. शब्द तन्मात्रा, ४. तमः अहंकार, ५. समष्टि महत् तत्त्व, ६. कारण प्रकृति एवं ७. मोहतत्त्व। कारण प्रकृति तथा मोहतत्त्व में अति सूक्ष्म-सा अन्तर है। पंचभूत मन, बुद्धि रूप अष्टावरण के ऊपर सात शून्य मानना जिसमें प्रत्येक का अलग-अलग विस्तार, रंग और ध्वनि हो, पौराणिक मान्यता है। वेद में इस प्रकार का कोई कथन नहीं है।

रूहें अर्स से उतरीं, बीच लैलत कदर।

तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर॥४॥

परमधाम से आत्मायें खेल देखने के लिये इस मोह सागर के अज्ञान रूपी अन्धकार (लैल-तुल-कदर) में अवतरित हुईं। उनमें श्यामा जी को प्रमुख बनाकर श्री राज जी ने भेजा।

ल्याए इलम लदुन्नी, खोली हक हकीकत।

खोले पट सब अर्सों के, हक दिन मारफत॥५॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने तारतम ज्ञान लाकर परब्रह्म का सत्य ज्ञान संसार में प्रकट किया। उन्होंने बेहद मण्डल तथा परमधाम के बोध में बाधक बने हुए अज्ञानजनित सभी आवरणों को हटा दिया तथा ऐसा अलौकिक ज्ञान दिया कि दिन के उजाले के समान परब्रह्म की पूर्ण पहचान हो गयी।

उतरे खेल देखन को, रूहें जिन के इजन।

सो दूढें हक सहूरसे, अर्स रूहें मोमिन॥६॥

जिस परब्रह्म के आदेश से माया का संसार देखने के लिये परमधाम की ब्रह्मात्माओं का अवतरण हुआ है, वे इस जगत् में चिन्तन के द्वारा अपने प्राणेश्वर को खोजने का प्रयास कर रही हैं।

**लेवें सब साहेदियां, हदीसे महंमद।
और आयतें कुरान की, सूरतें मगज सब्द॥७॥**

वे सभी धर्मग्रन्थों, मुहम्मद स.अ.व.व. की कही हुई हदीसों तथा कुर्आन शरीफ की आयतों में सांकेतिक रूप से कहे गये गुह्य रहस्यों की साक्षी लेकर प्रियतम को जानना चाहती हैं।

**लिखे आयतों हदीसों, हक के सुकन।
समझेगी सोई रूह, जाके असल अर्स में तन॥८॥**

यद्यपि कुर्आन मजीद की आयतों एवं हदीसों में परब्रह्म के ही वचन हैं, किन्तु इनके अर्थ को मात्र वे ब्रह्मसृष्टियां ही समझ सकती हैं जिनके मूल तन परमधाम में है।

भावार्थ- मुहम्मद स. अ. व. व. की कही हुई मात्र कुछ ही हदीसों हैं जो सत्य हैं। वर्तमान समय में बहुत सी ऐसी हदीसों भी हैं जिनके लेखन का मुहम्मद सल्ल. (साहब) से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। ये मान्य नहीं हो सकती।

**इसारतें और रमूजें, लिखे कई किस्से निसान।
सो ए पाओ तुम हदीसों, और आयतों कुरान॥९॥**

कुर्आन शरीफ की आयतों तथा हदीसों में कई कथानकों के माध्यम से संकेतों में परमधाम की गुह्य बातें लिखी हुई हैं, जिन्हें आप खोज सकते हैं।

**करें किताबें जाहेर, और खुलासे पुकार।
बिन मोमिन बिन लदुन्नी, करे सो कौन विचार॥१०॥**

धर्मग्रन्थों तथा पाक कुर्आन एवं हदीसों के कथनों का स्पष्टीकरण होने पर वे

पुकार-पुकार कर परमधाम एवं परब्रह्म की पहचान का संकेत देती हैं। तारतम ज्ञान का रसपान करने वाले ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा नहीं है जो सही दिशा में यथार्थ रूप से विचार कर सके।

ए और कोई बूझे नहीं, बिना अर्स के तन।

जो नूर बिलंद से उतरी, दरगाही रूहें मोमिन ॥११॥

जो ब्रह्मात्मायें परमधाम के आनन्द में मग्न रहने वाली है, जिनके मूल तन परमधाम में हैं और जो परमधाम से इस संसार में माया का खेल देखने के लिये आयी हैं उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी धर्मग्रन्थों के वास्तविक अभिप्राय को नहीं जान सकता।

नूर कुंजी आए पीछे, ईसे का अमल।

साल सत्तर ढाँप्या रह्या, आगूं चल्या महंमदी मिल ॥१२॥

वि. सं. १६७८ में सभी धर्मग्रन्थों के रहस्यों को प्रकट करने वाले तारतम ज्ञान का अवतरण हुआ। इसके बाद ७० वर्ष तक अर्थात् वि. सं. १७४८ तक श्यामा जी के तारतम ज्ञान के द्वारा जागनी कार्य होता रहा किन्तु श्री महामति जी के धाम हृदय का मारिफत स्वरूप ७० वर्ष तक अर्थात् वि. सं. १७४८ तक ढंपा रहा। इसके पश्चात् मारिफत सागर ग्रन्थ का अवतरण हुआ जिसने श्री महामति जी के धाम हृदय से परम सत्य (मारिफत) स्वरूप की पहचान करायी। इसके पश्चात् सभी ने हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी को अपना सर्वस्व (मारिफत स्वरूप) मान लिया।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण का आशय तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलने से है जिसमें श्री कुलजुम स्वरूप का अवतरण तथा ब्रह्मात्माओं की जागनी दोनों ही सम्मिलित है। यद्यपि सागर और श्रृंगार ग्रन्थों के रूप में परमधाम की मारिफत का ज्ञान अवतरित हो चुका था किन्तु वि. सं. १७४८ में मारिफत सागर के माध्यम से ही कुर्आन की साक्षी लेकर सबने यह जाना कि मेहमत साहिबुज्जमाँ स्वरूप श्री महामति जी का हृदय ही वह मारिफत सागर है जो मूल मिलावे में विराजमान है। इसके पूर्व सभी सुन्दरसाथ ने उनके मात्र हकीकत के स्वरूप की ही पहचान की थी कि इस तन में हमारे प्राणवल्लभ अक्षरातीत अपने आवेश स्वरूप से लीला कर रहे हैं। यद्यपि रास से कियामतनामा तक के सभी ग्रन्थों में यह बात दर्शायी गयी है कि श्री महामति जी के धाम

हृदय में अक्षरातीत प्रत्यक्ष रूप से लीला कर रहे हैं किन्तु उनके मारिफत स्वरूप को कोई भी पहचान नहीं पाया था। यहां तक कि 'श्रृंगार' ग्रन्थ/के निम्न कथन से भी पूर्ण पहचान नहीं हो पायी थी -

तुम ही उतर आये अर्स से, इत तुम ही कियो मिलाप ।

तुम ही दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप ॥ (श्रृं. 23/31)

वि. सं. १७४८ में मारिफत सागर के अवतरण के पश्चात् सबने यह मान लिया कि परमधाम के मारिफत स्वरूप और श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान मारिफत स्वरूप में किसी भी प्रकार भेद नहीं है। इसकी साक्षी इसी ग्रन्थ की निम्न चौपाई में व्यक्त है -

दरम्यान जो साया कही, आगे ऊग्या दिन ।

सूरज दिल मुहम्मद का, हुआ नूर रोसन ॥ (मा. सा. 17/94)

जागनी लीला में अनेक प्रसंग ऐसे भी आये जब सुन्दरसाथ का विश्वास डगमगाने लगा। इसका विकट रूप आकोट में प्रकट हुआ जिसकी ज्वाला को शान्त करने के लिये स्वयं श्री जी ने सबको प्रबोधित किया। यहां तक कि अविश्वास की कुछ गन्ध पन्ना जी तक भी आ गयी, जिसके कारण किरंतन के 'साथ जी मैं ऐसी तुम्हारी गुन्हेगार, साथ जी सुनो सिरदारो मुझ जैसी ना कोई दुष्ट' जैसे प्रकरण अवतरित हुए किन्तु वि. सं. १७७४ के पश्चात् ऐसी स्थिति नहीं रही। इसे ही श्री जी के मारिफत स्वरूप का ७० वर्ष तक ढंपे रहना कहा गया है।

आए हुआ इत रोसन, ऊपर अपनी सरत।

अव्वल आखिरी इलमें, जाहेर करी कयामत ॥ १३ ॥

इस प्रकार, अपने समय पर मारिफत सागर का अद्वितीय ज्ञान प्रकट हुआ। श्री प्राणनाथ जी ने प्रारम्भिक समय में अवतरित होने वाले कुर्आन मजीद के ज्ञान की साक्षी देकर तथा श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान द्वारा मारिफत की पहचान देकर कियामत के समय को स्पष्ट कर दिया।

भावार्थ- कियामत का तात्पर्य है, पुनर्निर्वाण काल में उस दिव्य ज्ञान का अवतरण, जिसे आत्मसात् कर लेने वाला अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होता है।

**एही बका अर्स की, हक करें हिदायत।
खोली खिलवत गैब की, हक की वाहेदत॥१४॥**

अखण्ड परमधाम की इन आत्माओं को ही प्रियतम अक्षरातीत अपने कुलजम स्वरूप से प्रबोधित कर रहे हैं। इनके लिये ही प्रियतम ने परमधाम की उस एकदिली (एकत्व) तथा खिलवत का विवरण दिया है, जो आज दिन तक अति गुह्य रहा था।

**लिख्या सिपारे आठमें, मोमिनों की हकीकत।
हुई ढील फजर वास्ते, करी जाहेर गैब खिलवत॥१५॥**

कुर्आन शरीफ के आठवें सिपारे में ब्रह्मात्माओं की पहचान दी गयी है। मारिफत सागर के अवतरण होने में देर इसलिये हुई क्योंकि इसके पूर्व अति गोपनीय खिलवत, परिक्रमा, सागर तथा श्रृंगार ग्रन्थों का अवतरण कर के ही रात्रि के अन्धकार को दूर किया जा सकता था, जिससे प्रातःकाल का उजाला होना सम्भव था।

भावार्थ- विरासत यहूदियों को मिली मुस्लिम मुतेजिर रहे। इनका परिचय इनका ज्ञान है परिवार नहीं। पारः (८) व लौ अन्नना सूरः अनआम (६) आयत १३३-१३४ “व रब्बुल गनिप्पु...सा अन्तुम विमुअजिजीन” अर्थात् तुम्हारा परवरदिगार बेपरवाह व रहमत वाला है... तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे तुम्हारा (जाबर्सी) उत्तराधिकारी बनाए। जैसा तुम्हें दूसरे नस्लों से उत्पन्न किया है।

**खोल बका अर्स मोहोलात, और बाग हौज जोए।
मोमिन देखें जिमी जंगल, पसु पंखी सोए॥१६॥**

इन ग्रन्थों के अवतरित होने से अखण्ड परमधाम के महल, बाग, हौज कौसर ताल, यमुना जी, धरती, वन तथा उनमें विहार करने वाले पशु-पक्षियों की अनुपम शोभा को सुन्दरसाथ चितवनी के माध्यम से देखने लगे।

**सूरत आतेना-कलकौसर, लिखी आम सिपारे।
सो आए देखो तुम महंमदी, खोले नूर पार द्वारे॥१७॥**

कुर्आन के तीसवें पारे इन्ना आतेना सूरत में हौज कौसर का वर्णन किया गया है। हे साथ जी! आप श्री प्राणनाथ जी के दर्शाये हुए मार्ग पर चलने वाले हैं। आप इस आयत को देखिए जो अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत के धाम का वर्णन करती है।

भावार्थ- कुर्आन के पा. ३० सू. १०८ आ. १-३ “ इन्ना अतैनाकल कौसर इनन शनि अक हुवल अबतर”। अिन्ना अऽतैना कल् - कौसर (१) फसल्लि लिरब्बिक बन्हर (२) (३) अिन्न शानिअक हुवल - अबतर ।

अर्थात् हमने आपको कोसर (अता) प्रदान किया। सो अब अपने परवरदिगार की नमाज पढ़ और कुर्बानी दे। बेशक तेरे दुश्मन का कोई (नाम लेने वाला) न रहेगा।

**कह्या होसी जाहेर, अर्स रूहें मोमिन।
उतरे नूर बिलंद से, करें सब अर्स रोसन॥१८॥**

कुर्आन में कहा गया है कि परमधाम के ब्रह्ममुनि संसार में प्रकट होंगे। वे परमधाम से उतरे हैं, इसलिये वे ही निजधाम के ज्ञान को संसार में प्रकाशित करेंगे।

**जो कह्या महंमदे, लैल मेयराज माहीं।
सोई कौल रूहअल्ला ने, कहे रूहों के ताई॥१९॥**

पार: ३० अम्म सूरत कद्र ६७ आयत ४ प “तन ज्जलुल मलाइकतु व रूहु फीहा बिइज्जिरब्बिहिम मिन” कुल्लि मे मुहम्मद स. अ. व. व. ने दर्शन की रात्रि में होने वाले प्रत्यक्ष अनुभव का जो वर्णन किया है, हूबहू वैसा ही वर्णन सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने भी सुन्दरसाथ से किया है।

**जब इन दोऊ मरदों ने, मिल साहेदी दई।
तब मेरे दिल अर्स में, जरा सक ना रही॥२०॥**

जब इन दोनों स्वरूपों मुहम्मद सल्ल. (साहब) तथा अहमद (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) ने मुझे परमधाम की साक्षी दी, तब मेरे धाम हृदय में अपने धाम के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का संशय नहीं रहा।

**तो इन रूहों मोमिनो, दिल अर्स केहेलाया।
जो हकइलम लदुन्नी, मेरे दिल आगूं ही आया॥२१॥**

इस प्रकार पहले मेरे हृदय में प्रियतम अक्षरातीत का दिया हुआ ज्ञान खिलवत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार के रूप में अवतरित हुआ, तत्पश्चात् ब्रह्मात्माओं ने उसे ग्रहण कर लिया और चितवनी में डूब गये जिससे उनके दिल को धाम कहलाने की शोभा

प्राप्त हुई।

तब कहा हुई फजर, ऊग्या हक बका दिन।
तब सूरज मारफत के, करी गिरो रोसन॥२२॥

इसे ही प्रातःकाल होना कहते हैं क्योंकि अक्षरातीत के युगल स्वरूप तथा परमधाम की शोभा का ज्ञान अवतरित हो जाने से अज्ञान-रूपी रात्रि का अन्धकार समाप्त हो गया और दिन का उजाला फैल गया। इसके पश्चात् मारिफत के ज्ञान-रूपी सूर्य श्री प्राणनाथ जी की महिमा को ब्रह्ममुनियों ने संसार में प्रसारित किया।

कौल कहे सो सब हुए, और भी कहा होत।
रूहअल्ला ल्याए इलम, भरे जिमी आसमान जोत॥२३॥

श्री राज जी ने परमधाम में जो कुछ भी कहा था, वह सब सत्य सिद्ध हुआ है और आगे भी सत्य ही होगा। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी जो तारतम ज्ञान लाये हैं, उसकी ज्योति धरती से लेकर आकाश तक सर्वत्र फैली हुई है।

रूहअल्ला अर्स अजीम से, नूर आला ले आए।
सो ए नूर कोई क्यों कर, सकेगा छिपाए॥२४॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी परमधाम से सर्वोत्तम निधि के रूप में तारतम ज्ञान लेकर संसार में आये हैं। ऐसी स्थिति में यह सम्भव ही नहीं है कि कोई इसे छिपा ले।

हवा अंधेरी बीच रात के, ऊग्या मारफत सूर।
भरे जिमी और आसमान, दुनियां पूर नूर॥२५॥

मोह-रूपी अज्ञानता के अन्धकार से परिपूर्ण इस संसार में परब्रह्म की पूर्ण पहचान कराने वाला सर्वोत्तम ज्ञान का सूर्य उग गया है जिसके दिव्य प्रकाश की आभा से धरती से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण संसार जगमगा उठा है।

ऐसी करी बीच आलम, रूहअल्ला के इलम।
मास्या कुली दज्जाल को, जो करता था जुलम॥२६॥

श्यामा जी के तारतम ज्ञान ने ऐसा अद्भुत कार्य किया कि उसने उस अज्ञानता के राक्षस कलियुग (दज्जाल) को ही नष्ट कर दिया जो सम्पूर्ण मानव जाति को अज्ञानता

में भटका कर भयंकर अत्याचार किया करता था।

**फुरमाया सो सब हुआ, जो कछू कहा महंमद।
तो जो किया रूहअल्लाने, दज्जाल को रद॥२७॥**

मुहम्मद स. अ. व. व. ने कुर्आन शरीफ में जो कुछ भी कहा है, वह पूर्णतया सत्य सिद्ध हुआ है। उनकी भविष्यवाणी के अनुसार श्यामा जी ने तारतम ज्ञान से दज्जाल (अज्ञान) को नष्ट कर दिया है।

**कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित होए हुए एक दीन।
ईसा करसी हक इलमें, आवसी सबों आकीन॥२८॥**

कुर्आन शरीफ का चमत्कार तथा नबी की नुबुवत की सत्यता इसी कसौटी में है कि समस्त संसार एक परब्रह्म की उपासना के मार्ग पर चलने लगे। ईसा रूहुल्लाह श्यामा जी (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) तारतम ज्ञान के द्वारा समस्त संसार को एक परब्रह्म पर विश्वास दिलायेंगे।

भावार्थ- स्वप्न की बुद्धि होने से यह संसार पूर्ण रूप से एक मत नहीं हो पायेगा। प्रलय के पश्चात् योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय के दिन ही समस्त संसार एक परब्रह्म पर विश्वास लायेगा।

**फुरमाया सो सब हुआ, ऊपर अपनी सरत।
कौल रसूल के फिरवले, आई ए आखिरत॥२९॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने जो कुछ भी कहा था वह अपने समय पर पूर्णतया सत्य सिद्ध हुआ। अब उनके वचनों के प्रसार से सबको ऐसा लगता है कि यही कियामत का समय है।

**कौल किए हक हादीने, माहिं खिलवत रूहन।
सो दिल महंमद मोमिनो, हुआ पूर रोसन॥३०॥**

मूल मिलावे में श्री राज जी और श्यामा जी ने ब्रह्मात्माओं को जागृत करने का जो वचन दिया था उसे श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में उन्होंने पूर्ण कर दिया है। अब मेहमत साहिबुज्जमाँ स्वरूप श्री महामति जी तथा ब्रह्मसृष्टियों का हृदय ज्ञान के प्रकाश से जगमगा रहा है।

एक गिरो रूहें अर्स से, हुकमें आई जो इत।
जिन ऊपर रसूल, ल्याए किताबत॥३१॥

परब्रह्म के आदेश से ब्रह्मसृष्टियों का जो समूह परमधाम से माया का खेल देखने के लिये आया हुआ है, उन्हें साक्षी देने के लिये मुहम्मद साहब कुर्आन पाक लेकर आये हैं।

भावार्थ- हिन्दू धर्मग्रन्थों वेद, उपनिषद्, पुराण संहिता तथा माहेश्वर तन्त्र आदि में परमधाम तथा अक्षरातीत की साक्षी थी, किन्तु कतेब ग्रन्थों तौरैत, जंबूर और इंजील में नहीं थी। इसलिये समस्त विश्व के लोगों को परमधाम तथा श्री जी की पहचान देने के लिये कुर्आन का अवतरण आवश्यक था।

तिन रूहों के बीच में, रूह अल्ला सिरदार।
सो एलिखी माहें हदीसों, जो कही परवरदिगार॥३२॥

उन आत्माओं में श्यामा जी की प्रमुखता है। यह बात हदीसों में लिखी है जो परब्रह्म ने मुहम्मद साहब के माध्यम से लिखवाई है।

सो ए करी जाहेर, रसूलें इत आए।
सोई रूहअल्ला सुकन, ल्याए मोमिनों बताए॥३३॥

मुहम्मद स. अ. व. व. ने संसार में आकर परमधाम की इन बातों को प्रकट किया। अहमद अर्थात् श्यामा जी (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) ने ठीक वैसी ही बातें सुन्दरसाथ को बतायीं।

सो तो आया हक का, लदुन्नी इलम।
लिख्या दिल अर्स पर, मोमिनों बिना कलम॥३४॥

अब श्री राज जी का तारतम ज्ञान संसार में अवतरित हो गया है। ब्रह्मात्माओं का हृदय ही प्रियतम का धाम है, जिस पर बिना लेखनी के ही सबकुछ लिखा हुआ है अर्थात् मूल सम्बन्ध के कारण उन्हें धाम का सब कुछ सरलता पूर्वक ज्ञान हो जाता है।

भावार्थ- “बिना कलम के लिखा जाना” एक मुहाविरा है जिसका आशय

है- अति सरलता से जान लेना। जीव सृष्टि संशयग्रस्त होने के कारण परमधाम के ज्ञान पर पूर्णरूप से विश्वास नहीं करती है। अतः उसे बार-बार समझाना पड़ता है किन्तु ब्रह्मसृष्टि संकेत मात्र से सबकुछ समझ जाती है। इसे ही आलंकारिक भाषा में बिना कलम (समझाये ही) के ही दिल पर लिखा हुआ कहा गया है।

**सो ए लिख्या कुरान में, बाईसमें सिपारे।
लिखियां आयतां जंजीरां, बयान न्यारे न्यारे ॥३५॥**

यह बात कुर्आन मजीद के बाइसवें सिपारे में लिखी हुई है। अलग-अलग कथानकों (किस्सों) के रूप में अलग-अलग दो आयतों में यह तथ्य लिखा हुआ है। जिनको इल्म दिया गया, वे जानते हैं। जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नाबिल है। वह हक है और गालिब बारीक से काबिल रास्ता बताता है। तारतम ज्ञान के प्रकाश में उनकी कड़ियों को जोड़ने पर उपरोक्त कथन की सत्यता प्रमाणित होती है।

भावार्थ- कुर्आन के सि. २२ सू. सबा ३४ आ. ६-७ “व यरल्लजीन अतुल-इल्मल्लजी.... इन्नकुम् लफी खलूकिन जदीदिन” अर्थात् जिनको इल्म दिया गया है वे जानते हैं जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नाजिल है। वह हक है और गाजिब तारीफ के काबिल रास्ता बताता है।

**जो देखेगा दिल दे, आयतां जंजीरां मिलाए।
माणे मगज मुसाफ के, होसी नूर रोसन ताए ॥३६॥**

यदि कोई सुन्दरसाथ अपना हृदय प्रियतम अक्षरातीत को समर्पित करके कुर्आन की आयतों के प्रसंगों (कड़ियों) को मिलायेगा तथा तारतम ज्ञान की दृष्टि से चिन्तन करेगा तो उसके हृदय में कुर्आन शरीफ के गुह्य रहस्यों का दिव्य ज्ञान प्रकट होगा।

**ऐसा अब लग कबहूँ, हुआ नहीं रोसन।
सो हक हादी जानत, या जानें रूहें मोमिन ॥३७॥**

आज दिन तक कभी भी किसी को इस कुलजुम स्वरूप जैसा ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है। इसे या तो श्री राज श्यामा जी जानते हैं या परमधाम के ब्रह्ममुनि।

जब हक का इलम, हुआ जाहेर ए।

तिन इलमें कायम करी, दुनी फानी हुती जे ॥३८॥

जब प्रियतम अक्षरातीत का तारतम ज्ञान संसार में प्रकट हुआ तो इस अलौकिक ज्ञान ने जन्म-मरण के चक्र में भटकने वाले जीवों के लिये अखण्ड मुक्ति का द्वार खोल दिया।

**ए सुकन बातून जिन को, दिल बीच सोहाए।
सो सुनके तबहीं, एक दीनमें आए ॥३९॥**

यह गुह्य रहस्यमयी बात जिसके हृदय को अच्छी लगे, चाहे वह किसी भी पन्थ का अनुयायी क्यों न रहा हो, उसे उसी क्षण श्री प्राणनाथ जी के द्वारा दर्शाये गये मार्ग का अवलम्बन कर लेना चाहिए।

**बका अर्स हक सूरत, हुआ नूर रोसन।
सो ए सरत जाहेर हुआ, फरदा रोज का दिन ॥४०॥**

तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलाने से अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत की शोभा का ज्ञान ऐसे समय पर प्रकट हुआ है जिसके लिये कुर्आन में पहले से ही भविष्यवाणी है कि फरदा रोज अर्थात् ११वीं सदी बीतने के पश्चात् १२वीं सदी में कियामत होगी जिसमें परमधाम के ज्ञान के साथ स्वयं परब्रह्म को आना है।

**जो कलाम अल्लाह में, फुरमाई फजर।
सो खुली हक इलमें, रूह बातून नजर ॥४१॥**

कुर्आन पाक में लिखा है कि १२वीं सदी में इल्में लदुन्नि से अज्ञान-रूपी रात्रि का नाश होगा तथा ज्ञान का प्रकाश फैलने से प्रातः काल होगा। तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्मात्माओं की अन्तर्दृष्टि खुल गयी।

भावार्थ- कुर्आन शरीफ के पा. ३० अम्म सूरत फज्र आयत १-४ “ वलफज्रि (१) वलयलिन अशूरिन् (२) न्वश्शफूइ वल्वत्त्रि (३) वल्लैलि इजा यसूरि (४)” अर्थात् फज्र की कस्म दस रातों की और जुप्त व ताक की और रात जब जाने लगे।

**हुआ खासलखास जो, रूह मोमिनों मेला।
बहत्तर से जुदा कहा, नाजी फिरका अकेला ॥४२॥**

तारतम ज्ञान के प्रकाश में अति विशिष्ट कही जाने वाली ब्रह्मसृष्टियों की

सामूहिक जागनी हुई। ब्रह्मात्माओं का यह समूह ही अखण्ड सुख का रसपान करने वाला (नाजी फिरका) कहलाता है। इसे शेष बहत्तर फिरकों से अलग समझना चाहिए।

**जिन को लिखी आयतों हदीसों, हिदायत हक।
हकें इलम अपना, तिन को दिया बेसक।।४३।।**

आत्माओं के इसी समूह के लिये कुर्आन मजीद की आयतों तथा हदीसों में परब्रह्म की ओर से निर्देश लिखे हैं। श्री राज जी ने इन्हीं के लिये संशय रहित ज्ञान के रूप में श्री कुल्जुम स्वरूप प्रदान किया है।

**सोई मोमिन अर्स के, उतरे नूर बिलंद।
ताको टाली हक इलमें, झूठ फरेबी फंद।।४४।।**

ये परमधाम के वही ब्रह्ममुनि हैं जो माया का खेल देखने के लिये संसार में आये हैं। प्रियतम अक्षरातीत ने इन्हें तारतम ज्ञान की अनमोल निधि देकर मिथ्या माया के फन्दों से दूर रखा है।

**हुई मोमिनों को पूरन, तौहीद की मदत।
सो लेवें दुनियां मिने, हक अर्स लज्जत।।४५।।**

इन ब्रह्मात्माओं के पास स्वलीला अद्वैत परमधाम का पूर्ण ज्ञान है, जिसकी सहायता से ये नश्वर संसार में रहकर भी परमधाम तथा अक्षरातीत के सुखों का रसास्वादन करते हैं।

**नाहीं मोमिनों कबहूँ, दुनियां का दिमाक।
जाको हक इलमें, किए सबों को पाक।।४६।।**

इन सभी ब्रह्ममुनियों को श्री राज जी के तारतम ज्ञान ने अति पवित्र कर दिया है, इसलिये इन्हें संसार के ऐश्वर्य, पद, प्रतिष्ठा, रूप आदि का अहंकार नहीं सताता।

**ए जो मोमिन हकीकी, सो कहे अर्स दिल।
सो तो पाक हमेसगी, रूहें अर्स निरमल।।४७।।**

परमधाम के ये ब्रह्ममुनि सर्वदा ही सत्य का अनुसरण करने वाले, अति पवित्र

भावों वाले तथा निर्मल हृदय के होते हैं। अतः इनके हृदय को प्राणेश्वर अक्षरातीत का धाम कहते हैं।

**सिपारे सत्तईस में, लिख्या नीके कर।
सो लीजो तुम मोमिनों, बीच अर्स दिल धर।।४८।।**

कुर्आन शरीफ के सताइसवें सिपारे में यह बात बहुत अच्छी प्रकार से लिखी हुई है। हे साथ जी! आप इस तथ्य को अपने धाम हृदय में बसा लीजिए।

भावार्थ- कुर्आन के पारा : २६ सू. जारियात आ. ३५ में लिखा है कि “फअखरज्ना मन् कान फीहा मिनल मुअमनीन” अर्थात् जो मोमिन थे उनको निकाल लिया गया (संसार की अपवित्रता से) “व्व जक्किर् फइन्नज्जिकूरा मुअ्मिनीन” अर्थात् नसीहत करते रहो क्योंकि नसीहत मोमिनों को फायदा देती है। अर्थात् उससे हृदय पवित्र होता है।

**अर्समें सूरत मोमिनों, जो कही हैं असल।
तिन पाया बीच नासूत के, बका हाहूती फल।।४९।।**

परमधाम में ब्रह्मात्माओं के मूल तन परात्म हैं। इन्होंने तारतम ज्ञान के चिन्तन तथा चितवनी के द्वारा इस मायावी संसार में रहकर भी रंगमहल के अखण्ड आनन्द का रसास्वादन किया है।

**और गिरो फरिस्तन की, मुतकी परहेजगार।
ए भी आए लैलत कदर में, तीनों तकरार।।५०।।**

इनके अतिरिक्त एक और सृष्टि ईश्वरीय (फरिस्तों की) है। ये संयम तथा ज्ञान के मार्ग पर चलती हैं। लैल-तुल-कदर के तीनों तकरारों (ब्रज, रास एवं जागनी) में ये भी ब्रह्मसृष्टियों के ही साथ रही हैं।

**आम खलक जो तीसरी, पैदा जो जुलमात।
सो अटके वजूद में, पकड़े पुल-सरात।।५१।।**

तीसरी सृष्टि जीव सृष्टि है जो मोह सागर से उत्पन्न हुई है। यह सृष्टि

कर्मकाण्ड के मार्ग पर चलती है तथा शरीर एवं इन्द्रियों से होने वाली भक्ति से आगे नहीं बढ़ती है।

**रूहें दिल हकीकी, कहे अर्स में तन।
अर्स जिनों के दिल कहे, सोई रूहें मोमिन।॥५२॥**

ब्रह्मात्माओं का हृदय पूर्णरूप से सत्य का अनुगामी होता है। इनके मूल तन परमधाम में हैं। ये वही ब्रह्मसृष्टियां हैं, जिनके हृदय को अक्षरातीत का धाम कहा जाता है।

**लिखी इनों की बुजरकी, मुसाफ माहें सिफत।
बीच महंमद की हदीसों, लिखी बड़ी इज्जत।॥५३॥**

कुर्आन पाक में इन ब्रह्मात्माओं की बहुत अधिक महिमा गायी है और प्रशंसा की गयी है। मुहम्मद सल्ल. (साहब) की हदीसों में भी इनकी बहुत अधिक गरिमा का बखान किया गया है।

भावार्थ- कुर्आन मजीद के पा. २७ सूर: वाकिया ५६ आयत १०-१३ “वस्साबिकूनस्-साबिकून (१०) अुलाइकल् मुर्करबून (११) फी जन्नतिन्नर्मीमि (१२) सुल्लतुम्-मिन्नल्-अव्वलीन(१३)” अर्थात् जो आगे बढ़ने वाले हैं वे आगे ही बढ़ने वाले हैं वही मुर्करब है नेमत की बहिश्त में वे बहुत से ताअगर्ल लोगों मे से होंगे॥

**महामत कहे ए मोमिनो, तुमें करी हिदायत हक।
और कहूं फिरके पैगंमरो, जो चलाए हुए बुजरक।॥५४॥**

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! आपको तो तारतम ज्ञान के द्वारा स्वयं प्रियतम अक्षरातीत ही सिखापन देते हैं। अब मैं उन पैगम्बरों के विषय में बता रहा हूँ जो अपने-अपने पन्थ चलाकर श्रेष्ठ कहलाते हैं।

॥प्रकरण ॥ २ ॥चौपाई ॥ १३३ ॥

बाब फिरकों का

इस प्रकरण में अलग-अलग पन्थों का विवरण दिया गया है।

**फिरके नारी तो कहे, ए जो बीच कुरान।
बहत्तर बाटे होए के, सबे हुए हैरान॥१॥**

कुर्आन में दोजख (नरक) में जाने वाले ७२ फिरकों का वर्णन है। इनमें भी बहत्तर भाग हो गये और सभी अशान्त हैं।

**सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस।
जल थल सबों में एकह्या, याको पूजे कर जगदीस॥२॥**

कुर्आन के २४वें सिपारे में इब्लीश की सूरत (स्वरूप) का वर्णन किया गया है। जल-थल सबमें इसकी उपस्थिति है। संसार के लोग इसी को परमात्मा मानकर इसकी भक्ति करते हैं।

भावार्थ- कुर्आन सि. २४ सूरत हामीम अस सगदा ४१ आयत २५-२६ “व कय्यजना लहुम कुरनाअ फजय्यून लहम् मा बैन औदीहिम् व मा खल्फहुम... इन्नहुम् कानू खासिरीन (२५)” और “व कालल्लजीन कफरु ला तसमअू लिहानल्कुरआनि वल्गौ फीहि लअल्लकुम् तग्लिबून (२६)” अर्थात् हमने उनका हम नसीन साथी मुकरर कर दिया था, तो उन्होंने अगले पिछले आमाल उन की दिखाए इंसानों की जमाअतें जो उनसे पहले गुजरी है। उन पर खुदा का वायदा पूरा हुआ, बेशक वह नुकसान उठाने वाले हैं और काफिर कहने लगे- इस कुर्आन को सुना ही न करो, शोर मचा दिया करो। ताकि गालिब रहो। (यही शैतान की निशानियां है जिनसे संसार को नुकसान है।)

**कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल।
सो नेहेरें जंगल से क्यो चलें, ए फिरके चले इन हाल॥३॥**

कुर्आन शरीफ में कहा गया है कि मोह सागर का दरिया है जिसके किनारे एक वन है। उस वन में दज्जाल की बहुत सी नहरें निकलती हैं। यहां प्रश्न होता है कि वनों से नहरों के निकलने का क्या अभिप्राय है? वस्तुतः संसार के भिन्न-भिन्न मत-पन्थ इसी

प्रकार चल रहे हैं।

भावार्थ- मोह (अज्ञान)-रूपी सागर से संसार-रूपी वन की उत्पत्ति हुई है। इस वन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और तृष्णा रूपी बड़े-बड़े भयानक जीव विचरण करते हैं। इस संसार-रूपी वन को सिंचित करने वाला वह अज्ञान है जिसकी बहुत सी नहरें (पन्थ) निकल कर उसे अन्धकार में भटकाये रखती हैं।

चौपाई २ में जिसे जगदीश कहा गया है, वह अज्ञान ही है, क्योंकि यह सम्पूर्ण सृष्टि मोहमयी कही गयी है। 'जगत मोहात्मकं प्राहुः अव्यक्ताद् व्यक्तं संज्ञकं' महाभारत का यह स्पष्ट कथन है। बौद्ध मत के क्षणिकवादी, शून्यवादी इसी निराकार को सर्वोपरि मानते हैं, जो जड़ है। उसी से प्रकट होने वाले सत्व, रज तथा तम के बन्धन में समस्त जगत है। इसलिये इसे दज्जाल के फन्दे में रहने वाला वर्णित किया जाता है।

**ए जो कहे बनी-आदम, सब पूजत डाली हवा।
कह्या निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा ॥४॥**

यह समस्त मानव जाति जड़ निराकार को ही परमात्मा मानकर पूजती है। समस्त संसार उस दाब्ह- तुल- अर्ज जानवर के समान है, जिसके पास न तो विवेक चक्षु हैं, न हृदय की कोमलता। वह धर्माचरण से दूर रह कर विषय भोगों को ही प्राथमिकता देता है। उसका विवाह उस अज्ञान-रूपी इब्लीस (शैतान, कलियुग) से हुआ है।

भावार्थ- माया (प्रकृति) के सूक्ष्मतम् स्वरूप मोह सागर या निराकार को ही परमात्मा मानना बहुत बड़ी भूल है। साकार वन रूप यह जगत है जो निराकार मोह सागर से उत्पन्न हुआ है। वस्तुतः परब्रह्म तो साकार-निराकार दोनों से भिन्न है।

**कह्या गधा जो दज्जाल का, ऊँचा लग आसमान।
एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान ॥५॥**

दज्जाल को जिस गधे पर सवार बताया गया है, वह आकाश के समान ऊँचा है। सबके ऊपर यही मोह तत्व निराकार है, जिससे यह संसार पैदा हुआ है।

भावार्थ- गधा अज्ञानता का प्रतीक है। गधे को दज्जाल की सवारी इसलिये माना गया है क्योंकि वह अज्ञान का पर्याय है। यह सम्पूर्ण जगत उसी मोह रूप अज्ञान (निराकार) से उत्पन्न हुआ है।

तो दुनियां ताबें दज्जाल के, पातसाह सैतान दिलों पर।

दुनी सिफली अबलीस बिना, एक दम न सके भर ॥६॥

इस संसार के सभी प्राणी उसी अज्ञान (कलियुग) रूपी शैतान के अधीन हैं। सबके हृदय पर इसी का शासन चलता है। जिस शैतान मन के वशीभूत यह संसार है, वह एक पल भी उसके बिना कुछ भी नहीं कर सकता है।

भावार्थ- मन सभी इन्द्रियों का राजा है। इन्द्रियां बहिर्मुखी होने के कारण विषयों की ओर भागती हैं। मन विषयों का सेवन करते-करते इतना अभ्यस्त हो जाता है कि उनके बिना तड़पने लगता है। उसकी यही प्रवृत्ति जीव को परमात्मा से विमुख कर जन्म-मरण के चक्र में भटकाये रखती है। यही कारण है कि विषयोन्मुख मन, जो अज्ञान से ग्रसित रहता है, जीव के लिये शैतान या दज्जाल के समान कहा गया है। यह भी ध्यान देने योग्य विशेष बात है कि मन एवं इन्द्रियों के संयोग के बिना कोई भी कार्य नहीं हो सकता।

राह अंधेरी रात की, सब की चली सरीयत।

बैठा दिल पर दुस्मन, लेने न दे हकीकत ॥७॥

अज्ञानता की अन्धकार भरी रात्रि में सबने कर्मकाण्ड का मार्ग अपना रखा है। सबके हृदय पर अज्ञान-रूपी शैतान बैठा हुआ है जो किसी को भी यथार्थ सत्य ग्रहण करने नहीं देता।

ए जो बीच दुनी के, जाहेर परस्त जेता।

तिन फिरकों सबों का, खुलासा एता ॥८॥

संसार में जितने भी बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले लोग हैं वे कर्मकाण्ड (शरीयत) के ही मार्ग पर चलते हैं। उनमें प्रचलित सभी मत-पन्थों की यही वास्तविकता है।

जो हुए पैगंमर रात के, सुरिया न उलंघी किन।

जो जेते लग पोहोंचिया, सोई पैगाम दिए तिन ॥९॥

इस अज्ञान भरी रात्रि में जितने भी अवतार (पैगम्बर) हुए हैं, कोई भी ज्योति स्वरूप आदि- नारायण को पार नहीं कर सका है। जिसकी अनुभूति जहां तक हुई, उसने संसार को उतना ही संदेश दिया।

**पैगंमर या और कोई, जो हुए रात में बुजरक।
किन नूर पार पोहोंच के, ले खबर न दई बका हक ॥१०॥**

अज्ञानता की रात्रि में चाहें वे अवतार (पैगम्बर) हों या अपनी कठोर साधना द्वारा महापुरुष कहलाने वाले हों, कोई भी आज दिन तक अक्षर ब्रह्म से परे जाकर अक्षरातीत तथा परमधाम की पहचान नहीं दे सका है।

**तरफ न कही किन ने, तो पट खोले क्यों कर।
ए हुए जो बड़े रात के, तिन सबकी एह खबर ॥११॥**

जब आज तक कोई यह भी नहीं बता सका है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म और उनका परमधाम कहां पर (किस ओर) है तो भला वे दूसरों के लिये माया का आवरण हटाकर सत्य की पहचान कैसे करा सकते थे? अब तक संसार में (रात्रि में) जितने भी महापुरुष (ज्ञानी, भक्त, योगी, ऋषि आदि) हुए हैं, उनकी यथार्थता यही है।

**मनसूख कही जो किताबें, रात में आई जे।
इन उमतें सब रानी कही, जिनों मांगे माजजे रात के ॥१२॥**

श्री कुल्जुम स्वरूप के अवतरित होने के पश्चात् रात्रि में आने वाले सभी ग्रन्थों की महत्ता समाप्त हो गयी। अज्ञानता के अन्धकार में जिन्होंने चमत्कार मांगे थे, उनके सभी अनुयायी भी माया में भटक गये।

भावार्थ- चमत्कार आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते हैं। मूसा पैगम्बर ने अनेकों चमत्कार दिखाये किन्तु उनके अनुयायी उन्हीं को सर्वोपरि उपलब्धि समझ बैठे और तत्व ज्ञान से रहित होने के कारण माया में भटक गये। श्री कुल्जुम स्वरूप के अन्दर हकीकत-मारिफत का ज्ञान होने के कारण अन्य ग्रन्थ मात्र साक्षी रूप ही रह गये। इसे ही रद्द करना कहते हैं।

**एक करी किताबें मनसूख, वाही नाम की करी हक।
तिन उमतें सब रानी गई, अब कहो क्यों भागे सक ॥१३॥**

परब्रह्म ने एक ओर जिन किताबों - इन्जील, जंबूर, तौरेत तथा कुर्आन - को रद्द किया, वहीं दूसरी ओर उसी नाम से रास, प्रकास, कलश तथा सनद किताबें दी।

आध्यात्मिक तत्व ज्ञान न होने से इन ग्रन्थों का सम्पूर्ण अनुयायी समाज मुक्ति प्राप्त नहीं कर सका। अब आप ही बताइये कि जिन ग्रन्थों को स्वयं परब्रह्म ने ही रद्द कर दिया, भला उनके चिन्तन से किसी का संशय कैसे निवृत्त हो सकता है?

**करी अगली किताबें मनसूख, आखिर सोई पैगंमर ल्याए।
नफा पाया तासों खलको, आखिर चारों किताब पढ़ाए॥१४॥**

श्री प्राणनाथ जी ही आखिरी ईसा, आखिरी मूसा, आखिरी दाऊद और आखिरी मुहम्मद हैं। अतः परब्रह्म ने जिन चार ग्रन्थों को रद्द किया, उनके स्थान पर उन्हीं नामों से पूर्व के पैगम्बरों के नाम से श्री कुलजुम स्वरूप में रास, प्रकाश, कलश तथा सनद ग्रन्थ का अवतरण हुआ। इस प्रकार इन चारों ग्रन्थों को पढ़कर समस्त संसार ने सर्वोच्च आध्यात्मिक तत्वज्ञान का लाभ लिया।

भावार्थ- बाईबिल का ओल्ड टेस्टामेन्ट (Old Testament) ही जंबूर तथा तौरेत न्यू टेस्टामेन्ट (New Testament) दोनों का सम्मिश्रण इंजील है। इंजील में जिस प्रेम तत्व को दर्शाया गया है, उसकी पूर्णता रास ग्रन्थ में होती है। इसी प्रकार, जंबूर तथा तौरेत का गुह्य रहस्य प्रकाश एवं कलश ग्रन्थ में निहित है। कुर्आन के तीस पारों का गुह्य भाव सनद ग्रन्थ के तीस प्रकरणों में विद्यमान है।

**देखो मनसूख कहीं किन माएनों, क्यों मोहोर करी कही हक।
सो लिख्या कौल तौरेत में, जासो नफा लेसी खलक॥१५॥**

हे साथ जी! इस बात पर विचार कीजिए कि किस अभिप्राय में इन ग्रन्थों (तौरेत, इंजील, जंबूर तथा कुर्आन) को रद्द किया हुआ माना जायेगा। रास, प्रकाश, कलश तथा सनद ग्रन्थों पर परब्रह्म के द्वारा सत्यता की मुहर क्यों लगायी गयी, यह तथ्य कलश ग्रन्थ में लिखा हुआ है। जिसका चिन्तन करके संसार के लोग लाभ उठा सकते हैं।

भावार्थ- कलश हिन्दुस्तानी के प्रकरण १ और २ में श्री राज जी और श्यामा जी की वार्ता है। इसी ग्रन्थ में अवतारों के प्रकरण में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप की पहचान दी गयी है। उसमें निम्न चौपाईयां इस तथ्य पर प्रकाश डालती हैं कि अक्षरातीत परब्रह्म जब इस संसार में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट हुए हैं तो उन्हीं

का कथन सर्वोपरि होगा -

खेल खावंद जो त्रैगुन, जाने याथें जासी फेर ।

ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर ॥

ए जिन बांधे सो खोलही, तोलों ना छूटे बंध ।

या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध ॥ (क. हि. 1/33, 35)

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट ।

तिन सारों ने यों कहा, जो किनहू ना देख्या दृष्ट ॥

ए ख्वाबी दम सब नींद लों, ए दम नींद के आधार ।

जो कदी आगे बल करें, तो गले नींद में निराकार ॥

आगम की बानी कहे, पिया आवें तेहेकीक ।

तिन आसा मेरी बंधी, पूरन आई परतीत ॥ (क. हि. 2/9, 36, 54)

अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतार का क्या काम ।

जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम ॥

जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास ।

तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास ॥ (क. हि. 18/37, 39)

मुहर के अलग-अलग प्रसंगों में अलग-अलग अर्थ होते हैं जैसे बीतक (४६/७) में कहा गया है कि 'कानो तो बहरे कहे, भई आंखों ऊपर मोहर' में मुहर का तात्पर्य आंखों की दृष्टि को बन्द करने से है, जबकि 'सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थपी हक' (किरंतन, ६१/१८) में मुहर का अर्थ सत्य प्रमाणित करना है। इसी प्रकार, उपरोक्त चौपाई तथा इसी प्रकरण की १६ वीं चौपाई में कथित 'जापर मोहोर महंमद की' में भी मुहर का अर्थ सत्यता को प्रमाणित करने के भाव में किया जायेगा।

अब कौन मनसूख को हक, ए दुनी सिफली क्यों समझाए।

एक हरफ बिना लदुन्नी, बिन वारस न बूझा जाए ॥१६॥

अब किन ग्रन्थों को परब्रह्म ने रद्द कर दिया है और किन्हें चिन्तन करने के

लिये सत्य प्रमाणित किया है, इसे संसार के मिथ्या जीव कैसे समझ सकते हैं? इन ग्रन्थों के रहस्यों को समझने का अधिकार ब्रह्मसृष्टियों को है। बिना तारतम ज्ञान के उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी इन ग्रन्थों के एक शब्द का भी वास्तविक अभिप्राय नहीं समझ सकता।

भावार्थ- 'एक शब्द का अर्थ न समझ पाना' अतिशयोक्ति अलंकार की भाषा है। सभी ग्रन्थों के अनुयायी अपने ग्रन्थ का बाह्य शब्दार्थ कुछ अंश में तो समझते ही हैं किन्तु उपरोक्त चौपाई का आशय यह है कि परमधाम या अक्षरातीत सम्बन्धी किसी भी शब्द के गुह्य अभिप्राय को समझने में संसार के जीव प्रायः असमर्थ रहते हैं।

याही नाम की किताबें, याही नामें ल्याए पैगंमर।

एजो कही बड़ाई इनों की, सो सब बीच आखिर ॥१७॥

इंजील, जंबूर, तौरेत तथा कुर्आन शरीफ के स्थान पर श्री प्राणनाथ जी ने संसार को उसी नाम से रास, प्रकाश, कलश तथा सनद ग्रन्थ अपनी कृपा के रूप में प्रदान किया है। इन चारों ग्रन्थों को लाने वाले हजरत ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद सल्ल. (साहब) की सम्पूर्ण महिमा श्री प्राणनाथ जी में समाहित हो जाती है, जो आखिरत के पैगम्बर हैं।

भावार्थ- यद्यपि एकीकरण की भावना से श्री प्राणनाथ जी को यहां अन्तिम मुहम्मद अर्थात् हजरत आखरुल इमाम मुहम्मद महदी अल्लाहतआला फर्जह अल शरीफ कहा गया है अन्यथा वे तो स्वयं परब्रह्म के आवेश स्वरूप हैं।

जब पट खोल्या महंमदे, सो नूर बूंदें लई जिन।

तिन दिए पैगाम हक के, सबमें किया बका दिन ॥१८॥

जब श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद यानि इमाम-ए-जमाँ) ने माया का आवरण हटाकर तारतम ज्ञान के प्रकाश में परमधाम का मार्ग दर्शा दिया तो जिन सुन्दरसाथ ने श्री कुलजुम स्वरूप की अमृतमयी बूंदों को आत्मसात् किया, उन्होंने सारे संसार के लोगों को सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान दी और उनके हृदय में परमधाम के ज्ञान का उजाला कर दिया।

**जाकी बड़ाई लिखी कुरान में, किताबों और पैगंमर।
जापर मोहोर महंमद की, सो सबों देसी फल फजर ॥१९॥**

कुरान शरीफ में इन्ही चार किताबों - रास, प्रकाश, कलश तथा सनद-एवं श्री प्राणनाथ जी की सांकेतिक भाषा में महिमा लिखी हुई है। जिन चारों ग्रन्थों की सत्यता के सम्बन्ध में श्री जी साहब जी ने अपनी मुहर लगा दी है, उनका जो भी अध्ययन करेगा, उसके हृदय का अज्ञान-रूपी अन्धकार नष्ट हो जायेगा और परमधाम के ज्ञानमयी प्रकाश से प्रातःकाल का उजाला हो जायेगा।

**कई बड़े कहे पैगंमर, पर एक महंमद पर खतम।
कई फिरके हर पैगंमरों, गिरो सब कहे नाजी हम ॥२०॥**

यद्यपि संसार में कई बड़े-बड़े पैगम्बर कहे जाते हैं किन्तु उन सबकी महिमा आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी की महिमा में समाहित (विलीन) हो जाती है। यद्यपि सभी पैगम्बरों के अनेक पन्थ होते हैं और उनके सभी अनुयायी यही कहते हैं कि एकमात्र हम ही अखण्ड मुक्ति पाने वाले हैं।

**सबों एक हादी हिदायत, सबों गिरो में नाजी एक।
एकौन जाने बिना अर्स दिल, एनबी नाजी दोऊ नेक ॥२१॥**

सभी के ग्रन्थों में यह बात लिखी है कि सभी फिरकों (पंथों) के अनुयायियों में मात्र एक ही फिरका मोक्ष प्राप्त करने वाला (नाजी फिरका होगा जिसे सद्गुरु स्वरूप परब्रह्म का निर्देश प्राप्त होगा। जिन ब्रह्मात्माओं के हृदय को परब्रह्म का धाम कहा जाता है, उनके अतिरिक्त भला और कौन जान सकता है कि अति पवित्र हृदय वाले नबी और नाजी फिरका कौन हैं?

**नेक सुनों तुम मोमिनों, बीच लिख्या तफसीर।
सो देखो चौथे सिपारे, दिल पाक करो सरीर ॥२२॥**

हे साथ जी! मेरी यह थोड़ी सी बात सुनिये। कुरान मजीद के चौथे सिपारे की जो व्याख्या (तर्जुमा) व तफसीर-ए-मवाहिब आलिया में मुल्ला हुसैन कमालुद्दीन बिन अली वाइज काशिफी तफसीरे-हुसैनी में लिखी है, उसे देखिए और संशय मिटाकर अपने

तन-मन को पवित्र कीजिए।

भावार्थ- कुर्आन पार: ४ लान तनाल् सूर: आल ए इमान ३ आयत १०३ “वऽ तसिमू बि हबिल्लाहि जमीअव्व ला लफर्रकू... लकुम् आयातिही लअल्लकुम तह्दून” अर्थात् तुम सब मिलकर खुदा की रस्सी को पकड़े रहना और अलग-अलग न होना। तुम लोग अल्लाह की मेहरबानी को याद करो जब तुम आपस में दुश्मन थे, उसने मेहरबानी (उल्फत) तुम्हारे दिलों में डाली, उसकी मेहरबानी से तुम सब भाई-भाई हो गए और तुम नर्क-रूपी आग के गढ़े के किनारे पहुँच गए। तब खुदा ने तुमको बचा लिया। इस तरह खुदा तुमको आयतें खोलकर सुनाता है ताकि तुम हिदायत पाओ।

**रसूलें कहा जालूत को, तुम में पीछे मूसा के।
कहो फिरके केते हुए, मोहे देओ खबर ए॥१२३॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने यहूदी रब्बी (धर्मगुरु) जालूत से पूछा कि पैगंबर मूसा कलीमुल्लाह के पश्चात् तुम्हारे समुदाय (यहूदियों) में कितने फिरके हुए, मुझे इसकी जानकारी दो।

**तब कहा जालूत ने, देखों मैं किताब।
सो ए देख के कहोंगा, करो जिन सिताब॥१२४॥**

तब जालूत ने उत्तर दिया कि मैं किताब देखकर बताऊंगा। आप इसके लिये शीघ्रता न करें।

**तब कहा रसूलें किताब, जले या चोरी जाए।
तब क्यों करो इमामत, देखो दिल सों ल्याए॥१२५॥**

तब मुहम्मद स. अ. व. व. ने कहा कि तुम अपने मन में इस बात का विचार करो कि यदि किताब जल जाय या चोरी हो जाय तो अपने समाज का नेतृत्व कैसे करोगे?

**ईसा के पीछे फिरके, पूछा रसूलें जानिक को।
कहे फिरके पैतालीस, जानिके रसूल सों॥१२६॥**

इसके पश्चात् हजरत रसूलुल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व अलैहि व सल्लम

(साहब) ने जानिक से पूछा कि हजरत ईसा (मसीह) के पश्चात् उनके अनुयायियों में कुल कितने फिरके (पन्थ) हुए। नसरानी यानि ईसाई रब्बी धर्मगुरु जालिक ने मुहम्मद स. अ. व. व. को बताया कि कुल पैतालीस फिके हुए।

**तब फेर कह्या रसूल ने, सुध नहीं तुमें किन।
ए नीके मैं जानत, माएने किताब इन॥२७॥**

तब पुनः मुहम्मद स. अ. व. व. ने कहा कि तुममें से किसी को भी इसकी जानकारी नहीं है। इन किताबों के अर्थ मैं अच्छी तरह से जानता हूँ।

**पीछे मूसा के इकहत्तर, तामें फिरका नाजी एक।
और सत्तर नारी कहे, ए समझो विवेक॥२८॥**

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के पश्चात् कुल ७१ फिरके हुए, जिनमें केवल एक ही नाजी फिरका हुआ। शेष सत्तर फिरके नर्कगामी हुए। इस तथ्य को विवेकपूर्वक समझिये।

**बहत्तर ईसा के भए, नाजी एक तिन में।
और नारी फिरके इकहत्तर, कह्या रसूलें जानिक से॥२९॥**

हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के ७२ फिरके हुए जिनमें से एक मुक्ति प्राप्त करने वाला हुआ तथा शेष ७१ फिरके नर्कगामी (दोजखी) हुए। इस प्रकार, मुहम्मद साहब ने जालिक को समझाया।

**यों तिहत्तर मेरे होवहीं, नारी बहत्तर नाजी एक।
ताको हिदायत हक की, जो हुआ नेकों में नेक॥३०॥**

मुहम्मद स. अ. व. व. ने कहा कि मेरे पश्चात् मेरे समुदाय में ७३ फिरके होंगे जिसमें ७२ फिरके नर्कगामी होंगे और केवल एक ही फिरका मुक्ति प्राप्त करने वाला होगा। इसी फिरके को परब्रह्म का निर्देशन प्राप्त होगा और वह अति श्रेष्ठ आचरण करने वाला होगा।

मूसे ईसे रसूल के, सबों नारी कहे फिरके।

कह्या एक नाजी तिनों में, खासलखास अर्स का जे ॥३१॥

पैगंबर मूसा व हजरत ईसा मसीह, अलैहिस्सलाम तथा मुहम्मद साहब के सभी फिरकों में केवल एक ही फिरके को मोक्ष प्राप्त करने वाला कहा गया है, शेष सभी को नर्कगामी। जो अखण्ड मुक्ति प्राप्त करने वाला फिरका है, वही मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) का समुदाय है जो परमधाम से संसार में आया है।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक में तीनों पैगम्बरों के समुदाय में केवल एक ही फिरके को मुक्ति प्राप्त करने वाला कहने का आशय यह है कि इनमें ब्रह्मात्माओं को ही माया के पार जाकर अखण्ड आनन्द का रसपान करने वाला माना गया है।

गिनती फिरके केते कहूं, कई हुए बीच जहूदान।

कहे ताबे दज्जाल के, जलसी जो कुफरान ॥३२॥

यहूदियों या हिन्दुओं में होने वाले फिरकों (पन्थों) की मैं कितनी गणना करूँ? एक परब्रह्म से विमुख होकर अज्ञानतावश अलग-अलग देवताओं की पूजा करने के कारण इन्हें प्रायश्चित्त की अग्नि में जलना पड़ेगा।

यों एक नाजी अव्वल से, पाया वाही ने फल आखिरत।

वास्ते नूर नबीय के, देखाए करी कयामत ॥३३॥

इस प्रकार प्रारम्भ से ही मोक्ष पाने वाले एक फिरके का वर्णन सभी समुदायों में है। आखिरत (कियामत) के समय अवतरित होने वाले तातरम ज्ञान का लाभ पूर्णरूप से उसी ने उठाया। यह संसार अक्षर ब्रह्म के आदेश से पैदा हुआ है, जिसे ब्रह्मात्माओं को दिखाकर अखण्ड कर दिया जायेगा। “अनामिन नूरुल्लाह व कुल शै मिनूरी”

भावार्थ- “महंमद हक के नूर से, भई दुनिया महंमद के नूर” (बीतक, १६/८) के कथन से यह स्पष्ट है कि परब्रह्म के सत् अंग अक्षर ब्रह्म (मुहम्मद) के आदेश (नूर) से इस संसार की रचना हुई है, जिसे देखने के लिये ब्रह्मसृष्टियां आयी हुई हैं।

लिख्या सिपारे अठारमें, कुरान माजजा नबी नबुवत।

एक दीन जब होएसी, तब होसी साबित ॥३४॥

कुर्आन के १८वें सिपारे में लिखा है कि कुर्आन का चमत्कार तथा नबी की

नबुवत तभी सत्य सिद्ध होगी जब समस्त संसार एक परब्रह्म की उपासना करने वाला बन जायेगा।

भावार्थ- कुर्आन के पा. २४ सू. ४१ आ. ६ “कुल इन्नमा अन्न वशरूम-मिसलुकुम् यूहा इलय्य अन्ममा.. वैलुल-लिल् मुशिरकीन” कह दो कि मैं भी तुम्हारे जैसा आदमी हूँ और तुम्हारी तरह मुझ पर वही हुकम आता है। तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक खुदा है। सीधे उसी की तरह मुतवज्जह (ध्यानार्थ) रहे। और उससे (मोक्ष) मांगते फिरो और विधर्मी पर अफसोस है। कुर्आन पार: २६ सूरत हजुरात आयत २८-२९ “हुवल्ल हामीम जी अर्सल रसूलहू..... बिल्लाहि शहीदा” “मुहम्मद रसूलल्लाहि अजरन अजीमा”।

**कहे रसूल कौल हकके, सबे करों एक दीन।
सो एकौल तोड़्या दुनी, जिनों रह्या ना आकीन ॥३५॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) कहते हैं कि परब्रह्म ने मुझे यह वचन दिया है कि मैं तारतम ज्ञान से समस्त संसार को एक परम सत्य (परब्रह्म) का अनुगामी बनाऊंगा। संसार के जिन जीवों को कुर्आन या श्री कुल्जुम स्वरूप पर विश्वास नहीं है, वे परब्रह्म के भी कथन को सत्य नहीं मानते हैं।

भावार्थ- समस्त संसार एक परब्रह्म का उपासक तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही बन सकेगा। उपरोक्त ३४वीं चौपाई के आशय को न समझने के कारण ही कट्टरपन्थियों ने आतंकवादी हिंसा के सहारे शरियत को सारे संसार पर थोपने का मन बनाया है। सच तो यह है कि इन कट्टरपन्थियों को न तो कुर्आन पर विश्वास है और न ही ये धर्म का वास्तविक स्वरूप समझते हैं। ये अरबी भाषा, वेशभूषा और शरियत की बन्दगी को जबरन थोपने में ही एक दीन होना समझते हैं।

**माएना ऊपर का पोहोंचे नहीं, बीच अर्स बका।
नजर बांध फना बीच, हुए ज़िदकर तफरका ॥३६॥**

कुर्आन शरीफ के शब्दों का मात्र बाह्य अर्थ लेने से किसी को भी अखण्ड परमधाम का बोध नहीं हो सकता। जिन जीवों की दृष्टि इस नश्वर संसार में ही बंधी रहती है, वे अपने हठ और अहंकार के कारण अनेक फिरकों में बंट गये।

भावार्थ- कुर्आन मजीद के शब्दों का मात्र बाह्य अर्थ ही जानने के कारण कट्टरपन्थियों को धर्म की परिभाषा विदित नहीं है। वे अपनी मजहबी मान्यताओं को ही धर्म का स्वरूप मानते हैं और उसे बलपूर्वक सब पर थोपना चाहते हैं जिससे समस्त विश्व में अशान्ति फैल रही है।

हुई हिदायत हक की, एक नाजी को बातन।
खोल नजर रूह की, देखाए अर्स तन॥३७॥

ब्रह्मसृष्टियों के इस समूह को धर्मग्रन्थों का गुह्यार्थ मिला, साथ ही साथ परब्रह्म का निर्देश भी। प्रियतम अक्षरातीत ने अपनी कृपा से उनकी दृष्टि खोलकर उनके मूल तनों (परात्म) का साक्षात्कार भी करा दिया।

कौल किए रूहों सो, उतरते हक।
सो सिर लिए अपने, मजाजी खलक॥३८॥

परमधाम से माया में आते समय ब्रह्मसृष्टियों को प्रियतम अक्षरातीत ने जो 'अलस्तो बि रब्बि कुंम' कि क्या मैं तुम्हारा प्रियतम नहीं हूँ, की बातें कही थीं, उसे स्वप्न के ये जीव अपने लिये समझ लेते हैं।

बुजरकी अर्स रूहों की, सिर अपने लेवें।
सिफत एक नाजीय की, सो बहत्तरो को देवें॥३९॥

संसार के जीव भ्रमवश ब्रह्मसृष्टियों की महिमा को अपने लिये कहा हुआ समझते हैं। यहां तक की सभी ७२ फिरके जिन्हें नर्कगामी (दोजकी) कहा गया है, स्वयं को नाजी फिरका घोषित कर देते हैं।

भावार्थ- इसी मानसिकता के अधीन आजकल के खूंखार आतंकवादी भी स्वयं को गर्व से मोमिन कहा करते हैं। उनकी दृष्टि में दूसरे पन्थ का बहुत बड़ा धर्मात्मा व्यक्ति भी दोजकी ही नजर आता है।

जबराईल जित अटक्या, आगूं पोहोंच्या नाहें।
सो ए जाने दुनियां हम, पोहोंचे तिन ठौर माहें॥४०॥

जिब्रील जिस सत्स्वरूप में जाकर रुक गया तथा आगे परमधाम में ही नहीं जा सका, उस परमधाम में संसार के ये स्वाप्निक जीव स्वयं को पहुँचने का दावा करते हैं।

भावार्थ- कुर्आन पाक में बेहद मण्डल की बहिश्तों तथा परमधाम का अलग-अलग वर्णन है किन्तु इल्म-ए-लदुन्नी न होने के कारण कुर्आन पाक के विद्वान दोनों को एक ही समझते हैं। सबसे अधिक हास्यास्पद बात तो तब लगती है जब वे परब्रह्म को चौथे आकाश लाहूत में मानने की अपेक्षा संख्या की अधिकता से सातवें आकाश में मानने की भूल कर बैठते हैं। उन्हें यह ज्ञात ही नहीं कि ये सातों आकाश नश्वर हैं।

दुनियां जो तिलसम की, आगूं होने चाहे तिन।

जो ल्याया रूहल-अमीन, कलाम अल्ला रोसन ॥४१॥

स्वप्न के ये मिथ्या जीव स्वयं को उस जिब्रील से भी अधिक श्रेष्ठ होने की इच्छा करते हैं जो पाक कुर्आन शरीफ का अलौकिक ज्ञान संसार में लेकर आया।

राह न देखे उपले माएनों, बीच अंधेरी रात।

सो ए रहे बीच नासूत के, घेरे पुल-सरात ॥४२॥

कुर्आन के शब्दों के बाह्य अर्थ में उलझे रहने के कारण उन्हें इस मायावी जगत में पता ही नहीं चल पाता है कि अखण्ड धाम की प्राप्ति का मार्ग क्या है? यही कारण है कि वे शरियत (कर्मकांड) से चिपके रहकर इस मृत्यु लोक में ही भटकते रहते हैं।

ए देत देखाई दुनी फना, ए जो बीच नासूत।

ऊपर फना सब फरिस्ते, ए जो कहा मलकूत ॥४३॥

इस मृत्यु लोक में दिखाई देने वाली यह समस्त सृष्टि नश्वर है। यहां तक कि बैकुण्ठ में रहने वाले सभी देवगण (फरिश्ते) भी नश्वर ही हैं। इस प्रकार यह समस्त ब्रह्माण्ड काल के अधीन है।

ए खाली जो तिन ऊपर, ला हवा जो सुंन।

ए जुलमत तिन बीचमें, चौदे तबक पलन ॥४४॥

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के ऊपर अनन्त विस्तार वाला शून्य मण्डल है, जिसे मोह सागर (जुल्मत) कहते हैं। चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड उस निराकार मण्डल में झूले की भांति झूलता रहता है।

भावार्थ- सृष्टि के सभी लोक एक-दूसरे के आकर्षण से आकाश में निराधार भ्रमण करते हैं। इसे ही झूले के दृष्टान्त से वर्णित किया गया है। इस अनन्त मोह सागर में हमारे ब्रह्माण्ड जैसे अनन्त ब्रह्माण्डों का अस्तित्व है।

**ए लिख्या दूसरे सिपारे, आयत कुरान के माहें।
सक सुभे होवे जिन को, सो देखे जाए ताहें।।४५।।**

यह प्रसंग कुर्आन शरीफ के दूसरे सिपारे की आयत ६२ में लिखा हुआ है। इस विषय में जिसे भी संशय हो, वह कुर्आन मजीद खोलकर देख सकता है।

भावार्थ- कुर्आन सि. २ सू. २ आ. ६२ “व लकद् जा अकुम् मूसा किल-वय्यिनाति सुम्मतखज्जुमुअिज्ज मिम्बऽदिह व अतुम जालिसून्” अर्थात् और तुम्हारे पास मूसा खुले निशान लेकर आये, इस पर भी तुम (जब वे तौरात लेने तूर पहाड़ पर गये) उनके पीछे बछड़े को (पूजने के लिए) ले बैठे और तुम तो हो ही अन्यायी।

**ए छल महंमद गिरो को, हकें देखाया।
सो ए खेल कुंन हुकमें, याही वास्ते बनाया।।४६।।**

श्री राज जी ने श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं को यह छल भरा संसार दिखाया है। उन्हें दिखाने के लिये ही परब्रह्म के आदेश से यह मायावी ब्रह्माण्ड बनाया गया है।

**ए छल फरेब तो कह्या, राह न सूझे रात।
ए गुम हुए ढूँहें फना बीच, आड़ी हुई जुलमात।।४७।।**

इस संसार को मिथ्या एवं छल से भरा हुआ इसलिये कहा जाता है क्योंकि अज्ञानता के अन्धकार में किसी को भी परब्रह्म का वास्तविक ज्ञान नहीं हो पाता है। परब्रह्म की खोज में लगे हुए जीव इस संसार में खोजते-खोजते शून्य में अदृश्य हो जाते हैं। उनके सामने मोह सागर (निराकार) का आवरण आ जाता है जिसे वे पार नहीं कर

पाते हैं।

**ढूँढ़चा चौदे तबकों, पर पाई न किन तरफ।
बका का बीच दुनियां, कोई बोल्या न एक हरफ।।४८।।**

बड़े-बड़े ज्ञानी जनों ने परब्रह्म को चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में खोजा किन्तु कहीं भी प्राप्ति नहीं हो सकी। इस संसार का कोई भी व्यक्ति अखण्ड परमधाम के विषय में एक शब्द भी नहीं बोल सका है।

भावार्थ- यद्यपि अक्षर ब्रह्म की पंच वासनाओं - कबीर, शुकदेव, शिव, सनकादिक तथा विष्णु भगवान - ने बेहद मण्डल (योगमाया के ब्रह्माण्ड) का ज्ञान अवश्य दिया है, किन्तु परमधाम के विषय में वे भी मौन ही रहे हैं। माहेश्वर तन्त्र तथा पुराण संहिता में परमधाम का जो भी वर्णन है उसमें अधिकांशतः परमधाम के अंश मात्र प्रतिबिम्बित रूप केवल ब्रह्म का वर्णन है। कुछ वर्णन अवश्य परमधाम का है किन्तु वह समाधि अवस्था में ईश्वर से सुनकर कहा हुआ है, प्रत्यक्ष देखकर नहीं।

**और सुरिया जो सितारा, कहा उलंघा न किन।
सो देखो सिपारे सोलमें, काहूँ छोड़ी न सरे सुन।।४९।।**

कुर्आन में कहा गया है कि कोई भी सुरिय्या सितारे अर्थात् आदिनारायण (ज्योति स्वरूप) को पार नहीं कर सका। कुर्आन पाक के सोलहवें सिपारे में आप देख सकते हैं जिसमें लिखा है कि संसार का कोई भी व्यक्ति शून्य-मण्डल से आगे नहीं जा सका।

भावार्थ- 'सुरैया' (सुरिय्या) एक चमकदार सितारा है। वस्तुतः अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप अव्याकृत के स्थूल स्वरूप प्रणव (ओऽम्) का मोह सागर में प्रतिबिम्बित रूप ही आदिनारायण है जिसे ज्योति स्वरूप कहा जाता है। कतेब ग्रन्थों में ज्योति स्वरूप की तुलना उस सुरैया नामक नक्षत्र से की जाती है जो बहुत ही चमकदार होता है।

कुर्आन शरीफ पार : १६, सूर : १७, आयत ६० "हत्ता अिजा बलग् मत्लिअश्-शम्सि वजदहा तत्लुअ अला कौमिल्लम् नजअल्लहुम् मिन दुनिहा सित्त्रन" अर्थात् यहां तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह (यानि पूरब की ओर) पहुँचा तो उसे ऐसा मालूम हुआ कि (सूरज) ऐसे लोगों पर निकलता है जिनके लिए हमने सूरज

के उधर (यानि बचाव के लिए) कोई आड़ नहीं रखी थी।

इसी प्रकार पार : १६ सूर : २० आयत ५ “अरहमानु अललू-अर्शिस्तवा” में भी यही प्रसंग है। अर्थात् (उसी का नाम है। रहमान (जो) अर्श (आजम) पर विराज रहा है (५)।

**मेयराज हुआ महंमद पर, कई किए जाहेर बयान।
और रखे छिपे हुकमें, वास्ते हादी गिरो पेहेचान। ॥५०॥**

मुहम्मद स. अ. व. व. को परब्रह्म का साक्षात्कार (दर्शन) हुआ है जिसकी कई बातों का उन्होंने प्रत्यक्ष रूप में वर्णन किया है किन्तु मारिफत की बातों को छिपा दिया जिससे कि कियामत के समय श्री प्राणनाथ जी के मुखारविन्द से कहलाकर उनकी तथा ब्रह्मसृष्टियों की पहचान करायी जा सके।

**तेहेतसरा से हवा लग, एक फरिस्ता खड़ा इन कद।
ए बड़का सबन का, तो पोहोंच्या हवा सिर हद। ॥५१॥**

पाताल से लेकर निराकार की प्रारम्भिक सीमा अर्थात् बैकुण्ठ तक एक फरिश्ते (विष्णु भगवान) का सत्ता रूप आकार (अस्तित्व) है। यह चौदह लोक के देवी-देवताओं में सबसे बड़ा है, इसलिये इसे निराकार तक वर्णित किया गया है।

**इन फरिस्ते के कई सिर, तिन सिर सिर कई मोहों।
मोंह मोंह कई जुबान, ए देखो इसारत फरिस्तों। ॥५२॥**

इस फरिश्ते के कई सिर हैं और प्रत्येक सिर में कई मुख हैं। इसी प्रकार, प्रत्येक मुख में बहुत-सी जिह्वायें हैं। इस प्रकार, संकेतों में देवी-देवताओं का वर्णन किया गया है।

भावार्थ- अनेक सिर मुख तथा जिह्वाओं का तात्पर्य सम्पूर्ण देवताओं एवं प्राणियों के ऊपर शासनकर्ता के रूप में दर्शाने से है।

**एक इनसे बड़े कहे, ऐसे जाएं जाकी नाकमें।
तो भी उने सुध ना पड़े, अंदर फिरके मोंह निकसें। ॥५३॥**

चौदह लोकों के स्वामी इन विष्णु भगवान से भी बड़ा एक फरिश्ता आदिनारायण है जिसकी नाक में से यदि विष्णु भगवान जैसे फरिश्ते घुसकर मुख में से निकलें तो भी उनको आदिनारायण के विस्तार की सुधि नहीं मिल सकती है।

भावार्थ- अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप अव्याकृत के स्वाप्निक रूप आदिनारायण के रोम-रोम में अनेकों चौदह लोकों जैसे ब्रह्माण्ड समाये हुए हैं। यह कथन महानारायणोपनिषद् में वर्णित है।

**ए मसनंद मलकूत की, फरिस्ता एक पातसाह।
कोई बुजरक पोहोंचे इनलों, और पाउं कटे पुल सरात राह ॥५४॥**

चौदह लोकों का धाम बैकुण्ठ है जिसके स्वामी विष्णु भगवान हैं। कोई विरला ज्ञानी-भक्त ही यहां तक पहुँच पाता है, शेष लोग कर्मकाण्ड में ही अपने पांव कटवा लेते हैं अर्थात् शक्तिहीन होकर फंसे रह जाते हैं।

भावार्थ- जिस प्रकार प्रकट वाणी में अक्षर धाम को नित्य बैकुण्ठ और अक्षर ब्रह्म को बैकुण्ठ नाथ कहा गया है, उसी प्रकार यहां आदिनारायण (महाविष्णु) के निवास को भी बैकुण्ठ कहा जाता है तथा नारायण (विष्णु) के निवास को भी बैकुण्ठ ही कहा जाता है क्योंकि पौराणिक मान्यता में विष्णु भगवान आदिनारायण (ज्योति स्वरूप) की कला रूप है। कतेब पक्ष में आदिनारायण ही अजाजील है।

**या समें श्री बैकुण्ठ नाथ, इच्छा दरसन करने साथ। (प्र. हि. 37/17)
सोई अखण्ड अक्षरातीत घर, नित्य बैकुण्ठ मिने अछर। (प्र. हि. 37/9)**

**जो आवत अरवा नासूतमें, पकड़े वजूद नाबूद।
सो ले सरीयत चढ़ ना सके, छूटे ना फना वजूद ॥५५॥**

जो जीव इस मृत्यु लोक में नश्वर पंचभौतिक तन धारण करते हैं, वे शारीरिक दृष्टि से आगे नहीं जा सकने के कारण कर्मकाण्ड को छोड़ नहीं पाते हैं। फलतः उन्हें जन्म-मरण के चक्र में भटकना पड़ता है।

**ले तरीकत पोहोंचे मलकूत, सो किन लई न जाए।
करे बोहोत दौड़ आप वास्ते, ले निजस न ऊंचा चढ़ाए ॥५६॥**

तरीकत (उपासना, पवित्रता व आत्म-शुद्धि) के मार्ग से बैकुण्ठ तक पहुँचा जा सकता है किन्तु उस मार्ग पर कोई चलना ही नहीं चाहता। लोग अपने सांसारिक सुख के

लिये तो बहुत अधिक पुरुषार्थ करते हैं किन्तु विकारों से भरे होने के कारण उपासना के मार्ग पर नहीं चलते हैं और अधिक आध्यात्मिक उन्नति भी नहीं कर पाते हैं।

**ए बीच फना के सब कहे, हवा समेत पलना।
ए दिन रात आजूज माजूज, खाए सब करसी फना ॥५७॥**

निराकार समेत उसमें झूलता हुआ (भ्रमणशील) यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नश्वर कहा जाता है। दिन तथा रात्रि रूपी याजूज-माजूज जब इसकी आयु को पूर्ण कर देते हैं तो यह नष्ट हो जाता है।

**मारफत सागर क्यों कहूं, करी सरे में पुकार।
इन हक ठौर के नाम धर, पूज फिरके हुए बेसुमार ॥५८॥**

मेहमत साहिबुज्जमाँ स्वरूप श्री महामति जी कहते हैं कि जिस संसार में चारों ओर कर्मकाण्ड ही कर्मकाण्ड फैला हो, उसमें मैं परब्रह्म की सर्वोच्च पहचान देने वाले दिव्य ज्ञान के सागर की बातें कैसे करूं? इस संसार में तो परब्रह्म तथा उनके धाम के नाम पर उपासना के अनेकों मार्ग निकाल कर अनगिनत पन्थ बन चुके हैं।

**कोई कहे विष्णु नारायण, कोई अरहंत बतावे।
कोई देवी देव पत्थर, पानी आग पुजावे ॥५९॥**

संसार में कोई भगवान विष्णु को परमात्मा मानता है तो कोई आदिनारायण को। कोई अरिहन्त (तीर्थंकर) को ही अपना सर्वस्व मानता है। कोई किसी देवी अथवा देवता की पूजा करता है तो कोई पत्थरों, अग्नि या पानी की पूजा करता है।

भावार्थ- जैन पन्थ किसी अनादि परमात्मा को नहीं मानता। उनकी दृष्टि में २४ तीर्थंकर ही उनके आराध्य होते हैं। पौराणिक हिन्दू शालिग्राम और शिवलिंग को विष्णु तथा शिव का रूप मानकर पूजा करते हैं तो पारसी लोग अग्नि की पूजा करते हैं। वेदानुयायी अग्नि में जो सुगन्धित पदार्थ की आहुति देते हैं, वह मात्र वायुमण्डल की शुद्धि के लिये है। इसे अग्नि पूजा नहीं कह सकते क्योंकि आहुति देते समय जो मन्त्र बोले जाते हैं, उनमें अक्षर-अक्षरातीत की ही प्रार्थना होती है, किसी जड़ अग्नि की नहीं।

**कोई कहे बेचून है, और बेचगून।
भी कहे बेसबी है, और बेनिमून ॥६०॥**

कुछ लोग परब्रह्म को इन्द्रियों से अनुभव में न आने वाला अवर्णनीय कहते हैं तो कुछ लोग शब्दों से परे शब्दातीत । कुछ का मानना है कि वह अनुपम और अद्वितीय है अर्थात् उसके समान न तो कोई है और न ही होगा।

कोई कहे निराकार है, और निरंजन।

कोई कहे अहं बका, सबमें ब्रह्म निरगुन।।६१।।

कोई परमात्मा को निराकार (आकृति से रहित) और निरंजन (अवयव विहीन) कहता है। कोई 'अहं ब्रह्मास्मि' 'अनल हक' की भावना में डूबा रहता है तो कोई सबमें निर्गुण ब्रह्म की व्यापकता का उद्घोष करता है।

ए जो पैदा मोह तत्व, कही तारीकी जुलमात।

कौल दूजा हवा ला मकान, जहां से पैदा रात।।६२।।

हिन्दू धर्मग्रन्थों में जिस मोह तत्व की उत्पत्ति बतायी जाती है, कतेब ग्रन्थों में उसे तारीक या जुल्मत कहते हैं। कुछ लोग उसे हवा (माया) या ला-मकान (निराकार) कहते हैं। इसी से अज्ञान की उत्पत्ति होती है।

ए जो उरझी दुनी रात की, न पावे तौहीद राह।

तो लिख्या सिपारे उनईसमें, बनी-आदम पूजे सब हवाए।।६३।।

अज्ञानता के अन्धकार में फंसी हुई यह दुनिया अद्वैत परब्रह्म की उपासना के मार्ग पर नहीं चलती है। पाक कुर्आन मजीद के १६ वें सिपारे में लिखा है कि सम्पूर्ण मानव जाति जड़ निराकार की भक्ति करती है।

भावार्थ- कुर्आन सि. १६ सू. २६ आ. ७०-७६ “इज् काल लिअबीहि व कौमिही मा तऽबुदून(७०) कालू नऽबुदु अस्नामन् फनजल्लु लहा आकिफीन अन्तुम व आबाअुकुमुल् - अक्दमून(७६)” अर्थात् जब उन्होंने अपने बाप और अपनी कौम से पूछा कि तुम किस चीज को पूजते हो ? तो उन्होंने जवाब दिया कि हम मूर्तियों को पूजते हैं और उन्हीं की सेवा में रात - दिन लगे रहते हैं। इब्राहीम स. ने पूछा कि जब तुम उनको पुकारते हो तो क्या यह तुम्हारी सुनते हैं? या तुमको कुछ भी फायदा या नुकसान पहुँचा सकते हैं? उन्होंने कहा नहीं। मगर हमने अपने बाप-दादों को ऐसा ही करते देखा है। इब्राहीम ने कहा- भला तुमने कभी उन पर गौर भी किया जिन्हें पूजते रहे

हो तुम और तुम्हारे अगले बाप-दादे?

**दिया हवा का कुलफ, ईमान के द्वारे पर।
एखोलेगा सोई सिरदार, याको पीठ देवे पैगंमर ॥६४॥**

संसार के लोगों के लिये परब्रह्म के प्रति विश्वास होने में निराकार ही बाधक है। जो इसे छोड़ देगा, वही ज्ञानियों में प्रमुख माना जा सकता है। जो इस निराकार को पार करके आगे जा सकता है, वही पैगम्बर कहलाने का अधिकारी है।

भावार्थ- द्वार में ताले का होना एक आलंकारिक वर्णन है। इसका अर्थ होता है आवरण से घिरा होना।

**चारों चीज पूजी रात की, पानी खाक पत्थर अगिन।
आकास पूज्या कैयों नाम धर, निराकार हवा ला सुन ॥६५॥**

संसार के लोग माया के बनी हुई चार वस्तुओं - पानी, मिट्टी, पत्थर तथा अग्नि - की पूजा करते रहे हैं। कितनों ने तो परमात्मा को आकाश कह कर पूजा की है तो कितनों ने निराकार, हवा, ला-मकान या शून्य कहा है।

भावार्थ- संस्कृत साहित्य की दृष्टि से 'आकाश' शब्द को अनन्त कहा जाता है। 'अनन्त' शब्द ब्रह्म को ही कहते हैं। इस आधार पर यजुर्वेद (८०/१६) में 'ओ३म् खं ब्रह्म' अवश्य कहा गया है जिसका अर्थ होता है, ब्रह्म की सत्ता आकाशवत् व्यापक है। पंचभूतों में कथित आकाश को ऋषियों ने ब्रह्म नहीं माना है। वेदान्त दर्शन के सूत्र आकाशस्तत् लिंगात् (१/१/२२) में भी 'आकाश' शब्द ब्रह्म के लिये अवश्य प्रयुक्त हुआ है किन्तु उसका आशय व्यापकता से है।

जड़ आकाश को मनीषियों ने चेतन ब्रह्म नहीं माना है। अवश्य पौराणिक साहित्य में आकाश को ही ब्रह्म मानने की भूल की जा सकती है।

**ए हवा सुन्य जुलमत कही, एही हिजाब रात अंधेर।
ऊपर तले बीच दुनियां, फिरवली गिरदवाए फेर ॥६६॥**

जिसे निराकार, शून्य अथवा जुल्मत कहा जाता है वहीं अज्ञानमयी अंधेरी रात्रि

का आवरण है। इसके अन्तर्गत ऊपर-नीचे सभी लोक-लोकान्तर स्थित है। निराकार मण्डल ने सम्पूर्ण सृष्टि को चारों ओर से घेर रखा है।

**ए सबे बीच अंधेरी, किन तरफ न पाई हक।
काहूँ न पाया अर्स बका, कई हुए रात बीच बुजरक ॥६७॥**

समस्त सृष्टि के प्राणी अज्ञानता के अन्धकार में भटकते फिरते हैं। इनमें से कोई भी अब तक यह नहीं जान सका है कि परब्रह्म कहाँ है? यद्यपि इस मायावी सृष्टि में भी बहुत से ज्ञानी-पुरुष हो चुके हैं किन्तु उनमें से कोई भी यह नहीं जान पाया कि अखण्ड परमधाम कहाँ है?

**तिन पर नूर अछर, जो कायम जबरूत।
तापर अर्स अजीम, जो कहा बका हाहूत ॥६८॥**

इस निराकार के परे बेहद मण्डल (जबरूत) है, जिसमें अक्षर ब्रह्म की लीला होती है। बेहद से भी परे वह अखण्ड परमधाम है, जिसमें अक्षर ब्रह्म तथा अक्षरातीत पूर्णब्रह्म के रंगमहल हैं।

भावार्थ- अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत के ही सत् अंग है, अतः उनका मूल निवास परमधाम के ही अन्तर्गत अक्षर धाम (रंगमहल) में है। लीला रूप से अक्षर धाम बेहद मण्डल को माना जाता है।

**ए जो ठौर दोऊ कायम, कहें अर्स हक।
सो ल्यावे फना बीच वजूद, ए जो फानी खलक ॥६९॥**

अक्षर ब्रह्म का रंगमहल (धाम) तथा अक्षरातीत का रंगमहल (धाम) दोनों ही श्री राज जी के परमधाम में स्थित हैं। तारतम ज्ञान से रहित संसार के जीव अपने नश्वर तन में ही उस परमधाम का अस्तित्व मानते हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में यह संशय होता है कि जब श्री कुल्जुम स्वरूप में 'अर्स तुम्हारा मेरा दिल है (सागर ८/१) तथा 'ऊपर तले अर्स ना कहा, अर्स कहा मोमिन कलूब' (श्रृं. २३/७३) कहा गया है तो जब जीव सृष्टि अपने हृदय को परब्रह्म का धाम मानती है तो उसे अज्ञानी क्यों कहा जाता है?

इसके समाधान में यही कहा जा सकता है कि तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्मसृष्टि को अक्षरातीत से अपने मूल सम्बन्ध का बोध हो जाता है। प्रेम में डूबकर वह अपने हृदय में सम्पूर्ण परमधाम तथा परब्रह्म की छवि को देखने लगती है क्योंकि प्रेम में दूरी नगण्य हो जाती है। इसके विपरीत जीव सृष्टि को तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण न तो अक्षरातीत का ज्ञान होता और न ही परमधाम का। स्वयं को ब्रह्मांगना मानकर वह परब्रह्म पर न्यौछावर भी नहीं हो पाती तथा उनके अनन्य प्रेम में डूब भी नहीं पाती। वह संशय, मनोविकार, अश्रद्धा, हृदय की शुष्कता एवं प्रेम विहीनता जैसे दोषों की अग्नि में जलती रहती है। ऐसी स्थिति में वह परब्रह्म का साक्षात्कार कैसे कर सकती है?

श्रद्धा, ज्ञान, समर्पण, विरह एवं प्रेम आदि रत्न हृदय-रूपी कमल में ही निवास करते हैं। इनसे रहित होने के कारण जीव सृष्टि ब्रह्मात्माओं जैसी स्थिति को प्राप्त नहीं हो पाती। यदि तारतम ज्ञान के प्रकाश में जीव सृष्टि भी उपरोक्त गुणों को धारण कर ले तो उसे भी परमधाम तथा परब्रह्म के साक्षात्कार का अवसर प्राप्त हो सकता है और वह भी अपने हृदय को धाम की संज्ञा दे सकती है। इसके पूर्व वह मात्र धर्मग्रन्थों को पढ़कर अनुमान से ही अपने शरीर के हृदय में परमधाम को मानने की मात्र कल्पना ही करती है। उसे स्वयं ही नहीं मालूम कि परमधाम कैसा है तथा अक्षरातीत की शोभा कैसी है?

फरिस्ता जबराईल, पैगंमरों सिरदार।

सो माहें पैठ ना सक्था, अर्स अजीम द्वार।।७०।।

जिब्रील फरिश्ता फरिश्तों में प्रमुख है किन्तु वह भी परमधाम के मुख्य द्वार में नहीं जा सका।

भावार्थ— उपरोक्त चौपाई से सिद्ध होता है कि जिब्रील फरिश्ता सत्स्वरूप तक ही गया था, जहां उसका मूल निवास है। यदि वह सत्स्वरूप को पार करके अक्षर धाम और यमुना जी तक गया होता तो उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण 'अर्स अजीम द्वार' नहीं लिखा होता।

ना तो महंमद की हिमायतें, आगूं चल्या एक कदम।

तिन राह पाँच सै साल की, काटी माहें दम।।७१।।

अन्यथा मुहम्मद सल्ल. (साहब) की सहायता से आगे वह मात्र एक कदम चल

सका, किन्तु पांच सौ वर्ष का समय उसने एक पल में पूरा कर लिया।

भावार्थ- ५०० वर्ष का मार्ग मात्र एक पल में पूरा करने का आशय जिब्रील की असीम शक्ति को दर्शाना है।

आगूं चलते तिन यों कह्या, जल जाए मेरे पर।

सो ए बीच जाए न सक्या, ए जो अर्स अकबर ॥७२॥

आगे चलते हुए उसने कहा कि यदि मैं और आगे जाऊंगा तो अक्षरातीत के नूर के तेज से मेरे पर जल जायेंगे। यही कारण है कि जिब्रील भी उस महान परमधाम के अन्दर नहीं जा सका।

भावार्थ- जिब्रील कोई पक्षी नहीं है, जिसके पंख हो। वह परब्रह्म के जोश एवं अक्षर ब्रह्म के आवेश का फरिश्ता है। परमधाम में इश्क की लीला हैं, ऐसी अवस्था में जोश का स्वरूप वहां जा ही नहीं सकता। जोश को ही पंखों की उपमा दी गयी है।

ए साहेदी लिखी जाहेर, मेयराज नामें माहें।

सरहद जबरूत की, फरिस्ते छोड़ी नाहें ॥७३॥

मेयराजनामें में यह साक्षी स्पष्ट रूप से लिखी है कि जिब्रील फरिश्ता सत्स्वरूप की सीमा से आगे नहीं जा सका।

भावार्थ- 'जायें जोए न उलंघत' (खिलवत, १०/१६) के कथन से प्रायः यही धारणा है कि जिब्रील सत्स्वरूप से भी आगे यमुना जी तक चला गया था। इसका समाधान बड़ा कयामतनामा (६/६) की निम्न चौपाई से होता है-

छोड़ याको आगे को गए, नूर वन में दाखिल भए ।

जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और ॥

इस चौपाई के चौथे चरण में निराकार से भिन्न जबरूत (बेहद मण्डल) को कहा गया है। यदि जबरूत का तात्पर्य हम परमधाम में विद्यमान अक्षर ब्रह्म के रंगमहल से करें तो उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण में ला-मकान के स्थान पर बेहद मण्डल का वर्णन होना चाहिए। इसी प्रकार,

आगूं जबराईल जाए ना सक्या, वाकी हद जबरूत ।

पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत ॥ (खुलासा, 3/46)

यह सर्वविदित है कि ब्रह्मात्मायें श्री राजश्यामा जी के साथ नूर, नीर, सर्वरस तथा रस सागर में क्रीड़ा करती हैं क्योंकि ये चारों सागर परमधाम के ही अन्तर्गत हैं। जिस सर्वरस सागर में ब्रह्मात्माओं की क्रीड़ा होती है, उसमें ज़िब्रील कैसे जा सकता है? यमुना जी के किनारे पहुँचने का वर्णन यमुना जी की प्रमुखता को दर्शाने के भाव से है।

गुनाह पोहोंच्या तिन अर्समें, इन दरगाह रूहन।

दिल हकीकी ए कहे, अर्स कलूब मोमिन ॥७४॥

किन्तु, ऐसे परमधाम में रहने वाली ब्रह्मात्माओं के ऊपर खेल मांगने का गुनाह लग गया। इन ब्रह्मांगनाओं के हृदय को ही पूर्णरूप से सच्चा या पवित्र कहा जाता है। इसके अतिरिक्त इनके ही हृदय को धाम कहलाने की भी शोभा प्राप्त है।

खासों में खासे कहे, रबानी उमत।

खिलवत हक हादी रूहें, अर्स हक वाहेदत ॥७५॥

परब्रह्म की ये अंगनायें (आत्मायें) विशिष्टों में भी अति विशिष्ट हैं और उनकी हृदय स्वरूपा कही जाती है। परमधाम की उस खिलवत में श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं की प्रेम लीला होती है। यह लीला वहदत में होती है अर्थात् इन तीनों स्वरूपों (श्री राज जी, श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं) का एक समान दिल है। श्री राज जी का दिल ही श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं के रूप में क्रीड़ा करता है।

कह्या हदीसों आयतों, द्वार न खोल्या किन।

अव्वल बीच या आखिर, खुले ना रसूल बिन ॥७६॥

कुर्आन की आयतों तथा हदीसों में कहा गया है कि महंमद की तीनों सूरतों के अतिरिक्त इस खेल के प्रारंभ में, मध्य में या अब तक अन्य किसी ने भी अखंड परमधाम का मार्ग नहीं दर्शाया।

भावार्थ- कुर्आन पार: १६ सूरत १६ आयत १ “काफ़ हा या अैन् साद्” पार: १ सूरत २ आयत ६-७ १२-१३ “इन्नल्लजीन कफरु सवाअुन् अलैहिम् वं लहुम् अजाबुन अजीमुन् । अला इन्नहुम् हुमुल् - मुफ़सिदून् व लाकिल्ला यऽलमून्” निश्चित रूप से जिन लोगों ने कुफ़्र को अपना रखा है, उन लोगों को डराना और न

डराना एक समान है। क्योंकि वह खुदा के ऊपर ईमान कभी नहीं लायेंगे। क्योंकि उनके दिल, कानों और आँखों पर खुदा ने अज्ञानता की मुहर लगा दी है। यह उनके लिए बहुत बड़ी सजा है। यह जान लेना चाहिए कि वस्तुतः यही लोग फसादी है। परन्तु इसका ज्ञान इनको नहीं है। ऐसी स्थिति में उनसे कहा जाए । अन्य लोग जिस प्रकार खुदा के ऊपर ईमान ले करके आये हैं, तुम भी छल कपट छोड़कर ईमान लाओ तो वे कहते हैं क्या हम भी ईमान ले आये, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आये हैं? वस्तुतः यही लोग मूर्ख हैं, परन्तु इसका इनको ज्ञान नहीं है।

इसका वर्णन तफसीर- ए- हुसैनी पृष्ठ नं. १० जिल्द २ में किया गया है। इलाही में मजकूर है कि रसूल मुहब्बे सुफियान अकरम की तीन सूरते हैं। एक सूरत बसरी जैसा कि हक तआला ने फर्माया, कि ऐ मुहम्मद! सिवाय इसके नहीं कि मैं भी बसर हूँ तुम्हारी तरह। दूसरी मलकी जैसा खुद हजरत ने फर्माया बेशक मैं नहीं हूँ। तुम में से किसी की मिसल। ? और तीसरी हकी जैसा कि खुद आपने फर्माया- मेरे वास्ते अल्लाह के साथ एक वक्त है के नहीं गुंजाईश रखता। उस वक्त मेरे साथ कोई मुर्करम फरिस्ता, न नबी भेजा हुआ और इससे भी खुली हुई ये हदीस हैं जिसने मुझे देखा उसने हक देखा और हजरत ने हक तआला को हर सूरत में जनबा रसूले अकरम सल्ल. के साथ कलाम और है। सूरत बसरी में मर्तब कलमें जैसे, कुल हूँ अल्लाहु अहद मलक हरूफ के निशान ये है कि अल्लाह एक है। हकी फेर वही भेजी अपने वन्दे की तरफ वही भेजी। (तीन सूरत से आशय १. अरब की लीला मुहम्मद सल्ल. के द्वारा, २. ईसा रूह अल्लाह देवचन्द्र जी की आड़ीका लीला एवं ३. इमाम महदी साहिबुज्जमां की जागनी लीला से है)

जंजीर द्वार भिस्तकी, अव्वल खोले महंमद।

दिल साफ करो ए देख के, ले हदीस साहेद।।७७।।

कुर्आन के भिन्न-भिन्न प्रसंगों की आयतों को मिलाकर अखंड बहिस्तों की पहचान एकमात्र श्री जी ने ही कराई है। हदीसों में इस कथन की साक्षी देखकर अपने मन के संशय मिटाईए।

जेता कोई पैगंमर, रसूल नबी औलिए।

गोस कुतब वली अंबिए, नबी नसीहत सिर सब के।।७८।।

अब तक जितने भी पैगंबर, संदेशवाहक, नबी, औलिए, गोस, कुतब या अंबिए

हुए हैं, सभी ने मुहम्मद साहब की सिखापन को शिरोधार्य किया है।

भावार्थ- औलिए, गौस, कुतुब, वली तथा अंबिए ये सभी मुस्लिम संतों की उपाधियां हैं।

कई बड़े कहावे पीर फकीर, कई आरिफ उलमा।

यार असहाब कई खलीफे, हादी महंमद है सब का।।७९।।

संसार में कई बड़े-बड़े पीर (महात्मा), फकीर (संत), आरिफ (ज्ञानी), उलेमा (विद्वान) परब्रह्म से मित्रभाव की भक्ति करने वाले तथा बहुत से धर्मगुरु हो चुके हैं। किन्तु इन सबके पथ-प्रदर्शक मुहम्मद साहब ही है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का सूक्ष्म अर्थ श्री प्राणनाथ जी पर घटित होगा। तारतम ज्ञान के प्रकाश में कोई भी पीर, फकीर या कुर्आन के उलेमा अपने चरम आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। 'यार' और 'सहाब' दोनों एकार्थवाची हैं। इन दोनों शब्दों का अर्थ 'मित्र' होता है। अंतर केवल इतना ही है कि 'यार' शब्द फारसी है तथा 'सहाब' शब्द अरबी है। चौपाई में लिखित 'असहाब' शब्द अशुद्ध है। इसका शुद्ध शब्द 'सहाब' होगा।

रसूलें बुजरकी अपनी, दई कई जहूदों को।

पर ओ छोड़ बड़ाई अपनी, आए नहीं कदमों।।८०।।

मूहम्मद स. अ. व. व. ने अपनी महानता की पहचान कई यहूदियों को कराई थी। किन्तु वे अपनी प्रतिष्ठा का लोभ छोड़कर उनके चरणों में नहीं जा सकें।

भावार्थ- यह प्रसंग वि. सं. १७३५ में हरिद्वार में घटित होता है, जब सभी धर्माचार्यों ने श्री प्राणनाथ जी को विजयाभिनेंद बुद्ध निष्कलंक स्वरूप मानकर आरती तो उतारी, किन्तु अपने शिष्यों के सामने अपनी प्रतिष्ठा दिखाने के लिए किसी ने भी तारतम ज्ञान को ग्रहण नहीं किया।

कई कहावें खावंद कलमें, कई साहेब सहीफे किताब।

होए न काम महंमद बिना, जिन सिर आखिरी खिताब।।८१।।

बहुत से लोग स्वयं को कुर्आन तथा अन्य धर्मग्रन्थों के ज्ञान का स्वामी समझ बैठते हैं। यह प्रतिष्ठा उनके अहंकार में वृद्धि करती है किन्तु कुर्आन सहित सभी

धर्मग्रन्थों के रहस्य तो एकमात्र श्री प्राणनाथ जी के पास है। यह शोभा मात्र उन्हीं को है।

**जहूद नसारे पैगंमर, कई केहेलाए रात के माहें।
दिन ऊगे महंमद बुराक के, आगूं दौड़े सब जाएं। ॥८२॥**

यहुदियों के मूसा तथा ईसाइयों के ईसा अज्ञानता के अन्धकार में ही पैगम्बर कहलाये। तारतम ज्ञान के सूर्य के उग जाने पर संसार के सभी पैगम्बर जागृत बुद्धि के घोड़े पर सवार श्री प्राणनाथ जी के सैनिक की भांति आगे-आगे दौड़ते हुए चल रहे हैं।

भावार्थ- जब मुहम्मद साहब को मेयराज हुआ तो वे परब्रह्म के जोश स्वरूप जिब्रील रूपी घोड़े (बुराक) के ऊपर बैठकर सत्स्वरूप तक गये थे। जागनी ब्रह्माण्ड में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जागृत बुद्धि (अस्माफील) रूपी घोड़े पर सवार हैं और उनके सम्मान में आगे-आगे सभी पैगम्बर दौड़े हुए चले जा रहे हैं अर्थात् तारतम ज्ञान एवं श्री प्राणनाथ जी की महिमा शब्दों से परे है।

**देखो नामे मेयराजमें, किताब सिकंदर।
अस्वार महंमद की जलेबमें, चलें प्यादे पैगंमर। ॥८३॥**

हे साथ जी! आप मेयराजनामा तथा सिकन्दर जल करनीन के ग्रन्थ देखिये। इनमें लिखा है कि जागृत बुद्धि के घोड़े पर सवार श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) की सेना (ज्ञानियों की सेना) में सभी पैगम्बर उनके सम्मान में पैदल चल रहे हैं।

भावार्थ- 'जलेब' शब्द फारसी भाषा का है जिसका अर्थ सेना है, किन्तु यहाँ शोभा यात्रा से भाव लिया जा सकता है। सेना का प्रत्येक सैनिक एक पैगम्बर है जिसने आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार किया है। श्री प्राणनाथ जी की शोभा सभी पैगम्बरों के स्वामी की है जो घोड़े पर सवार हैं।

**बैठावें आठों भिस्तमें, छोटा बड़ा जो कोए।
जो जैसा तैसी तिनों, महंमद पोहोंचावें सोए। ॥८४॥**

इस ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों को, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, श्री प्राणनाथ जी उन्हें बहिश्तों में अवश्य ही अखण्ड करेंगे। जो जैसा कर्म करेगा, उसे श्री जी उसके अनुकूल बहिश्त में मुक्ति देंगे।

**या दोऊ गिरो दोऊ असों की, जो बका ठौर हैं दोए।
फरिस्ते रूहें उतरी लैलमें, सो भी सूरत हकी से होए।।८५।।**

बेहद मण्डल तथा परमधाम दोनों ही अनादि और अखण्ड है। सत्स्वरूप से ईश्वरीय सृष्टियां तथा परमधाम से ब्रह्मसृष्टियां माया का खेल देखने के लिये संसार में आयी हैं। श्री प्राणनाथ जी ही इन दोनों सृष्टियों को उनके धाम पहुँचायेंगे।

**एही फजर दिन मारफत, सब आवें माहें दीन।
तबहीं मुआ दज्जाल, आया सबों आकीन।।८६।।**

यही वह स्वर्णिम समय है जिसमें परब्रह्म की पूर्ण पहचान देने वाले तारतम ज्ञान के अवतरण से रात्रि का अन्धकार मिट गया है तथा प्रातःकाल का उजाला फैल गया है। अब सभी लोग सत्य धर्म की शरण में आ रहे हैं। अब सबके हृदय में विद्यमान अज्ञान-रूपी दज्जाल का नाश हो गया है और सभी को एक अक्षरातीत परब्रह्म पर विश्वास हो गया है।

**एक कुरान का माजजा, और नबीकी नबुवत।
अव्वल फुरमाया सब हुआ, तब होए साबित।।८७।।**

कुरान (श्री कुलजम् स्वरूप) का चमत्कार तथा नबी की नबुवत को तभी सिद्ध हुआ समझना चाहिए, जब मुहम्मद साहब ने जो कुछ कहा है, वह सत्य प्रमाणित हो जाय।

भावार्थ- तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही समस्त विश्व एक परब्रह्म का उपासक बनेगा। इसी कार्य में श्री प्राणनाथ जी की महिमा छिपी है किन्तु यह पूर्णरूप से न्याय के दिन योगमाया के ब्रह्माण्ड में घटित होगा तथा आंशिक रूप से इस ब्रह्माण्ड में।

**आयतें हदीसैं सब कहे, खुदा एक महंमद बरहक।
और न कोई आगे पीछे, बिना महंमद बुजरक।।८८।।**

कुरान की आयतों तथा हदीसों में कहा गया है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म एक है। मुहम्मद स. अ. व. व. ने जो कुछ कहा है, वह पूर्णतया सत्य है। वस्तुतः असीम महिमा वाले श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) के समान संसार में कोई भी नहीं है। वे स्वयं में अद्वितीय महिमा वाले हैं।

**ए जो कहे लाखों हो गए, रात में पैगंमर।
पैगाम ल्यावे कोई हक का, तो क्यों न करे फजर ॥८९॥**

वैसे यह कहा जाता है कि संसार में लाखों (एक लाख बीस हजार) पैगम्बर हो चुके हैं। किन्तु प्रश्न यह है कि यदि उन्होंने परब्रह्म का साक्षात्कार करके उनका संदेश संसार को दिया है तो उनसे अज्ञानता का अन्धकार मिटकर ज्ञान का उजाला क्यों नहीं हुआ?

**कहे लाखों पैगंमर हो गए, कई और लिखे बुजरक।
किन बका पट न खोलिया, दिए किनने किसे पैगाम हक ॥९०॥**

धर्मग्रन्थों में ऐसा कहा जाता है इस संसार में लाखों पैगम्बर और बहुत से महान पुरुष हो चुके हैं। किन्तु इनमें से किसी ने भी अखण्ड धाम का मार्ग क्यों नहीं दर्शाया? ऐसी अवस्था में बिना परमधाम को देखे ही किसने किसको परब्रह्म का संदेश दिया?

**बका तरफ न पाई काहू ने, तो द्वार खोले क्यों कर।
क्यों बका बिन बड़े कहे रातमें, क्यों किन तरफ न कहीं पैगंमर ॥९१॥**

जब आज तक किसी को अखण्ड परमधाम का ज्ञान ही नहीं मिला तो दूसरों को वे क्या बताते (द्वार खोलते)? इस अज्ञानता से भरे संसार में बिना परमधाम का साक्षात्कार किये वे महान कैसे कहला सकते हैं? किसी भी पैगम्बर ने अब तक यह क्यों नहीं बताया कि परब्रह्म कहाँ (किस ओर) है?

**मेयराज एक महंमद पर, दूजे हुआ न किन ऊपर।
मेयराज हुए बिना पैगंमरों, पैगाम दिए क्यों कर ॥९२॥**

केवल मुहम्मद साहब को ही परब्रह्म का दर्शन हुआ, अन्य किसी को नहीं। ऐसी स्थिति में बिना दर्शन प्राप्त किये उन्हें पैगम्बर कैसे कहा जा सकता है तथा वे दूसरों को पैगाम किस प्रकार दे सकते हैं?

**अजूं खड़ियां इनोकी उमतें, पूजें पानी आग पत्थर।
सो तो कही सब रानियां, मांगे माजजे किया कुफर ॥९३॥**

आज भी संसार में इनके अनुयायी अग्नि, पानी तथा पत्थरों की पूजा करते हैं। ये परब्रह्म से चमत्कार मांगकर अपराध करते हैं, इसलिये इन्हें रद्द कर दिया गया अर्थात् इनकी आध्यात्मिक उन्नति को अवरूद्ध कर दिया गया।

लिख्या सिपारे दूसरे, बखत नूह पैदास।

तब कही सब कुफरान, इसलाम न गिरो कोई खास ॥१४॥

कुर्आन के दूसरे सिपारे में लिखा है कि नूह पैगम्बर के जन्म के समय में सभी जीव सृष्टि के लोग थे। उस समय सत्य, प्रेम और शान्ति के मार्ग पर चलने वाले ब्रह्ममुनि अवतरित नहीं हुए थे।

कह्या एक गिरो थी मोमिन, ले आदम लग तोफान।

आगूं अमल इबराहीम के, हुती सबें कुफरान ॥१५॥

किन्तु, यह भी कहा गया है कि आदि आदम के समय से लेकर नूह पैगम्बर के समय में आने वाले प्रलय के बीच में ब्रह्मसृष्टियों का एक समूह था। इसी प्रकार सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (इब्राहीम पैगम्बर) से पूर्व केवल जीव सृष्टि ही थी।

मोमिन गिरो एक नूह के, जिनों बीच था स्याम।

सो पार हुई किस्ती चढ़, जो चालीस जुफ्त तमाम ॥१६॥

ब्रह्मात्माओं का एक समूह नूह पैगम्बर के साथ था। नूह पैगम्बर के पुत्र शाम (श्री कृष्ण जी) थे। सभी ब्रह्मात्मायें चालीस जुत्थों (समूहों) में थी जो योगमाया की नौका में महाप्रलय से सुरक्षित रही।

कहे एही चालीस तूबे पर, जो दरखत जिमी बीच स्याम।

यामें न होए कोई कम, जाकी सिफत लिखी अल्ला कलाम ॥१७॥

नित्य वृन्दावन में वृक्ष के नीचे खड़े श्री कृष्ण (शाम) के पास ये चालीस जुत्थ ब्रह्मात्मायें योगमाया की नौका में पहुँची। इनकी संख्या में कभी कमी नहीं हो सकती। इन्हीं ब्रह्मसृष्टियों की महिमा कुर्आन में लिखी हुई है।

**आदम नूह तोफान लग, एक गिरोह थी नूह अमल।
सो पार हुई किस्ती चढ़, और काफर डूबे सब जल ॥९८॥**

आदि आदम से लेकर नूह पैगम्बर के समय में आने वाले प्रलय के समय तक केवल नूह पैगम्बर के समय में ही ब्रह्मसृष्टियों का समूह था। वे योगमाया की नौका के सहारे प्रलय में सुरक्षित रही, शेष सृष्टि के जीव प्रलय में लीन हो गये।

भावार्थ- योगमाया को नाव कहने का आशय यह है कि योगमाया को छोड़कर समस्त कालमाया के ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया था। ब्रह्मसृष्टियां योगमाया में ही सुरक्षित रही। वहीं पर श्री कृष्ण जी के साथ महारास की लीला हुई।

**सो भी गिरो कही महंमद की, लिखी हदीसों महंमद।
आखिर कह्या नूह गिरो की, महंमद देसी साहेद ॥९९॥**

मुहम्मद साहब ने अपनी हदीसों में लिखा है कि ये ब्रह्मसृष्टियां परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी की अंगरूपा हैं। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी नूह पैगम्बर के समय आने वाले प्रलय तथा ब्रह्मात्माओं की वास्तविकता को प्रकट करते हुए मेरे कथन की साक्षी देंगे।

**इबराहीम के अमल में, ना इसलाम गिरो दीन।
कही एक लड़की निमरूद की, कछू ल्याई थी आकीन ॥१००॥**

इब्राहीम पैगम्बर के समय में सत्य धर्म पर चलने वाले ब्रह्मसृष्टियों का समूह नहीं था। उस समय निमरूद नामक बादशाह की लड़की थी। मात्र उसी का इब्राहीम पैगम्बर पर विश्वास था।

**लिख्या फलाने सिपारे, इबराहीम के अमलमें।
और मुसलमान कोई न हुता, तो लई वारस जहूदेनें ॥१०१॥**

कुर्आन के किसी सिपारे में लिखा है कि इब्राहीम के समय में परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाला कोई मुसलमान नहीं था, इसलिये यहूदी लोग ही उनके उत्तराधिकारी हुए।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक का सूक्ष्म अर्थ यही है कि सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने अवश्य ३१३ आत्माओं को तारतम ज्ञान दिया किन्तु किसी की भी आत्मा जागृत नहीं हुई। गांगजी भाई ने सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप की पहचान कर उनकी पूर्णरूप से सेवा की। श्री देवचन्द्र जी की गादी पर बिहारी जी बैठे जो आध्यात्मिकता से कोसों दूर थे। उनके अनुयायी तारतम ज्ञान की अपेक्षा रूई की गादी को ही प्राथमिकता देते थे। यह प्रसंग कुर्आन के पार: ३ तिल्करसूल सूर बकर: २ आयत- २५८-२६० “अलम तर इल्लजी हाज्ज इब्राहीम फी रब्बिही अन्नल्लाह अजीजुन् हकीमुन्” में है। भला तुमने उस शख्स को नहीं देखा जो इस वजह से कि खुदा ने उसको सल्लतनत बख्शी थी, अर्थात् इब्राहिम से परवरदिगार के बारे में झगड़ने लगा। खुदा गालिब व हिकमत् वाला है।

**मगज देखो मुसाफ का, सबों महंमद हिदायत।
आसमान जिमी या जो कछू, और न काहू नसीहत ॥१०२॥**

हे साथ जी! आप कुर्आन के गुह्य रहस्यों को देखिये। आपको विदित होगा कि इसमें मुहम्मद साहब ने सभी के लिये निर्देश दिया है। धरती से लेकर आकाश तक में जो भी सृष्टि है, उसमें ऐसा अलौकिक निर्देश और कहीं नहीं है।

भावार्थ- कुर्आन के गुह्यतम रहस्य श्री कुलजुम स्वरूप में हैं जिसमें श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) ने सबके कल्याण के लिये जो निर्देश दिया है, वैसा अन्य किसी भी धर्मग्रन्थ में नहीं है। कुर्आन की आयतों में मिलावट करके तथा उसके अर्थों को विकृत करके ऐसी विषम स्थिति पैदा कर दी गयी है कि यह मात्र कुछ कट्टरपन्थियों का ग्रन्थ रह गया है।

**ए तीनों सूरत महंमद की, करें सब पर हिदायत।
तो लिख भेज्या हक ने, क्यों हलाक होए उमत ॥१०३॥**

मुहम्मद की तीनों सूरतों - मुहम्मद स. अ. व. व., सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी के द्वारा दिया गया सर्वोच्च आध्यात्मिक तत्व ज्ञान समस्त ब्रह्माण्ड के लिये है। परब्रह्म ने कुर्आन में कहा है कि ब्रह्मात्मायें संसार में दुःखी क्यों रहें? अतः उन्हें प्रबोधित करने के लिये आध्यात्मिक तत्व ज्ञान आवश्यक है।

जो बीच जिमी आसमान के, महंमद हिदायत सब पर।

भाई महंमद अर्स खिलवत, नसीहत और न इन बिगर ॥१०४॥

श्री कुल्जुम स्वरूप में निहित श्री प्राणनाथ जी का ज्ञान धरती से लेकर आकाश तक की समस्त सृष्टि के लिये है। परमधाम के ब्रह्ममुनियों को मुहम्मद साहब ने अपना भाई कहा है। ये परमधाम की खिलवत के आनन्द में डूबे रहने वाले हैं। भला श्री जी के अतिरिक्त अन्य कौन हो सकता है जो इन्हें सिखापन (हिदायत) देने की सामर्थ्य रखता है?

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को यह आत्म-चिन्तन करना चाहिए जो श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान को एक सम्प्रदाय विशेष की सीमा में बांधे रखना चाहते हैं और वैष्णवों की कण्ठी, तिलक, परिक्रमा, पूजा-पाठ की ही नकल करने में अपनी सर्वोच्च आध्यात्मिक उपलब्धि समझते हैं।

करी अगली किताबें मनसूख, कहे जमाने रद।

ना नूह तोफान पीछे मोमिन, जो लों आए महंमद ॥१०५॥

अतः पहले की आयी हुई चार किताबों - इंजील, जंबूर, तौरेत तथा कुर्आन-को रद्द (महत्वहीन) कर दिया गया। इस समय की प्रचलित शरीयत एवं तरीकत (कर्मकाण्ड तथा उपासना पद्धति) को भी परब्रह्म ने निरर्थक कर दिया। रास लीला के पश्चात् जब तक वि. सं. १६३८ में श्यामा जी (श्री देवचन्द्र जी) का प्रकटन नहीं हुआ था, तब तक ब्रह्ममुनि भी इस संसार में नहीं आये थे।

कह्ला तब ल्याए कई ईमान, कई रहे ईमान बिगर।

केतेक पीछे ल्याए थे, ईमान इस्माईल पर ॥१०६॥

उस समय कई (३१३) सुन्दरसाथ ने सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी से तारतम ज्ञान ग्रहण लिया। कुछ ऐसे भी थे जो बिना विश्वास के ही रह गये। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के धामगमन के पश्चात् उनके सुपुत्र बिहारी जी को गादी पर बैठाया गया। कुछ लोगों ने उन पर भी अपना विश्वास व्यक्त किया।

सो ईमान तोलो चल्या, एहिया आया बखत जिन।

तब मजाजी दुनी का, ईमान न रह्ला किन ॥१०७॥

श्री मिहिरराज जी के जागनी लीला के कार्य क्षेत्र में आने तक उन लोगों का ईमान (विश्वास) बिहारी जी पर बना रहा। बिहारी जी के धामगमन के पश्चात् किसी भी सांसारिक जीव का विश्वास गादी पर न रहा।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी को इब्राहीम पैगम्बर माना गया है। उनके दो पुत्र थे - ईस्माइल और इस्हाक। बड़े पुत्र इस्माइल बिहारी जी है। उन्हें जाहिरी गादी मिली किन्तु वे आध्यात्मिक सम्पदा से वंचित रहे। उनके छोटे पुत्र इस्हाक को आध्यात्मिक तत्व ज्ञान की अलौकिक सम्पदा मिली। जिकरिया के पुत्र एहिया की शोभा श्री मिहिरराज जी को मिली जिन्होंने जागनी कार्य में वृद्धि की।

**सो एहिया ईसे पर, पेहेले ल्याया ईमान।
कायम किया तिन दीन को, ए देखो दिल से बयान ॥१०८॥**

हे साथ जी! आप अपने हृदय में इस बात का विचार कीजिए। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी पर सबसे पहले पूर्ण विश्वास (ईमान) श्री मिहिरराज जी ने किया और जागनी लीला को उत्तरोत्तर बढ़ाया।

भावार्थ- इस सम्बन्ध बीतक (१७/६) का यह कथन ध्यान देने योग्य है-
**ज्यादा किया दीन को, एहिया ने इस ठाम ।
साथ की सूरत फेरके, लगाए लई इस्लाम ॥**

कुर्आन में यह प्रसंग पा. ३ सू. ३ आयत ३६-४१ में वर्णित है।

**दुनी कहे पैगंमर हो गए, लिखी सिफतें इनों आखिर ।
ए बका बातून क्यो बूझही, जो फंदे बीच माएनों ऊपर ॥१०९॥**

संसार के जीव कहते हैं कि ये पैगम्बर तो पहले हो चुके हैं। कुर्आन के शब्दों के बाह्य अर्थ में जो लोग फंसे हुए हैं वे भला परमधाम की गुह्य बातों को कैसे जान सकते हैं? वस्तुतः कुर्आन में जिन पैगम्बरों की महिमा गायी गयी है उनका प्रसंग कियामत के समय ब्रह्मात्माओं पर घटित होना है।

**जेता माएना मुसाफ का, किया नजूम और बातन।
सो पढ़े कहें किस्से हो गए, डालें बीच नाबूद दिन॥११०॥**

सम्पूर्ण कुर्आन का अर्थ सूक्ष्म एवं उस भविष्य के कथन से जुड़ा हुआ है जो कियामत के समय घटित होना है। कुर्आन का बाह्य अर्थ लेने वाले पढ़े-लिखे विद्वान कहा करते हैं कि ये तो किस्से हैं जो बीत चुके हैं। वे इन कथानकों को मात्र भूतकाल की बातें मान लेते हैं।

**किस्से आखिरी कलाम अल्लाह के, जिन खोलें होसी हैयात।
सो पढ़े कहें होए गए, जित दुनी रानी बीच जुलमात॥१११॥**

कुर्आन में वर्णित ये किस्से वक्त-ए-आखिरत (कियामत) के लिये हैं, जिनके गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण होने के पश्चात् संसार को अखण्ड मुक्ति मिलनी है। कुर्आन के विद्वान उलेमा कहते हैं कि ये किस्से तो हो गये। इस मान्यता को मानने वाली दुनिया निराकार में ही उलझी रही।

**जो कहे किस्से हो गए, कहे दाग देऊं तिन नाक।
लिख्या सिपारे उनतीस में, राह गुम हुआ नापाक॥११२॥**

जो तथाकथित स्वयंभू विद्वान यह कहते हैं कि ये किस्से तो बीत गये, मैं उनकी नाक को गर्म सलाखों से जला दूँ। कुर्आन के २६ वें सिपारे में लिखा है कि अपवित्र हृदय वाले लोगों का समूह सत्य की राह से भटक जाता है।

भावार्थ- 'नाक काटना' या 'नाक को जला देना' एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है किसी को इतना लज्जित करना कि वह प्रतिष्ठाविहीन हो जाय। गर्म सलाखों से आशय है, ज्ञान की तीक्ष्ण युक्तियों से।

**लिख्या नूर नामें मिने, रूह मुर्ग किया गुसल।
पर झारे बूंदें गिरीं, सो खाड़े हुए पैगंमर मिल॥११३॥**

नूरनामे में लिखा है कि श्यामा जी की आत्मा-रूपी मुर्ग ने मोहसागर में स्नान किया अर्थात् तन धारण किया। उस मुर्ग के पंख झटकने से जो बूंदें गिरीं उससे पैगम्बर

उत्पन्न हो गये।

भावार्थ- पंख झटकने से गिरने वाली बूंदों से पैगम्बरों के उत्पन्न होने का आशय यह है कि श्यामा जी अपनी अंगरूपा आत्माओं को लेकर इस संसार में आयी, जिन्होंने मानव तन में प्रवेश किया।

**सो मुरग रूह महंमद की, तहां से बरसी बूदें नूर।
सो नूर से हुए पैगंमर, इनों दे पैगाम किया जहूर ॥११४॥**

श्यामा जी की आत्मा को मुरग कहा गया है। उनके पंखों से नूर के बूंदों की वर्षा हुई। उन नूरमयी बूंदों की वर्षा हुई जिन्होंने पैगम्बरों के रूप में संसार में श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान फैलाया।

**लाख ऊपर चौबीस हजार, कहे उठे बूंदों के।
पैगाम दिए इनों आखिर, जो बका पट महंमदें खोले ॥११५॥**

उन नूरी बूंदों से १ लाख २४ हजार पैगम्बर पैदा हुए। श्री प्राणनाथ जी ने माया का आवरण हटा कर अखण्ड परमधाम का जो मार्ग दर्शाया, उसे इन पैगम्बरों ने संसार में फैलाया।

भावार्थ- एक-एक ब्रह्ममुनि में १०-१० पैगम्बरों की शक्ति मानी गयी है। इस प्रकार १२ हजार ब्रह्मात्माओं ने श्री प्राणनाथ जी के अनुपम ज्ञान को संसार में फैलाया है।

**जो हो गए एते पैगंमर, तो क्यों रही अबलों रात।
तो तबहीं बका दिन कर, उड़ाए देते जुलमात ॥११६॥**

यदि इस संसार में १ लाख २४ हजार पैगम्बर हो गये हैं तो अब तक अज्ञानता का इतना अधिक अन्धकार क्यों छाया हुआ है? यदि इतने पैगम्बर मिलकर ज्ञान फैलाते तो संसार के लोग अब तक अज्ञानता को छोड़ दिये होते और परमधाम के अनुगामी बन गये होते।

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, कही जो खासल खास।

जाकी सिफत हदीसों आयतों, पेड़ नूर बिलंद से पैदास ॥११७॥

कियामत के समय प्रकट होने वाले पैगम्बरों का यह समूह ही ब्रह्मसृष्टि कहलाता है। ये ब्रह्ममुनि परमधाम से अवतरित हुए हैं। कुर्आन की आयतों तथा हदीसों में इनकी ही महिमा का वर्णन है।

**नूर-अनामिन अल्ला तो कहा, कुल-सैयन-मिन्नूरी।
करे इन का दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहूरी ॥११८॥**

अक्षर ब्रह्म की आत्मा (मुहम्मद स. अ. व. व.) का कथन है कि मैं परब्रह्म का नूर हूँ और यह सम्पूर्ण सृष्टि मेरे नूर से उत्पन्न हुई। कितने आश्चर्य की बात है कि ये मिथ्या हृदय वाले स्वाप्निक जीव स्वयं को ही अल्लाह (परब्रह्म) का नूर कहने लगते हैं। हे साथ जी! उनकी नादान बुद्धि और चिन्तन पर विचार कीजिए।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई की प्रथम पंक्ति एक हदीस का अंश है- “अनामिन् नूरि अल्लाह कुल्ल शैअ मिन्नूरी” अर्थात् अक्षर ब्रह्म का नूर बेहद मण्डल है जिनके मन स्वरूप अव्याकृत से इस स्वाप्निक जगत की सृष्टि होती है। बीतक (१६/८) में इसी तथ्य को दर्शाया गया है- **महंमद हक के नूर से, भई दुनिया महंमद ने नूर ।**

**महंमद नूर हक का, यों गिरो महंमद का नूर।
जिन किया दावा इन का, सो रहे दूर से दूर ॥११९॥**

श्यामा जी अक्षरातीत श्री राज जी के नूर हैं तथा उनके नूर से सभी ब्रह्मसृष्टियां हैं। संसार के जीव अज्ञानतावश स्वयं को ब्रह्मसृष्टि (मोमिन) होने का मिथ्या दावा करते हैं। इस प्रकार, वे परम सत्य से पूर्णतया वंचित रहते हैं।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों की तरह स्वयं को प्रेम एवं सर्वस्व समर्पण के मार्ग पर चलने का अधिकार तो सबको है किन्तु अहंकारवश स्वयं को उनके समान मानना पतन का कारण है।

**ताथें जो कछू कहा मुसाफमें, सो सब आखिरी सिफत।
सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत ॥१२०॥**

इसलिये कुर्आन में जिन ब्रह्ममुनियों (मोमिनो) की महिमा दर्शायी गयी है, वह वक्त-ए-आखिरत में प्रकट होने वाली आत्माओं (ब्रह्ममुनियों) की है। जिन्हें परब्रह्म की पूर्ण पहचान देने वाला तारतम ज्ञान नहीं मिला है, भला मिथ्या हृदय वाले स्वाभिक जीव इस रहस्य को कैसे जान सकते हैं?

जो लों ले ऊपर का माएना, तो लों छोड़ ना सके फना।

हक हादी पाए बिना, दुनी उड़ जात ज्यों सुपना ॥१२१॥

जब तक संसार के लोग कुर्आन के मात्र बाह्य अर्थों में ही उलझे रहेंगे, तब तक वे इस नश्वर जगत को न तो छोड़ सकते हैं और न इससे परे अखण्ड धाम के विषय में सोच ही सकते हैं। जब तक अक्षरातीत के युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी की पहचान नहीं हो जाती है, तब तक संसार के जीवों की स्थिति स्वप्न की भांति प्रलयावस्था में नश्वरता की ही होती है।

महामत कहे मोमिनो पर, बरसत बदली नूर।

हक बका अर्स अजीम में, पट खोल लिए हजूर ॥१२२॥

श्री महामति जी कहते हैं कि ब्रह्मात्माओं पर श्री राज जी की अनन्त कृपा (मेहर) भरी बदलियों (बादलों) की वर्षा हो रही है। प्राणेश्वर अक्षरातीत ने माया का आवरण हटाकर अपनी अंगरूपा आत्माओं की अन्तर्दृष्टि को अखण्ड परमधाम में अपने सम्मुख कर लिया है।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २५५ ॥

बाब तीनों गिरो के फैल हाल मकान

(तीनों सृष्टियों की करनी, रहनी एवं धाम)

इस प्रकरण में तीनों सृष्टियों के आचरण (करनी), अवस्था (रहनी) एवं मूल निवास के विषय में प्रकाश डाला गया है।

जो लों पट न खोल्या बका का, तो लों फना दुनी बीच रात।

मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात ॥१॥

इस संसार में श्री प्राणनाथ जी का हृदय परमधाम में विराजमान मूल स्वरूप श्री राज जी की तरह ही परम सत्य (मारिफत) का स्वरूप है। जब तक श्री जी ने माया का आवरण हटाकर अखण्ड परमधाम को नहीं दर्शाया था, तब तक यह सम्पूर्ण संसार अज्ञानता के अन्धकार में भटक रहा था और अखण्ड मुक्ति का अधिकारी नहीं था। अब श्री प्राणनाथ जी ने परब्रह्म की अंग-स्वरूपा ब्रह्मात्माओं की पहचान कराकर सर्वत्र ही दिन के समान ज्ञान का उजाला कर दिया है।

भावार्थ- यद्यपि श्री महामति जी के धाम हृदय में ही अक्षरातीत अपनी पांचों शक्तियों सहित विराजमान हैं और उन्हें ही अक्षरातीत (प्राणनाथ) कहलाने की शोभा दी है, अतः यहां श्री प्राणनाथ जी के हृदय का प्रसंग है। स्वलीला अद्वैत परमधाम में एकत्व (वहदत) की लीला है। अतः इसी दृष्टि से इस चौपाई का आशय समझना चाहिए।

**पेहेले सरत करी महंमदे, हक हम आवेंगे आखिर।
द्वार खोलें तब हक बका, करें दिन सिफायत फजर ॥२॥**

मुहम्मद स. अ. व. व. ने यह वचन दिया है कि कियामत के समय जब स्वयं परब्रह्म आखरूल इमाम इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रकट होंगे, तब मैं भी उनके साथ रहूंगा। उस समय जब परब्रह्म तारतम ज्ञान (इल्म-ए-लदुन्नी) के द्वारा परमधाम की पहचान करायेंगे और अज्ञानता का अन्धकार मिटाकर ज्ञान का उजाला करेंगे। उस समय मैं आप सभी की प्रशंसा (सिफत) करूंगा अर्थात् परमधाम की राह पर चलने के लिये प्रेरित करूंगा।

भावार्थ- प्रायः शरीयत की राह पर चलने वाले मुस्लिमजन सिफायत (सिफत) का यही अर्थ समझते हैं कि चाहें हम कितने भी पाप-कर्म क्यों न करें, मुहम्मद साहब की सिफारिश से हमें बहिश्त तो अवश्य ही मिलेगी। किन्तु, प्रश्न यह है कि वह सच्चा न्याय कैसे कहा जा सकता है जिसमें सिफारिश के द्वारा कोई पापी व्यक्ति भी बहिश्त का अधिकारी बन जाता है और सिफारिश न पाने से दूसरे पन्थ का एक धर्मात्मा व्यक्ति भी नरक (दोजक) का कष्ट पाता है? क्या परब्रह्म कोई मनुष्य है जो सिफारिश से प्रभावित होकर निष्पक्ष न्याय नहीं कर पायेंगे या मुहम्मद साहब भी मात्र अपने ही अनुयायियों की सिफारिश क्यों करेंगे? क्या समस्त संसार को वे अपना नहीं समझते? क्या परब्रह्म केवल

मुसलमानों के लिये ही कृपालु है?

वस्तुतः एक सच्चिदानन्द परब्रह्म के प्रति अनन्य प्रेम करना बहुत बड़ा मानवीय गुण है। मुहम्मद स.अ.व.व. की यह महिमा (सिफत) है कि उन्होंने अरब के असभ्य लोगों को भी एक परब्रह्म की भक्ति (शरीयत एवं तरीकत के द्वारा) सिखला दी। इस सिफत को न्याय के दिन जीवों के द्वारा याद किया जाना ही मुहम्मद साहब की सिफायत की लीला होना है। न्याय के दिन जब संसार के जीव अपनी भूलों पर प्रायश्चित्त करते हुए तड़पेंगे और मुहम्मद साहब का वास्ता देकर उनकी अद्वैतवाद की शिक्षा को याद करते हुए सच्चे हृदय से क्षमा मांगेंगे तो उन्हें बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति मिल जायेगी। ऐसा कभी नहीं समझना चाहिए कि मुहम्मद साहब मात्र मुसलमानों का ही पक्ष लेकर उनके लिये विशेष सिफारिश करेंगे।

उपरोक्त प्रसंग में सिफायत का अर्थ बख्शीश (कृपा) करने से है। मुहम्मद साहब के द्वारा एक अद्वैत परब्रह्म की भक्ति कराना ही सबसे बड़ी बख्शीश है। जिस मुहम्मद साहब (अक्षर ब्रह्म की आत्मा) ने कुर्आन का ज्ञान दिया, उन्हीं अक्षर ब्रह्म की ज्ञानधारा तो वेद के रूप में अवतरित हुई है। ऐसी अवस्था में उनकी दृष्टि में हिन्दू-मुस्लिम एवं क्रिश्चियन आदि का भेदभाव कैसे हो सकता है? गीता का यह कथन सर्वविदित है- 'ब्रह्मक्षरं समुद्भवम्' अर्थात् वेद की उत्पत्ति अविनाशी ब्रह्म से हुई है। ऐसी स्थिति में पक्षपात की मानसिकता मानी ही नहीं जा सकती। 'करसी दुनिया कायम, ए महंमद की सिफात' (खुलासा १७/१६) से भी यह स्पष्ट है कि आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी की महिमा ही इसी में निहित है कि वे सारे संसार को अखण्ड मुक्ति दें। इस प्रकार न्याय के दिन उनकी सिफत (महिमा) का प्रकट होना ही सिफायत (बख्शीश) करना है। वस्तुतः सिफायत का अर्थ बख्शीश (कृपा) करने से है। जब तीनों सूरतें आन्तरिक रूप से एक हैं तो बशरी सूरत की सिफायत को हकी सूरत की सिफायत के रूप में क्यों नहीं देखा जा सकता?

तबहीं दुनी पाक होएसी, तबहीं होसी एक दीन।

जब मुआ सबोंका सैतान, तब आया सबों आकीन ॥३॥

जब सबके हृदय में विराजमान अज्ञान रूपी शैतान का विनाश हो जायेगा, तब सभी को एक परब्रह्म पर विश्वास होगा। उस समय सबके हृदय पवित्र हो जायेंगे तथा सारे संसार में तारतम ज्ञान पर आधारित एक सत्य धर्म स्थापित हो जायेगा।

**इत इमाम करें इमामत, हक बका सूरत देखाए।
करें मोमिनात मोमिन सिजदा, कराए इस्कें खुदी उड़ाए॥४॥**

श्री प्राणनाथ जी ब्रह्मात्माओं को परमधाम तथा परब्रह्म की शोभा का साक्षात्कार कराकर उनका नेतृत्व करेंगे। अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत के प्रेम में डूबकर ब्रह्ममुनि अपने अहंकार को नष्ट कर देंगे तथा अपने प्रेममयी स्वभाव के अनुकूल परब्रह्म को प्रणाम करेंगे।

**देखा देखी का सिजदा, किया होवे जिन।
कह्या हाड़ पीठका सींग ज्यों, पीठ नरम न होवे तिन॥५॥**

ब्रह्मसृष्टियों की देखा-देखी जीव सृष्टि भी तारतम ज्ञान का अनुसरण कर परब्रह्म को प्रणाम करने का अभिनय करेगी किन्तु उनकी पीठ की हड्डी सींग के समान कठोर होगी तथा वह कोमल होकर झुक नहीं सकेगी।

भावार्थ- परब्रह्म के प्रेम मार्ग में विनम्रता तथा हृदय की कोमलता का होना अनिवार्य है। जीव सृष्टि सुन्दरसाथ के समूह में सम्मिलित होकर भी विनम्रता एवं हृदय की कोमलता को नहीं अपना सकेगी। पग-पग पर उसके अहंकार को देखा जा सकता है।

**कह्या चमड़ी टूटे पीठ की, सिर ना नीचा होए।
कही सेर छाती मुरग गरदन, ए पीठ हाड़ चमड़ी तोड़त दोए॥६॥**

कुरआन में कहा है कि परब्रह्म को सिज्दा करने का अभिनय करने में भले ही जीवों के शरीर की पीठ की त्वचा फट जाय किन्तु उनका सिर नहीं झुक सकेगा। उनका हृदय सिंह की छाती के समान कठोर होता है तथा उनकी गर्दन मुर्गे के समान होती है, जो अहंकार के कारण झुकना जानती ही नहीं।

**हक इलमें पट खोल के, सब को चिन्हाए करे दिन।
असों भिस्तों हद अपनी, करे कयामत उठाए बका तन॥७॥**

श्री प्राणनाथ जी तारतम ज्ञान के द्वारा माया का आवरण हटाकर सभी को बेहद तथा परमधाम की पहचान करायेंगे और उनके हृदय में विद्यमान अज्ञानता के अन्धकार को दूर करके अखण्ड ज्ञान का प्रकाश भर देंगे। वे सभी को उनके कर्मों तथा सम्बन्ध के अनुसार बहिश्तों तथा धामों में अखण्ड तन देकर अखण्ड मुक्ति का सुख देंगे।

**लिख्या बीच कुरान के, हक करें आप जो चाहे।
दर्ई पातसाही बनी इस्माईल को, लई बनी असराईल से छिनाए॥८॥**

कुर्आन में लिखा है कि परब्रह्म की जो इच्छा हो, वह करते हैं। उन्होंने बनी इसराईल से गादी छीनकर बनी इस्माईल को दिया।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक में बनी इस्माईल बिहारी जी है जो इब्राहीम पैगम्बर के पुत्र हैं। बनी असराईल श्री मिहिरराज जी हैं जो श्री देवचन्द्र जी के धर्मपुत्र हैं। चाकला मन्दिर की जाहिरी गादी बिहारी जी को प्राप्त हुई।

**और लिख्या हदीसों आयतों, ले माएने मुसाफ बातन।
सोई होसी हक नजीकी, जो दिल मोमिन अर्स तन॥९॥**

कुर्आन की आयतों एवं हदीसों में लिखा हुआ है कि जो कुर्आन के गुह्य अर्थों को ग्रहण करेंगे वे ही अपने प्रेम के द्वारा प्रियतम परब्रह्म के निकटस्थ होंगे और उन्हीं के हृदय को परब्रह्म का धाम कहा जाता है। उन्हीं के मूल तन परमधाम में है।

भावार्थ- कुर्आन के पा. २४ सू. ४९ आ. ६ फमन अज्लमु सज्दा “कुल इन्नमा अना बशरुम - मिस्लकुम्..... व वैलुल्-लिल्-मुशिरकीन” अर्थात् कह दो मैं भी हूँ। बशर (आदमी) तुम्हारी तरह ही हूँ। मुझ पर भी वही हुक्म आता है कि तुम्हारा एक अल्लाह ही पूज्य है। केवल तुम उसी का ध्यान करो और मुक्ति की मांग करो। मुशिरकों पर अफसोस है। जिस तरह मुहम्मद साहब को इश्क के कारण हबीब बनाया, ऐसे ही मोमिनों को करना है। इमाम जाफर सादिक अले की रिवायत से साहदत है कि मोमिन वह है, जो अर्श में मौजूद है वही अहले बेत है। वही रसूल्लाह के दोस्त हैं।

**जेता कोई हक अर्स दिल, सो कहे मरद मोमिन।
सो देखो हक इलम से, खोल रूह नजर बातन॥१०॥**

हे साथ जी! जिनका हृदय अक्षरातीत प्राणेश्वर का धाम होता है, उन्हें ही यथार्थ रूप में पुरुष अथवा ब्रह्ममुनि कहते हैं। आप इस तथ्य को तारतम ज्ञान के प्रकाश में अपनी सूक्ष्म आत्मिक दृष्टि को खोलकर देखिए (समझिए)।

**रूहें हजूर लई पट खोल के, बीच अर्स बका वतन।
याद हादी सोई देत हैं, जो कहे हकें सुकन॥११॥**

तारतम ज्ञान के प्रकाश में चितवनी के द्वारा ब्रह्मात्माओं ने माया का आवरण हटा दिया है और अपने अपने मूल तनों को अखण्ड परमधाम के मूल मिलावे में प्रियतम के सम्मुख बैठे हुए देखा है। अब श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रियतम परब्रह्म अपने उन वचनों की याद दिला रहे हैं जिसमें उन्होंने कहा था कि माया में जाने पर भी मैं तुम्हें अपने से अलग नहीं करूंगा।

**कहे अव्वल उतरते रूहों को, रदबदल है जेह।
सो लिखी हदीसों आयतों, सूरतें देत साहेदियां एह॥१२॥**

परमधाम से माया में आते समय ब्रह्मात्माओं से जो वार्ता हुई थी, उसमें श्री राज जी ने कहा था कि 'अलस्तो बिरबिकुम्' अर्थात् क्या मैं तुम्हारा प्रियतम नहीं हूँ। तब प्रत्युत्तर में आत्माओं ने कहा था कि 'कालू बला' अर्थात् निश्चित रूप से आप ही हमारे एक मात्र प्रियतम हैं। हम आपको कभी भी नहीं भूलेंगी (वले न भूले हम)। यह बात कुर्आन की आयतों तथा हदीसों में लिखी हुई है। कुर्आन की सूरतें इसकी प्रत्यक्ष साक्षी दे रही हैं।

भावार्थ- कुर्आन के कालत्मलऊ पा. ६ सू. ७ सुरतुल अअराफि आ. १७२ "व इज् अखज रब्बुक मिम्मनी आदम अला अन्फुसिहिम् अलस्तु बिरबिकुम् कालू बला कुन्ना अन् हाजा गाफिलून" और जब तुम्हारे परवरदिगार ने कहा कि क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ, तो उन्होंने कहा कि क्यों नहीं, हम गवाह हैं (बेशक आपही परवरदिगार हो)। यह साक्षी हमने इसलिये ली कि कियामत के दिन हमें यह न कहने लगे कि हमें इस की खबर नहीं थी।

**खोल्या नूर पार इमामें, अर्स अजीम बका द्वार।
कराया सिजदा हजूर, इस्क पूरा दे प्यार॥१३॥**

श्री प्राणनाथ जी ने अक्षर धाम से भी परे अखण्ड परमधाम का दिव्य ज्ञान दिया और उन्हें प्रेम में डूबोकर मूल मिलावे में विराजमान परब्रह्म श्री राजश्यामा जी के चरणों में प्रत्यक्ष प्रणाम कराया।

**हक हजूर रूहों ने, लई सिजदे बड़ी लज्जत।
किया रूहों हैयाती सिजदा, एआखिरी इमामत॥१४॥**

अपनी आत्मिक दृष्टि से मूल मिलावे में पहुँचकर ब्रह्ममुनियों ने परमधाम का बहुत अधिक रसास्वादन लिया। श्री प्राणनाथ जी के निर्देशन में जो जागनी लीला हुई,

उसमें आत्माओं ने अपने प्राणवल्लभ को अखण्ड प्रणाम किया।

भावार्थ- सम्पूर्ण श्री कुलजुम स्वरूप का सार तत्व चितवनी है जिसके द्वारा अपनी आत्मिक दृष्टि से मूल मिलावे में विराजमान युगल स्वरूप को प्रत्यक्ष रूप से निहारा (देखा) जाता है और उनके हृदय में प्रवेश कर परम सत्य (मारिफत) की उस अवस्था को प्राप्त किया जाता है, जिसे बताने के लिये लैल-तुल-कद्र के तीनों तकरार (ब्रज, रास एवं जागनी) हुए। दुर्भाग्यवश आजकल सुन्दरसाथ को चितवनी की अनमोल विधा से दूर करके मात्र पूजा-पाठ, मन्त्र-जप एवं कर्मकाण्डों में ही फंसाया जा रहा है। चितवनी के लिये सादगी भरे ध्यान कक्षों का निर्माण न करके लाखों - करोड़ों रूपयों के राज महलों जैसे मन्दिरों बनाये जा रहे हैं जिनमें स्वर्ण कलशों, सिंहासनों आदि की सजावट में बहुत धन तो व्यय होता ही है, आत्म जागृति के लिये वहां से न तो पूर्णरूप से तारतम ज्ञान का प्रकाश मिलता है और न ही चितवनी का मार्ग। यह भूल समाज को जागनी के यथार्थ स्वरूप से दूर करके अज्ञान-निद्रा की ओर ले जा रही है। अतः वर्तमान समय में मन्दिरों की अपेक्षा ज्ञान केन्द्रों एवं ध्यान कक्षों के निर्माण पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

देखो साहेदी हदीसों आयतों, उन्तीसमें सिपारे।

उमतें किया सिजदा, खोल अर्स बका द्वारे॥१५॥

हे साथ जी! आप हदीसों तथा कुर्आन के २६ वें सिपारे की आयतों की साक्षी देखिये जिनमें यह लिखा हुआ है कि परमधाम की आत्मायें अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने धाम पहुँचकर अपने आराध्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रणाम करेंगी।

भावार्थ- कुर्आन सि. २६ सू. ७० आ. ४ “तऽरुजूल् मलाइकतु वर्खु इलैहि फी यौमिन् कान मिक्दरुह खम्सीन अल्फ सनतिन्” यानि जिस (रब) की तरफ रूहें व फरिश्तें पढ़ते हो, उस दिन जिसका अन्दाज पचास हजार वर्ष का होगा।

कहूं हुकमें साहेदी, जो हकें फुरमाई।

सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई॥१६॥

मेहमत स्वरूप श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! प्रियतम परब्रह्म ने कुर्आन में जो कुछ कहा है, उनके आदेश से उसकी साक्षी देकर मैं कह रहा हूँ। उसे आप कुर्आन की आयतों तथा हदीसों में देखिए, जिससे आपके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाय।

**सिजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम।
ए आसिक रूहों सिजदा, करें खासलखास दम दम॥१७॥**

श्री जी साहब जी ने ब्रह्मसृष्टियों को चितवनी द्वारा मूल मिलावे में विराजमान युगल स्वरूप के चरणों में प्रणाम कराया। प्रियतम अक्षरातीत से सच्चा प्रेम करने वाले ब्रह्ममुनियों का यही वास्तविक प्रणाम है जो प्रत्येक पल भावात्मक रूप से वे अपने सर्वस्व, जीवन के आधार प्रियतम के प्रति करते रहते हैं।

भावार्थ- चितवनी तो एकान्त में बैठकर एकाग्र मन से ही की जाती है किन्तु जिन्हें चितवनी में गहन प्रेम समाधि में डूबने का अभ्यास हो जाता है, वे लौकिक क्रियाओं में भी युगल स्वरूप को भावात्मक रूप से प्रणाम कर लेते हैं क्योंकि उनका मन अति पवित्र होता है जिससे तत्क्षण उनकी सूरता (अन्तर्दृष्टि) युगल स्वरूप के चरणों में पहुँच जाती है। इसे ही पल-पल प्रणाम करना कहते हैं।

**एते दिन अर्स-अजीम का, किन कहा न एक हरफ।
अबलों चौदे तबक में, पाई न काहू तरफ॥१८॥**

आज दिन तक चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में किसी ने भी अखण्ड परमधाम के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा है। कोई यह भी नहीं जान पाया कि वह किस ओर है?

**ए हरफ सो केहेवहीं, जो रूह बका की होए।
नूर बूंदे महंमद की, और क्यों कर लेवे कोए॥१९॥**

जो परमधाम की आत्मा होगी, वही परमधाम का वर्णन कर सकती है। श्री प्राणनाथ जी की तारतम की अमृतमयी रसधारा (नूरमयी बूंदों) को भला उनके अतिरिक्त और कौन ग्रहण कर सकता है?

**देखो दिल विचार के, हदीसों कुरान।
दिल हकीकी अर्स तन बिना, होए नहीं पेहेचान॥२०॥**

हे साथ जी! आप अपने हृदय में कुर्आन की आयतों तथा हदीसों के कथनों का विचार करके देखिये। जिनके हृदय में निर्मलता (सत्यता) नहीं है और परमधाम में

जिनके मूल तन नहीं है, उनके बिना अन्य कोई भी श्री कुलजुम स्वरूप की महिमा की पहचान नहीं कर सकता।

लिख्या सबों किताबों, हृद ऊपर सुकन।

ए जानें सब अर्स दिल, जो लदुन्निएं किए रोसन ॥२१॥

सभी धर्मग्रन्थों में हृद (बैकुण्ठ-निराकार) से परे की बातें संकेतों में लिखी है किन्तु उन रहस्यों को मात्र वे ब्रह्मात्मायें ही जानती हैं जिनका हृदय तातरम ज्ञान से प्रकाशित होकर धाम की शोभा को प्राप्त कर चुका है।

तीन ठौर गिरो तीन के, बेवरा देखो दिल ल्याए।

एक आम दूजे नूरी फरिस्ते, गिरो जित महंमद पोहोंचे जाए ॥२२॥

हे साथ जी! तीनों सृष्टियों के तीन धाम हैं। अपने हृदय में इनके विवरण के सम्बन्ध में विचार कीजिए। एक जीव सृष्टि है और दूसरी ईश्वरीय सृष्टि है, जिन्हें नूरी फरिस्ते कहते हैं। तीसरी ब्रह्मसृष्टि है जिसके धाम में मुहम्मद स. अ. व. व. पहुँचे थे।

सरीयत तरीकत हकीकत, और हक मारफत।

इन चारों की बिने इसलाम, जुदी जुदी कही जुगत ॥२३॥

इस्लाम धर्म में तीनों सृष्टियों के लिये अलग-अलग चार प्रकार की भक्ति कही गयी है। जीव सृष्टि शरीयत (कर्मकाण्ड) तथा तरीकत (भक्ति) मार्ग पर चलती है। ईश्वरीय सृष्टि हकीकत का मार्ग अपनाती है तथा ब्रह्मसृष्टि श्री राज जी की पूर्ण पहचान देने वाले मारिफत (विज्ञान) के मार्ग पर चलती है।

भावार्थ- हकीकत का मार्ग तथा अवस्था दोनों अलग-अलग है। इसी प्रकार मारिफत की भक्ति तथा उपलब्धि अलग-अलग है। शरीर तथा इन्द्रियों से होने वाली भक्ति कर्मकाण्ड है। मन के धरातल पर होने वाली भक्ति उपासना है। मन से भी परे जीव के शुद्ध चैतन्य स्वरूप द्वारा बेहद मण्डल का ध्यान हकीकत (ज्ञान) का मार्ग है तथा ब्रह्म के साक्षात्कार के पश्चात् स्वयं को भूल जाना मारिफत की अवस्था है। परमधाम का ध्यान मारिफत (विज्ञान) का मार्ग है जिसमें २५ पक्षों, युगल स्वरूप एवं अपनी परात्म का साक्षात्कार हकीकत की अवस्था है जबकि श्री राज जी के हृदय में डूबकर स्वयं को

भूल जाना मारिफत की अवस्था है।

**इन चारों की बिने इसलाम, जो हादी न देवें बताए।
तब लग अपने मकान को, क्यों कर पोहोंचे जाए॥२४॥**

जब तक स्वयं श्री जी इन चारों प्रकार की भक्तियों का अलग-अलग विवरण न दें, तब तक कोई भी सृष्टि अपने धाम को कैसे प्राप्त कर सकती है?

**सरीयत बीच रात के, अमल चलाया नेक।
मुसरक होने ना दिया, हक कह्या एक का एक॥२५॥**

अरब में जब चारों ओर अज्ञानता का अन्धकार फैला हुआ था, उस समय मुहम्मद साहब ने वहां के असभ्य लोगों के लिये शरीयत का उचित मार्ग बताया। उन्होंने वहां के लोगों को बहुदेववाद तथा मूर्ति पूजा से छुड़ाकर एक अद्वितीय परब्रह्म की भक्ति में लगाया।

**पांच बिने इसलाम की, दुनी सिर करी फरज।
दिल मजाजी यों जानत, हम देत पीछला करज॥२६॥**

उन्होंने संसार के जीवों के लिये इस्लामिक शरीयत के पांच नियम अनिवार्य कर दिये- १. कल्मा, २. रोजा, ३. नमाज, ४. हज एवं ५. जकात। झूठे दिल वाले संसार के जीव ऐसा समझते हैं कि शरीयत के इन पांच नियमों का पालन करके हम परब्रह्म का ऋण उतार रहे हैं।

भावार्थ- सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा दृष्टि से हमारे जीवन तथा इस सृष्टि का अस्तित्व हैं अतः उसके इस अनन्त उपकार की स्मृति में उसको ५ बार नमाज पढ़कर याद करना और महिमा गाना एक प्रकार से उसके उपकारों का ऋण उतारना है, भले ही हृदय में प्रेम न हो किन्तु शरीयत के अनुयायी इन पांचों नियमों का पालन करने के लिये विवश होते हैं।

**किन किन लई तरीकत, पर कोई जाए न सक्या बीच दिन।
ना खुली हकीकत मारफत, तो क्यों पावे फजर रोसन॥२७॥**

किसी-किसी (सूफी सन्तों) ने तरीकत का भी मार्ग अपनाया किन्तु किसी को भी अखण्ड धाम का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका (हृदय में ज्ञान का उजाला नहीं हो पाया)। जब तक उन्हें हकीकत तथा मारिफत के रहस्य विदित न हो तब तक उनके हृदय में परमधाम के ज्ञान का सवेरा कैसे हो सकता था?

भावार्थ- जब तक निराकार का ज्ञान है, तब तक हृदय में घने अन्धकार की रात्रि है। परमधाम के ज्ञान के पश्चात् ही रात्रि का अन्धकार मिटने की बात की जा सकती है।

**शरीयत बिने इसलाम की, पाक करे वजूद।
तरीकत पोहोंचे मलकूत लों, आगे होए न बका मकसूद ॥२८॥**

इस्लाम की शरीयत मात्र शरीर को ही पवित्र करती है। तरीकत से मात्र बैकुण्ठ तक ही पहुँचा जा सकता है। इसके द्वारा निराकार से परे अखण्ड धाम की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

**बिने इसलाम हकीकत, सो खोले बातून रूह नजर।
पोहोंचे बका नूर मकान, खास गिरो फरिस्तों फजर ॥२९॥**

इस्लाम में हकीकत (सत्य मार्ग) की भक्ति आत्मा की अन्तर्दृष्टि को खोल देती है और उसे अखण्ड अक्षर धाम (बेहद मण्डल) में पहुँचा देती है। यह भक्ति ईश्वरीय सृष्टि के हृदय में बेहद मण्डल के ज्ञान का उजाला कर देती है।

**इसलाम बिने हक मारिफत, पोहोंचावे तजल्ला नूर।
ए मकान आसिक रूहों, गिरो खासलखास हजूर ॥३०॥**

इस्लाम में मारिफत (परम सत्य, विज्ञान) की भक्ति आत्मा को परब्रह्म के परमधाम तक ले जाती है। यह परब्रह्म से अनन्य प्रेम करने वाली ब्रह्मात्माओं का धाम है। यहां रंगमहल के मूल मिलावें में युगल स्वरूप के सम्मुख ब्रह्मात्माओं के मूल तन (परात्म) बैठे हुए हैं।

**इत इस्क बिना पोहोंचे नहीं, बिना हक हादी निसबत।
इलम लदुन्नी फुरमाए से, पोहोंचे अर्स बका खिलवत ॥३१॥**

इस स्वलीला अद्वैत परमधाम में बिना श्री राजश्यामा जी से अनन्य प्रेम एवं मूल

सम्बन्ध के बिना नहीं पहुँचा जा सकता है। तारतम ज्ञान (श्री कुल्जुम स्वरूप) के चिन्तन एवं युगल स्वरूप की चितवनी से अखण्ड परमधाम की खिल्वत (मूल मिलावे) में पहुँचा जा सकता है।

भावार्थ- खिल्वत का तात्पर्य केवल मूल मिलावा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण परमधाम के २५ पक्ष हैं क्योंकि इन पच्चीस पक्षों में श्री राजश्यामा जी एवं ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त अन्य कोई लीला ही नहीं करता। वर्तमान समय में मूल मिलावे में ही सभी ब्रह्मात्मायें युगल स्वरूप के सम्मुख बैठी हुई हैं, अतः यहां मूल मिलावे को ही खिल्वत कहा गया है।

मोमिन मुस्लिम मुनाफक, बिन ईमान सोई हैवान।

एआखिरहिदायतहादीबिना, पोहोचेनअपनेमकान॥३२॥

उपरोक्त चौपाईयों में ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि की वास्तविकता दर्शायी गयी है। जिनके हृदय में परब्रह्म के प्रति विश्वास (ईमान) ही नहीं है, वे मनुष्य रूप में पशु ही है। ये तीनों सृष्टियां बिना श्री जी के तारतम ज्ञान के निर्देशन के अपने-अपने धाम में नहीं जा सकती।

खासलखास गिरो रूहें, अर्स अजीम सूरत हक।

और गिरो खास फरिस्तों, रहें नूर मकान बुजरक॥३३॥

परमधाम में ब्रह्मात्माओं के मूल तन हैं। ये परब्रह्म स्वरूपा होने से अति विशिष्ट हैं। ईश्वरीय सृष्टि अक्षर ब्रह्म के नूर से है और इनका मूल घर महान महिमा वाला अक्षर धाम (सत्स्वरूप) है।

कुंन केहेते पैदा हुई, ए जो खलक आम।

जो कही जुलमत से, तीसरी दुनी तमाम॥३४॥

जीव सृष्टि की उत्पत्ति परब्रह्म के कुन्न कहने मात्र से मोह सागर से हुई है। यह तीसरी सृष्टि है।

जेता पैदा जुलमत से, ए जो मजाजी दिल।

सो दिल हकीकी मोमिन मिने, कबहूँ ना सके मिल ॥३५॥

मोह सागर में उत्पन्न होने वाले जीवों के हृदय में असत्य (विकारों) का निवास होता है। ये जीव सत्य हृदय वाले ब्रह्ममुनियों से कभी मिल ही नहीं सकते अर्थात् इनके लक्षण ब्रह्मसृष्टियों से विपरीत होते हैं।

सिपारे इकईसमें, लिख्या जाहेर बंदगी बयान।

पर हादी देखाएं देखिए, मोमिन करें पेहेचान ॥३६॥

कुर्आन के २१ वें सिपारे में प्रत्यक्ष रूप से चारों प्रकार की भक्ति का वर्णन किया गया है किन्तु बाह्य शब्दार्थ से उसे नहीं समझा जा सकता है। जब श्री जी उसे दर्शायेंगे तो उनकी कृपा की छत्रछाया में मात्र ब्रह्ममुनि ही उसे पहचान सकते हैं।

भावार्थ- कुर्आन पार: २६ सूर मुदस्सिर ७४ आयत १-३ “या अय्युहल्-मुद्दस्सिरु(१) कुम् फअन्जिर(२) व रब्बक फकब्बिर(३)” अर्थात् कपड़े लपेटने वाले उठिए और हिदायत कीजिए। अपने रब की तारीफ कीजिए और अतलस (हरा) कपड़े होंगे और उन्हें (सफेद) चांदी के कंगन पहनाये जायेंगे। उनका परवरदिगार निहायत पाकीजा इश्क आब (शराब) पिलायेंगे। (यहां शराब से तात्पर्य इश्क - ए - इलाही का जाम पीना है।)

राह रूहानी बिने बातून, न पाइए बिना हकीकत।

सो हादी देखाएं देखिए, गुझ साहेदी बका मारफत ॥३७॥

शरीर, इन्द्रियों तथा मन से परे आत्मा के धरातल पर की जाने वाली भक्ति का मार्ग बहुत ही कठिन होता है। जब तक यथार्थ सत्य (ज्ञान) का बोध नहीं होता तब तक इस मार्ग पर नहीं चला जा सकता। श्री प्राणनाथ जी के द्वारा दर्शाये जाने पर ही अखण्ड परमधाम का साक्षात्कार कराने वाली मारिफत की गुह्य भक्ति की साक्षी प्राप्त होती है।

कही निमाज करे छे विध की, दो सरीयत एक तरीकत।

आगूं एक हकीकत, दोए बका मारफत ॥३८॥

क़ुर्आन में छः प्रकार की भक्ति (नमाज) बतायी गयी है, जिनमें दो शरीयत और एक तरीकत से सम्बन्धित है। निराकार से आगे बेहद मण्डल की एक हकीकत की भक्ति है तथा दो मारिफत की भक्ति है जो परमधाम से सम्बन्धित है।

**तिन तीन निमाजका बेवरा, एक कही नफसानी।
दूजी पाक करत हैं, वजूद जिसमानी॥३९॥**

उन तीन प्रकार की नमाजों (भक्ति) का विवरण इस प्रकार है। शरीयत की पहली बंदगी इन्द्रियों से होती है और दूसरी बंदगी शरीर को पवित्र करने की है।

**दिल बंदगी तरीकत तीसरी, मलकूत पोहोंचे पाक होए।
दिल मजाजी जुलमत लों, आप अकल न छोड़े कोए॥४०॥**

तीसरी बंदगी तरीकत की है, जो दिल से होती है। इस बंदगी से हृदय को पवित्र करके बैकुण्ठ में पहुँचते हैं। झूठे दिलवाले सपने के जीव निराकार तक ही जा पाते हैं। कोई भी जीव अपने सपने की बुद्धि से निराकार को छोड़ नहीं पाता है।

**अब बेवरा तीन निमाज का, खोले भेद की हकीकत।
करत निमाज जबरूत में, बीच बका फरिस्ते पोहोंचत॥४१॥**

अब इसके आगे की तीन प्रकार की नमाजों का विवरण किया जाता है, जिससे बंदगी के रहस्य की वास्तविकता का बोध होता है। हकीकत की बंदगी से ईश्वरीय सृष्टि अपने अखण्ड अक्षर धाम (सत्स्वरूप) में पहुँचती है।

**बंदगी रूहानी और छिपी, जो कहीं साहेदी हजूर।
ए दोऊ बंदगी मारफत की, बीच तजल्ला नूर॥४२॥**

मारिफत की दो बंदगी होती हैं - पहली रूहानी (आत्मिक) और दूसरी छिपी हुई। ये दोनों बंदगी आत्मा को मूल मिलावे में विराजमान युगल स्वरूप के समक्ष प्रस्तुत करती है। मारिफत की इन दोनों बंदगी से परमधाम के प्रेम, आनन्द, शोभा और एकत्व की अनुभूति होती है।

भावार्थ- जब आत्मा अपनी परात्म का श्रृंगार सजकर युगल स्वरूप एवं पच्चीस पक्षों की शोभा को देखती है, तो उसे रूहानी बंदगी कहते हैं। जब वह श्री राज जी के दिल में डूबकर स्वयं को भूला देती है, तो वह मारिफत की छिपी बंदगी होती है।

ए आसिक रूहें गिरो रबानी, बीच नूर तजल्ला माहें।
दर्ई साहेदी महंमदे मेयराज में, जो हकें केहेलाई मसी जुबाँएं।।४३।।

प्रियतम परब्रह्म के प्रेम में डूबी रहने वाली ये ब्रह्मसृष्टियां उनकी अंगरूपा हैं, जिनका मूल घर परमधाम है। श्री राज जी ने इनके सम्बन्ध में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के मुख से जो कुछ कहलवाया है उसकी साक्षी मुहम्मद साहब ने भी मेयराजनामा ग्रन्थ में दी हैं।

एही कुंजी कलाम हक इलम, खोले सब मगज किताब।
आगूं अर्स दिल मोमिनो, सो खोले जिन हादी खिताब।।४४।।

श्री कुलजम स्वरूप के शब्दों में परब्रह्म का दिया हुआ ज्ञान है, इससे संसार के सभी धर्मग्रन्थों के रहस्यों का स्पष्टीकरण होता है। इनके रहस्यों को एकमात्र श्री प्राणनाथ जी ने ही खोला है, जिन्हें हादी की शोभा प्राप्त है। इसका रसास्वादन उन ब्रह्मात्माओं ने लिया, जिनका हृदय परब्रह्म का धाम कहलाता है।

कहे हदीस निमाज का, भेद न पाया किन।
हादी तीन सूरत आए बिना, काहू खोली नहीं बातन।।४५।।

हदीसों में कहा गया है कि इन छः प्रकार की नमाजों का गुह्य रहस्य आज तक कोई जान नहीं पाया। हादी की तीनों सूरतों - मुहम्मद स. अ. व. व., सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी - के अतिरिक्त अन्य कोई भी इसके गुह्य रहस्य को स्पष्ट नहीं कर पाया है।

अग्यारे सदी दस साल कम, तो लों खोल्या न पट कुरान।
पाक बिना मत छुड़यो, ए दिल दे करो बयान।।४६।।

हिजरी सन् १०६० तक कुरआन के भेद खुल नहीं पाए। कुरआन में लिखा है कि बिना पवित्र हुए मुझे मत छुओ। हे साथ जी! एकाग्र मन से इस पर चिंतन करके बताइए कि ऐसा क्यों लिखा है?

सिपारे सत्ताईसमें, लिख्या बीच फुरमान।
पाक बिना मत छुड़यो, यों कहे हजरत कुरान।।४७।।

कुरआन के २७ वें सिपारे में लिखा है कि बिना पवित्र हुए मुझे (कुरआन) मत छूना। मुहम्मद साहब ने कुरआन में इस प्रकार कहा है।

**अब लग दुनी यों जानिया, माएने न पाए किनने।
तो बोले जुदे जुदे आरिफ, जो सक है सबों में॥४८॥**

आज दिन तक संसार के जीव कुर्आन के शब्दों का बाह्य अर्थ ही जानते थे, उसके गुह्य रहस्यों का अर्थ किसी ने भी नहीं समझा। यही कारण है कि कुर्आन के विद्वान एक ही आयत के अलग-अलग अर्थ निकालते हैं क्योंकि सबके अंदर संशय भरा हुआ है।

**और किए मुहककों माएने, जुदे जुदे दिल ल्याए।
तिन सबों से तेहेकीक, माएने गुझ क्यों समझाए॥४९॥**

कुर्आन के अग्रगण्य विद्वानों ने अपने मन के अलग-अलग भावों के अनुसार अलग-अलग प्रकार के अर्थ किये हैं। तारतम ज्ञान से रहित ऐसे लोगों से भला कुर्आन का निश्चित गुह्यार्थ कैसे निकल सकता है?

**कह्या याही के तरजुमें, जो दिल घसे न छाती से।
अब लों छिपा मता ए तो रह्या, जो जाहेर न किया किनने॥५०॥**

कुर्आन की टीका में भी यह लिखा हुआ है कि जब तक हृदय को छाती से घिसकर अत्यन्त प्रेममयी न बना लिया जाय तब तक कुर्आन का यथार्थ आशय हृदय पटल पर अंकित नहीं हो सकता। आज दिन तक कुर्आन पाक का अर्थ (गुह्यार्थ) इस लिये छिपा रहा क्योंकि कोई भी इसे प्रकट नहीं कर सका था।

भावार्थ- जिस प्रकार नाक घिसना, मत्था घिसना मुहाविरें हैं, उसी प्रकार छाती से दिल घिसना भी एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है- प्रेम में अपने हृदय को लूटा देना। नाक या मत्था तो धरती पर या किसी के चरणों में घिसे जाते हैं किन्तु छाती से दिल घिसने का अनुभव अपने प्रेमास्पद के आलिंगन में होता है। नाक घिसने का अर्थ है- अत्यधिक विनम्र हो जाना। इसी प्रकार, मत्था घिसने का अर्थ है- अहंकार का समर्पण करना। अपने हृदय को समर्पित किये बिना कुर्आन का वास्तविक अर्थ नहीं जाना जा सकता क्योंकि यह परब्रह्म की कृपा पर निर्भर है।

**तब से परदा मुंह पर, रह्या हजरत मुसाफ के।
सो सदी अग्यारहीं लग, किन दीदार न पाया ए॥५१॥**

कुर्आन में मुहम्मद स. अ. व. व. तथा कुर्आन पाक दोनों के मुख पर आवरण (पर्दा) रहने की बता कही गयी है। इस प्रकार ११वीं सदी तक कोई भी न तो इमाम महदी (हजरत मुहम्मद साहब) का दर्शन कर सका और न ही कुर्आन के गुह्य भेदों को जान सका।

भावार्थ- 'परदा लिख्या वास्ते, आवने हिन्दुओं मांहे' (ब. क., १/२३) के इस कथनानुसार आखिरी मुहम्मद (इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ), हिन्दू तन में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आयेंगे, इसलिये उनके मुख पर हिन्दू तन के पर्दे की बात कही गयी है। इसी प्रकार, कुर्आन पाक के अर्थ भी तब तक स्पष्ट नहीं हो पायेंगे जब तक श्री प्राणनाथ जी प्रकट नहीं हो जाते। इसे ही कुर्आन पाक के ऊपर का पर्दा (आवरण) कहा गया है।

पाक न होए पानी खाक से, और इलाज न पाकी कोए।

बिना पाक न हुकम छुए का, एक पाक हक से होए। ॥५२॥

पानी और मिट्टी से शरीर तो पवित्र हो सकता है किन्तु हृदय नहीं। बिना पवित्र हुए कुर्आन को छूने का आदेश ही नहीं है और हृदय को पवित्र करने का कोई उपाय भी नहीं दिखता। ऐसी स्थिति में क्या किया जाय? यथार्थता तो यह है कि मात्र प्रियतम परब्रह्म से अटूट प्रेम ही किसी के हृदय को पवित्र कर सकता है।

कह्या मुसाफ नजीक हक के, सो हक नजीक खोलाए।

नापाक इत आए ना सके, ए इन पाकी खोल्या जाए। ॥५३॥

कुर्आन पाक को परब्रह्म के निकटस्थ करने वाला कहा जाता है। ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट होता है कि इसके रहस्यों को खोलने वाला भी परब्रह्म का निकटस्थ ही होना चाहिए। अपवित्र व्यक्ति तो परब्रह्म के निकट भी नहीं जा सकता। कोई पवित्र व्यक्तित्व ही कुर्आन के गुह्य भेदों को दर्शा सकता है।

हादी मोमिनो बीचमें, पाइए हक इस्क ईमान।

ए पाकी हैं मोमिनो, होए खाली सोर जहान। ॥५४॥

श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं में ही परब्रह्म के प्रति अटूट प्रेम एवं विश्वास होता है। अतः मात्र परब्रह्म के अंगरूप ब्रह्ममुनियों को ही एकमात्र पवित्र कहा जा सकता है।

संसार के शेष लोग तो केवल अपनी पवित्रता का ढोल पीटने वाले हैं।

**पेहेला दीदार होए मोमिनो, बीच आखिरी पैगंमर।
ए मुसाफ कहा आखिरी, देवे दीदार आखिर।।५५।।**

कुर्आन पाक में कहा गया है कि रोज-ए-महशर वक्त-ए-आखिरत (कियामत के समय) में आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ (आखिरी मुहम्मद) का सबसे पहले दर्शन ब्रह्मात्माओं को होगा। इसके पश्चात् वे संसार वालों को दर्शन देंगे।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में से ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे यह कहा गया है कि यह 'मारिफत सागर' ग्रन्थ श्री कुल्जुम स्वरूप का अन्तिम ग्रन्थ है या श्री कुल्जुम स्वरूप आखिरी कुर्आन है। इस चौपाई की दूसरी पंक्ति में 'आखिरी' और 'आखिर' दो शब्द आये हैं अर्थात् इनमें 'आखिर' शब्द का आशय वक्त-ए-आखिरत अर्थात् कियामत के समय से है तो 'आखिरी' शब्द का आशय 'बाद में' लिया जायेगा क्योंकि चौपाई का सर्वप्रथम शब्द 'पेहेला' है जिसका अभिप्राय पहले होने वाले दर्शन से है।

**बरखत महंमद के उठने, और आवे अस्हाब।
तब सो खोले मुसाफ को, पोहोंचे लग कोसे नकाब।।५६।।**

कियामत के समय जब हजरत आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ प्रकट होंगे तो उनके साथ उनके मित्र ब्रह्ममुनि भी होंगे। तब श्री जी कुर्आन के ऊपर के पर्दे को अधिकृत रूप से हटायेंगे अर्थात् कुर्आन पाक के गुह्य रहस्यों को खोलेंगे।

भावार्थ- जब मुहम्मद स. अ. व. व. के देह त्याग का समय आया तो उनके मित्रों ने पूछा कि आप कुर्आन पाक के भेदों को स्पष्ट किये बिना संसार से क्यों जा रहे हैं? प्रत्युत्तर में मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कहा कि इसके भेद आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ से खुलेंगे। उसी प्रसंग का सूक्ष्म (बातिनी) अभिप्राय उपरोक्त चौपाई में दिया गया है।

**ए पट खोल करें जाहेर, तब हुई तौहीद मदत।
दिल पाक करो इन आबसें, मुसाफ तब मोंह देखावत।।५७।।**

जब श्री प्राणनाथ जी कुर्आन पाक के गुह्य रहस्यों को प्रकट करेंगे तब सभी लोगों को एक स्वलीला अद्वैत परब्रह्म की पहचान होगी जिससे उनके प्रेम एवं विश्वास में वृद्धि होगी। हे संसार के लोगों! इस प्रेम और विश्वास रूपी जल से अपने हृदय को पवित्र करो, तभी तुम्हें कुर्आन के मुख का दर्शन होगा अर्थात् उसके गुह्य रहस्यों (मारिफत) का तुम्हें बोध होगा।

भावार्थ- श्री कुलजुम स्वरूप में कुर्आन के सभी गुह्यतम रहस्य स्पष्ट किये गये हैं। इसका चिन्तन करने वाला परब्रह्म के प्रेम एवं विश्वास रूपी दिव्य जल में स्नान करता है और उत्तरोत्तर गुह्यतम रहस्यों का बोध पाता है।

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सो हक अर्स मोमिन दिल।

ना ऊपर तले दाएं बाएं, ए बतावे मुरसद कामिल।।५८।।

कुर्आन पाक में परब्रह्म को शाहरग अर्थात् प्राणनली से भी अधिक निकट कहा गया है। इस प्रकार, ब्रह्मात्माओं का हृदय ही परब्रह्म का धाम है। वह इस संसार के ऊपर-नीचे अथवा दायें-बायें नहीं है। इस इस रहस्य को मात्र पूर्ण सद्गुरु ही बताते हैं।

भावार्थ- कुर्आन पा. २ सू. २ आ. १८६ “इन्नी फ इन्नी करीबुन” अर्थात् मैं तो (परब्रह्म) आप (मनुष्य) के करीब (शाहरग/प्राणनली) निकट ही हूँ।

जब पट अपने मोंह से, किया मुसाफें दूर।

तब नूर बका जाहेर हुआ, और तजल्ला नूर।।५९।।

जब कुर्आन पाक के मुख से पर्दा उठ गया अर्थात् उसके गुह्य भेद प्रकट हो गये तो अक्षर धाम और परमधाम का ज्ञान भी संसार में फैल गया।

जब मोंह मुसाफें खोलिया, तब पट न आड़े हक।

तब दीदार पावे दुनियाँ, जो हक इलमें हुई बेसक।।६०।।

जब कुर्आन के मुख से आवरण हटा (श्री कुलजुम स्वरूप का अवतरण हुआ) तो परब्रह्म की पहचान के सम्बन्ध में कोई संशय रूपी पर्दा नहीं रहा। तारतम ज्ञान से संसार संशय रहित हो गया और परब्रह्म के साक्षात्कार का सौभाग्य प्राप्त कर लिया।

दुनीं तरफ न पावे हक की, और मुसाफ हुआ पास हक।

हक मुसाफ आड़े एक पट, सो पट उड़े देखे खलक।।६१।।

संसार के लोगों को यह पता ही नहीं है कि परब्रह्म कहाँ है और कुर्आन का वास्तविक ज्ञान परब्रह्म के पास है। परब्रह्म के कुर्आन तथा संसार के मध्य जो अज्ञान का पर्दा था वह तारतम ज्ञान से हट गया है जिससे अब संसार के लोगों को भी अक्षरातीत परब्रह्म अक्षरातीत की पहचान करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो गया है।

हक नजीक सेहेरग से, पर तरफ न पावे कोए।

ढूँढ़्या अव्वल से अब लग, पर किन बकान रोसन होए॥६२॥

यद्यपि परब्रह्म शाहरग (प्राणनली) से भी अधिक निकट है किन्तु किसी को भी यह पता नहीं है कि वह किस ओर है? सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक संसार के मनीषीजन खोजते रहे हैं किन्तु किसी को भी अखण्ड परमधाम का ज्ञान नहीं हो सका है।

सब सय फना कही, क्यों बका कहा ढिग तिन।

जिमी बका अर्स ढिग फना, एसक सुभे रही सबन॥६३॥

सारी सृष्टि नश्वर कही गयी है, ऐसी अवस्था में अखण्ड धाम उनका कैसे हो सकता है? संसार के सभी ज्ञानीजनों में यह संशय रहा है कि जब परमधाम की भूमिका अखण्ड है तो हम नश्वर (स्वाप्निक) जीवों के पास अखण्ड परमधाम कैसे हो सकता है?

ए मुरसद कामिल बिना, और न काहूँ खोलाए।

अब हादिएं ए पट तो खोल्या, जो गिरो सरतें पोहोंची आए॥६४॥

इस रहस्य को पूर्ण गुरु के बिना कभी भी जाना नहीं जा सकता है। अब श्री प्राणनाथ जी ने इस रहस्य को स्पष्ट कर दिया है क्योंकि यह कियामत का समय है और ब्रह्मात्मायें इस संसार में आयी हुई हैं।

मुसाफ उठ्या तो उत से, जो बिकर रही फुरकान।

याके वारस मसी मोमिन, जो कहे अहेल फुरमान॥६५॥

कुर्आन को अब तक कुंवारी (अनछुआ) ही कहा गया था, क्योंकि इसके रहस्यों को कोई भी जान नहीं सका था। यही कारण है कि जिब्रील फरिश्ता कुर्आन को अरब की धरती से उठाकर हिन्दुस्तान में इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के पास लेकर आया। श्यामा जी तथा ब्रह्मसृष्टियों को ही कुर्आन के ज्ञान का उत्तराधिकारी होने के योग्य माना

गया है।

**तो जुदे जुदे कहे जंजीरों, देखो दाखले मिलाए।
पेहेचान जंजीर जंजीरों, ज्यों दिल पाक होवे ताए॥६६॥**

कुर्आन के गुह्य रहस्य अलग-अलग स्थानों पर अलग आयतों में कहे गये हैं। उनके प्रसंगों को मिलाकर तारतम ज्ञान के प्रकाश में देखने पर एक-एक आयत में कहे हुए रहस्य का बोध होता है। तभी हृदय के संशय मिटते हैं और वह पवित्र होता है।

भावार्थ- जब धागे से मनको को जोड़ा जाता है तो माला का निर्माण होता है। इसी प्रकार कुर्आन के अलग-अलग सिपारों की अलग-अलग आयतों में गुह्य रहस्य भरे पड़े हैं, किन्तु जब तक उन आयतों को भिन्न-भिन्न प्रसंगों से तारतम ज्ञान के प्रकाश में जोड़ा नहीं जायेगा तब तक वास्तविक रहस्य का स्पष्टीकरण नहीं हो पायेगा। उदाहरण के लिये, पाँच प्रकार की पैदाइश को कई सिपारों की कई आयतों में अलग-अलग संकेतों में लिखा गया है। जब तक सभी प्रसंगों को तारतम ज्ञान के एक सूत्र में पिरोया नहीं जायेगा तब तक वास्तविक रहस्य का बोध नहीं हो सकेगा। इस सम्बन्ध में किरंतन (७२/१) की निम्न चौपाई का उद्धरण बहुत ही प्रासंगिक है-

जंजीरा मुसाफ की, मोतियों में परोड़े जब ।

जिनसें जिनस मिलाईए, पाइए मगज मायने तब ॥

उपरोक्त चौपाई में कुर्आन की आयतें अलग-अलग जंजीरें हैं मोती स्वरूपा ब्रह्मात्माओं को अखण्ड ज्ञान देने के लिये जंजीर रूपी धागे से अलग-अलग प्रसंगों (जिन्सों) को जब मिलाया जायेगा ।

मुईनुद्दीन ने भेजी हदीसें, देने मुरीद आकीन।

तालिब होए सो देखियो, करी जाहेर कुतबदीन॥६७॥

अजमेर के प्रसिद्ध सूफी संत हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह. ने अपने शिष्यों को विश्वास दिलाने के लिये कुछ हदीसें भिजवायी, जिससे कि जिज्ञासु व्यक्ति उसे ग्रहण कर सके। उनके शिष्य महरौली, दिल्ली के निवासी हजरत ख्वाजा कुतुबद्दीन बख्तियार काकी रह. ने संसार में प्रकट किया।

भावार्थ- उपरोक्त प्रसंग का सूक्ष्म अभिप्राय यह है कि श्री जी ने 'बड़ा कयामतनामा' महाराजा छत्रसाल जी के नाम से अवतरित किया जिससे सुन्दरसाथ के

संशय मिट सकें।

**कह्या हदीसमें रसूलें, स्वाल किया उमर।
सरा तरीकत हकीकत, तीनों की देओ खबर।।६८।।**

एक हदीस में वर्णन है कि मुहम्मद सल्ल. (साहब) से उमर रजि. ने आग्रह किया कि आप हमें शरियत, तरीकत तथा हकीकत इन तीनों विधाओं का ज्ञान दीजिए।

**पांच बिने कही तीनों की, जाहेर किए बयान।
निसां होए तालिब की, देखो अर्स दिल पेहेचान।।६९।।**

शरियत के पांच नियम - (कल्म) कल्मा, (सौवं) रोजा, (सलात) नमाज, हज और जकात - तरीकत तथा हकीकत में भी घटित होते हैं जिन्हें मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने उमर रजि. को स्पष्ट रूप से बताया। जिसे इनके विषय में जानने की इच्छा हो, उसे धाम हृदय कहे जाने वाला ब्रह्ममुनियों के पास जाना चाहिये। वे उसे पूर्णतया संतुष्ट कर देंगे।

भावार्थ- तरीकत तथा हकीकत की दृष्टि से शरियत के पांचों नियम इस प्रकार है-

तरीकत के अनुसार-

१. मानसिक रूप से बिना उठे, बैठे एवं सज्दा किये हुए कल्मा पढ़ना।
२. पूर्णतया संयमी (नियमबद्ध) रहकर पवित्र रमजान के महीने में अन्तर्मुखी होकर अल्लाहतआला की बन्दगी करना।
३. रात्रि के ६ बजे से प्रातःकाल के ३ बजे तक अल्लाहतआला की इश्क बन्दगी करना।
४. इस संसार को नश्वर मानकर बेहद धाम की बहिश्तों तथा परमधाम का चिन्तन करना
५. अपनी आय का ३६/४० भाग मानव सेवा में दान कर देना तथा मात्र ४०वें (१/४०) भाग में ही अपना जीवन निर्वाह करना।

हकीकत की दृष्टि में पांचों नियम इस प्रकार हैं-

१. कल्मः (तारतम) के अर्थ का चिन्तन करके परब्रह्म की पहचान करना।
२. मन तथा इन्द्रियों को पूर्णतया निर्विकार बना लेना।
३. परब्रह्म युगल स्वरूप का ध्यान करना।
४. परमधाम के पच्चीस पक्षों का ध्यान करना।
५. अपना सर्वस्व प्रियतम अक्षरातीत एवं मानवता के कल्याण में समर्पित कर देना।

श्री कुलजुम स्वरूप में शरियत तथा हकीकत का स्वरूप इस प्रकार है-

चौदे तबक को पीठ देवहीं, ए कलमा कह्या तिन ।
 कलाम अल्लाह यों केहवहीं, ए केहेनी है मोमिन ॥
 ला फना सब लाग करें, और इला बका ग्रहें हक ।
 ए कलमा हकीकत मोमिनो, और हक मारफत बेसक ॥
 ए मोमिनो की सरीयत, छोड़े ना हक को दम ।
 अर्स वतन अपना जान के, छोड़े ना हक कदम ॥
 इतहीं रोजा इत बन्दगी, इतहीं जकात जारत ।
 साथ हकी सूरत के, मोमिनो सब न्यामत ॥
 जो तूं ले हकीकत हक की, तो मौत का पी सरबत ।
 मुए पीछे हो मुकाबिल, तो कर मजकूर खिलवत ॥

(श्रृं. प्र. 25 चौ. 49, 50, 53, 58, 65)

कह्या उठें पैगंमर अस्हाब, एही आखिरी किताब ।
 खोलें बीच आखिरी उमत, जिन सिर आखिरी खिताब ॥७०॥

कियामत की इस घड़ी में इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ (आखिरी मुहम्मद) तथा ब्रह्मात्माओं का प्रकटन हो चुका है। श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में अन्तिम धर्मग्रन्थ का अवतरण भी हो चुका है। श्री प्राणनाथ जी ब्रह्ममुनियों (मोमिनो) के मध्य कुर्आन पाक की हकीकत एवं मारिफत सम्बन्धी गुह्यतम रहस्यों को प्रकट कर रहे हैं। यह सर्वोपरि शोभा मात्र उन्हें ही है।

नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी दिन ।
 रात गुमराही कुफर मेट के, करे चौदे तबक रोसन ॥७१॥

श्री प्राणनाथ जी के द्वारा अवतरित ग्रन्थ 'श्री कुल्जुम स्वरूप' परम सत्य स्वरूप ज्ञान (मारिफत) का सूर्य है जो इस संसार में परमधाम के नूर सागर की भांति जगमगा रहा है। इसके द्वारा सबके हृदय में परमधाम के ज्ञान का प्रकाश फैल जायेगा। यह नास्तिकता तथा अज्ञानता के अन्धकार रूपी रात्रि को मिटाकर चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में परब्रह्म की स्पष्ट पहचान देगा।

**हक मारफत दिन होएसी, दिल महंमद सूर नूर।
हक अर्स बका जाहेर किए, मिटी हवा तारीक देख जहूर। ॥७२॥**

श्री प्राणनाथ जी का हृदय तारतम ज्ञान का सूर्य है। अब तारतम ज्ञान से परब्रह्म की पूर्ण पहचान होगी जिससे सबके हृदय में सत्य का उजाला हो जायेगा। श्री जी ने श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा अखण्ड परमधाम तथा परब्रह्म की पहचान को संसार में उजागर कर दिया है जिससे अक्षरातीत को निराकार मानने की भ्रान्ति मिट गयी है।

**तो कलाम अल्ला की आयतें, और हदीसें महंमद।
एमोमिन देखें दिल अर्स में, ले मुसाफ मगज साहेद। ॥७३॥**

अब श्री कुल्जुम स्वरूप के प्रकाश में ब्रह्ममुनि कुर्आन की आयतों तथा मुहम्मद साहब की हदीसों की साक्षियों के गुह्य भेदों को अपने धाम हृदय में स्वयं ही समझ जायेंगे।

**कहूं बेवरा आदम औलाद, तिनमें कही विध तीन।
सोई समझें हक इलमें, जिनमें इस्क आकीन। ॥७४॥**

इस संसार में मानवीय आकृति को धारण करने वाली तीनों सृष्टियों का विवरण दे रहा हूँ किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश में मेरे कथन को मात्र वे ही समझेंगी जिनमें प्राणेश्वर अक्षरातीत के प्रति अटूट प्रेम एवं विश्वास भरा होता है।

**कही एक गिरो पैदा जुलमत से, तिन के फैल हाल जुलमत।
सो दुनी बिन कछू न देखहीं, दुस्मन दिल पर सखत। ॥७५॥**

पहली सृष्टि जीव सृष्टि है जो निराकार से उत्पन्न होती है। उनकी करनी तथा रहनी अज्ञानता के अन्धकार से भरी होती है। इनके हृदय में अज्ञान-रूपी शैतान का कठोर नियन्त्रण होता है। इन्हें मायावी जगत के अतिरिक्त अन्य कुछ दिखायी ही नहीं देता अर्थात् ये अखण्ड धाम के विषय में सोच भी नहीं पाती।

**दूजी गिरो फरिस्तन की, भई पैदा नूर मकान।
उतरी लैलत कदरमें, सो ताबे न होए सैतान।।७६।।**

दूसरी सृष्टि ईश्वरीय है जो अक्षर धाम (सत्स्वरूप) से प्रकट हुई है। वह भी माया का खेल देखने के लिये संसार में आयी है। वह शैतान (अज्ञान) के वशीभूत नहीं हो पाती है।

**गिरो तीसरी नूर बिलंदसे, ताको कौल फैल हाल नूर।
रूहें अर्स दिल उतरीं लैलमें, करें हमेसा हक जहूर।।७७।।**

तीसरी सृष्टि ब्रह्मसृष्टियों की है जो परमधाम से आयी है। उनकी कथनी, करनी तथा रहनी सब कुछ नूरमयी है। इनका हृदय ही प्रियतम अक्षरातीत का धाम होता है। ये भी माया का खेल देखने के लिये संसार में आयी हैं और अपने प्राणेश्वर की महिमा तथा पहचान को सर्वत्र फैलाती हैं।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों की कथनी, करनी तथा रहनी को नूरमयी कहने का आशय है कि वे मात्र परमधाम के अनन्त सौन्दर्य, प्रेम, आनन्द, एकत्व, तेज, ज्ञान आदि की चर्चा करती हैं तथा उनके आचरण एवं अवस्था (रहनी) में भी इन गुणों की आभा झलकती है।

**कहे मोमिन नूर सूरतमें, जो बीच अर्स हमेसगी।
एक तन मोमिन अर्स में, दूजी सूरत सुपन की।।७८।।**

ब्रह्मात्माओं के मूल तन परात्म हैं, जो नूरमयी हैं और परमधाम में शाश्वत रूप से हैं। इनका एक तन परमधाम में है तो दूसरा तन सूरता द्वारा धारण किया स्वप्न का तन है जो इस संसार में है।

**तो कहे सेहेरग से नजीक, खासलखास बंदे हक के।
किए अर्स तन से रूबरू, जो नूर बिलंद से उतरे।।७९।।**

प्रियतम अक्षरातीत इन ब्रह्मात्माओं की शाहरग (प्राणनली) से भी अधिक निकट में विराजमान हैं। इन्हें परब्रह्म के अतिशय प्रेम में डूबे रहने वाला कहा जाता है। परमधाम से अवतरित होने वाले ये ब्रह्ममुनि इस संसार में रहकर भी चितवनी द्वारा अपने मूल तन 'परात्म' का प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार करते हैं।

**जाकी न असल अर्स में, सो सेहेरग से नजीक क्यों होए।
वह फना बका को क्यों मिले, वाकी अकल में न आवे सोए॥८०॥**

जिन जीवों के मूल तन परमधाम में नहीं हैं, प्रियतम अक्षरातीत उनके लिये शाहरग से भी अधिक निकट नहीं हो सकते। स्वप्न के नश्वर जीव भला अखण्ड स्वरूप से कैसे मिल सकते हैं? उनकी बुद्धि में अखण्ड परमधाम जैसी कोई बात आती ही नहीं है।

**हकें कहा छबीसमें सिपारे, मैं मेरे बंदोंसे अकरब।
वे मोमिन एक तन अर्समें, ताए सेहेरग से नजीकरब॥८१॥**

कुर्आन के २६ वें सिपारे में परब्रह्म ने कहा है कि मैं अपने ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) के बहुत अधिक निकट हूँ। परमधाम में ब्रह्मात्माओं तथा अक्षरातीत का एकत्व (वहदत) का नूरमयी तन है जो प्रेम, सौन्दर्य, आनन्द आदि सभी गुणों में समान है। इन ब्रह्ममुनियों के लिये ही परब्रह्म प्राणनली से भी अधिक निकट हैं।

भावार्थ- कुर्आन सि. २. सयकूल सू. सूर: बकर: आ. १८६ “व इजा सअलक अिबादि अन्नी फ इन्नी करबुन” अर्थात् जब मेरे बारे में बंदे पूछे तो कहना मैं तो तुम्हारे पास ही हूँ अर्थात् शाहरग (प्राण वायु) से भी निकट हूँ।

**रूबरू होना अर्स तन से, इन फना वजूद नासूत।
नजीक न होए बिना अर्स तन, नूर लाहूत परे हाहूत॥८२॥**

जिन ब्रह्मात्माओं के मूल तन परमधाम में हैं, उनके अतिरिक्त अन्य किसी में भी यह सामर्थ्य नहीं है कि वह इस पृथ्वी लोक के नश्वर तन से अक्षर धाम से भी परे परमधाम के रंगमहल के मूल मिलावे में विराजमान परात्म के तनों का प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार कर सके अथवा निकटस्थ हो सके।

**दुनी असल जिनों तारीकी, सो इलमें करो पेहेचान।
ताको नजीक सेहेरग से, खाली हवा लामकान॥८३॥**

हे साथ जी! मोह सागर से उत्पन्न होने वाली जीव सृष्टि की तारतम से पहचान कीजिए। जीवों की शाहरग से भी अधिक निकट निराकार है।

भावार्थ- जीव के अन्तःकरण (मन, चित्त, बुद्धि तथा अहंकार) की उत्पत्ति

महत्तत्त्व से ही हुई है जो कारण प्रकृति में विकार होने से उत्पन्न होता है। जीव समाधि अवस्था में आत्म साक्षात्कार के पश्चात् भी केवल अनन्त निराकार मण्डल को ही देखता है। कोई-कोई आदिनारायण के ज्योति स्वरूप को देखकर उसे ही ब्रह्म मान लेते हैं। केवल पंच वासनायें (शिव जी, विष्णु भगवान, सनकादिक, शुकदेव तथा कबीर जी) ही इस निराकार-आदिनारायण से परे बेहद मण्डल में जा सकी हैं। उपरोक्त चौपाई में निराकार को शाहरग से अधिक निकट कहने का यही आशय है।

नाहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए।

बका नींद उड़े उठें अर्समें, फना नींद उड़े उड़ जाए॥८४॥

जीव (स्वाप्तिक) होने से सर्वदा अखण्ड रहने वाले ब्रह्ममुनियों की बराबरी कैसे कर सकते हैं? उन्हें भला अखण्ड धाम में प्रवेश कैसे मिल सकता है? नींद रूप इस ब्रह्माण्ड के लय होने पर ब्रह्मात्मायें परमधाम में अपने मूल तनों में जागृत हो जायेगी जबकि महाप्रलय में स्वप्न के जीवों का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।

सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठे अर्स वजूद।

कहे खासे बंदे दरगाही रूहें, कदमों हमेसा मौजूद॥८५॥

जब महाप्रलय में यह स्वप्नमयी जगत लय हो जायेगा तो ब्रह्ममुनि परमधाम में अपने मूल तन में जागृत हो जायेंगे। परमधाम के ये ब्रह्ममुनि परब्रह्म के विशेष प्रेमी कहे जाते हैं और अपने मूल तन से उनके चरणों में ही मूल मिलावे में बैठे हुए हैं। इस संसार में मात्र उनकी सूरता आयी है।

भावार्थ- चितवनी द्वारा परात्म में जागृति का कुछ आंशिक सुख लिया जा सकता है। जब सूरता इस नश्वर ब्रह्माण्ड और बेहद से परे परमधाम के मूल मिलावे में पहुँचकर अपने मूल तन को देखती है तो उसे ऐसा लगता है कि वह यहीं पर तो है। चितवनी टूटने पर वह स्वयं को इस नश्वर संसार में स्वाप्तिक तन में देखती है।

लिख्या है हदीसमें, मोमिन असल अर्स माहें।

ताको मोमिन जिन कहो, जाकी असल अर्समें नाहें॥८६॥

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने हदीस में लिखा है कि ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) के मूल

तन परमधाम में परात्म के स्वरूप में है। जिसका मूल तन परमधाम में नहीं है, उसे ब्रह्ममुनि कहलाने का कोई भी अधिकार नहीं है।

भावार्थ- इमाम जाफर साहिक अलैहिसलाम का रिवायत है कि “मा ईमान लिमन लालहू मिसाल वला सूरत फी अर्श” यानि नहीं है मोमिन जिनकी सूरत या मिसाल अर्श में न हो गर्ज कि तमाम औसाफ हो तमाम दर्जे इन्ही पर खत्म है। लेकिन इस दुनिया में नबी अलैहिस्सलाम और मोमिन औलियाल्लाह, अहल अल्लाह, अहल बेत रसूलल्लाह के दोस्त मशहूर है।

**ए वेद कतेब पुकारहीं, कोई पोहोंच्या न अपनी अकल।
बिना हादी गोते खावहीं, जो तन मोमिन अर्स असल ॥८७॥**

वेद-कतेबों में पुकार-पुकार कर यह बात कही गयी है कि इस सृष्टि में कोई भी अपनी बुद्धि के बल से अखण्ड धाम में पहुँच नहीं पाया है। चाहे कोई ब्रह्ममुनि भी क्यों न हो, जिसकी परात्म मूल मिलावे में हो और यदि वह भी श्री प्राणनाथ जी की शरणागत नहीं होता है तथा उनके वचनामृत रूप श्री कुल्जुम स्वरूप के निर्देशों को नहीं मानता है तो संसार सागर में उसका भी भटकना निश्चित है।

भावार्थ- कठोपनिषद् में कहा गया है कि ‘बुद्धिश्च न विचेष्टते आहुः तम परमां गतिम् । ‘अर्थात् परमगति वह है, जिसमें बुद्धि की कोई भी गति (प्रक्रिया) न हो। ऐसी स्थिति में बिना किसी तत्वज्ञानी के निर्देश के मात्र बौद्धिक बल से ग्रन्थों का स्वाध्याय करके परब्रह्म का साक्षात्कार करना असम्भव है। छान्दोग्योपनिषद में एक प्रसंग आता है कि जिसमें चारों वेदों को अंग-उपांग सहित पढ़ने के पश्चात् भी नारद जी को सनत् कुमार के चरणों में इसलिये जाना पड़ता है कि उनसे आध्यात्मिक तत्व ज्ञान ग्रहण कर सकें। ध्यान-साधना का मार्ग बिना किसी परमहंस के निर्देशन के पूर्णरूप से सफल नहीं हो सकता। जो सुन्दरसाथ श्री प्राणनाथ जी को मात्र एक गुरु, सन्त, कवि और महापुरुष के रूप में ही देखने के अभ्यस्त हो चुके हैं, उनकी आध्यात्मिक प्रगति नहीं हो सकती क्योंकि श्रद्धा और समर्पण से रहित व्यक्ति साक्षात्कार का अधिकारी नहीं होता।

तो क्यों पोहोंचे दिल मजाजी, जाकी पैदास कही जुलमत।

सो चाहे बिना हादी असल, जबराईल न पोहोंच्या जित ॥८८॥

श्री जी साहेब जी से विमुख होकर जब ब्रह्ममुनि भी परमधाम की अनुभूति नहीं कर सकते तो मोह सागर से उत्पन्न ये झूठे दिल वाले भला सपने के जीव कैसे पहुँच सकते हैं? जिस परमधाम में स्वयं जिब्रील नहीं जा सका, वहाँ ये माया के स्वाप्तिक जीव अपनी बुद्धि से पहुँचना चाहते हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को यह आत्म-मन्थन करना चाहिये कि वे किस दिशा में जा रहे हैं? श्री प्राणनाथ जी को सन्त सिद्ध करने में अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा लगा देने में ही अपना गौरव समझने वाले तथा कथित बौद्धिक विद्वानों के भाग्य में मात्र कण्ठी माला, तिलक और मन्त्र जप का कर्मकाण्ड ही है। उन्हें युगल स्वरूप अथवा परमधाम के साक्षात्कार का सुख नहीं मिल सकता। जिन श्री प्राणनाथ जी के निर्देशन में जागनी लीला चल रही है, उन्हें ही सन्त घोषित करके स्वयं को उनके समकक्ष सिद्ध करना एक प्रकार का मानसिक दिवालियापन ही है।

**तो कही रात दुनी इन वास्ते, दिए बंदगी फरज लगाए।
ले तरीकत चल कोई ना सक्या, गए पाउं पुल-सरातें कटाए ॥८९॥**

यही कारण है कि इन सांसारिक जीवों के हृदय में अज्ञानता की अन्धकार-रूपी रात्रि का अस्तित्व माना गया है और इनके ऊपर शरीयत (कर्मकाण्ड) की भक्ति अनिवार्य रूप से कर्तव्य मानकर थोपी गयी है। ये जीव तरीकत के मार्ग पर उचित रीति से चल नहीं पाते। कर्मकाण्ड पर चलने से इनके पांव कट जाते हैं और ये निराकार को पार नहीं कर पाते हैं।

**तरीकत भी ले ना सके, सो राते की बरकत।
जो तरीकत ले पोहोंचे मलकूत, तो भी आड़ी हवा जुलमत ॥९०॥**

हृदय में अज्ञानता का अन्धकार रहने के कारण ही ये उपासना के भी मार्ग पर नहीं चल पाते हैं। यदि उपासना के मार्ग पर चलकर बैकुण्ठ में पहुँच भी जाय तो आगे निराकार का अनन्त आवरण आ जाता है।

ले हिसाब दई हैयाती, कहा वास्ते महंमद नूर।

भिस्त तो कही तले नूर के, रखे दिल बीच बका जहूर ।।९१।।

श्री जी ने संसार के जीवों को उनके कर्मों (ज्ञान तथा भाव के आधार पर) के अनुसार न्याय करके अखण्ड बहिश्तों में मुक्ति दी। कुर्आन-हदीसों में यह शोभा श्री प्राणनाथ जी (नूरी मुहम्मद) के लिये कही गयी है। बहिश्तें तो उस अक्षर ब्रह्म की लीला के ब्रह्माण्ड बेहद मण्डल में कही गयी है। यह बेहद मण्डल अक्षर के हृदय में स्थित हुआ कहा जाता है।

भावार्थ- बेहद को अक्षर ब्रह्म के हृदय में स्थित कहने का आशय यह है कि वहां अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण (हृदय) की लीला होती है। यद्यपि, अक्षर ब्रह्म का मूल स्वरूप परमधाम के अन्तर्गत अक्षर के रंगमहल में है किन्तु स्वलीला अद्वैत परमधाम में अक्षरातीत की लीला होने के कारण वहां अक्षर ब्रह्म की सत्ता की लीला का हो पाना सम्भव नहीं है। अक्षर ब्रह्म भी अन्य ब्रह्मात्माओं की भांति श्री राज जी का दर्शन करके ही आनन्दित होते हैं, स्वयं किसी के साथ लीला नहीं करते।

खास गिरो फरिस्तन की, ए जो पैदा नूर मकान।

सो पोहोंचे बका बीच नूर के, ले हक इलम ईमान ।।९२।।

ईश्वरीय सृष्टि जिन्हें फरिश्ते कहते हैं, अक्षर धाम (सत्स्वरूप) से प्रकट हुई है। वे श्री कुल्जुम स्वरूप से ज्ञान और अटूट विश्वास लेकर अपने मूल अखण्ड घर सत्स्वरूप (बेहद) में जायेंगी।

भावार्थ- सत्स्वरूप अक्षर ब्रह्म के अहम् का स्वरूप है। उसी से ईश्वरीय सृष्टि का उत्पन्न होना सम्भव है। परमधाम के अन्दर अक्षर ब्रह्म का जो स्वरूप रंगमहल (अक्षर धाम) में विराजमान है, वहां से २४,००० सुरताओं के प्रकट होने का मात्र संकल्प ही किया जा सकता है। परमधाम में एक नये कण का भी न तो प्रवेश सम्भव है और न ही निष्कासन।

हक हकीकत मारफत, रूहें इस्कें राह लई जाए।

सो बिन चले पाँउं हक बका, दर्ई सेहेरग से नजीक बताए ।।९३।।

ब्रह्मसृष्टियां प्रेम मार्ग के द्वारा परब्रह्म की हकीकत और मारिफत का अनुभव करती है। ये बिना कर्मकाण्ड के (पैरों से चले) ही अपने जिनधाम को प्राप्त होती हैं।

परब्रह्म को इनकी ही शाहरग से अधिक निकट कहा गया है।

**हक खासल खासों को, खेल देखावें लैल का।
नूर-तजल्ला बीच में, खेल देखें बैठे बीच बका ॥९४॥**

श्री राज जी अपनी ब्रह्मात्माओं को माया का यह खेल दिखा रहे हैं। स्वयं श्री राज जी मूल मिलावे में सबके बीच में बैठे हैं और सभी उनके चरणों में बैठकर माया का खेल देख रहे हैं।

**ए क्या जानें मजाजी दुनियां, जो तरीकी से पैदास।
वाकेदाखले मिलावे आपमें, जो अर्सरूहें खासलखास ॥९५॥**

मोह सागर से उत्पन्न होने वाले स्वाप्निक जीव ब्रह्मसृष्टियों की महिमा को भला क्या जान सकते हैं? अति विशिष्ट महिमा वाली परमधाम की ब्रह्मात्माओं से वे नादानी में अपनी तुलना करने लगते हैं।

**आयतों हदीसों माएने, जो देखो हक इलम ले।
तो खासलखासखासे आम की, तीनों जाहेर देखाई दे ॥९६॥**

हे साथ जी! यदि आप तारतम ज्ञान के प्रकाश में कुर्आन की आयतों तथा हदीसों का अर्थ देखें तो ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि की स्पष्ट पहचान होती है।

**हुकम हुआ तीनों गिरो को, कर महंमद हिदायत।
हकीकत और तरीकत, तीसरी जो सरीयत ॥९७॥**

मूल स्वरूप श्री राज जी का हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी को यह निर्देश हुआ कि इन तीनों सृष्टियों को क्रमशः हकीकत, तरीकत तथा शरीयत के द्वारा समझाने का प्रयास करो।

**खासलखासों दे हिकमत, ज्यों रहे न सुभेसक।
बिगर वास्ते पोहोंचे बीच, अर्स अजीम बका हक ॥९८॥**

ब्रह्मसृष्टियों को तत्व ज्ञान देने का आदेश हुआ जिससे उनके मन में किसी भी प्रकार का संशय न रह जाय और वे बिना किसी बाधा के अक्षरातीत के परमधाम का साक्षात्कार कर सकें।

तरीकत देखाओ खास दूजी को, केहे मीठी हलीमी जुबान।

तेरा हुकम न फेरे ए गिरो, पोहोंचाओ बका नूर मकान ॥१९१॥

दूसरी ईश्वरीय सृष्टि को उपासना का मार्ग अति कोमल तथा मुधर शब्दों में बताने का आदेश मिला। यह भी कहा गया कि यह सृष्टि तुम्हारे आदेश का उल्लंघन नहीं करेगी। इस प्रकार उन्हें अखण्ड बेहद धाम में पहुँचाओ।

और जिद कर आम खलक सों, वे तेरे सामी ल्यावें हुज्जत ।

ताए समझाओ जिदसों, जो जाहेरी चले सरीयत ॥१००॥

जीव सृष्टि को बलपूर्वक समझाना पड़ेगा। वे तुमसे अपने कथन की सत्यता के दावे में विवाद भी कर सकते हैं। जो संसार को अपनी कर्मकाण्ड की भक्ति दिखाने की भावना रखते हैं, उन्हें कठोरता के साथ समझाओ।

लिखी तीनोंकी अकलें, और तासों पाए जो फल ।

सोलिखीबीच आयतोंमुसाफ, सोदेखोमोमिन अर्सदिल ॥१०१॥

कुर्आन पाक की आयतों में इन तीनों सृष्टियों की बुद्धि का विवरण दिया गया है तथा यह भी बताया गया है कि उसका फल क्या देता होता है। हे साथ जी! आप कुर्आन के इन कथनों पर विचार कीजिए क्योंकि आपका हृदय प्रियतम का धाम कहलाता है। हदीस में भी इसी तरह कहा गया है - “कल्ब-ए-मोमिन अर्श अल्लाह” या “कल्बु मोमिनीन अर्श ए-मनस्त” ।

सरीयत तरीकत हकीकत, ए तीनों अहेल कुरान ।

जिन जो पाई अकल, तिन तैसी हुई पेहेचान ॥१०२॥

शरीयत के मार्ग पर चलने वाली जीव सृष्टि, तरीकत को अपनाने वाली ईश्वरीय सृष्टि तथा हकीकत का अनुसरण करने वाली ब्रह्मसृष्टि तीनों ही स्वयं को कुर्आन के ज्ञान के उत्तराधिकार पर अपना स्वामित्व दर्शाती है। वास्तविकता तो यह है कि जिसके पास जैसी बुद्धि होती है, उसको परब्रह्म की वैसी ही पहचान होती है।

जो आयत हब्बूनी हब्बहुंम, तिन किए तरजुमें तीन ।

पेहेचान जैसी तैसी मजल, फल सोई देवे आकीन ॥१०३॥

कुर्आन पाक की आयत 'हब्बूनी हब्बहुम' का तीन प्रकार से अर्थ किया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है अनन्य प्रेम किन्तु इसको जिसने जिस स्तर से पहचाना उसने उसी भाव से अपना लक्ष्य निर्धारित किया और अर्थ निकाला। इसी प्रकार, जिसको जैसा विश्वास होता है, उसको वैसा ही फल प्राप्त होता है।

**बीच लिख्या हदीसों आयतों, हक खिलवत के सुकन।
सो क्यों पावे दिल दुस्मन, बिना अर्स दिल मोमिन ॥१०४॥**

कुर्आन पाक की आयतों तथा हदीसों में श्री राज जी की खिलवत की बातें लिखी हैं, किन्तु उसके रहस्य को भला ये संसार के जीव कैसे जान सकते हैं जिनके हृदय में अज्ञानता का साम्राज्य है? इसे तो मात्र वे ब्रह्ममुनि ही जानते हैं, जिनका हृदय प्रियतम अक्षरातीत का धाम होता है।

**बिना हक हादी निसबत, कोई होए न सके दाखिल।
मारफत पाइए मुसाफ की, जो हक दें कुल्ल अकल ॥१०५॥**

परब्रह्म के युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी से मूल संबंध के बिना परमधाम में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता। जिसे श्री राज जी कृपा करके जागृत बुद्धि प्रदान करते हैं, वही कुर्आन के मारिफत संबंधी गुह्य रहस्यों को जान सकता है।

**लिख्या सिपारे तीसरे, इब्राहीम पूछा हक से।
ए जो मरत है दुनियां, क्यों कर मुरदे उठें ॥१०६॥**

कुर्आन के तीसरे सिपारे में लिखा है कि इब्राहिम पैगंबर ने परब्रह्म से पूछा कि ये जो संसार के लोग मरते जा रहे हैं, वे पुनः जीवित कैसे उठेंगे?

भावार्थ – कुर्आन मजीद पार: ३ तिल्करसूल सूर: बकर: २ आयत २६० “व इज काल इब्राहिमु रब्बि अरिनी कैफ इन्नल्लाह अजीजुन् हकीमुन्” अर्थात् जब इब्राहिम ने पूछा खुदा तआला से हे परवरदिगार! मुझे दिखाईए कि आप किस प्रकार जिन्दा करते हैं। खुदा ने कहा क्या तुमको इस विषय में विश्वास नहीं है। तब इब्राहिम ने खुदा से अर्ज किया कि यकीन तो है लेकिन मैं अपनी नजरों से एक बार देख करके अपने दिल की तसल्ली करना चाहता हूं। तब अल्लाह ने कहा चार पक्षी ले आओ और उनको अपने पास हिला मिला लो, फिर एक-एक को एक-एक पहाड़ी पर छोड़ आओ।

फिर उनको अपनी तरफ बुलाओगे तो वह तुम्हारे पास दौड़ें चले आयेंगे। इससे सिद्ध होता है कि खुदा सर्वशक्तिमान और सर्वविद है।

**तब लिख्या आया आयतमें, बाजे पैदा कलमें कुंन।
एक कहे एक हाथ से, कहे बाजे दो हाथन॥१०७॥**

तब कुर्आन की यह आयत अवतरित हुई कि कुछ लोग परब्रह्म के 'कुन्न' कहने से पैदा हुए हैं। एक सृष्टि को एक हाथ से तथा दूसरी को दो हाथ से पैदा हुआ बताया गया है।

भावार्थ- कुर्आन पाक के तीसरे पारे की आयत ४० में कुन्न की पैदाईश (जीव सृष्टि) का वर्णन है। आयत ३८ व ३९ में एक हाथ तथा दो हाथ की पैदाईश का वर्णन है। आयत ७ और २५ में मूल इप्तदाए तथा खिल्कत की पैदाईश का कथन है। तफ्सीरे हुसैनी में इसी तीसरे सिपारे की व्याख्या में पाँच तरह की पैदाईश का वर्णन है। पारा : ३ सूरे बकर २ आयत २५६ तथा २६० में भी पाँच तरह की पैदाईश का उल्लेख है। एक हाथ की पैदाईश का तात्पर्य मुहम्मद सल्ल. (साहब) पर ईमान लाने वाली सृष्टि (समुदाय) तथा दो हाथों की पैदाईश का अभिप्राय है सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी पर विश्वास लाने वाला समुदाय।

**एक गिरो इप्तदाए से, मौजूद से ले आए।
दूजी गिरो खिलकत और से, इनो वास्ते करी पैदाए॥१०८॥**

एक सृष्टि ब्रह्मसृष्टियों की है जो अनादि काल से है और परमधाम से सूरता द्वारा माया का खेल देखने के लिये आयी है। दूसरी ईश्वरीय सृष्टि पड़ौस (बेहद धाम) की रहने वाली है। इसे ब्रह्मसृष्टियों के साथ माया का खेल देखने के लिये अक्षर ब्रह्म ने उत्पन्न किया है।

**ए तीनों गिरो का बेवरा, देखो दाखले मिलाए।
एक कुंन दूजे पाक फरिस्ते, तीसरी असल खुदाए॥१०९॥**

इस प्रकार यह तीनों सृष्टियों का विवरण है। जीव सृष्टि कुन्न कहने से उत्पन्न हुई है। दूसरी पवित्र ईश्वरीय सृष्टि है तथा तीसरी ब्रह्मसृष्टि तो साक्षात् परब्रह्म की ही स्वरूपा है। हे साथ जी! आप इस कथन को विभिन्न प्रमाणों से मिलाकर देखिए।

**एक हाथ सूरत महंमद की, दूजे दो हाथ सूरत दोए।
ए तीनों कही हाथ से, ए दोए तीन एक सोए॥११०॥**

परब्रह्म ने एक हाथ से मुहम्मद स. अ. व. व. की बसरी सूरत को तथा दोनों हाथों से दोनों सूरतों-मल्की तथा हकी को बनाया। इन तीनों सूरतों को हाथ से बनाया हुआ कहा गया है। पूर्व की एक तथा बाद की दोनों सूरतें मिलकर तीन सूरतें होती हैं किन्तु श्री महामति जी के धाम हृदय में तीनों सूरतें एकाकार होकर श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होती हैं।

भावार्थ- चौपाई १०७ में एक हाथ से तथा दो हाथों से होने वाली सृष्टि (समुदाय) का वर्णन है, जबकि उपरोक्त चौपाई में सूरतों का प्रसंग है। सूरतें के दिशा-निर्देश पर चलने वाले समुदायों का वर्णन चौपाई १०७ में किया गया है। हाथ का सूक्ष्म अर्थ आदेश अथवा शक्ति होता है। परब्रह्म ने अपने आदेश (हुक्म या इच्छा) से इन तीनों सूरतों को धारण किया था। जब ये तीनों सूरतें श्री महामति जी के धाम हृदय में एकाकार हुईं तो सच्चिदानन्द स्वरूप अक्षरातीत का स्वरूप प्रकट हुआ।

यह सर्वविदित है कि बसरी सूरत में अक्षर ब्रह्म (सत्स्वरूप) की आत्मा थी। मल्की सूरत में आनन्द स्वरूपा श्यामा जी की आत्मा थी तथा हकी सूरत के रूप में चिद्धन स्वरूप श्री राज जी का आवेश लीला कर रहा है। इस प्रकार सत + चिद् + आनन्द का स्वरूप सच्चिदानन्द होता है। इस तथ्य को खुलासा (१४/२१) के निम्न कथन से समझा जा सकता है -

महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम ।

अहमद मिल्या मेहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम ॥

कोई कहे कहां कह्या हाथ से, देखो सिपारे तेईसमें।

देखो सहूर कर मोमिनो, कह्या आदम पैदा हाथ से॥१११॥

यदि कोई कहता है कि हाथ से पैदा होना कहां लिखा है तो उसे २३वें सिपारे में देखना चाहिए। हे साथ जी! इस विषय पर चिन्तन करके देखिए (सत्य को जानिए)। इस सिपारे में लिखा है कि अल्लाहतआला ने आदम को हाथ से पैदा किया।

भावार्थ- तीनों सूरतों में परब्रह्म की जोश एवं आवेश शक्ति ने अवश्य लीला

की किन्तु ये मानवीय तन में ही पूर्ण हुई। इसलिये कुर्आन के इस प्रसंग में आदम को बनाने अर्थात् मानवीय तन में अपना स्वरूप धारण करने का अभिप्राय है।

**महामत कहे हक इलमें, बेवरा कहा नेक ए।
दो गिरोपोहोँचाईदोऊअसोंमें, औरोंपट खोलेभिस्त आठोंके॥११२॥**

श्री महामति जी कहते हैं कि मैंने तारतम ज्ञान के प्रकाश में तीनों सृष्टियों का थोड़ा सा विवरण दिया है। श्री प्राणनाथ जी ने ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि को परमधाम तथा सत्स्वरूप में जाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है तथा जीव सृष्टि के लिये आठों बहिस्तों का द्वार खोल दिया है।

भावार्थ- सत्स्वरूप की पहली बहिस्त में ब्रह्मसृष्टियों के जीव होंगे तथा दूसरी बहिस्त में ईश्वरीय सृष्टि अपने जीव के साथ होगी। शेष छः अन्य बहिस्तों में अनिवार्य रूप से जीव सृष्टि ही होगी। यही कारण है कि उपरोक्त चौपाई में आठों बहिस्तों में जीवों के होने का वर्णन किया है। चौपाई १०६ में कथित इब्राहीम पैगम्बर के प्रश्न का उत्तर इस चौपाई में दे दिया गया है अर्थात् तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी जीवों का अखण्ड मुक्ति पाना ही मुद्दों का जीवित होना है।

॥प्रकरण ॥४॥चौपाई॥३६७॥

बाब तीनों फरिस्तों का बयान

इस प्रकरण में तीनों फरिस्तों का विवरण दिया गया है।

**तीनों फरिस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान।
सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमिन देवें पेहेचान॥१॥**

कुर्आन में तीनों फरिस्तों का विवरण लिखा हुआ है। ब्रह्ममुनियों का निर्देशन करने वाले श्री प्राणनाथ जी उन्हें कुर्आन पाक की हकीकत तथा मारिफत के भेदों को स्पष्ट करते हुए अब तीनों फरिस्तों की यथार्थ पहचान कर रहे हैं।

भावार्थ- कुर्आन के पा. २७ सू. ५७ हदीद आ. ४ “हुवल्लजी खलकस्मावाति वलअर्ज फी सितति अय्यामिन सुम्मस्तवा अललअर्शि यऽलमु मा यलिजु फिलअर्जि व मा यखरुज मिन्हा व मा यन्जिलु मिनस्समाई व मा यऽरुजु फीहा व हुव मअकुम् अैनमा कुन्तुम् वल्लाहु बिमा तऽमलून बसीरुन” अर्थात् वही है जिसने आसमानों और जमीन

को छः दिन में बनाया, फिर (सातवें आकाश) पर जा ठहरा। संसार में जो कुछ भी होता है उस सबको जानता है। और तुम जहां कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ अभिन्न रूप से रहता है और तुम जो कुछ भी करते हो सर्वदृष्टा उसको देख रहा होता है।

पारः १२ सूर : हुद ११ आयत ७ “व हुवल्लजी खलकस्समावाति वल्अर्ज..... कफरु इन् हाजा इल्ला सिह्रूमबीनुन् “अर्थात् वही है जिसने आकाश और जमीन को छः दिन में उत्पन्न किया और उसका अर्श पानी पर था। उसने मनुष्य को इस संसार में इसलिए उत्पन्न किया कि तुम लोगों के अच्छे कर्म हैं। यदि कोई ऐसा कहे कि मरने के बाद पुनः उठाकर खड़े किये जायेंगे तो जो लोग इन्कारी है वह जरूर कहेंगे कि यह तो खुला जादू है। यहां पर क्षर ब्रह्माण्ड के स्वामी आदिनारायण एवं ब्रह्मा, विष्णु व महेश की सत्ता का वर्णन किया गया है।

बयान बड़े बोहोत निसान, ताथें जुदे जुदे लिखे जात।

एक दूजे के आगे जो कहिए, तो कागद में न समात ॥२॥

इन तीनों फरिश्तों की पहचान सम्बन्धी वर्णन बहुत अधिक है, इसलिये अलग-अलग सिपारों में लिखा गया है। यदि तीनों का वर्णन एक ही स्थान (सिपारे) में किया जाता तो कागज में लिखा नहीं जा सकता था।

भावार्थ- भले ही कुर्आन में अलग-अलग सिपारों में तीनों फरिश्तों का विवरण लिखा गया हो किन्तु लिखा तो कागज पर ही है। उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण में कागज में न समा पाने का आशय एक सिपारे में न समा पाने से है, क्योंकि प्रत्येक सिपारे के स्थान की एक विशेष मर्यादा होती है। किसी भी सिपारे में एक सीमा से अधिक नहीं लिखा जा सकता था।

जुदी जुदी सनंधों साहेदी, हकें भेजी कई किताब।

जासों पढ़ा या अनपढ़ा, सब रोसन होए सिताब ॥३॥

श्री राज जी ने अलग-अलग तथ्यों की साक्षी देने के लिये अपने कई आदेश से कई ग्रन्थों को भेजा है जिससे पढ़े या अनपढ़े सभी लोगों में सत्य का प्रकाश हो जाय।

भावार्थ- परब्रह्म द्वारा स्वयं भेजी गयी पुस्तक तो मात्र कुर्आन है किन्तु उनकी कृपा और आदेश से अन्य विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा तफ्सीरे हुसैनी व कस्सुल अंबिया जैसे कुछ विशिष्ट ग्रन्थों की रचना हुई हैं जिन्हें यहां परब्रह्म के आदेश द्वारा भेजा हुआ कहा

गया है। ये ग्रन्थ स्वतः प्रमाणित नहीं है अपितु परतः प्रमाणित है। स्वतः प्रमाणित तो मात्र कुर्आन है। यदि कुर्आन के विरुद्ध किसी भी ग्रन्थ में कोई उल्लेख है तो वह मान्य नहीं हो सकता। यही बात वैदिक साहित्य एवं श्री कुल्जुम स्वरूप के सम्बन्ध में भी है। चारों वेदों की व्याख्या में बनाये गये चार उपवेदों, छः अंगों तथा उपांगों और 99 उपनिषदों में यदि कोई भी कथन वेद विरुद्ध हो तो वह मान्य नहीं हो सकता। इसी प्रकार, आठ बीतकों, श्री लालदास जी कृत बड़ी वृत्त, महंमद की बीतक, मूल बीतक एवं नवरंग साहित्य आदि का कोई भी कथन यदि श्री कुल्जुम स्वरूप के मूल कथनों के विपरीत हो तो वह मान्य नहीं हो सकता।

**छिपाया देखाऊं जाहेर कर, जो हकें फुरमाए।
त्यो देखाऊं कर माएने, ज्यों छोटे बड़े समझी जाए॥४॥**

श्री महामति जी कहते हैं कि श्री राज जी ने कुर्आन में जो भी गुह्य रहस्य छिपा कर रखा हैं, मैं उन्हें प्रकट कर रहा हूँ। उसका सरल अर्थ करके मैं इस प्रकार बताऊंगा जिससे कम या अधिक बुद्धि वाले सभी लोग उसे समझ जाएं।

**हलाल हराम दोऊ छिपे हुते, सो बयान किए हुकम।
ले अकल असराफील, नबी कदमों धरे कदम॥५॥**

कौन सा कार्य धर्मानुकूल है और कौन सा अन्यायपूर्ण, इसकी स्पष्ट विवेचना अब तक कतेब पक्ष में उजागर नहीं हो पायी थी। मैंने परब्रह्म के आदेश से उसका वर्णन कर दिया है। अब संसार के लोग जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान को साथ लेकर श्री जी के दर्शाये हुए मार्ग पर चलेंगे।

**हक साथ मैं आऊंगा, असराफील ईसा इमाम।
लिखे फैल सबन के, जासों पेहेचानिए तमाम॥६॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कुर्आन पाक में कहा है कि कियामत के समय परब्रह्म जब आखरुल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां के रूप में प्रकट होंगे तब मैं भी उनके साथ रहूँगा। उनके साथ जागृत बुद्धि का फरिश्ता अम्नाफील और ईसा रूहुल्लाहु (श्यामा जी की आत्मा) की भी उपस्थिति रहेगी। कुर्आन पाक में सबका व्यवहार दर्शाया गया है जिससे कि उनकी पहचान की जा सके।

यों केती कहूं निसानियां, हैं हिसाब बिन।

पर ए मीठा लगसी मोमिनो, औरों लगसी सखत सुकन ॥७॥

इस प्रकार, कुर्आन में परमधाम तथा परब्रह्म से सम्बन्धित बहुत सी (अनन्त) पहचान है जिनका मैं कितना वर्णन करूँ? उन्हें प्रकट करने पर ब्रह्मात्माओं को तो बहुत अच्छा लगेगा किन्तु संसार के अन्य लोगों को वे वचन बहुत ही कठोर लगेंगे।

ए कह्या आयतों हदीसों, जिन सिर आखिरी खिताब।

जाहेर देखावेँ दिन कर, खोल माएने मगज किताब ॥८॥

कुर्आन की आयतों तथा हदीसों में यह बात कही गयी है कि इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ श्री प्राणनाथ जी को ही यह महान शोभा है कि वे कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को खोलकर सबके हृदय में दिन के समान अखण्ड ज्ञान का प्रकाश कर दें।

यों दिन बका जाहेर हुआ, तब देखसी सब निसान।

नजरोँ आवसी कयामत, होसी रोसन सबों पेहेचान ॥९॥

इस प्रकार अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्रकाशित हो जाने पर कुर्आन में वर्णित सभी साक्षियों की पहचान हो जायेगी। इसके अतिरिक्त उन्हें कियामत के समय तथा सभी प्राणियों की अखण्ड मुक्ति का भी प्रत्यक्ष अनुभव हो जायेगा।

कहे बिगर ना रहे सकों, जो हक हादी फुरमाए।

हक बका के असों के, पट महंमद मसी खोलाए ॥१०॥

मेरे धाम हृदय में विराजमान होकर युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी जो कुछ भी कह रहे हैं, उसे मैं प्रकट किये बिना नहीं रह सकता। मेरे हृदय में विद्यमान बसरी सूरत तथा मल्की सूरत ने प्रियतम अक्षरातीत के दोनों धामों का मार्ग दर्शा दिया है।

ए इसारतें कोई न समझया, ना तो जाहेर दई बताए।

कह्या गुनाह किया अजाजीलें, सो सब दिलों करी खताए ॥११॥

कुर्आन में कहा गया है कि अजाजील फरिश्ते ने सिज्दा न करने का गुनाह किया किन्तु उसका दोष संसार के सभी प्राणियों के दिल को लग गया। कुर्आन में संकेतों में कहे हुए इसके रहस्य को कोई भी समझ नहीं पाया। सभी एक-दूसरे को बाह्य अर्थ ही बताते रहे हैं।

अव्वल आए कही महंमदें, कह्या आगूं होसी बड़े निसान।

सो भी वास्ते रूह मोमिनो, देख के ल्यावे ईमान ॥१२॥

सबसे पहले बसरी सूरत मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने संसार में आकर कहा कि भविष्य में कियामत आने के बड़े-बड़े संकेत प्रकट होंगे। यह सब ब्रह्ममुनियों के लिये होगा, जिससे कि वे उन संकेतों को देखकर कुर्आन पाक के कथनों पर विश्वास कर सकें।

**जबराईल साथ रसूल के, आया बीच अव्वल।
कुरान ल्याया बीच रात के, चलाया सरा अमल ॥१३॥**

मुहम्मद स. अ. व. व. के साथ सबसे पहले जिब्रील फरिश्ता संसार में आया। वह अज्ञानता भरे संसार में कुर्आन का ज्ञान लाया और शरीयत (कर्मकाण्ड) की प्रधानता का पन्थ चलाया।

**एक जबराईल फरिस्ता, और महंमद पैगंमर।
राह देखाई मोमिनो, अर्स चढ़ उतर ॥१४॥**

जिब्रील फरिश्ता के साथ मुहम्मद साहब इस नश्वर जगत से परमधाम तक गये। यद्यपि जिब्रील सत्स्वरूप तक ही रुक गया, किन्तु मुहम्मद स. अ. व. व. मूल मिलावे तक गये। इस प्रकार, उन्होंने क्रियात्मक रूप से ब्रह्मात्माओं को परमधाम जाने तथा पुनः वापस आने का मार्ग दर्शा दिया।

**जबराईल नूर मकान लग, आगूं न सक्या चल।
नातो ल्यावने वाला मुसाफका, कहे आगूं जाऊंतो जाए पर जल ॥१५॥**

जिब्रील फरिश्ता अक्षर धाम (सत्स्वरूप) तक ही जा सका। इसके आगे जाने में वह असमर्थ रहा। यद्यपि वह परब्रह्म के जोश का फरिश्ता है और कुर्आन की आयतों को ले आया किन्तु उसने कहा कि यदि मैं इससे (सत्स्वरूप) आगे जाता हूँ तो वहदत (एकत्व) में मेरे पर जल जायेंगे।

भावार्थ— जिब्रील कोई पंखधारी पक्षी नहीं है, अपितु परब्रह्म का जोश है। जिस प्रकार किसी पक्षी को आकाश में उड़ने के लिये मनुष्य की भांति यान आदि की

आवश्यकता नहीं पड़ती, उसी प्रकार जिब्रील को भी कालमाया के ब्रह्माण्ड को पार करके सत्स्वरूप तक पहुँचने में किसी की भी सहायता की आवश्यकता नहीं है जबकि तीनों सृष्टियों को चितवनी में कालमाया के निराकार मण्डल को पार करने के लिये जिब्रील की अनिवार्य रूप से सहायता की आवश्यकता है।

जबराईल जबरूत से, याकी असल नूर मकान।

सोहोबत करी महंमद की, तो ल्याया हक फुरमान॥१६॥

जिब्रील का मूल निवास अक्षर धाम (सत्स्वरूप) है। मुहम्मद साहब की संगति से इसे परब्रह्म के वचन रूप कुर्आन को लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जो रूह अर्स महंमद की, तिनको न सक्या पेहेचान।

तो न आया बड़े नूर में, छोड़्या न नूर मकान॥१७॥

जिब्रील मुहम्मद सल्ल. के रूप में अक्षर ब्रह्म की आत्मा को पहचान नहीं सका। परिणामस्वरूप वह सत्स्वरूप से आगे परमधाम में नहीं जा सका।

भावार्थ- परमधाम में एकत्व (वहदत) का साम्राज्य है, जिसमें कोई छोटा बड़ा नहीं हो सकता। यही कारण है कि इस चौपाई के तीसरे चरण में परमधाम को बड़ा नूर कहा गया है। छोटा नूर अव्याकृत से सत्स्वरूप तक का बेहद मण्डल है।

चल न सक्या जबराईल, रह्या हद जबरूत।

मासूक कह्या महंमद को, तो पोहोंच्या बका हाहूत॥१८॥

जिब्रील सत्स्वरूप से आगे नहीं चल सका। वह उसकी अन्तिम सीमा तक ही जा सका। श्री राज जी ने मुहम्मद को अपना माशूक कहा, तभी वे परमधाम के अन्दर मूल मिलावे में जा सके।

सो ए वतन रूह मोमिनो, जित पोहोंच्या न जबराईल।

एक महंमद संग आखिरी, बीच पोहोंच्या असराफील॥१९॥

परमधाम में ब्रह्मात्माओं (मोमिनो) का निवास है, जहां जिब्रील नहीं जा सकता। मुहम्मद सल्ल. (साहब) के साथ केवल अस्सराफील ही परमधाम में प्रवेश पा सका।

**इत और न कोई पोहोचिया, ए हक हादी मोमिनो वतन ।
तो असराफील आइया, करने बका सबन ॥२०॥**

श्री राज जी, श्यामा जी एवं ब्रह्मसृष्टियों के इस परमधाम में आज दिन तक कोई भी नहीं पहुँचा था। अस्म्राफील के माध्यम से संसार में ज्ञान का प्रकाश करके उसे अखण्ड करना था, इसलिये परब्रह्म के आदेश से वह अन्दर आ सका।

भावार्थ- जिब्रील यह पहचान नहीं कर सका कि मैं जिन्हें मृत्युलोक से लेकर आया हूँ, वहीं मेरे आराध्य अक्षर ब्रह्म है। यही कारण है कि उसे परमधाम में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली।

ज्ञान स्वरूप होने से अस्म्राफील ने अपने आराध्य अक्षर ब्रह्म को पहचान लिया जिससे वह परमधाम में प्रवेश कर सका। यह सब कुछ ब्रह्मात्माओं के कारण ही हुआ अन्यथा जिस अक्षर ब्रह्म के लिये यह कहा जाता है कि “इत और न दूजा कोए, सरूप एक है लीला दोए” (परिकरमा ३/६८), वे अक्षर ब्रह्म भी अनादि काल से आज दिन तक मूल मिलावे में नहीं पहुँचे थे। मात्र चांदनी चौक से ही दूर से श्री राज जी का दर्शन करके वापस अपने धाम चले जाते थे। यही कारण है कि अस्म्राफील को परमधाम के अन्दर प्रवेश का अधिकार तो मिला किन्तु मूल मिलावे में नहीं।

जिस प्रकार श्री राज जी के सत् अंग होते हुए भी बिना इश्क का स्वरूप बने अक्षर ब्रह्म को मूल मिलावे में प्रवेश का अधिकार नहीं मिल सका था, उसी प्रकार अस्म्राफील को भी न तो इश्क का स्वरूप मिला और न ही प्रवेश की स्वीकृति। मुहम्मद के रूप में मात्र अक्षर ब्रह्म की आत्मा ही इश्क का स्वरूप धारण कर मूल मिलावे में जा सकी। परमधाम की लीला का ज्ञान तो अस्म्राफील को श्री महामति जी के धाम हृदय में ही मिला। ‘कलश हिन्दुस्तानी’ (२३/१०३) की निम्न चौपाई से यह स्पष्ट है -

**मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर ।
तारतमें सब सुध परी, लीला अन्दर की घर ॥**

अस्म्राफील को को मुहम्मद स. अ. व. व. के साथ जाने पर मात्र यमुना जी के पहले अक्षर ब्रह्म के रंगमहल तक की शोभा से ही सन्तोष करना पड़ा। इस सम्बन्ध में श्री

लालदास जी कृत बड़ी वृत्त के ये कथन देखने योग्य हैं-

आया रफ रफ का तखत, रसूल बैठे बीच इस्क ।

उहां से चले अकेले, जाए पहुँचे हजूर हक ॥ (89/53)

यदि साथ में अम्नाफील भी होता तो इस चौपाई के तीसरे चरण में 'अकेले' शब्द का प्रयोग नहीं होता।

जिस प्रकार इस मायावी जगत में आने से पहले अक्षर ब्रह्म को भी परमधाम की लीला और श्यामा जी सहित ब्रह्मात्माओं की पूर्ण शोभा का ज्ञान नहीं था तथा वे ही मात्र अपने रंगमहल में ही रहते थे, उसी प्रकार अम्नाफील को मात्र परमधाम में यमुना जी तक प्रवेश करने का सौभाग्य ही मिला।

महंमद सिफायत सब को, कुल्ल सैयन महंमद नूर।

सो बिन फरिस्ते क्यों होवहीं, तो लिया बीच रूह हजूर ॥ २१ ॥

यह सारी सृष्टि मुहम्मद के नूर से है। इसलिये मुहम्मद स. अ. व. व. की सिफायत सबके लिये है किन्तु संसार को अखण्ड मुक्ति देने का कार्य बिना अम्नाफील फरिश्ते के कैसे हो सकता था, इसलिये मुहम्मद की आत्मा के साथ अम्नाफील को भी परमधाम में बुलाया।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण में 'सैयन' के स्थान पर 'सैं' होना चाहिए, जिसका अर्थ सृष्टि होता है। भूलवश लिखने की त्रुटि के कारण 'सैयन' हो गया है। "हुकम नूर खुदाए का, जो है नूरजलाल" (बीतक, ६२/५१) के इस कथन से यह स्पष्ट है कि अनादि अक्षरातीत के हुकम (सत्) का स्वरूप अक्षर ब्रह्म भी अनादि है। उनका हुकम जिब्रील भी अनादि है। मात्र 'मुस्तफा' के मानव तन को ही मुहम्मद मान लेना भूल है। इसका अर्थ होता है 'महिमा से परे'। अक्षर ब्रह्म सारी सृष्टि के रचनाधार है एवं उनकी शुभकामना (सिफायत) सारी सृष्टि के लिये है, ऐसा मानना चाहिए। जो कट्टरपन्थी लोग 'मुहम्मद' शब्द को मात्र मुस्लिम समुदाय का ही निर्देशक मानते हैं, वे भ्रम में हैं। अगली चौपाई में यही भाव दर्शाया गया है।

तो अव्वल आखिर महंमद, महंमद सब अवसर।

सब नूर इनका कहा, कोई बखत न इन बिगर ॥ २२ ॥

इस प्रकार परब्रह्म के हुकम के स्वरूप मुहम्मद सृष्टि के प्रारम्भ से ही हैं और

अन्त में भी। यहां तक कि मुहम्मद सार्वकालीन है। सारी सृष्टि में इन्हीं का आदेश है। ऐसा कोई समय नहीं है जिसमें इनका आदेश (हुक्म) न रहा हो।

भावार्थ- 'मुस्तफा' के शरीर मात्र को ही मुहम्मद मानकर एक समुदाय विशेष का संस्थापक मानने तथा अपनी कट्टरता एवं हिंसात्मक प्रवृत्ति से संसार को आतंकित करने की मानसिकता से सारी भ्रान्तियां फैलती हैं। यदि संसार को यह पता चल जाय कि मुहम्मद मुस्तफा सल्ल. के रूप में अक्षर ब्रह्म (नूरजलाल) की आत्मा लीला कर रही थी जो अक्षरातीत (नूरजमाल) की सत् अंग है तो सम्भवतः कट्टरता एवं क्रूरता में बहुत कमी आ सकती है।

साथ महंमद मेहेंदी असराफील, ले मगज मुसाफी बल।

तो आया बीच अर्स अजीम के, पोहोंच्या बीच बड़े नूर असल ॥२३॥

हकी सूरत आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (मेहमत साहिबुज्जमाँ) के धाम हृदय में बैठकर अस्माफील फरिश्ते ने कुर्आन की हकीकत एवं मारिफत सम्बन्धी गुह्य रहस्यों का अभिप्राय जान लिया, जिसके परिणामस्वरूप वह अक्षर धाम से भी परे परमधाम के मूल मिलावे तक पहुँच गया।

भावार्थ- पूर्व की चौ. २० में यह प्रसंग आया है कि रसूल मुहम्मद सल्ल. (साहब) को जब मेयराज हुआ तो उनके साथ अस्माफील फरिश्ता यमुना जी तक पहुँच गया किन्तु इस चौपाई में यह प्रसंग है कि श्री महामति जी के धाम हृदय में बैठकर उसने खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार का ज्ञान प्राप्त कर लिया जिसके परिणामस्वरूप उसने युगल स्वरूप की शोभा-श्रृंगार सहित सम्पूर्ण २५ पक्षों एवं अष्ट प्रहर की लीला का रसास्वादन कर लिया। ऐसा वह पहले कभी भी नहीं कर सका था।

यदि यह संशय किया जाय कि श्री कुल्जुम स्वरूप में विद्यमान खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार ग्रन्थ को तो हमने दर्जनों बार पढ़ा है किन्तु हमें तो दर्शन नहीं होता, अस्माफील को कैसे हो गया? इसके समाधान में यही कहा जा सकता है कि इन चारों ग्रन्थों का पठन एवं चिन्तन तो लाखों सुन्दरसाथ करते हैं किन्तु उनका जीव ही अपने अन्तःकरण (मन, बुद्धि आदि) के माध्यम से परमधाम का केवल ज्ञान प्राप्त करता है जबकि आत्मा तो मात्र दृष्टा है। जब तक जीव चितवनी के अभ्यास से अपने मन को विषय-विकारों से मुक्त नहीं करेगा, विरह के आंसू नहीं बहायेगा और प्रेम में प्रियतम के

दीदार के लिये तड़पेगा नहीं, तब तक आत्मा भी अन्तर्दृष्टि से परमधाम को देख नहीं सकेगी क्योंकि जीव के ऊपर बैठकर वह भी जीव भाव को प्राप्त हो गयी है। जीव जब एकाग्र मन से श्री कुलजम् स्वरूप के इन चारों ग्रन्थों को पढ़कर स्वयं को आत्मस्वरूप मानता है, तभी आत्मा के अन्दर भी अपने आत्मस्वरूप का भाव जागृत होता है क्योंकि वह मात्र द्रष्टा है।

अस्राफील की स्थिति जीव से पूर्णतया भिन्न है। वह जीव की भांति काम, क्रोधादि विकारों से ग्रसित नहीं है अपितु पूर्णतया निर्विकार, अखण्ड स्वरूप अक्षर ब्रह्म की बुद्धि का स्वरूप है। वह ज्ञान प्राप्त होते ही तत्क्षण अपनी अन्तर्दृष्टि से परमधाम के एक-एक प्रसंग को प्रत्यक्ष देखने की सामर्थ्य रखता है जबकि स्वप्न की बुद्धि लेकर करोड़ों जन्मों के विकारों का बोझ ढोने वाला जीव जब कुछ पलों के लिये भी पूर्णतया निर्विकार बन कर अक्षरातीत की शोभा में स्वयं को डूबने का प्रयास करता है तो उसे युगल स्वरूप की झलक पाने का आभास होता है। यदि वह इस प्रेम-साधना में गहनता से डूब जाय तो निश्चित है कि उसकी आत्मा भी मेयराज का सम्पूर्ण सुख वैसे ही प्राप्त करेगी जैसे मुहम्मद सल्ल. की तीनों सूरतों अथवा अस्राफील को हुआ है।

उपरोक्त समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि अस्राफील फरिश्ते को दो बार मेयराज का सुख प्राप्त होता है- एक बार मुहम्मद सल्ल. (साहब) के साथ तो दूसरी बार श्री मेहमत स्वरूप महामति जी के धाम हृदय में। मुहम्मद स. अ. व. व. को जो मेयराज हुआ था, वह पूर्ण मेयराज नहीं था। पूर्ण मेयराज तो वि.स. १७३५ के पश्चात् होता है। इस सम्बन्ध में संनध ग्रन्थ की निम्न चौपाईयां देखने योग्य हैं-

महंमद कहे मैं हुकम, सब रूहें मुझ माहें ।

मैं चल्या अर्स म्याराजको, पर पोहोच सक्या नाहें ॥ (42/63)

मैं ल्याया धनीयकी, इसारतें जिन खातिर ।

सो ताला अजू खुल्या नहीं, तो मैं पोहोचों क्यों कर ॥ (41/64)

मल्की सूरत श्यामा जी को भी तीन बार दर्शन होने के पश्चात् भी पूर्ण जागृत अवस्था का दर्शन नहीं हो पाया था तभी कलश हिन्दुस्तानी (२३/४३) में यह कहा गया है कि “आवेस जाको मैं देवे पूरे, सो जोगमाया को नींद होए।” दोनों सूरतों को पूर्ण

मेयरज श्री महामति जी के धाम हृदय में वि. सं. १७३५ के पश्चात् होता है। तभी खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार का अवतरण भी होता है। इसके साथ ही अस्माफील को भी दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है। इसी के लिये वह महारास की रात्रि के पश्चात् वि.सं. १७३५ तक प्रतीक्षारत था-

धनी जी, ध्यान तुमारे रे ।

बैठे बुध जी, वरस सहस्र चार ।

छे सै साठ बीता समे, दुनियां को भयो आचार ॥ (किरंतन 53/1)

जब मुहम्मद साहब को मेयरज हुआ था तो दो पर्दों के बीच वार्ता हुई थी। एक पर्दा हरे रंग का था और दूसरा श्वेत मोतियों के रंग जैसा था। वस्तुतः यह दोनों तनों का पर्दा था। 'हरा हुल्ला सुपेत गुदरी, रूह अल्ला के जामें दोए' (किरंतन, ६४/५) से यह स्पष्ट होता है। श्री श्यामा जी के दूसरे तन मिहिरराज जी में जब लीला करते हुए वि. सं. १७३५ का समय आता है, तब दोनों सूरतों को मेयरज होता है, साथ ही अस्माफील को भी। आगे की चौपाई में भी इस तथ्य की ओर संकेत किया गया है।

ना तो असराफील है नूर का, क्यों फरिस्ता सके आगे आए।

पर मगज मुसाफ नूर में, रूह महंमद लिया मिलाए ॥२४॥

अन्यथा, अस्माफील तो अक्षर ब्रह्म का फरिस्ता है भला वह यमुना जी से आगे कैसे जा सकता है किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश में मारिफत के गुह्य रहस्यों को जानकर श्री महामति जी (आखिरी मुहम्मद) के धाम हृदय में उसने परमधाम की सम्पूर्ण शोभा एवं लीला का सुख प्राप्त किया।

भावार्थ- इस सम्बन्ध में कलश हिन्दुस्तानी (२३/१०३) का यह कथन बहुत ही स्मरणीय है-

मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर ।

तारतमें सब सुध परी, लीला अन्दर की घर ॥

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी! आपके लिये यह आत्म-चिन्तन की घड़ी है। यदि तारतम ज्ञान का प्रकाश अस्माफील फरिस्ते को युगल स्वरूप एवं २५ पक्षों का दर्शन करा सकता है तो आप तो ब्रह्ममुनि होने का दावा करते हैं! आप इतनी निराशा के भंवर में

क्यों डूबे रहते हैं? अपने दुर्बल एवं नकारात्मक विचारों को ठोकर मारकर अभी से चितवनी में डूब जाइये। आपका प्राणेश्वर आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। 'मैं राह देखत तुमारी' (बड़ी वृत्त, ६/१६) के इस कथन से भी आपकी शीतल रगों में उष्णता का संचार क्यों नहीं हो रहा है? आप समर्पण, विरह, प्रेम और चितवनी में पुरुषार्थ-रूपी अनमोल रत्न को छोड़कर कर्मकाण्डों के कंकड़ पत्थरों और शीशे के टुकड़ों से कब तक खेलते रहेंगे? इस जागनी लीला का बीता हुआ एक-एक पल पुनः आपको दुबारा मिलने वाला नहीं है। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है! अपने आराध्य, अपने सर्वस्व को प्रत्यक्ष पा लेने के लिये प्रेमभरी चितवनी के आंसूओं की बहती हुई निर्मल धारा में अवगाहन (स्नान) करने का प्रयास कीजिए।

ए नूरी तीनों फरिस्ते, इनों की असल एक।

एकिया महंमद मोमिनो वास्ते, हक इलमें पाइए विवेक ॥२५॥

अजाजील, जिब्रील तथा अस्माफील तीनों ही नूरी फरिश्ते हैं। इनका मूल निवास बेहद मण्डल है। श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं को माया का खेल दिखाने के लिये ही इन तीनों के द्वारा अलग-अलग प्रकार की लीला हुई। इस तथ्य को तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही जाना जा सकता है।

भावार्थ- जिब्रील शक्ति स्वरूप है तथा अस्माफील ज्ञान स्वरूप और अजाजील पर सृष्टि रचना का उत्तरादायित्व है। जिब्रील और अस्माफील का निवास सत्स्वरूप है जबकि अजाजील का मूल निवास सबलिक का स्थूल (अव्याकृत का महाकारण) है। यद्यपि अक्षर ब्रह्म की बुद्धि की लीला केवल ब्रह्म की भूमिका में होती है किन्तु उनकी बुद्धि का निवास सत्स्वरूप में है। यह वैसे ही है जैसे अक्षर ब्रह्म परमधाम के रंगमहल के अन्दर रहते हैं किन्तु अपनी अखण्ड लीला अपने अहम् के स्वरूप सत्स्वरूप के द्वारा क्रियान्वित करते हैं।

कह्या सिजदा कर आदम पर, जो सब के अक्वल आदम।

अजाजीलें देख्या आपको, तो न पकड़े रसूल कदम ॥२६॥

परब्रह्म का अजाजील को आदेश हुआ कि तुम सृष्टि के प्रथम मानव आदम (मनु) को प्रणाम करो। अजाजील ने जब अपने नूरमयी तन को देखा तो अपने ऐश्वर्य के अहंकार में आकर मुहम्मद साहब के चरणों में शीश नहीं झुकाया।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक का सार तत्व यह है कि परब्रह्म ने अपने हुक्म से जो तीन सूरतें (मुहम्मद सल्ल. (साहब), सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी) धारण की, वे मानवीय तन में थी जिसके कारण आदिनारायण के अंश रूप जीव मानवीय तन में विराजमान परब्रह्म के स्वरूप को पहचान नहीं सके।

हकें आप पढ़ाइया, अंगुली से आदम को।

दे इलम नाम पढ़ाए, सक न सुभे इनमों॥२७॥

कुर्आन पाक के इस कथन में नाममात्र भी संशय नहीं है कि परब्रह्म ने स्वयं आदम को अपनी अंगुली से पढ़ना सिखाया। उन्होंने ज्ञान देकर सभी फरिश्तों का नाम पढ़ाया।

भावार्थ- आदम अलै. को पढ़ाने का तात्पर्य है परब्रह्म के द्वारा श्री महामति जी के धाम हृदय में तारतम ज्ञान का दिव्य प्रकाश कर देना।

हुकम हुआ आदम को, कहे फरिस्तों आगे नाम।

करें तुझ पर सिजदा हैयाती, मिल कर सब तमाम॥२८॥

मूल स्वरूप श्री राज जी का मेहमत स्वरूप श्री महामति जी के लिये आदेश हुआ कि तुम फरिश्तों के सामने उनके नामों का वर्णन कर दो। वे सभी मिलकर तुम्हें मेरा स्वरूप मानेंगे और तुम्हारे चरणों में अखण्ड प्रणाम करेंगे।

सो पढ़े कहें नाम आदमों, जाहेर किए सब पर।

तब फरिस्तों किए सिजदे, एक अबलीस बिगर॥२९॥

कुर्आन शरीफ के बाह्य अर्थों के विद्वान यह कहा करते हैं कि आदम अल्ले. ने सभी फरिश्तों के सामने उनके नामों का वर्णन कर दिया जिससे प्रभावित होकर एक इब्लीश के अतिरिक्त अन्य सभी ने आदम को सिज्दा (प्रणाम) किया।

भावार्थ- उक्त २६वीं चौपाई में अजाजील के द्वारा सिज्दा न करने का वर्णन है तथा इस चौपाई में इब्लीस के द्वारा। इसका सूक्ष्म आशय यह है कि मोह सागर में आदिनारायण का प्रकटन होता है और समस्त प्राणी भी उत्पन्न होते हैं। आदिनारायण का सांकल्पिक प्रतिबिम्ब चेतन सभी प्राणियों के जीव के रूप में लीला करता है। जीव के अन्तःकरण के सभी घटक मन, चित्त, बुद्धि तथा अहंकार सभी मोह तत्व से बने महत्तत्व

के ही अंश से उत्पन्न होते हैं। ऐसी स्थिति में इन्द्रियों के राजा मन का बहिर्मुखी होकर जीव को भी भटकाना स्वाभाविक है। मन के बहकावे में आकर जीव परब्रह्म को पहचान नहीं पाता है। इसी प्रकार उपरोक्त चौपाई में मन (इब्लीश) को प्रणाम न करने वाला कहा गया है तो २६वीं चौपाई में जीव रूप अजाजील को।

जो किए होते एते सिजदे, ऊपर उस आदम।

जाको हक करें एता बड़ा, सो क्यों रद करे हुकम ॥३०॥

प्रश्न यह होता है कि यदि उस आदम पर सभी फरिश्तों ने इतने अधिक सिजदे किये होते तो अजाजील अकेले ही परब्रह्म के आदेश का उल्लंघन करके सिजदे करने से मना कैसे कर देता, वह भी उस स्थिति में जब उसे सृष्टिकर्ता का इतना बड़ा पद दिया गया हो?

हैयात हुए के होसी आखिर, जो हुए नाम जाहेर सब पर।

तो बूझ हैयाती दुनियां, ए सरे से छिपी रही क्यों कर ॥३१॥

यह भी प्रश्न खड़ा होता है कि जिन फरिश्तों के नाम आदम अलै. ने पढ़ कर सुनाये वे अखण्ड हो गये अथवा भविष्य में होने वाले हैं। समस्त संसार के अखण्ड होने की बात शरियत के विद्वानों से अब तक क्यों छिपी रही?

ए किस्से आखिरत के, पढे डारें गुजरों में।

काम कयामत का रोसन, होसी इन किस्सों से ॥३२॥

वस्तुतः कुर्आन मजीद में वर्णित ये कथानक कियामत के समय घटित होने वाले हैं किन्तु कुर्आन पाक के तथाकथित ये विद्वान इन्हें बीता हुआ घटनाक्रम मान लेते हैं, जबकि सत्यता यह है कि इन कथानकों से सारे संसार का अखण्ड होना उजागर होता है।

जो हक के सब फरिस्ते, किया सिजदा आदम पर।

तो अबलों तिन हुकम से, सरा होत नहीं मुनकर ॥३३॥

यदि परब्रह्म के सभी फरिश्तों ने आदम पर सिजदा कर दिया होता, तो अब तक परब्रह्म के आदेश से शरियत की राह पर चलने वाली सभी जीव सृष्टि ने आदम पर

सिज्दा करने से मना नहीं किया होता।

भावार्थ- यदि सम्पूर्ण ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीय सृष्टि ने श्री प्राणनाथ जी की पहचान कर अपनी आत्म जागृति कर ली होती तो यह खेल भी खत्म हो गया होता और सम्पूर्ण जीव सृष्टि भी श्री प्राणनाथ जी की पहचान कर अखण्ड हो गयी होती।

**कहूं हकीकत फरिस्तों, मोमिनों करो पेहेचान।
तबक चौदे फरिस्ते, तिल जेता न खाली मकान॥३४॥**

हे साथ जी! अब मैं फरिस्तों की पहचान दर्शा रहा हूँ। उनकी पहचान कीजिए। चौदह लोकों का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड फरिस्तों से भरा हुआ है, तिल मात्र भी स्थान फरिस्तों से खाली नहीं है।

भावार्थ- इस चौपाई में आदिनारायण की सर्वव्यापकता का उल्लेख किया गया है।

**जेता कोई फरिस्ता, बीच हैवान या इनसान।
बिना फरिस्ता जरा नहीं, बीच जिमी या आसमान॥३५॥**

धरती से लेकर आकाश तक एक कण भी बिना फरिस्ते के नहीं है। इनमें जो भी मनुष्य या पशु रहते हैं, सबके अन्दर जीव के रूप में अजाजील फरिस्ता ही है।

**एक छोटी बड़ी बूंद पानी की, सो भी फरिस्ता सब ल्यावत।
या जड़ों दरखतों फरिस्ते, या पर पेट पाउं चलत॥३६॥**

जल की कोई भी बूंद, चाहे वो छोटी हो या बड़ी, उसे लाने वाला भी ये अजाजील फरिस्ता ही है। पंखों से उड़ने वाले पक्षियों, पेट के बल सरकने वाले साँप आदि प्राणियों, पैरों से चलने वालों पशुओं तथा वृक्षों की जड़ों में भी आदिनारायण का ही जीव लीला कर रहा है।

**देखो सहूर कर मोमिनों, हक के सब फरिस्ते।
एबरखत करसी आखिर, किन नबी पर किए सबों सिजदे॥३७॥**

हे साथ जी! इस बात पर चिन्तन करके देखिए तो यह सब स्पष्ट होगा कि ये जीवरूप सभी प्राणी ही फरिश्तों के स्वरूप हैं। कियामत के इस समय में तारतम ज्ञान का प्रकाश आखिरत के न्याय को उजागर करेगा, जिसमें यह स्पष्ट होगा कि नबी के किस स्वरूप पर सबने सिजदा किया?

भावार्थ— तारतम ज्ञान के प्रकाश में जब ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों की जागृति हो जाएगी, और सारे संसार का लय हो जाएगा, तब संसार के सभी प्राणी श्री प्राणनाथ जी को परब्रह्म मानकर प्रणाम करेंगे।

पेहेचानों अजाजील को, सिजदा न किया आदम पर।

दूर हुआ ले लानत, सो सबों लगी क्यों कर।।३८।।

हे साथ जी! आप उस अजाजील की पहचान कीजिए जिसने आदम पर सिज्दा नहीं किया। जब उसे फटकार के साथ परब्रह्म से दूर किया गया तो वह अपराध संसार के अन्य जीवों को क्यों लगा?

फरिस्तों अजाजील सिरदार, अबलीस जिनों वकील।

पोहोंचाया सबों सय दिलों, पलक न करी ढील।।३९।।

अजाजील सभी फरिश्तों (प्राणियों) का स्वामी है और इब्लीस उनका वकील अर्थात् शक्ति है। उसने पल भर की भी देर किए बिना सबके हृदय में अज्ञानता भर दी।

ना किया अजाजीलें सिजदा, तो सब रहे सिजदे बिन।

सब दुनियां ताबे तिन के, ताथें किया न सिजदा किन।।४०।।

जब अजाजील ने आदम अलै. पर सिज्दा नहीं किया, तो संसार भी सज्दे से वंचित हो गया। सारा संसार उसके अधीन है इसलिए अन्य किसी ने भी सिज्दा नहीं किया।

भावार्थ— जब मोह सागर में प्रकट होने वाले आदिनारायण स्वयं अपने तथा परब्रह्म के स्वरूप को भूले हुए हैं तो उनके प्रतिबिम्बित अंश रूप जीव एक मानव तन में प्रगट होने वाले श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को कैसे पहचानेंगे?

तो लानत हुई तिन को, वजूद देख गया भूल।

देख्या न तरफ रूह की, वह तो हक का नूरी रसूल ।।४१।।

यही कारण है कि अजाजील को फटकार लगी वह आदम अलै. के पंचभौतिक शरीर को देखकर भ्रम में पड़ गया और उनके आत्मिक स्वरूप की पहचान नहीं कर पाया कि ये परब्रह्म के नूरी रसूल हैं।

भावार्थ- श्री मिहिरराज जी के पंचभौतिक एवं हिन्दू तन में होने के कारण शरियत के मानने वाले यह पहचान नहीं कर पाए कि इस तन में परब्रह्म स्वरूप में स्वयं हजरत आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ आए हुए हैं।

हकें आदम कहा रसूल को, वह तो अबलीसें किया ख्वार ।

गेहूँ खिलाए काढ़या भिस्त से, करके गुन्हेगार ।।४२।।

जिस आदम को इब्लीश ने बहका कर गेहूँ (तृष्णा, इच्छा) खिलाया और अपराधी बनाकर दुखी करके बहिश्त से निकलवा दिया, उसी आदम को सूक्ष्म अर्थ में परब्रह्म ने मुहम्मद सल्ल. (साहब) के लिए कथन किया है।

भावार्थ- यह प्रसंग जागनी लीला में श्री प्राणनाथ जी के लिए घटित हुआ। परब्रह्म के आवेश ने जिस मेहमत स्वरूप महामति जी के धाम हृदय में लीला की, उन्होंने भी श्री मिहिरराज जी का वह पंचभौतिक तन धारण किया, जिन्हें अनेक बार लौकिक कष्टों से जूझना पड़ा।

हिरस हवा मोर सांप जिद, साथ निकस्या अबलीस ले ।

क्यों हकें इन आदम पर, नूरी पे कराए सिजदे ।।४३।।

इब्लीश ने हवा को मोह में डालकर तथा मोर और सांप को हठपूर्वक बहका कर बहिश्त से निकलवा दिया। ऐसे बहिष्कृत आदम पर सिज्दा करने के लिये परब्रह्म ने नूरी फरिश्ते को क्यों कहा?

भावार्थ- बहिश्त के द्वारा मोर (रजोगुण) एवं (तमोगुण) का पहरा था। इब्लीश मोर को तो नहीं बहका पाया किन्तु सर्प को बहका कर उसके पेट में बैठकर बहिश्त में चला गया। उसने हवा को लोभ दिखाकर वर्जित गेहूँ का फल खिला दिया, जिससे आदम

के साथ हव्वा, मोर और सर्प को भी बहिश्त से निष्कासित कर दिया गया। सर्प और मोर को मनुष्य का वैरी होने तथा कुरूपता का दण्ड मिला।

इस कथानक का सूक्ष्म अर्थ यह है कि तमोगुण में मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है। बहिश्त के प्रवेश द्वार पर मोर और सर्प का पहरा इसलिये बताया गया है कि इनको जीते बिना मनुष्य बहिश्त का अधिकारी नहीं हो सकता। इब्लीस अर्थात् अज्ञान - रूपी शैतान ने इच्छा (तृष्णा) को प्रेरित किया जिसके वशीभूत होकर आदम को वर्जित गेहूँ खाना पड़ा (पूर्णतया वशीभूत होना पड़ा) और दण्ड स्वरूप बहिश्त से बाहर निकलना पड़ा।

उपरोक्त चौपाई में शरीयत के अनुयायियों से यह प्रश्न किया गया है कि जब वे कुर्आन के बाह्य शब्दार्थ को ही सर्वोपरि समझते हैं तो यह बताने का कष्ट करें कि सृष्टिकर्ता नूरी अजाजील को यह क्यों आदेश दिया गया कि वह इब्लीश (मन) के बहकावे में आ जाने वाले तथा तृष्णा (हव्वा) के वशीभूत रहने वाले बहिश्त से निष्कासित आदम को प्रणाम करे।

जिन सब जिमी पर सिजदे, किए हक पर बेसुमार।

उन आदम के वास्ते, क्या हक नूरी कों देवें डार।।४४।।

जिस अजाजील फरिश्ते ने सम्पूर्ण धरती पर परब्रह्म की बन्दगी में अनन्त सिजदे किये हों, मात्र आदम को प्रणाम न करने के कारण ही उसका परित्याग क्यों कर दिया अर्थात् सृष्टि रचना करने के लिये बहिश्त से माया जगत में भेज दिया गया।

एता देखाया जाहेर कर, दर्ई नूरी को लानत।

दुनी तो न खोले आंख दिल, जो असल पैदा जुलमत।।४५।।

कुर्आन पाक में यह बात स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी है कि अजाजील फरिश्ते को सिज्दा न करने के कारण फटकार मिली। फिर भी मोह सागर से पैदा होने वाली जीव सृष्टि अपनी अन्तर्दृष्टि को खोल नहीं पा रही है।

जो लों ले ऊपर के माएने, दुनी छूटे न उपली नजर।

तो भी न लेवें बातून, जो यों लिख्या जाहेर कर।।४६।।

जब तक संसार मात्र शब्दों के बाह्य अर्थ ही लेता रहेगा, तब तक उसकी बाह्य

दृष्टि नहीं छूटेगी। इतना होने पर भी संसार के विद्वान कुर्आन के सूक्ष्म अर्थ के ग्रहण करने में प्रवृत्त नहीं होते। यह बात स्पष्ट रूप से कुर्आन में कही भी गयी है।

**तो कह्या मजाजी दिल को, गोस्त का टुकड़ा।
तिन दिलों पातसाह दुस्मन, और दिल तो कह्या मुरदा।।४७।।**

यही कारण है कि इस संसार के जीवों के दिल को मात्र एक मांस का ऐसा मरा हुआ टुकड़ा माना गया है जो झूठ ही झूठ से भरा हुआ है। ऐसा परब्रह्म के प्रति प्रेम और विश्वास से रहित होने के कारण कहा गया है। इन जीवों के हृदय पर अज्ञान रूपी इब्लीश का शासन है।

**कही लानत अजाजील को, सो लगी सब दुनियां को।
एती फरिस्ते की पाक बंदगी, क्यों दुनी मारी जाए इनसों।।४८।।**

अजाजील को जो धिक्कार मिली, उसे सारे संसार को भुगतना पड़ा। फरिश्ते ने तो पवित्र हृदय से परब्रह्म की भक्ति की, किन्तु उसकी एक भूल का दण्ड सारे संसार के जीवों को क्यों भुगतना पड़े?

**गुनाह एक अबलीस के, क्यों सब दुनी मारी जाए।
पाक सरा हक अदल, सो ऐसे क्यों फुरमाए।।४९।।**

इब्लीश के एक अपराध का दण्ड समस्त संसार के प्राणियों को क्यों भुगतना पड़े? परब्रह्म के पवित्र न्यायालय में भी इस प्रकार का पक्षपातपूर्ण न्याय क्यों हुआ?

भावार्थ- परब्रह्म के न्याय में अंशान्श मात्र भी कभी अन्याय नहीं होता। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि उपरोक्त घटना क्रम एक कथानक है जिसके माध्यम से अध्यात्म के गहन रहस्य को दर्शाया गया है।

जिस प्रकृति से यह समस्त सृष्टि बनती है, उसके तीन गुण सत्व, रज और तम हैं। प्रीति, ज्ञान और सुख सत्व का गुण है। रजोगुण से जीव के अन्तःकरण में कर्म की प्रवृत्ति होती है और वह काम-क्रोधादि विकारों से फंस जाता है। तमोगुण में अज्ञानता का अंधकार छा जाने से विषय-विकारों का प्राबल्य हो जाता है। तम में स्थिरता का गुण है तो रज में क्रिया का। इनके बिना सृष्टि का अस्तित्व ही नहीं हो सकता।

यह संसार एक कर्मभूमि है जिसमें ज्ञान-अज्ञान, भोग-भक्ति और आस्तिकता-नास्तिकता में निरन्तर संघर्ष चलता रहता है और चलता रहेगा। यह शाश्वत सत्य है कि अंश में अंशी के गुण आते ही हैं। नमक के टुकड़े को कहीं से भी चखा जाय कड़वा ही लगेगा। इसी प्रकार किसी मीठे पेय को ऊपर या नीचे कहीं से भी चखने पर मिठास का ही अनुभव होगा। ऐसी अवस्था में मोह सागर (प्रकृति के सूक्ष्मतम् स्वरूप) में तीनों गुणों की अनिवार्यता दर्शायी गयी है जिसमें एक ओर जहां अजाजील में सतोगुण से भक्ति का गुण है तो दूसरी ओर रज और तम से अहंकार के कारण आदम के अन्दर विद्यमान परब्रह्म के स्वरूप को न पहचान पाने और प्रणाम करने से मना करने का दोष भी है। आदम को जहां अपने हृदय में परब्रह्म के स्वरूप को बसाने का सौभाग्य प्राप्त है, वही हव्वा (आसक्ति) के दबाव में इब्लीश (मन) के बहकावे में आने का दोष भी है जिसका आशय यह है कि इस प्रकृति मण्डल में चाहे कोई कितना ही महान व्यक्तित्व क्यों न हो उसे मन के अनुचित बन्धनों से मुक्त रहना चाहिए। जिस प्रकार स्वादिष्ट एवं सुगन्धित भोजन भी पाचन के पश्चात् दुर्गन्धित मल में परिवर्तित हो जाता है, उसी प्रकार सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में कुछ गुण और कुछ दोषों का होना अनिवार्य है। यही कारण है कि नूरी फरिश्ते अजाजील को भी मोहसागर के रज एवं तम के दोषों से ग्रसित दिखाया गया है तथा उसके अंश रूप सभी प्राणियों को भी। मन-रूपी इब्लीश एक प्राकृतिक पदार्थ है जो जीव से चैतन्यता ग्रहण कर जीव को ही प्रकृति के बन्धनों में बांधे रखने की भूमिका निभाता है। यही कारण है कि कुर्आन में उसे बहुत ही कटु शब्दों में सम्बोधित किया गया है जिससे उसके प्रति सावधान रहा जा सके। इब्लीश को एक चेतन फरिश्ता मानना बहुत बड़ी भूल है।

पाक फरिस्ते पाक सिजदे, बेसुमार किए हक पर।

तिन बदले दुनी को दोजख, क्यों देवे कादर। १५०।।

जब अजाजील एक पवित्र फरिश्ता है और उसने पवित्र हृदय से परब्रह्म के प्रति अनन्त बार सिज्दा (प्रणाम) किया है तो सर्वशक्तिमान परब्रह्म ने अजाजील के एक अपराध के लिये संसार के सभी प्राणियों को इतना कठोर दण्ड क्यों दिया है?

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों को माया को खेल दिखाना अनिवार्य था जिसके कारण यह संसार बना। मायावी जगत के बनाने में सत्व, रज एवं तम इन तीनों का होना आवश्यक है। अंश और अंशी तथा गुण एवं गुणी को उनके स्वाभाविक लक्षणों से पृथक करना भी सम्भव नहीं है, क्योंकि यह सृष्टि शाश्वत सत्य (ऋत्) के निर्देशानुसार ही चल

सकती है, स्वेच्छाचारिता से नहीं। ऐसी स्थिति में सभी प्राणियों को सत्व, रज और तम के बन्धन में बंधने पर ज्ञान-समाधि के आश्रय से उससे मुक्त होने का मार्ग भी है। हाँ, रज और तम की अधिकता दुःख और विनाश का ताण्डव नृत्य करती है। उसकी वृद्धि को रोकने का उत्तरदायित्व महापुरुषों का है। यदि परब्रह्म ने अपनी आत्माओं को खेल दिखाने की लीला में संसार के जीवों को अज्ञान एवं दुःख में डाला है, तो अखण्ड मुक्ति का आनन्द भी तो प्रदान किया है। इस दृष्टि से परब्रह्म के न्याय में रंच मात्र भी दोष नहीं निकाला जा सकता।

**जो न लेवें हकीकत, नजर खोल बातन।
तो लों अंधेरी ना मिटे, दिन होए नहीं रोसन।।५१।।**

जब तक तारतम ज्ञान के प्रकाश में अपनी अन्तर्दृष्टि को खोलकर कुर्आन के कथनों का वास्तविक आशय ग्रहण न किया जाय, तब तक न तो अज्ञानता का अन्धकार मिट सकता है और न ही हृदय में ज्ञान का प्रकाश फैल सकता है।

**ए कलाम नजूम और बातून, माहें हक हकीकत।
हक इलमें खोले रूह नजर, तब दिन उगे बका मारफत।।५२।।**

कुर्आन मजीद के इन कथनों में भविष्य की सूक्ष्म बातें हैं तथा परब्रह्म की यथार्थ पहचान है। जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में आत्मिक दृष्टि खुल जाती है तो परब्रह्म की पहचान-रूपी अखण्ड ज्ञान का उजाला फैल जाता है।

**ए तीनों फरिस्ते नूर से, हुए पैदा तीनों तालब।
जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तिन तैसा पाया मरातब।।५३।।**

अजाजील, जिब्रील तथा अस्माफील तीनों ही अक्षर ब्रह्म के फरिश्ते हैं। ये तीनों ही माया का खेल देखने के लिये संसार में आये। इनमें से जिसने श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ को जिस रूप में पहचाना, उसको वैसा ही फल (पद) मिला।

**जिन जैसी करी दोस्ती, तिन तैसी पाई बकसीस।
दूर नजीक या अंदर, देखो माएने आयत हदीस।।५४।।**

इन्होंने जिस रूप में जितना प्रेम किया, उन्हें परब्रह्म की उतनी ही कृपा दृष्टि

प्राप्त हुई। अजाजील को न पहचानने के कारण दूर कर दिया गया। जिब्रील को आदेश मानने के कारण निकटस्थ बना लिया तथा अस्माफील को यथार्थ पहचान करने के कारण अपने धाम हृदय में बिठाकर परमधाम की सम्पूर्ण शोभा, लीला एवं आनन्द का रसपान कराया।

बंदगी का फल मांगिया, नूरी फरिस्ते हक पे।

तिन बदले दुनी सब दोजख, क्यों डारी जाए आग में। १५५।।

जब नूरी फरिस्ते अजाजील ने परब्रह्म से अपनी बन्दगी का फल मांगा कि आदम के वंशजों के हृदय पर मेरा स्वामित्व हो जाय तो उसके बदले सारी दुनिया को कष्टों की अग्नि में क्यों डाल दिया गया?

ए इन्साफ सरा न करे, दुरस्त माएने बातन।

उपले माएने ले आप सिर, सिफत जो मोमिन। १५६।।

शरियत के पद चिन्हों पर चलकर कुर्आन पाक के शब्दों का मात्र बाह्य अर्थ लेने वाले इस समस्या का समाधान नहीं कर सकते हैं। वास्तविक आशय तो इसके सूक्ष्म अर्थों में निहित है। इस कथन में भी ब्रह्मात्माओं की महिमा छिपी हुई है।

भावार्थ- ब्रह्मात्माओं को दुःख का खेल देखने के लिये ही इस संसार में आना था, जिसके लिये यह दुःखमय संसार बनाया गया। इसमें भाग लेने वाले पात्रों को थोड़े से दुःख के बदले बेहद का अनन्त सुख अनन्त काल के लिये मिलेगा। दया और प्रेम के अनन्त सागर अक्षरातीत का इससे अच्छा न्याय और क्या हो सकता है?

ना तो अजाजील भी नूर से, दे गुमाने डारया दूर।

एक रह्या दरम्यान में, एक माहें आया हजूर। १५७।।

अन्यथा अजाजील भी अक्षर ब्रह्म का फरिश्ता है, किन्तु अहंकार ने उसे परब्रह्म से दूर कर दिया। जिब्रील उनके निकट (सत्स्वरूप) तक रहा और अस्माफील ने परमधाम में प्रवेश करने का सुख प्राप्त किया।

हकें महंमद मोमिनो वास्ते, कई मेहेर कर खेल देखाए।

एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बोलाए॥५८॥

श्री राज जी ने श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं के लिये अपनी अनेक प्रकार की कृपा (मेहर) से यह माया का खेल दिखाया है। इन्हें खेल दिखाने के लिये ही अजाजील को बहिश्त से दूर किया तथा जिब्रील को अपने पास बुला लिया।

मोमिनों की सरीयत में, आया मैकाईल बुध बल।

पीछे बीच हकीकत, आया जबराईल सामिल॥५९॥

तारतम ज्ञान का प्रकाश मिलने से पहले ब्रह्ममुनि भी कर्मकाण्ड के उसी मार्ग पर चल रहे थे, जिसे इस संसार की बुद्धि के देवता ब्रह्मा जी (मैकाईल) ने बनाया था। इसके पश्चात् जिब्रील के माध्यम से जब तारतम ज्ञान का प्रसार हुआ तो ब्रह्मात्माओं ने परमधाम के यथार्थ (हकीकत) के मार्ग को ग्रहण किया।

आखिर आए असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार।

दिन बका किया जाहेर, खोले अर्स अजीम नूर पार॥६०॥

कियामत के समय अस्त्राफील फरिश्ते ने आकर कुर्आन में मारिफत के छिपे हुए रहस्यों को स्पष्ट कर दिया है। उसने अक्षर ब्रह्म से भी परे परमधाम का अखण्ड ज्ञान प्रकट किया और उसे संसार में फैला दिया।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में यह संशय होता है कि जब मारिफत के शब्दों को मुहम्मद स. अ. व.व. ने कहा ही नहीं तो उसके भेद कैसे खोले गये? उपरोक्त चौपाई में मारिफत का तात्पर्य परमधाम और परब्रह्म की पहचान से है। सागर और शृंगार ग्रन्थ में जो मारिफत का ज्ञान निहित है वह परमधाम की हकीकत एवं मारिफत का है। अस्त्राफील तो स्वयं उस ज्ञान (सागर और शृंगार) के अवतरण की प्रतीक्षा कर रहा था। इस सम्बन्ध में शृंगार ग्रन्थ की यह चौपाई बहुत ही महत्वपूर्ण है-

ए निरने करना अर्स का, तिनमें भी हक जात।

नूर अकल इत क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात ॥ (श्रृंगार, 22/124)

महामत कहे ए मोमिनो, कही हकीकत फरिस्तों।

अब कहूं कजा और फितना, जो उठया बरारब मों ॥६१॥

श्री महामति जी कहते हैं कि साथ जी! इस प्रकरण में मैंने फरिस्तों की यथार्थता पर प्रकाश डाला है। अब मैं अरब की धरती से उठ जाने वाले न्याय एवं विवादों के पैदा होने की वास्तविकता का वर्णन करता हूँ।

॥ प्रकरण ॥५॥ चौपाई ॥४२८॥

बाब कजाका (न्याय का प्रकरण)

इस प्रकरण में 'न्याय' के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

जैसा अमल रात का, चाहिए ज्यों चलाया।

बीच सरे जबराईलें, किया हक का फुरमाया ॥१॥

अज्ञानता के अन्धकार से भरे इस संसार में परब्रह्म के आदेश से जिब्रील फरिस्ते ने जिस प्रकार की कर्मकाण्ड की व्यवस्था होनी चाहिये, वैसी की।

भावार्थ- “पाई बड़ाई पैगंबरो, हाथ जबराईल सबन” (खुलासा ४/५२) के इस कथन से यह स्पष्ट है कि इस संसार में आज दिन तक परब्रह्म के जोश या अक्षर ब्रह्म के आवेश से आध्यात्मिक ज्ञान का प्रकटीकरण होता रहा है। इसी जिब्रील के द्वारा शुकदेव जी ने महारास का वर्णन करने का प्रयास किया तो योगेश्वर श्री कृष्ण जी ने गीता का कथन किया और कबीर जी ने गुह्य रहस्यों वाली साखियां कहीं। सन्त साहित्य में इसी जोश शक्ति को हृद से परे बेहद में ले जाने वाला नित्य अनादि सद्गुरु भी कहा गया है।

रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल।

जब रसूल जबराईल ले चले, तब क्यों चले अदल अमल ॥२॥

परमधाम के ज्ञान से रहित इस संसार में मुहम्मद साहब ने कर्मकाण्ड (शरीयत) के अनुसार न्याय की व्यवस्था की। जब मुहम्मद स. अ. व. व. और जिब्रील इस संसार से चले गये तो उसके पश्चात् भला संसार में न्याय कैसे चल सकता था?

**कजा कही तीन सकस की, एक भिस्ती दोए दोजख।
भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक ॥३॥**

कुर्आन में तीन व्यक्तियों के द्वारा न्याय करने का वर्णन है। इनमें से एक को बहिश्त मिली तथा दो को दोजख। जिस व्यक्ति को बहिश्त मिली उसने परब्रह्म की पहचान करके उनकी प्रेरणा के अनुसार न्याय किया।

**कही कजा दूजे सकस की, हक से करी चिन्हार।
पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार ॥४॥**

दूसरे व्यक्ति से होने वाले न्याय का वर्णन इस प्रकार का है कि उसने परब्रह्म की पहचान तो की किन्तु उनका निर्देश प्राप्त नहीं किया। परिणामस्वरूप वह सच्चा न्याय नहीं कर पाया और दोजख का अधिकारी बना, ऐसा कुर्आन में लिखा है।

**तीसरे जो कजा करी, अपनी जाहिल अकल।
सो तो कह्या दोजखी, आगे कजा न सकी चल ॥५॥**

तीसरे व्यक्ति ने अपनी मूर्ख बुद्धि से न्याय किया जिसके परिणामस्वरूप वह सही न्याय नहीं कर पाया और दोजख में गया। इसके पश्चात् न्याय की प्रक्रिया बन्द हो गयी।

भावार्थ- यह प्रसंग कुर्आन मजीद सि. २२ सू. यासीन ३६ आ. १३-१८ “वज्रिब् लुहम् मसूलन् असूहाबल् - कर्यति इज् मिन्ना अजाबुन अलीमुन्” अर्थात् उनसे मिसाल के तौर पर एक शहर वालों का हाल बायन करे। जब उनके पास उन्हीं में से एक पैगम्बर आया। जब हमने दो पैगम्बर भेजकर उनकी मदद की तो उन्होंने इन दोनों को झूठलाया तो हमने तीसरे पैगम्बर को भेजकर उनकी मदद की तो उन तीनों ने मिलकर कहा कि हम तुम्हारे पास अपनी इच्छा से नहीं आये हैं। अपितु खुदा के आदेश पर हम यहां आये हुये हैं। तब उन्होंने कहा- तुम तो हमारी तरह ही एक मनुष्य हो और अल्लाह ने तो कोई ऐसी चीज नहीं उतारी, इसलिए तुम तीनों ही सरासर झूठ बोलते हो। तब पैगम्बरों ने कहा- हमारा परवरदिगार ही जानता है कि हम निश्चित रूप से तुम्हारी तरफ भेजे गये हैं। और हमारा तो एक ही काम है, तुम लोग तक अल्लाह का हुक्म पहुँचाना। तब उन लोगों ने कहा कि तुमको हमने मनहूस पाया अर्थात् तुम्हारे

मुबारक कदम पड़ते ही अकाल बरपा हुआ। अगर तुम लोग अपना ज्ञान बांटना बन्द नहीं करोगे तो तुमको पत्थरों से मार देंगे और हमारे हाथों से तुमको दुःखदायी मार पहुँचेगी।

**कह्या साहेदी भी रवा नहीं, जिन को नहीं ईमान।
और रवा नहीं खूनी की, ना रवा खुदी गुमान॥६॥**

पाक कुर्आन शरीफ में यह भी लिखा है कि जिस व्यक्ति में ईमान (सत्य या परमात्मा के प्रति आस्था) न हो, उसकी साक्षी नहीं लेनी चाहिये। यहां तक कि किसी खूनी या अहंकारी व्यक्ति की भी गवाही नहीं लेनी चाहिए।

**कही अदल यों साहेदी, कहां साहेद पाइए सोए।
इन जमाने नुकसानमें, अदल कजा क्यों होए॥७॥**

कुर्आन पाक में न्याय के लिये इस प्रकार की साक्षी कही गयी है किन्तु इस झूठे युग में इतने सच्चे गवाह कहां से मिल सकते हैं? ऐसी स्थिति में प्रश्न यह होता है कि ऐसी स्थिति में उचित न्याय कैसे किया जाय?

**अब्दुल्ला बिन उमरें, छोड़ कजा दिया जवाब।
सोए लिख्या बीच हदीसों, सुनो तिनों का सवाब॥८॥**

उमर रजि. का पुत्र अब्दुल्ला पहले न्याय किया करता था। उसने छोड़ने का कारण पूछने पर जो उत्तर दिया वह हदीसों में लिखा है। उसका विवरण सुनिए।

**कहे उस्मान सुन अब्दुल्ला, कजा करता था उमर।
सो तो तेरी वारसी, तूं छोड़े क्यों कर॥९॥**

उस्मान रजि. ने अब्दुल्ला से कहा कि तुम्हारे पिता जी सबका न्याय किया करते थे। वह तो तुम्हारा पैतृक अधिकार है। तुम अपने इस अधिकार को क्यों छोड़ रहे हो?

**कहे अब्दुल्ला उस्मान को, कजा न मुझ से होए।
मैं पाई खबर रसूल से, कर सकसी ना अदल कोए॥१०॥**

अब्दुल्ला ने उस्मान रजि. से कहा कि अब मुझसे न्याय का कार्य नहीं हो सकता है। मैंने मुहम्मद स. अ. व. व. से यह सूचना पायी है कि अब भविष्य में कोई भी सच्चा न्याय नहीं कर पायेगा।

**कजा करते उमर को, कदी सूझत नाहीं सुकन।
तब पूछत जाए रसूल को, सो सब करत रोसन ॥११॥**

न्याय करते समय जब उमर रजि. को कोई बात समझ में नहीं आती थी, तब वे मुहम्मद सल्ल. (साहब) से पूछते थे और वे सब कुछ सत्य-सत्य बता देते थे।

**रसूल अदल कछू चाहते, तब जबराईल ल्यावत खबर।
तो कजा करता था उमर, जो रसूल थे सिर पर ॥१२॥**

न्याय के सम्बन्ध में जब मुहम्मद सल्ल. (साहब) कुछ पूछना चाहते थे, तब जिब्रील सारी जानकारी देते थे। उमर रजि. इसलिये सत्य न्याय कर पाते थे कि उनके सिर पर मुहम्मद स. अ. व. व. का वरदहस्त था।

**बोहोत कही उस्मान ने, कजा न करी कबूल।
मैं इन्साफ अदल कर ना सकों, तो कहां पाऊं जबराईल रसूल ॥१३॥**

यद्यपि उस्मान रजि. ने अब्दुल्ला से बहुत अधिक आग्रह किया किन्तु उसने न्यायाधीश बनना स्वीकार नहीं किया। उसने स्पष्ट कह दिया कि मेरे सिर पर जिब्रील और मुहम्मद स. अ. व. व. का वरदहस्त नहीं है, इसलिये मुझसे सच्चा न्याय नहीं हो सकता है।

**कजा अदल कही हक की, सो इत चली एते दिन।
कही साहेदी इन भांत की, आगे क्यों चले रसूल बिन ॥१४॥**

परब्रह्म के द्वारा निर्देशित की गयी सच्चे न्याय की लीला अरब में इतने ही दिन तक चली। कुर्आन में गवाही की शर्तें ही इतनी कठिन थी कि भविष्य में मुहम्मद साहब के बिना सच्चा न्याय हो ही नहीं सकता था।

**और भी देखो साहेदी, जो रसूलें फुरमाए।
जब हक ईमान तरफ देखिए, तो अब क्यों कजा करी जाए ॥१५॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने सच्चे न्याय के लिये साक्षी (गवाह) के सम्बन्ध में और भी बहुत सी बातें कही हैं जिन्हें आप कुर्आन में देखिए। जब परब्रह्म के प्रति सच्चा ईमान रखने वाले गवाहों के विषय में सोचा जाता है तो उनकी अति अल्प संख्या को देखकर यही कहना पड़ता है कि इस अवस्था में भला सच्चा न्याय कैसे किया जा सकता है?

**कह्या रसूलें माज को इमन, अदल कजा करो जाए।
क्यों कर करेगा अदल, सो मोकों कहो समझाए॥१६॥**

मुहम्मद सल्ल. अ. व. व. ने मुआज़ (माज़) से कहा कि तुम यमन जाकर उचित न्याय करो किन्तु, पहले मुझे समझाकर यह बताओं कि तुम न्याय कैसे करोगे?

**तब कह्या माज बिन जबलें, करूं कजा देख मुसाफ।
कहे रसूल जो तूं अटके, तो क्यों करे इन्साफ॥१७॥**

तब जबल के पुत्र मुआज़ (माज़) ने कहा कि मैं कुर्आन देखकर न्याय करूंगा। यह सुनकर मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कहा कि यदि तुम ऐसा करते समय अटक गये तो क्या करोगे?

**सुनत जमात राह लेय के, करूं कजा अदल।
कहे रसूल जो इत अटके, कहे करों अपनी अकल॥१८॥**

मुआज़ (माज़) ने उत्तर दिया कि मैं हदीस, सुन्नत (परंपरा) एवं धार्मिक लोगों का आचरण देखकर न्याय करूंगा। जब मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने यह कहा कि यदि तुम इस कार्य में भी अटक गये तो क्या करोगे? उसने प्रत्युत्तर में कहा कि तब मैं अपनी बुद्धि के अनुसार न्याय करूंगा।

**तब मारया रसूलें छाती मिने, केहे के अल्लहंमदो-लिल्लाह।
कही रजामंदी खुदाए की, है सिर रसूल अल्लाह॥१९॥**

तब मुहम्मद स. अ. व. व. ने अपनी छाती पर हाथ मार कर कहा कि मेरे परवरदिगार! ऐसे न्याय करने वालों से तू सबको बचा! सबके ऊपर तेरी कृपा बरसे। जैसी तेरी इच्छा होगी, वही होगा। मेरे सिर पर हमेशा ही तेरा वरदहस्त रहे।

**ताथें अव्वल कजा महंमद लग, पीछे अदल क्यों होए।
हक तरफ का सिलसिला, क्यों कर पाइए सोए॥२०॥**

इसलिये सबसे पहले दिव्य न्याय मुहम्मद सल्ल. (साहब) के समय तक ही चला। उनके बाद भला कैसे न्याय हो सकता था? परब्रह्म की ओर से जिब्रील के द्वारा न्याय का जो निर्देश मिलता था, अब वह भला कैसे मिल सकता था?

जबराईल साथ महंमद, सो तो हुए बीच परदे।

अब अदल कजा बीच दुनी के, कौन चलावे ए॥११॥

मुहम्मद सल्ल. (साहब) के साथ जिब्रील रहते थे। किन्तु उनके देह त्याग के पश्चात् जिब्रील भी परदे में हो गये अर्थात् अपने मूल निवास सत्स्वरूप में रहने लगे। अब संसार में ऐसा कोई भी नहीं रह गया था जो पहले की तरह दिव्य न्याय करता रहे।

रह्या अदल इस दिनलों, कहे हदीस महंमद।

आगे अदल ना चल सके, याही लग थी हद॥१२॥

मुहम्मद सल्ल. (साहब) की हदीसों में कहा गया है कि इतने समय तक ही न्याय का कार्य चला। यही तक न्याय होने की लीला थी। इसके बाद दिव्य न्याय की प्रक्रिया बन्द हो गयी।

पीछे जमाने रसूल के, पैदा होसी बलाए बतर।

अदल न चले तिनमें, एक रसूल बिगर॥१३॥

हदीसों में कहा गया था कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु (साहब) के अन्तर्धान (परदे में) होने के पश्चात् अरब में झगड़ों की बहुत अधिक विपत्तिया आयेगी। मुहम्मद स. अ. व. व. के ने होने से वहां की धरती पर न्याय होना बन्द हो गया था।

कह्या जमाना आवसी, झूठा और नुकसान।

यार अस्हाबों कतल, तरवार उठसी जहान॥१४॥

यह भी कहा गया था कि ऐसा समय आने वाला है जिसमें झूठ ही झूठ का बोलबाला होगा और सभी को बहुत अधिक क्षति होगी। अरब की सम्पूर्ण धरती पर आपस में तलवारें खिंच जायेगी अर्थात् युद्ध होंगे जिसमें अपने निकटस्थ मित्रों की भी हत्या होगी।

जब रसूल आवें फेर कर, खोलसी द्वार हकीकत।

खतम है याही पर, होवे तबहीं अदालत॥१५॥

जब पुनः मुहम्मद स. अ. व. व. आखिरी मुहम्मद इमाम महदी (श्री जी) के स्वरूप में आयेंगे तो वे परमधाम तथा परब्रह्म का यथार्थ ज्ञान देंगे। यही अन्तिम ब्राह्मी

स्वरूप होगा। उन्हीं इमाम महदी साहिबुज्जमाँ श्री प्राणनाथ जी के निर्देशन में सच्चा आध्यात्मिक न्याय होगा।

**सब बखतों कहे रसूल, अक्वल बीच आखिर।
कही कजा रसूल जुबाए, करे साँच सबों पैगंमर ॥२६॥**

मुहम्मद सल्ल. परब्रह्म के हुक्म का वह स्वरूप है जो सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर, मध्य में और अब अन्तिम समय में भी रहा हैं। इन्हीं की हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के द्वारा सबका न्याय होना लिखा है। इससे सभी पैगम्बरों के द्वारा श्री जी के सम्बन्ध में की गयी भविष्यवाणियां सत्य सिद्ध होगी।

**देखावेँ खोल मुसाफ दिल, सक कुफर उड़ावे सब का।
कर कजा साफ अदल, सो पावे तौहीद राह ॥२७॥**

अलैहि व आलैहि वसल्लम श्री प्राणनाथ जी तारतम ज्ञान के प्रकाश में कुर्आन के सभी रहस्यों को स्पष्ट करके दर्शायेंगे। वे श्री कुलजम स्वरूप के अलौकिक ज्ञान के द्वारा सबके हृदय में विद्यमान संशय और नास्तिकता के अन्धकार को नष्ट कर देंगे। श्री जी अध्यात्म जगत का सच्चा न्याय करेंगे जिससे कि समस्त संसार को एक परब्रह्म की भक्ति का सच्चा मार्ग मिलेगा।

**कजा करे फजर कर, हकीकी अदालत।
सबों दिलों करे अदल, दिल सूर महंमद मारफत ॥२८॥**

परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के सच्चे न्यायालय में तारतम ज्ञान (इल्म-ए-लदुन्नी) से उजाला हो जायेगा, जिससे सबका न्याय होगा। मेहमत साहिबुज्जमाँ स्वरूप श्री महामति जी (श्री प्राणनाथ जी) का हृदय मारिफत (पूर्ण परिचय) के ज्ञान का सूर्य है। वह सबके हृदय में परमधाम के ज्ञान का प्रकाश करके सत्य का मार्ग दर्शायेगा, जिससे सच्चा न्याय होगा।

**सब सय सिर महंमद की, आखिर कही हिदायत।
और छोटा बड़ा जो कोई, कही महंमद इमामत ॥२९॥**

कियामत के समय में श्री प्राणनाथ जी के कथन को सम्पूर्ण सृष्टि के सिर पर अर्थात् सर्वोपरि कहा गया है। चाहे कोई सामान्य हो अथवा विशिष्ट, प्रत्येक व्यक्ति श्री जी साहेब जी के नेतृत्व की छत्रछाया में रहेगा।

**नबियों सिर नबी कहा, सिर पैगंमरों पैगंमर।
आगे होए लेसी सब को, बीच बका पट खोल कर ॥३०॥**

श्री प्राणनाथ जी को नबियों का नबी और पैगम्बरों का पैगम्बर अर्थात् इनका भी पथ प्रदर्शक कहा गया है। वे अग्रगण्य होकर समस्त विश्व को निज धाम के बीच ले जायेंगे अर्थात् अखण्ड परमधाम का दिव्य ज्ञान प्रदान करेंगे।

**पेहेलें कबर से मैं उठूं, मेरे भाइयों की खातिर।
ज्यों काम करता हों अब्बल, त्यों करोंगा उठ आखिर ॥३१॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कहा कि कियामत के समय आने वाले अपने भाईयों के लिये सबसे पहले मैं कबर से निकलूंगा। जो कार्य मैं इस समय कर रहा हूँ, वहीं कार्य मैं कियामत के समय में तन धारण करके करूंगा।

भावार्थ- 'बेन कुरआन मकलूब अल्ल जी रसूल अब्बल' आगा महदी कल्म लिसाल लुगाद बदल" (सनंध) रसूलल्लाह स. ने कुर्आन में (सर्वप्रथम) पहले से ही लिखवाया है कि महदी हुज्जमुल्लाह अपनी हिन्दुस्तानी भाषा में कुर्आन को बयान करेगा। "व लईम-मुत्तुम औ कुतिल्लुम ल इलल्लाहि तुह् शरून्" पार: ४ सूरत ३ आले इम्रान आयत १५८ इम्रान (ऐ मुहम्मद) अगर तुम मर जाओ या मारे जाओ तो बेशक खुदा के हज़ूर में पहले उठाए जावोगे।"

**मैं नजूम कहा भाइयों वास्ते, पीछे कूच किया दुनी से।
सोई भाइयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा मैं ॥३२॥**

हदीसों में मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैंने ब्रह्ममुनियों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करके इस संसार का परित्याग किया है। कियामत के समय मैं पुनः आकर अपने द्वारा कही गयी भविष्यवाणियों के रहस्यों को ब्रह्मात्माओं के मध्य स्पष्ट करूंगा।

**रसूलें कहा अबीजर को, कहां रहेता मेरा गम।
कहा मैं नहीं जानत, कहो रसूल अल्ला के तुम ॥३३॥**

मुहम्मद स. अ. व. व. ने अबीजर से पूछा कि मुझे सबसे अधिक चिन्ता किसकी रहती है? अबीजर ने उत्तर दिया कि हुजूर! मुझे इसकी जानकारी नहीं है। आप

अल्लाहतआला के रसूल हैं। इसलिये, आप ही बताइये।

तब फेर कहा रसूल ने, मेरा गम है भाइयों माहें।

कहे अबीजर ऐसे भाई, सो क्या अब इत नाहें।।३४।।

तब पुनः संदेशवाहक ने कहा - मुझे अपने भाईयों (ब्रह्ममुनियों) की चिन्ता रहती है। यह सुनकर अबीजर ने पूछा कि आप जिन भाईयों के विषय में कह रहे हैं, क्या इस समय यहां नहीं हैं?

रसूल कहे आखिर आवसी, कहा क्यों पेहेचानों तिन।

कहे बड़ी सिफत है तिन की, वाकी पेसानी रोसन।।३५।।

प्रशंसित ने कहा कि नहीं! वे तो कियामत (पुनर्त्थान) के समय में ही आयेंगे। अबीजर ने पूछा कि उन्हें कैसे पहचाना जा सकता है? प्रशंसित (मुहम्मद सल्ल. साहब) ने कहा कि उनकी अपार महिमा है। उनका मस्तक परमधाम के ज्ञान से चमक रहा होगा।

तब अबाबकर यारों कहा, क्या भाई न तुमारे हम।

रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम।।३६।।

यह सुनकर अबू बक्र आदि मित्रों ने कहा कि क्या हम आपके भाई नहीं हैं? मुहम्मद स. अ. व.व. ने कहा कि आप लोग केवल मेरे मित्र हैं। मेरे भाई तो दूसरे हैं, जो कियामत के समय आने वाले हैं।

भावार्थ- परमधाम के ब्रह्ममुनियों को (मुहम्मद सल्ल. साहब) प्रशंसित द्वारा भाई इसलिये कहा गया है कि जिस प्रकार (मुहम्मद सल्ल.) सच्चिदानन्द परब्रह्म के सत् अंग हैं, उसी प्रकार ब्रह्ममुनि भी परब्रह्म के आनन्द अंग है। अबूबक्र आदि तो संसार के जीव थे। उनका परमधाम से कोई भी सम्बन्ध नहीं था।

जो हकें इलम मोहे दिया, सो देसी इमाम भाइयों को।

बलाए दफे दुनी रिजक, सो भी हक करें वास्ते इनों।।३७।।

परब्रह्म ने जो ज्ञान मुझे दिया है, वही ज्ञान प्रशंसित धर्मनायक (इमाम मुहम्मद

महदी साहिबुज्जमाँ) अ. त. फ. श. देंगे। इन ब्रह्ममुनियों के कारण ही परब्रह्म की कृपा से सभी विपत्तियां लय हो (टल) जायेंगी तथा संसार का भरण-पोषण भी सरलता से होगा।

**बिन खुदी बिन गुमान, और साफ दिल ईमान।
सरे दो साहेद चाहिए, ऐसे सिदक मुसलमान ॥३८॥**

शरा के न्याय के लिये साक्षी (गवाह) के रूप में ऐसे दो सत्यनिष्ठ मुसलमानों की आवश्यकता होती हैं जिनमें स्वयं के प्रति तथा संसार के पद, प्रतिष्ठा, धन एवं रूप आदि का किसी भी प्रकार का कोई अहंकार न हो। जो निर्मल हृदय के हों और परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाले हों।

**ऐसे तो पाइए बीच फजर, जो अर्स दिल कहे मोमिन।
करें कजा मुसाफ ले, सो भी बीच गिरो इन ॥३९॥**

किन्तु इस तरह के व्यक्तित्व वाले पुरुष तो एकमात्र कियामत (पुनरोत्थान) के समय प्रातः (फज्र) की उस लीला में ही मिलेंगे, जब तारतम ज्ञान (इल्म-ए-लदुन्नी) से संसार की अज्ञानता का अन्धकार मिट गया होगा और परमधाम के ज्ञान का सूर्य जगमगा रहा होगा। ऐसे ही लोगों को ब्रह्ममुनि कहते हैं तथा इनके ही हृदय को धाम कहलाने की शोभा प्राप्त है। इन्हीं ब्रह्मात्माओं के मध्य इमाम महदी (श्री जी) कुर्आन पाक के गुह्य अर्थों को प्रकाश में लायेंगे तथा सबका उचित न्याय करेंगे।

**तो कजा उतलों अटकी, ताही दिन बदल्या बखत।
रसूल खड़े थे ले सिदक, पीछे उठे फितुए आखिरत ॥४०॥**

इस प्रकार कियामत का समय आने तक दिव्य न्याय बन्द रहा। श्री जी के प्रकट होते ही स्थिति बदल गयी। इसके पूर्व मुहम्मद सल्ल. (साहब) तक सत्यता रही किन्तु उनके ओझल होते ही धार्मिक विवाद खड़े हो गये थे।

**पीछले सरे दीन मनसूख, सबों किए जो थे बीच रात।
आए पैगंमर सब इत, कर दिन उड़ाई जुलमात ॥४१॥**

श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने से पूर्व अज्ञानता के अन्धकार में कर्मकाण्ड के

आधार पर जितने भी मत-पन्थ चल रहे थे, वे रद्द कर दिये गये अर्थात् उनकी आध्यात्मिक गरिमा समाप्त हो गयी। श्री प्राणनाथ जी ने परमधाम के ज्ञान से अज्ञानता के अन्धकार को हटाकर दिन का उजाला कर दिया। सभी पैगम्बरों को श्री प्राणनाथ जी की शरणागत होकर तारतम ज्ञान का अवलम्बन लेना पड़ा।

भावार्थ- तारतम ज्ञान का अवलम्बन किये बिना कोई भी पैगम्बर अपने मत के अनुयायियों की जिज्ञासा को यथार्थ रूप से शान्त नहीं कर सकता। शरणागत होने का यही आशय है।

ए सिपारे उनतीसमें, सब लिखे हैं सुकन।

ए बेवरा करे लदुन्नी, वारस जो अर्स तन।।४२।।

कुर्आन पाक के २६वें सिपारे में ये सारी बातें लिखी हुई हैं। तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही ये रहस्य समझ में आते हैं। इन्हें समझने का अधिकार उन ब्रह्मात्माओं को है, जिनके मूल तन परमधाम में 'परात्म' के रूप में है।

भावार्थ- कुर्आन सि. २६ सू. ६८ सूरः कल्म आ. ३६-४३ तबा-र-कल्ल जी “अम् लकुम् औमानुन् अलैना बालिगतुन् इला यौमिल् - कियामति इला यौमिल कियामति..... अम् लहुम् शुरकाअु इन् कानू सादिकीन खाशिततन् व हुम् सालिमून” “अर्थात् हमने तुमसे सौगंध नहीं ली कि जो (कियामत) पुनरोत्थान के दिन तक शरीफ ठहरा रखें हैं। यदि सच्चे हैं तो अपने नायकों को उपस्थित करें। आखिरत में जिस दिन पर्दा उठा दिया जायेगा और काफिरों को सज्दे के लिए बुलाया जायेगा, तो वह सज्दा (अभिवादन) न कर सकेंगे। उनकी (आँखें) दृष्टि नीचे झुकी होगी और जिल्लत उनके चेहरों पर छा रही होंगी। और जब पहले वह भले ही - चंगे थे, तब भी सज्दे के लिए बुलाये जाते थे। यद्यपि ये अपनी सरकशी पर सही सालिम (पूर्ण) थे।

सांचे साहेद इन उमतें, हककी कजा अदल।

यों कजा महंमद जुबांए, करें सिफायत अर्स दिल।।४३।।

परब्रह्म के सच्चे न्याय के लिये सच्चे गवाह ब्रह्ममुनियों के समूह में ही मिलेंगे। इस प्रकार न्याय की लीला श्री प्राणनाथ जी की रसना (वाणी) से होगी। परमधाम के

ब्रह्ममुनियों की अनुशंसा (प्रशंसा) स्वयं श्री जी करेंगे।

**एक दीन होसी याही से, द्वार खोले हकीकत।
दिन देख सिपारे तीसरे, डूबी खुदी रात जुलमत।।४४।।**

अखण्ड ज्ञान का प्रकाश होने से सारे संसार में एक सत्य मार्ग की स्थापना होगी। कुर्आन के तीसरे सिपारे में यह वर्णन है कि तारतम ज्ञान का फैला हुआ उजाला देखकर भी मोह से पैदा हुई जीव सृष्टि अहंकार तथा अज्ञानता की रात में सोयी रहेगी।

**मैं मैं करता रात का अमल, कहाँ गैर हक था नाबूद।
सूर ऊगे मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद।।४५।।**

अज्ञानता के अन्धकार में यह सारा जगत अहंकार की अग्नि से जल रहा था और माया-मोह के अनुचित अधिकार से ग्रसित था। मारिफत के ज्ञान का सूर्य के उग जाने पर सभी लोग एक सत्य के अनुगामी बन गये और उनकी आत्मिक इच्छायें भी पूर्ण हो गयीं।

**मोमिन नजीकी हक के, जाको हकें दई विलायत।
नूर पार जाको वतन, करें आखिर अदालत।।४६।।**

ब्रह्ममुनि परब्रह्म के अंगरूप होने से सबसे अधिक निकटस्थ कहे जाते हैं। माया का खेल देखने की इच्छा से इन्हें परब्रह्म के आदेश से संसार में आना पड़ा है। इनका मूल घर अक्षर से भी परे परमधाम में है। ये ही आखिरत के समय ज्ञान दृष्टि से सच्चा न्याय करेंगे।

**विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम।
तो हिजाब न आड़े वजूद, हिजाब न आड़े काम।।४७।।**

श्री राज जी ने इन्हें मायावी जगत में भेजा है। शाश्वत शान्ति रूपी अनमोल वस्तु इन्हीं से पायी जा सकती है। इनके तथा परब्रह्म के मध्य शरीर और लौकिक कार्यों का

कोई पर्दा (आवरण) नहीं है अर्थात् ये शरीर के मोह से परे होकर अपने आत्मिक स्वरूप से परब्रह्म से प्रेम करते हैं तथा अपने लौकिक कार्य भी निष्काम भाव से ही करते हैं।

हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक।

यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक।।४८।।

प्रियतम अक्षरातीत ने इन्हें श्री कुलजम् स्वरूप के रूप में ऐसा अलौकिक ज्ञान दे दिया है कि उसकी आभा से इन ब्रह्ममुनियों के आध्यात्मिक जीवन में परब्रह्म से किसी प्रकार का पर्दा नहीं रह गया है। ये अपने प्राणेश्वर के हृदय में ओत-प्रोत हो गये हैं। इस प्रकार, परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के द्वारा होने वाले सच्चे न्याय में ये स्वयं को परब्रह्म के सबसे अधिक निकटस्थ होने का अनुभव करते हैं।

महामत कजा अदल, करे रसूल तीन सूरत।

बसरिएं मांग्या जिदनी इलम, कजा हकी सूरत जुबां कयामत।।४९।।

मेहमत साहिबुज्जमाँ (श्री महामति जी) का कथन है कि मुहम्मद सल्ल. की तीनों सूरतों ने दिव्य न्याय किया है। बसरी सूरत ने मेयराज में परब्रह्म से समस्त संसार को एक करने का आग्रह पूर्वक दिव्य ज्ञान मांगा था किन्तु यह कार्य हकी सूरत के दिव्य न्याय से हुआ और समस्त जगत को अखण्ड मुक्ति की निधि मिली।

॥ प्रकरण ॥६॥ चौपाई ॥४७७॥

बाब फितनेका (झगड़ें (विवाद) के प्रकरण

इस प्रकरण में अरब प्रायःद्वीप में होने वाले धार्मिक उपद्रवों का विवेचन किया गया है।

मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन।

तब अर्ज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन।।१॥

मुहम्मद स. अ. व. व. ने परब्रह्म से हिंदुस्तान (भारत वर्ष) की धरती (पृथ्वी)

पर कृपा करने की प्रार्थना की। यह देखकर अरब के लोगों ने उनसे यह निवेदन किया कि आप अरब की अपेक्षा भारत वर्ष के लिये क्यों प्रार्थना कर रहे हैं। उनकी इस बात को सुनकर मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

भावार्थ- खिलाफत काल में सीरिया (शाम) तथा यमन का लगभग आधा भाग भारत वर्ष के सिन्ध प्रान्त में मिला हुआ था। यही कारण है कि उपरोक्त चौपाई में सीरिया (शाम) तथा यमन का सूक्ष्म अर्थ भारत वर्ष होगा।

फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन को।

तब फेर अर्ज करी आरबों, क्या है बरारबमों॥२॥

कुछ अंतराल (थोड़ी देर) के पश्चात् प्रशंसित स. ने पुनः भारत वर्ष की धरती के लिये कृपा की प्रार्थना की। तब अरब के लोगों ने पुनः आग्रह किया कि अरब में क्या घटित होने वाला है जिसके कारण आप अरब के लिये कृपा की प्रार्थना न करके मात्र भारत के लिये ही प्रार्थना कर रहे हैं?

तब फुरमाया रसूल ने, है फितना सोर तुम माहें।

स्याम इमन जिमी बचोगे, और खैर काहूं नाहें॥३॥

तब मुहम्मद स. अ. व. व. ने उत्तर दिया कि आपके मध्य (तुम्हारे बीच) उपद्रव का शोर (बहुत अधिक विवाद) होने वाला है। एक मात्र भारत वर्ष में ही तुम्हें शान्ति एवं सुरक्षा मिलेगी, अन्य कहीं भी नहीं।

सोए देखोगे जाहेर, मेरे पीछे बीच करन।

सोई पातसाही यारों की, होसी फितना बीच खलीफन॥४॥

तुम सभी अपनी आंखों से यह प्रत्यक्ष रूप से देखोगे कि मेरे देहान्त के पश्चात् अरब की धरती पर (खलीफा) उत्तराधिकारी के पद के स्वामित्व के लिये मेरे मित्रों में झगड़ा होगा।

रसूल खड़े टेकरी पर, कहा देखत यारों तुम।

कहा हक जानें या रसूल, जानत नाहीं हम॥५॥

एक टीले पर खड़े होकर मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने पूछा- मित्रों! तुम भविष्य के

सन्दर्भ में क्या देख रहे हो? सबने यही उत्तर दिया कि हमें कुछ भी पता नहीं है। भविष्य की बात या तो परब्रह्म जानते हैं या उनके संदेशवाहक (रसूल स.)।

**तब कह्या रसूलें हदीस में, ए जो सैतान का फितना।
सो आवत बीच बरारब, मैं देखत हों इतना ॥६॥**

तब मुहम्मद सल्ल. (साहब) जो कुछ भी कहा, वह हदीस (नवीन वार्ता) में इस प्रकार वर्णित है मैं स्पष्ट रूप से अपने अन्तःचक्षुओं से यह देख रहा हूँ कि शैतान (राक्षस) अरब की धरती पर उपद्रव कराने के लिये चला आ रहा है।

भावार्थ- मात्र मुहम्मद साहब के देहावसान के तीस वर्ष पश्चात् इमाम अली, चालीस वर्ष में इमाम हसन, एवं साठ वर्ष में ही अरब के मुसलमान लोगों ने अपने रसूल साहब के प्रिय हुसैन व उनके बहत्तर निरपराध पारिवारिक आत्मीयजनों को कत्ल कर दिया। अतः यहाँ तक की छः माह के दूध पीने वाले बच्चे को भी तीर मारकर शहीद कर दिया। तो विचारिए क्या मासूम बच्चा भी खिलाफत के लिए खतरा था? जिसका कल्मा पढ़कर मुसलमान होने का दम भरते हो उसी के परिवार वालों को मारना अधर्म नहीं है तो क्या है? यही राक्षसी प्रवृत्ति है।

**आवेगा बरसात ज्यों, छोड़े ना कोई घर।
मैं केहेता हों तुम देखियो, ऐसा होसी मुझ बिगर ॥७॥**

जिस प्रकार अचानक वर्षा आकर सबको भिगो देती है, उसी प्रकार जब शैतान आयेगा तो किसी भी घर को नहीं छोड़ेगा। मेरे इस कथन को तुम सच मानो। मेरे देहान्त के पश्चात् तुम देखना, जैसा मैंने कहा है, वैसा ही होगा।

**कह्या मेरी उमत में, उठेगी तरवार।
सो रेहेसी लग आखिर, ऐसा होसी बखत ख्वार ॥८॥**

उन्होंने यह भी कहा कि मेरे अनुयायियों में आपस में ही कियामत आने के समय तक तलवारें चलती रहेंगी। भविष्य में इतना बुरा समय आने वाला है।

**और कह्या बीच हदीस के, मेरे पीछे होसी इमाम।
मैं डरता हों तिन से, गुम करसी गिरो तमाम ॥९॥**

हदीस में यह भी लिखा है कि मुहम्मद साहब ने कहा कि मेरे पश्चात् जो भी इमाम होंगे उनसे मैं इस बात से चिन्तित हूँ कि वे मेरे सभी अनुयायियों को सच्चे मार्ग से हटाकर अन्धकार में भटका देंगे।

**दुनियाँ भी ऐसी होएसी, दिल अबलीस सैतान।
वजूद होसी आदमी, दिल कहूँ न पाइए ईमान॥१०॥**

उस समय संसार के लोग भी ऐसे होंगे कि उनके हृदय पर शैतान (इब्लीश) का स्वामित्व होगा। भले ही उसका शरीर मनुष्य का होगा किन्तु किसी के भी (बहुसंख्यक लोगों के) दिल में परब्रह्म या धर्म के प्रति विश्वास नहीं होगा।

**नाम मेरा चलावसी, कहेंगे तरीका महंमद।
सुन्नत जमात कौल तोड़ के, जुदे पड़सी कर जिद॥११॥**

वे मेरा नाम लेकर अर्थात् सौगन्ध खाकर अपनी मान्यताओं को थोपेंगे और कहेंगे कि यह मुहम्मद साहब का कथन है। वे मेरे ही कथनों को तोड़कर विवाद करेंगे और सुन्नत जमात (सुन्नते मुहम्मदी) से अलग हो जायेंगे।

**केहेसी हम सुन्नत जमात हैं, राह छोड़सी बीच की असल।
मेरा तरीका छोड़ के, चलसी अपनी अकल॥१२॥**

यद्यपि वे दृढ़तापूर्वक दावा करेंगे कि मात्र वे ही मुहम्मद साहब के निर्देशों पर चलने वाली सुन्नत जमात के सदस्य हैं। किन्तु मेरे द्वारा बताया हुआ वास्तविक मार्ग छोड़ देंगे और अपनी बुद्धि के द्वारा मनमाना तरीका चलायेंगे।

भावार्थ- वर्तमान समय के सभी कट्टरपन्थी यही कर रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप आतंकवाद की अग्नि दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

**जब हुए हिजाबमें रसूल, तबहीं खतरा पड़्या बीच यार।
तबहीं आया बीच फितना, पड़ी जुदागी बीच यार॥१३॥**

जब मुहम्मद स. अ. व. व. का देहावसान हुआ तो उनके चारों मित्रों अबू बक्र, उमर, उस्मान तथा अली में उत्तराधिकार के लिये विवाद हो गया। वह इतना अधिक बढ़ा कि चारों में अलगाव हो गया।

**सफर बखत रसूल के, तीन हुए न खबरदार।
बखत गए आए खड़े, लगे करने और विचार॥१४॥**

मुहम्मद साहब के तन छोड़ते समय अबू बक्र, उमर और उस्मान का सारा ध्यान

अपने उत्तराधिकार के प्रति था। उन्हें मुहम्मद सल्ल. (साहब) की कोई भी चिन्ता नहीं थी। उनके देह त्याग के पश्चात् वे तीनों ही आ गये और खलीफा पद के उत्तराधिकार के सम्बन्ध में विचार करने लगे।

भावार्थ- जब हजरत अली मुहम्मद साहब के निर्जीव शरीर को नहलाने (क्रिया कर्म) में लगे थे, तभी बहुमत से अबूबक्र को खलीफा के रूप में चयनित कर लिया गया, जबकि मुहम्मद साहब ने अली को अपने उत्तराधिकारी के रूप में चयनित किया था।

अली आए खड़ा कबर पर, काढ़ के जुल्फिकार।

कह्या न छोड़ोंगा किनको, आइयो होए हुसियार ॥१५॥

मुहम्मद सल्ल. को पुनः समाधिस्थ करने हेतु विवाद होने पर हजरत अली अपनी जुल्फिकार नामक (दिव्य खड़ा) उस तलवार को निकाल कर खड़े हो गये जिसे मुहम्मद साहब ने उन्हें बख्शीश के रूप में दी थी। उन्होंने दरगाह पर खड़े होकर यह स्पष्ट कर दिया कि मेरी ओर सावधानी पूर्वक आना, अन्यथा मैं किसी को भी जीवित नहीं छोड़ूंगा।

स्पष्टीकरण- यह तलवार युद्ध के मैदान में जिब्रील ने मुहम्मद सल्ल. को दी थी। जिसे उन्होंने ही अली को प्रदान की। यही तलवार पुनः इमाम मुहम्मद महदी ने अत्याचारी औरंगजेब के निर्मूलीकरण हेतु महाराजा छत्रसाल जी को प्रदान की जिससे उन्होंने एक वीर योद्धा के रूप में ५२ युद्ध किये। अन्ततोगत्वा औरंगजेब को जुल्म त्यागकर छत्रसाल जी को महाराजा की उपाधि देने पर बाध्य होना पड़ा।

तब चारों अपने हुए, हुआ फितना बीच जोर।

सफर पीछे रसूल के, दिन दिन बाढ़या सोर ॥१६॥

मुहम्मद साहब के देह त्याग के पश्चात् उनके चारों मित्रों में बहुत अधिक विवाद बढ़ गया, जो दिन-प्रतिदिन और तीव्र होता गया।

अब देखो दिल विचार के, कैसा बीच पड़्या इनमें।

ऐसी दुनी दोस्ती भी न करे, जैसी हुई जमात से ॥१७॥

हे साथ जी! आप अपने हृदय में विचार करके देखिए कि किस प्रकार इन मित्रों में मनमुटाव बढ़ता गया। जिस प्रकार इन (चारों) में वैर बढ़ा, वैसा तो संसार के मित्र भी

आपस में इतना अधिक नहीं लड़ते हैं।

**तीन यारों के जुदे हुए, करके बीच करार।
हमहीं सुन्नत जमात हैं, खासी उमत खासे यार ॥१८॥**

तीन मित्रों अबूबक्र, उमर तथा उस्मान ने आपस में समझौता कर लिया। उनके समर्थकों ने अबूबक्र को खलीफा मानकर यह घोषणा कर दी कि एकमात्र हम ही मुहम्मद साहब के निर्देशों पर चलने वाले (सुन्नत जमात) परंपरावादी हैं, उनके विशिष्ट मित्र हैं और उनके विशेष अनुयायी हैं।

**इतथें अली के जुदे हुए, बैठ फितने किया पसार।
कई हुड़ियां लड़ाइयां जमातसे, कई कतल किए तरवार ॥१९॥**

अली के अनुयायी अलग हो गये और शिया कहलाये। अरब में शैतान (अज्ञान) का दबदबा बढ़ता गया जिससे आपस में कई लड़ाइयां हुईं। परिणाम स्वरूप बहुत से लोग मारे गये।

भावार्थ- मुहम्मद साहब के देहान्त के मात्र बाद ही अबूबक्र ने उनकी पुत्री के बाग पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया तथा उनके घर में आग लगा दी जिससे घायल होने के कारण बीबी फातिमा की मृत्यु हो गयी। कि पूर्व में कथन है “अनामिन हुसैन मिनल हुसैन” अर्थात् मैं हुसैन से हूँ व हुसैन मुझसे हैं। परन्तु मुसलमानों ने उनको भी कर्बलाके मैदान में शहीद कर दिया। हजरत अली को भी नमाज पढ़ते समय उनके विरोधियों ने कत्ल कर दिया। इस प्रकार चारों खलीफाओं की स्वाभाविक मृत्यु नहीं हुई।

**लेने को बुजरकियां, जमात मारी समसेर।
मारे मराए यार अस्हाबों, ऐसा फितने किया अंधेर ॥२०॥**

खलीफा पद के लिये मुहम्मद सल्ल. (साहब) के अनुयायियों ने आपस में ही एक-दूसरे को तलवार से मारा, शैतान ने सबके हृदय में इतनी अज्ञानता भर दी कि मित्रों ने मित्रों को या तो मारा या उनके हाथ से मारे गये।

भावार्थ- कर्बला के युद्ध में मजीद की ७०,००० सिपाहियों की विशाल सेना के समक्ष हजरत हुसैन ने मात्र अपने ७२ समर्थकों के साथ युद्ध किया जिसमें मजीद ने उनकी निर्मम हत्या करके उनके शवों को घोड़ों की टावों से रौंद दिया।

**कोई न छोड़या घर आरब, बीच फितना हुआ सबमें ।
कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर न किया किननें ॥२१॥**

शैतान के फितने ने अरब की धरती पर ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि वहां एक भी घर ऐसा नहीं बचा जिसमें किसी सदस्य की युद्ध में मृत्यु न हुई हो। वही हुआ जो मुहम्मद साहब ने हदीसों में कह रखा था। किसी को भी संतोष नहीं हुआ और सभी लड़ पड़े।

**ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार ।
सो आए सदी लग आखिरी, आई किबले से पुकार ॥२२॥**

हे साथ जी! कुर्आन पाक की आयतों तथा हदीसों के कथनों पर विचार करके देखिए। वही हुआ जो इनमें कहा गया था। दसवीं हिजरी तक विवाद की स्थिति बनी रही। मक्के-मदीने से आने वाले वसीयतनामों भी इसकी साक्षी देते हैं।

**भावार्थ- दसही ईसा ग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम ।
ए लिखा सिपारे आम, तीसमां सिपारा जाको नाम ॥ (ब. क. 1/13)**

के कथन के अनुसार दसवीं सदी के अन्त तक अरब में अन्धकार ही अन्धकार छाया रहा, जिसके परिणामस्वरूप भयंकर रक्तपात होता रहा। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (रुहल्लाहु) के प्रकट होने के पश्चात् ही कुछ शान्ति की आस जगी।

**ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखिरत ।
फसल आई असीं भिस्तों की, हुआ दिन हक बका मारफत ॥२३॥**

हे साथ जी! आप अपने हृदय में कियामत के सम्बन्ध में कहे गए हदीसों के इन कथनों का अच्छी प्रकार से विचार कीजिए। परमधाम तथा परब्रह्म की पूर्ण पहचान कराने वाले श्री कुलजुम स्वरूप का अवतरण होने से चारों ओर अखण्ड ज्ञान का प्रकाश फैल चुका है जिससे ब्रह्मात्माओं को परमधाम तथा ईश्वरीय सृष्टि एवं संसार की समस्त जीव सृष्टि के लिये बेहद मण्डल की आठों बहिस्तों का द्वार खुल चुका है।

महामत कहे ए मोमिनो, कही फितने की हकीकत ।

अब कहूं सातों निसान, जिन पर मुद्दा कयामत ॥२४॥

मेहमत साहिबुज्जमाँ (श्री महामति जी) कहते हैं कि हे साथ जी! इस प्रकरण में शैतान (अज्ञान) के द्वारा अरब में कराये गये झगड़ों की वास्तविकता को दर्शाया गया है। अब मैं उन सातों निशानों का वर्णन करता हूँ जिनकी पहचान पर ही कियामत का आना सिद्ध होता है।

॥प्रकरण ॥७॥ चौपाई ॥५०१॥

बाब चारों निसानका-दाभतुल अर्ज

इस प्रकरण में कियामत के सात निशानों में से चार निशानों (पहचान) का वर्णन किया गया है। अब पहले निशान दाब्ह-तुल - अर्ज जानवर की पहचान बताते हैं।

आए लिखे बड़ी दरगाह से, इसलाम के खलीफों पर ।

उठी बरकत मुसाफसफकत, दुनी हुई ईमान बिगर ॥१॥

मक्का मदीने से इस्लाम के रुकनदीन कहे जाने वाले औरंगजेब के पास लिखे हुए चार वसीयतनामे आये, जिनमें यह लिखा था कि अरब से अल्लाहतआला की ओर से दिया जाने वाला सौभाग्य (कल्याण) और कुर्आन का आशीर्वाद (सफकत), कृपा (दया दृष्टि) उठ गया है। अब यहां के लोगों में अल्लाह या सत्य के प्रति विश्वास नहीं रह गया है।

बाकी रह्या क्या इसलाम में, जब हक मता लिया छीन ।

सो लिखे सखत सौं खाए के, उठ्या हमसे नूर झंडा आकीन ॥२॥

जब परब्रह्म ने अपनी दिव्य निधियां ले ली तो अरब की धरती पर इस्लाम में शेष क्या रह गया? इसलिये मक्का-मदीना के धर्माधिकारियों ने कठोर सौगन्ध खाकर वसीयतनामों में लिखा था कि अब हमारी धरती से परब्रह्म एवं कुर्आन पाक पर सच्चे विश्वास का नूरी झण्डा उठ गया है।

निसान लिखे कयामत के, होसी जाहेर दाभा जिमी से।

जब नूर झंडा हादी ले गए, बाकी रही हैवानी जिमीमें ॥३॥

कियामत के निशानों में लिखा है कि अरब की धरती से दाब्ह-तुल जानवर प्रकट होगा। जब बसरी सूरत का नूरी झण्डा भारत वर्ष में इमाम महदी के पास आ गया तो अरब की धरती पर मात्र पाशविकता ही रह गयी।

भावार्थ- दाब्ह तुल अर्ज जानवर का वर्णन कुर्आन पा. ७ सू. ६ आयत ३८ में इस प्रकार है- ब मा मिन् दाब्बतिन फिल्अर्जि व ला ताअिरिंय्यतीरु बिजनाहैहि अिल्ला अुममुन अमसालुकुम् त् मा फरत्ना फिल् किताबि मिन् शैअिन् सुम्म अिला रब्बिहिम् युह्शरुन । जमीन में जो भी चलने वाले जानवर और दो पंखों से उड़ने वाले पक्षी हैं, उनकी भी तुम आदमियों की तरह जमाते हैं। ऐसी कोई भी चीज नहीं जिसे हमने लौहे महफूज में न लिखी हो फिर वे सभी अपने परवर दिगार के सामने जमा होंगे । हादी मात्र तीनों सूरतों या श्री राज जी एवं श्यामा जी को ही कहा जा सकता है, जिब्रील को नहीं।

ए निसान बातून अव्वल कहे, सो मिले सब आए।

पर मुसाफहकीकत जो खुले, तो आंखों देख्या जाए ॥४॥

मुहम्मद साहब ने कियामत के सूक्ष्म निशानों को पहले ही कह दिया था जो अब दृष्टिगोचर हो रहे हैं। किन्तु जिन्हें तारतम ज्ञान के द्वारा कुर्आन की यथार्थता का बोध हो जाता है, वे अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप में कियामत के निशानों (पहचानों) को देख सकते हैं।

सेर छाती पीठ गीदड़, मुरग गरदन हाथी कान।

सिर सींग तीखे आंखें सुअर, एकह्हा मुंह आदमी बिना ईमान ॥५॥

कुर्आन में दाब्ह-तुल जानवर के विषय में लिखा है कि जब वह अरब की धरती पर सर्वप्रथम प्रकट होगा तो उसकी छाती सिंह की तरह क्रूरता से भरी होगी। उसकी पीठ गीदड़ की तरह धार्मिकता से दूर रहने वाली होगी। मुर्गे की गर्दन होगी, हाथी के कान होंगे, सिर पर पहाड़ी बैल के तीखें सींग होंगे, आंखें खिंजीर (सुअर) की होगी, किन्तु

उसका मुख मनुष्य का होगा और उसमें सत्य के प्रति कभी भी विश्वास नहीं रहेगा।

भावार्थ- मनुष्य में पशुओं के लक्षणों का आना ही दाब्ह-तुल जानवर का प्रकट होना है। मुर्गे की गर्दन अहंकार में अकड़ी रहती है। इसी प्रकार कियामत के समय लोग बड़ों का सम्मान करना भूल जायेंगे। हाथी में केवल बुराईयों को ही सुनने की प्रवृत्ति होती है। अच्छाईयों को वह ध्यान से नहीं सुनता है। जिस प्रकार पर्वतीय बैल अपनी तीखी सींगों से सर्वदा उत्पात मचाता रहता है, उसी प्रकार कियामत के समय मनुष्य भी झगड़ालू होंगे और सुअर की तरह मनुष्य भी कुदृष्टि वाला हो जायेगा।

सब अंग कहे हैवान के, और मुंह कहे इनसान।

होसी गए आकीन एतबीयतें, ए देखो खुलासे निसान ॥६॥

यहां अंग तो सभी पशुओं के कहे गये हैं किन्तु शेष धड़ मनुष्य का कहा गया है। कियामत के निशानों के स्पष्टीकरण होने से तो यही स्पष्ट होता है कि ईमान (विश्वास) चले जाने पर मनुष्य में भी पशुओं के दोष आ जाते हैं।

दाभतूल का निसान, ए देखो दिल धर।

इनका तालिब न देखे इने, माएने खुले बिगर ॥७॥

हे साथ जी! दाब्ह - तुल - अर्ज मायावी जानवर की पहचान के सम्बन्ध में अपने हृदय में विचार कीजिए। जब तक इसके सूक्ष्म रहस्य स्पष्ट नहीं होते हैं, तब तक इसे देखने का इच्छुक व्यक्ति इसे देख नहीं सकेगा, क्योंकि यथार्थ में मनुष्य की आकृति वाला ऐसा कोई पशु होता ही नहीं है।

जानवर तो ए है नहीं, लिखी हैवानी तबीयत।

तो कह्या तालिब न देखसी, दुनी दाभा आखिरत ॥८॥

सच तो यह है कि ऐसा कोई जानवर नहीं है। मनुष्य का स्वभाव ही कियामत के समय में पशुओं जैसा हो जायेगा। इसलिये कहा गया है कि इसे देखने के इच्छुक लोग इसे बाह्य रूप से (एक जानवर विशेष के रूप में) नहीं देख पायेंगे। कियामत के समय संसार

के लोगों का स्वभाव ही दाब्ह-तुल जानवर जैसा हो जायेगा।

दाभा गधा सों निसबत, अहेल जिमी दुनी जे।

बिन आकीन बिन मुसाफ, कही जिमी जाहेर दाभा ए॥९॥

दाब्ह-तुल-अर्ज मायावी जानवर का सम्बन्ध गधे से कहा गया है। इसका आशय यह है कि जिस धरती पर यह जानवर प्रकट होगा, वहां के मनुष्यों की बुद्धि भी गधे के समान मूर्खता वाली हो जायेगी। वहां के लोगों में न तो परब्रह्म के प्रति विश्वास होगा और न ही ब्रह्म ज्ञान होगा, वहां की धरती को ही प्रत्यक्ष रूप से दाब्ह - तुल जानवर वाला कहा गया है।

भावार्थ- कुर्आन के शब्दों के पठन मात्र से ही विशेषज्ञता नहीं प्राप्त हो सकती। तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही कुर्आन के आशय को यथार्थ रूप में जाना जाता है। भले ही अरब की धरती पर कुर्आन शरीफ का पाठ होता हो, किन्तु उसके गुह्य रहस्यों से अनभिज्ञ होने के कारण ही वसीयतनामों में यह कहा गया है कि कुर्आन की सफ़कत अरब से उठकर हिन्दुस्तान में इमाम महदी के पास चली गयी है।

हैवान अकल दाभा जिमी, होसी लोक जाहेर सिफली के।

सो दाभा ताबे दज्जाल के, देखो निसान खुलासे॥१०॥

हे साथ जी! दाब्ह-तुल-अर्ज जानवर के निशान के स्पष्टीकरण पर आप विचार कीजिए तो यह स्पष्ट होता है कि जिस धरती पर यह जानवर प्रकट होगा वहां के लोगों की बुद्धि गधे जैसे पशुओं की हो जायेगी और मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से झूठे स्वभाव के हो जायेंगे। इस प्रकार, दाब्ह-तुल-अर्ज मायावी जानवर रूप ऐसे मनुष्यों को शैतान (अज्ञान) के अधीन कहा गया है।

दुनी कही सिफलीय की, तिन जिमी न छोड़ी जाए।

ज्यों जीव खारे का खारे जल, त्यों मीठे का मीठे समाए॥११॥

संसार के जीवों को झूठा कहा जाता है। उनसे संसार का मोह छोड़ा नहीं जाता

है। यह वैसे ही है जैसे खारे (नमकीन) जल का जीव खारे जल में तथा मीठे जल का जीव मीठे जल में चला जाता है।

**बाएं हाथ आसा मूसे का, हाथ दाहिने मोहोर सलेमान।
मोहोर करसी पेसानी जिनकी, मुंह उज्जल तिन रोसन ॥१२॥**

क़ुर्आन शरीफ में ऐसा कहा गया है कि श्री प्राणनाथ जी (इमाम मुहम्मद महदी अ. त. फ. श.) के बायें हाथ में मूसा पैगम्बर की लाठी होगी तथा दाहिने हाथ में सुलेमान की मुहर। वे जिसके मस्तक पर अपनी मुहर की छाप लगा देंगे, उसका मुख उज्ज्वलता से जगमगाने लगेगा।

**स्याह मुंह होसी तिन का, आसा चुभावे जिन।
उज्जल स्याम मुंह अपने, केहेसी रात और दिन ॥१३॥**

और इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ जिसे अपनी लाठी का स्पर्श करा देंगे उसका मुख काला हो जायेगा। उज्ज्वल मुख वाले तथा काले मुख वाले अपने-अपने मुख से सत्य और झूठ का वर्णन करेंगे।

**स्वाल किए इत जाहेरी, मोहोर आसा होसी दिल रूए।
बाहेर स्याह मुंह उज्जल, क्यों कर देखे कोए ॥१४॥**

शरियती लोगों ने मुहम्मद स. अ. व. व. से प्रश्न किया कि सुलेमान की मुहर तथा मूसा की लाठी का प्रभाव तो आत्मा के दिल पर होगा। ऐसी स्थिति में किसी का मुख काला तो किसी का मुख उज्ज्वल कैसे दिखाई देगा?

भावार्थ-वस्तुतः श्री कुल्जुम स्वरूप ही सुलेमान की मुहर हैं तथा मूसा पैगम्बर की लाठी भी है। श्री कुल्जुम स्वरूप के चिन्तन द्वारा अक्षरातीत की पहचान होती है जिनसे प्रेम करने पर मूसा की लाठी की तरह अनेक अलौकिक शक्तियाँ ब्रह्मात्माओं के पीछे-पीछे चलती हैं। तारतम ज्ञान सत्य-असत्य का स्पष्ट निर्णय करने वाला है। श्री कुल्जुम स्वरूप का प्रकाश जिनके हृदय में आ जाता है, वे परब्रह्म के प्रेम, आनन्द एवं ज्ञान में डूब जाते हैं, जिससे उनके मुख उज्ज्वल हो जाते हैं। दोख में जाने वाले जिन

काफिर लोगों के मुख को काला कहा गया है, उसका आशय यह है कि तारतम ज्ञान का प्रकाश ही यह निर्णय कर देगा कि तुमने अपने सम्पूर्ण जीवन में परब्रह्म से प्रेम करने के स्थान पर पाप ही पाप किया है। उनका प्रायश्चित ही उनके मुख को काले रंग में दर्शायेगा।

मोमिन कहे सुन मुस्लिम, भिस्त दोजख होसी सो भी दिल।

आग भिस्त ना इस्म तें, बाहेर मुंह छिपे स्याह उज्जल ॥१५॥

ब्रह्ममुनि कहते हैं कि शरियत की राह पर चलने वाले हे मुसलमानों, सुनों! चाहे किसी को बहिश्त मिले या दोजख, उसका संबंध दिल से ही है। पाप (कालिमा) के कारण ही दोजख की अग्नि में जलना पड़ता है और बहिश्त प्राप्त नहीं हो पाती। हृदय में छिपी हुई कालिमा या उज्ज्वलता बाहर मुख पर प्रगट हो ही जाती है।

कह्या सूरत बाहेर बदले, जब दिल दर्ई आग लगाए।

सो बाहेर फैल करे कई विध, सके न कोई छिपाए ॥१६॥

जब हृदय में प्रायश्चित की आग जल रही होती है तो बाहर मुख की आकृति बदल ही जाती है। भले ही कोई व्यक्ति बाह्य रूप से कितने ही उपाय क्यों न कर ले, किन्तु अपने हृदय के भावों को छिपा नहीं सकता।

अपने हाथ मुंह अपना, मोहोर करे क्यों कर।

स्याह मुंह भी कहे हाथ इन, क्यों सब मुद्दा कह्या इन पर ॥१७॥

भला कोई भी अपने हाथों से अपने मुख को उज्ज्वल कैसे कर सकता है ? इसी प्रकार, कोई अपने हाथों से अपने मुख को काला कैसे कर सकता है क्योंकि चेहरे का उज्ज्वल या काला होना तो दिल के भावों पर निर्भर करता है ?

छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार।

जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार ॥१८॥

हे साथ जी! आप इस बात पर विचार कीजिए। जिसके हृदय में जो भी छिपी हुई बात थी, उसमें वह न्याय के दिन पुकार-पुकार कर कहेगा। परब्रह्म का जोश जिब्रील

किसी के मन की बातों को छिपने नहीं देगा। भले ही कोई इस खेल में जीते या हारे।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का प्रसंग योगमाया के ब्रह्माण्ड में होने वाली स्वरूप की कियामत से है। १६वीं तथा २०वीं चौपाई वहीं का प्रसंग है।

**एही दाभा दुनी सिफली, सब केहेसी अपने मुख।
जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखिर दुख सुख ॥१९॥**

कियामत के समय श्री कुलजुम स्वरूप रूपी मुहर एवं लाठी की कसौटी पर पाशविक स्वभाव वाली मिथ्यावादी जीव सृष्टि अपने मुख से सब कुछ कहेगी। जो आन्तरिक रूप से जैसा होगा, उसको वैसा ही फल प्राप्त होगा। अन्ततोगत्वा अपने शुभ-अशुभ कर्मों से मिलने वाला सुख या दुःख छिपा नहीं रह सकता है।

**जब एही बातून जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची माहें सब।
सब एक हैयातीय का, करसी सिजदा तब ॥२०॥**

जब यह गुह्य रहस्य प्रकट हो जायेगा तो सभी को प्रियतम अक्षरातीत की पहचान हो जायेगी। उस समय संसार के सभी लोग अखण्ड स्वरूप वाले एक अक्षरातीत परब्रह्म के चरणों में प्रणाम करेंगे।

दज्जाल का निसान

इस प्रकरण में दज्जाल की पहचान के ऊपर प्रकाश डाला गया है

**कह्या दज्जाल अस्वार गधे पर, काना आंख न एक।
हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक ॥२१॥**

दज्जाल को गधे पर सवार बताया गया है। उसकी एक आंख नहीं है, अतः उसे काना भी कहा गया है। वह बाह्य आँखों से परब्रह्म की पहचान नहीं कर पाया है, क्योंकि उसकी सूक्ष्म आत्मिक दृष्टि नहीं है।

**अजाजील काना तो रानियां, जो बातून नजर करी रद।
देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद ॥२२॥**

काने अजाजील को इसलिये धिक्कार मिली कि उसने अपनी अन्तर्दृष्टि को खो

दिया। उसने अपनी बाह्य आँखों से आदम के नश्वर तन को देखा।

भावार्थ- उपरोक्त दोनों चौपाईयों तथा निम्नोक्त तीसरी चौपाई को पढ़कर उसका बाह्य अर्थ लेने पर स्वाभाविक रूप से यही अर्थ निकलता है कि अजाजील (आदिनारायण) ही दज्जाल या शैतान है। इस विचारधारा का विकृत रूप तब देखने में आता है जब कतेब पक्ष के अनुयायी, विशेषकर क्रिश्चियन मिशनरी के लोग, सार्वजनिक रूप से आदिनारायण सहित अन्य हिन्दू-देवताओं को शैतान कहते हुए दिखायी देते हैं।

दज्जाल के कई अर्थ लिये जाते हैं जैसे शैतान, राक्षस, कलियुग आदि। दज्जाल को अज्ञान-रूपी कहा गया है तो उसकी सवारी गधे को मूर्खता का प्रतीक माना गया है। इसका सार तत्व यही है कि बुद्धि विहीन व्यक्ति ही अज्ञानी है। इस प्रकरण की चौथी चौपाई में निराकार को ही गधा कहा गया है। आदिनारायण का मन अर्थात् समष्टि मन ही इब्लीश है जो सबके दिलों पर शासन कर रहा है। यह तथ्य इस प्रकरण की छठी चौपाई में दर्शाया गया है।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि समष्टि (सामूहिक) मन जैसा होगा, व्यष्टि मन भी वैसा ही होगा। जिस त्रिगुणात्मिका प्रकृति से समष्टि मन की उत्पत्ति हुई है, उसी का अंश रूप हमारा यह व्यष्टि (व्यक्तिगत) मन है। अन्तर केवल इतना ही है कि ज्ञान एवं भक्ति से रहित सामान्य व्यक्ति का मन विषय-भोगों के दलदल में अधिक धंसा होता है, जबकि किसी देवपुरुष या योगी-यति का मन इनसे उपरम (अलग) होने के लिये छटपटा रहा होता है। निःसन्देह सृष्टि के आदि कवि वाल्मीकि एवं अंगुलिमाल को उनके पूर्व जीवन काल में दज्जाल कहा जा सकता है किन्तु ऋषित्व और भिक्षुकत्व प्राप्त होने के बाद शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो इन्हें दज्जाल नाम से सम्बोधित करने का साहस कर सके।

ऐसी स्थिति में इस सृष्टि के कर्ता-धर्ता आदिनारायण को भी 'दज्जाल' से सम्बोधित करना कदापि उचित नहीं है। जब संनद ग्रन्थ (३६/६) में स्पष्ट कहा गया है कि 'अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक', ऐसी स्थिति में अक्षर ब्रह्म के उस फरिश्ते को दज्जाल कैसे कह सकते हैं जिसने दो अंगूल भी धरती बिना सिज्दा किये नहीं छोड़ी है। यदि पौराणिक सनातनी हिन्दू आदिनारायण को भ्रमवश अपना आराध्य मान भी लेते हैं तो क्या यह साम्प्रदायिक घृणा की मानसिकता नहीं है जो आदिनारायण को

जान-बूझकर शैतान कहा जाता है। यदि ऐसा है तो जनरल डायर एवं गोवा में धर्मान्तरण कराने के लिये भयंकर रक्त पात का सहारा लेने वाले पादरियों को क्या कहना चाहिए? यही नहीं, स्वयं को मोमिन कहकर हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुहम्मद गोरी, महमूद गजनवी, हुमायूं, बाबर, अकबर, शाहजहां, औरंगजेब, नादिरशाह, सिकन्दर लोदी और फिरोज तुगलक को क्या कहा जा सकता है?

सर्वप्रथम तो हमें यह समझना होगा कि अजाजील के द्वारा आदम को प्रणाम न किया जाना एक कथानक है जो दार्शनिक तथ्यों को सरल एवं सामान्य तरीके से समझाने के लिये आलंकारिक भाषा में कहा गया है। किन्तु आदिनारायण इस सृष्टि का कर्ता-धर्ता और हर्ता है, भले ही वह अक्षर ब्रह्म का प्रतिनिधि मात्र (फरिश्ता) क्यों न हो? इस तरह की भाषा बोलने वालों को यह भी ध्यान रखना चाहिये कि वे स्वयं भी उसी की बनाई हुई सृष्टि के अन्तर्गत आते हैं। मात्र कुर्आन या बाईबिल का स्वाध्याय कर लेने से न तो कोई ब्रह्मसृष्टि बन सकता है और न ही ईश्वरीय सृष्टि। अजाजील फरिश्ते को तो यह परब्रह्म का ही आदेश था कि उसे आदम को प्रणाम नहीं करना है। यह सनद (३७/१३) के निम्न कथनों से स्पष्ट होता है-

अजाजील को गफलतें, हुकमें दिया उलटाए ।

ले तखत बैठाया छल के, सब फरेब जुगत बनाए ॥

सनद (३८/३३) में भी कहा गया है- ‘अजाजीले भूल्या नहीं, पर हुकमें भुलाया ताए’। ऐसी स्थिति में अद्वैतवाद की ओट में अजाजील (आदिनारायण) को अपशब्दों से सम्बोधित करना कदापि उचित नहीं है।

इस प्रकरण की दूसरी चौपाई में अजाजील को मात्र व्यंग्यात्मक रूप में ही काना कहा गया है क्योंकि वह आदम के स्वरूप को पहचान नहीं पाया।

किन्तु शैतान (इब्लीश) तो वह मन है जो माया (महत्तत्व) से बना हुआ है। संसार का प्रत्येक जीव अपने मन से बंधा हुआ है। मन के बन्धनों से परे होने के लिये संसार में जो भी धर्मग्रन्थ हैं, वे अजाजील या जिब्रील के माध्यम से ही परब्रह्म के द्वारा दिये गये हैं। उनका चिन्तन करके अपने जीवन में चरितार्थ करने पर कोई भी इस भवसागर से पार हो सकता है। यदि समष्टि मन बहिर्मुखी है तो व्यष्टि मन का भी होना

स्वाभाविक है। इस दार्शनिक तथ्य को न समझने वाले अपने सिर का कचरा दूसरों के सिर पर फेंककर हंसी अवश्य कर सकते हैं किन्तु वे अच्छी तरह से जानते हैं कि वास्तविकता क्या है? इस पूरे प्रकरण में अथवा सम्पूर्ण श्री कुलजम स्वरूप में अजाजील (आदिनारायण) को कहीं भी दज्जाल या शैतान शब्द से सम्बोधित नहीं किया गया है (इस प्रसंग की विस्तृत व्याख्या सनद ग्रन्थ की टीका में देखें)।

गधा बड़ा दज्जाल का, कहाँ ऊँचा लग आसमान।

पानी सात दरियाव का, पोहोँच्या नहीं लग राँन ॥२३॥

दज्जाल के गधे को आकाश तक ऊँचा बताया गया है। यह भी कहा जाता है कि सातों समुद्रों का जल उसकी जाँघों तक भी नहीं पहुँच पाता है।

गधा एता बड़ा तो हैं नहीं, कहाँ हवा तारीक मकान।

ए जो कुन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान ॥२४॥

वस्तुतः इस सृष्टि में कोई भी इतना ऊँचा गधा नहीं होता है। निराकार, मोह सागर ही गधा कहा गया है जिससे कुन के कथन मात्र से इस नश्वर जगत की मिथ्या जीव सृष्टि पैदा हुई है।

ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल।

सो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल ॥२५॥

अन्यथा, यदि बाह्य अर्थ लेकर सचमुच ही ऐसा मान लें तो उस गधे पर सवार होने वाला दज्जाल कितनी ऊँचाई का होना चाहिए? यदि मान लिया जाय कि रूहुल्लाहु या ईमाम महदी के द्वारा कत्ल किये जाने पर गधे और दज्जाल दोनों ही गिर पड़ें तो यह संसार भला कैसे रह सकता है?

लानत जो अजाजील की, ले अबलीस बैठा दिल।

सो राह न लेने देवे बातून, जो जोर करें सब मिल ॥२६॥

अजाजील को जो लानत (धिक्कार) मिली, उससे उसके मन का स्वरूप इस्लीश संसार के सभी प्राणियों के दिल पर बैठ गया। इसका परिणाम यह हुआ कि यदि संसार के सभी लोग मिलकर भी पुरुषार्थ करें तो यह इस्लीश किसी की अन्तर्दृष्टि नहीं खुलने

देता।

सोई दाभा या गधा दज्जाल, अबलीस दिलों पातसाह।

सो दुनी आंख फोड़ी दुस्मने, लेने देवे न बातून राह।।२७।।

यह अज्ञानता ही दाब्-तुल जानवर या दज्जाल का गधा है। संसार के सभी जीवों के दिल पर इब्लीश की बादशाहत है। सबके शत्रु इस इब्लीश रूपी मन ने बहिर्मुखी होने के कारण सभी इन्द्रियों को बाह्य जगत में उलझा रखा है और जीव को अन्तर्मुखी होकर उसकी अन्तर्दृष्टि नहीं खुलने देता।

ना तो लानत जो दज्जाल की, सो दुनी को लगे क्योंकर।

सो वास्ते ताबे दज्जाल के, हुई बातून आंख बिगर।।२८।।

अन्यथा जो दज्जाल को धिक्कार मिली है, वह संसार के अन्य जीवों को क्यों मिलती? अपनी अन्तर्दृष्टि न होने के कारण ही संसार के जीवों को मन-रूपी दज्जाल के अधीन रहना पड़ा है।

भावार्थ- ६वीं तथा ८वीं चौपाई के प्रथम चरण को देखने पर प्रथम-दृष्ट्या ऐसा लगता है कि अजाजील ही दज्जाल है किन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर ही यथार्थता का बोध होता है। कहीं भी अजाजील ही दज्जाल है, ऐसा मूल चौपाईयों में नहीं है। अजाजील के मन को दज्जाल इसीलिये कहा गया है कि 'समष्टि' मन के अंश रूप सभी मन हैं। मन इन्द्रियों का राजा है। वह इन्द्रियों को बाह्य विषयों में भटकाकर काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों में इस प्रकार फंसा देता है कि जीव दिन-प्रतिदिन इनके दलदल में और अधिक फंसा जाता है। वह जीव को अन्तर्मुखी बनकर ध्यान-समाधि के आश्रय से आत्म साक्षात्कार अथवा ब्रह्म साक्षात्कार नहीं करने देता। यही कारण है कि इब्लीश (मन) को परब्रह्म की राह में सबसे बड़ा बाधक मानकर घृणापूर्वक उसे शैतान अथवा राक्षस कहा जाता है। किन्तु इस शब्द का प्रयोग अजाजील के लिये नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह अपने मूल स्वरूप में जहां अक्षर ब्रह्म का फरिश्ता है तो वही इस खेल में सृष्टिकर्ता आदिनारायण। इसी प्रकार, उसका अंश-रूप जीव भी कूटस्थ है। जीव के अधीनस्थ मन में माया रूप दज्जाल (अज्ञान) ने उसे भी माया में डूबने के लिये विवश कर दिया है।

दुनी सिजदा न किया, रूह महंमद आदम पर।
इन भी देख्या वजूद को, ना खोले बातून नजर ॥२९॥

इसी प्रकार संसार के लोगों ने श्री मिहिरराज जी के तन में विराजमान श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को नहीं पहचाना और प्रणाम नहीं किया। संसार के लोगों ने श्री मिहिरराज जी के मात्र बाह्य तन को ही देखा। अपनी अन्तर्दृष्टि को खोलकर हृदय में विराजमान अक्षरातीत के आवेश स्वरूप को नहीं जाना।

तो हुआ दिलों पर पातसाह, सोई राह चलावत।
जिन राह चलते अबलीस को, दूर किया दे लानत ॥३०॥

इस प्रकार, अज्ञान-रूपी इब्लीश सबके हृदय का स्वामी बनकर सबको उसी मार्ग पर चला रहा है, जिस पर चलने से उसे धिक्कार मिली थी और बहिश्त से निकाला गया था।

इन बिध लगी लानत, अजाजील की दुनी को।
जैसी हुई सिरदार से, हुई तैसी ताबे हुएसों ॥३१॥

इस तरह अजाजील (आदिनारायण) की बनाई हुई जीव सृष्टि को भी वैसी ही धिक्कार लगी। संसार के सभी जीव आदिनारायण के सांकल्पिक प्रतिबिम्बित चेतन रूप हैं। इसलिये आदम के स्वरूप को न पहचानने की जो भूल अजाजील से हुई थी, वही भूल उनके जीवों ने भी श्री जी को न पहचानने में कर दी।

सिपारे उनईस में, कहा निकाह आदम हवा।
सो पसरी बीच दुनी के, इत अबलीस जो पैदा ॥३२॥

कुर्आन के १६वें सिपारे में कहा गया है कि आदम का विवाह हवा से हुआ था। इस प्रकार, आदम के वंशजों अर्थात् मुनष्यों के दिल में मोह-रूपी अज्ञान का वर्चस्व बना रहा।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक में यह तथ्य दिखाया गया है कि आदम (सृष्टि के प्रथम मानव) में जो बहिर्मुखता और मन के अधीन हो जाने की प्रवृत्ति रही, वही आज तक भी चली आ रही है। अज्ञान-रूपी इब्लीश (दज्जाल) आज सबके ऊपर शासन कर

रहा है। यद्यपि कथानक में हव्वा को एक स्त्री माना गया है किन्तु हव्वा का आशय मोह या तृष्णा से है जिसके बन्धन में रहने के लिये मनुष्य विवश हो जाता है। चौपाई के चौथे चरण में इब्लीश (अज्ञान) के पैदा होने का अभिप्राय सबके हृदय में अपना स्वामित्व स्थापित करना है। मोह ही अज्ञान रूप में इब्लीश है। जिस मोह तत्व को अज्ञान कहा जाता है उसी से तो मन, बुद्धि आदि की उत्पत्ति होती है।

**जेता कोई बनी आदम, कहाँ निकाह अबलीस से।
कहाँ दुनी बीच अबलीस, लोहू ज्यों तनमें॥३३॥**

संसार में जितने भी मनुष्य हैं सबका घनिष्ठ सम्बन्ध (निकाह) इब्लीश से है। जिस प्रकार शरीर के अन्दर रक्त की विद्यमानता रहती है, उसी प्रकार संसार के सभी प्राणियों के हृदय में इब्लीश विद्यमान है।

**कहाँ वजूद आदमी, सैतान अमल दिल पर।
दुनी होसी इन बिधकी, कहे बीच हदीस पैगंमर॥३४॥**

हदीसों में मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कहा है कि कियामत के समय भले ही दिखने में मनुष्य का शरीर दिखायी देगा किन्तु उसके हृदय पर शैतान का राज्य होगा। उस समय संसार के लोग इसी प्रकार पाशविक प्रवृत्ति के हो जायेंगे।

**दोऊ तरफों कहाँ पेटमें, और दुनी हाथ बीच दोए।
इन बिध रहे बीच आदम, याको किन बिध मारे कोए॥३५॥**

इब्लीश को मनुष्य के पेट के दोनों ओर अर्थात् हृदय में और दोनों हाथों के बीच आंख में स्थित कहा गया है। इस प्रकार, इसे कैसे कोई मार सकता है?

भावार्थ—दिल का सम्बन्ध आंखों से होता है। आंखों के माध्यम से दिल में बैठा हुआ इब्लीश जीव को बहिर्मुखी बनाकर संसार चक्र के मोह में डाले रहता है। कोई भी अपनी सामान्य बुद्धि से इस रहस्य को जान नहीं पाता है।

**कहाँ पैदा आदम हवा से, याकी असल बिध इन।
सो बाहेर ढूँढ़े माएना जाहेरी, बिना मगज सुकन॥३६॥**

संसार के लोगों को आदम और हव्वा से पैदा हुआ माना गया है। अज्ञान (हव्वा) से पैदा होना ही इनकी वास्तविकता है। यही कारण है कि गुह्य रहस्यों को न समझ पाने

के कारण मात्र शब्दों के बाह्य अर्थ ही लेकर ये शैतान (अज्ञान) को बाहर ही खोजा करते हैं।

**और हदीस में यों कहा, दुनी राह देखे जाहिर दज्जाल।
माएना न पावें ढूँढ़े जाहेर, कहे हम लड़सी तिन नाल ॥३७॥**

हदीसों में भी ऐसा ही कहा गया है कि संसार के लोग कियामत के दिन दज्जाल के प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होने की बात देख रहे हैं। वे कुर्आन-हदीसों के गुह्य अर्थों को नहीं समझते हैं और उसे बाह्य जगत में खोजते हैं कि जब वह आयेगा तो हम उससे लड़ेंगे।

**सोई सूरत धुआं दज्जाल, दुनी तिन दई उरझाए।
मुसाफ बरकत ईमान बिन, छूटी आखिर हक हिदायत ताए ॥३८॥**

दज्जाल धुंए की तरह अज्ञानमय सूक्ष्म रूप धारण करके सबके दिल में बैठा है। उसने संसार को अपने मोहजाल में पूर्णतया उलझा रखा है। कियामत के समय अरब की धरती जब कुर्आन पाक की शिक्षा रूपी कृपा एवं परब्रह्म के प्रति विश्वास से रहित हो गयी तो लोगों ने कुर्आन में वर्णित परब्रह्म के निर्देशों को भी झुठला दिया।

**कयामत फल जिन सों गया, उलट बलाए लगी आए।
आग नजर आई दोजख, रही बदफैल देहेसत भराए ॥३९॥**

जिन्होंने कियामत के समय प्रकट होने वाले इमाम महदी स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की पहचान नहीं की, वे कियामत का लाभ नहीं ले सके। उन्हें तरह-तरह की विपत्तियों का सामना करना पड़ा। उन्हें दोजक की आग में जलने का भय सताने लगा। अपने बूरे कर्मों को याद कर वे भय के साये में जीने के लिये विवश हो गये।

**धुआं करें मार दिवाना, कहा ऐसे ही ईमान बिन।
छूटी मुसाफ नसीहत बरकत, तब ऐसा क्यों न होए हाल तिन ॥४०॥**

अज्ञान या संशय-रूपी धुंआ मनुष्य को पागल जैसा बना देता है। परब्रह्म के प्रति अपना विश्वास खो देने वाला व्यक्ति भी ऐसा ही हो जाता है। जिन लोगों से कुर्आन पाक की शिक्षा एवं सौभाग्य ने अपना नाता तोड़ लिया, उनका हाल भी पागलों जैसा क्यों नहीं होगा?

**कहे अबलीस मैं घेरोंगा, राह मारों तरफ चार।
वह जाने लई राह दीन की, इन बिध देऊं राह मार ॥४१॥**

इब्लीश कहता है कि जो धर्म की राह पर चलेगा, उसे मैं चारों तरफ से घेरकर मारूँगा अथवा उल्टी राह चला दूँगा यद्यपि वह यही सोचेगा की मैं सत्य की राह पर चल रहा हूँ, किन्तु मैं उसे अज्ञानता के अंधकार में भटका दूँगा।

भावार्थ- 'राह मारना' एक मुहाविरा है जिसका अर्थ होता है, सत्य अथवा लक्ष्य से विचलित कर देना।

**ढूँढ़े जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे कयामत के दिन।
जो कोई ताबे दज्जाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन ।।४२।।**

शरियत पर चलने वाले मुसलमान कियामत के निशानों को बाह्य रूप में प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं, तभी वे कियामत का आना स्वीकार करना चाहते हैं। जो दज्जाल के अधीन हैं, उनकी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि होती ही नहीं है।

**सिपारे चौबीस में, बड़ी साहेबी दज्जाल।
पोहोँचे दरियाव जंगलों, चले याके फिरके नेहेरें मिसाल ।।४३।।**

कुर्आन के २४वें सिपारे में दज्जाल की बहुत बड़ी शक्ति का वर्णन किया गया है, जिसमें कहा गया है कि मोह सागर से सभी फिरकों की ज्ञान-रूपी नहरें निकलती हैं। इनका जल संसार के सभी वनों के वृक्षों को (मनुष्यों को) सिंचित करता है।

**जो लिख्या अव्वल ताले मिने, सोई दुनी से होए।
और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए ।।४४।।**

कुर्आन में जीवों के भाग्य के संबंध में जो लिखा है वे वैसा ही आचरण करेंगे और करते हैं। परब्रह्म ने कुर्आन पाक में जो कहा है संसार में कोई भी उसके विपरीत कैसे कर सकता है?

सूरज मगरबका निसान (सूर्य का पश्चिम से उगना)

**कह्या मगरब ऊगसी सूरज, दुनियां के दिल पर।
नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखिर ।।४५।।**

कुर्आन में कहा गया है कि जब सूर्य पश्चिम में उगे तथा लोगों के दिलों पर छा जाए, किन्तु प्रकाश से रहित हो तब समझ लेना चाहिए कि कियामत का समय आ गया

है।

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, कहा रोसन नाहीं तित।
तो अक्स सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत ॥४६॥

मारिफत के ज्ञान का सूर्य अरब के विपरीत श्री महामति जी के धाम हृदय में भारत वर्ष में उग गया है। लेकिन ज्ञान-रूपी सूर्य उगने के बाद भी मुसलमानों के हृदय में अंधकार भरा हुआ है। परब्रह्म के प्रति विश्वास न रखने पर हृदय में अज्ञानता का अंधकार तो रहेगा ही। पश्चिम में हकीकत के प्रतिबिम्ब रूप शरीयत का सूर्य उगा हुआ है जो ईमान न रहने से अज्ञानता का अन्धकार लिये हुए है।

भावार्थ- सूर्य का आकाश में न उगकर दिल में उगने वाला कहने का अर्थ है, ब्रह्मज्ञान-रूपी सूर्य का उगना। पूर्व की अपेक्षा पश्चिम में उगने का अभिप्राय है, अरब के विपरीत भारत में हिन्दू तन में इमाम महदी स्वरूप मारिफत के ज्ञान रूपी सूर्य का उगना। शरीयत में बंधे हुए मुसलमान उन पर विश्वास नहीं करेंगे। फलतः वे इल्म-ए-लदुन्नी से वंचित रह जायेंगे। इसे ही कहा गया है कि वह मुसलमानों के लिये बिना रोशनी का होगा। इस सम्बन्ध में खुलासा (१५/३८, ३९) के निम्न कथन देखने योग्य हैं-

रूह अल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब ।

सूरज गुलबा आखिरी, मगरब ऊग्या तब ॥

नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब ।

जाहेरी ढूँढ़े सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखिरी सब ॥

रोसन बिना सूरज कहा, ऊग्या दिलों पर जे।

सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए ॥४७॥

भारत में उगे हुए ज्ञान-रूपी सूर्य को मुसलमानों के लिये बिना रोशनी का कहा गया है। तारतम ज्ञान का सूर्य भारत के ब्रह्ममुनियों के हृदय में उगा हुआ है। अरब के मुसलमानों के दिल में मात्र शरीयत का सूर्य है जिसमें अखण्ड ज्ञान का प्रकाश और

ईमान नहीं है। यही कारण है कि मक्के से वसीयतनामों के द्वारा यह संदेश आया है कि अब कियामत के निशान प्रकट हो गये हैं।

भावार्थ- जिस प्रकार इस सौर मण्डल में एक ही सूर्य है, उसी प्रकार परमधाम के ज्ञान का सूर्य एक समय में एक ही स्थान पर रहेगा। जब अरब में खुदाई इल्म (ब्रह्मज्ञान) का सूर्य ऊगा, तो वह पूर्व दिशा वाला माना गया। अब भारत में तारतम ज्ञान का सूर्य उदय हुआ है जो अरब की धरती वालों के लिये वह पश्चिम का माना जायेगा। वहां लोगों के हृदय में अज्ञानता का अन्धकार ही रहेगा। यह आगे की चौपाई में दर्शाया गया है।

**ए कह्या रसूलें इसारतों, ऐसी होसी बखत आखिर ।
मता ले जासी जबरआईल, तब रेहेसी अंधेर दिलों पर ।।४८ ।।**

मुहम्मद साहब ने संकेतों में यह बात कही थी कि कियामत के समय ऐसा होगा कि जिब्रील फरिश्ता कुर्आन का गुह्य ज्ञान अरब से उठाकर हिन्दुस्तान में ले जायेगा। तब अरब के लोगों के हृदय में अज्ञानता का अन्धकार छा जायेगा।

**कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन ।
होसी गुलबा जोर दज्जालका, तब ईमान नरेहेसी कि ।।४९ ।।**

उस समय ज्ञान का सूर्य पश्चिम में अर्थात् अरब के विपरीत भारत में उगा होगा। इसके पहले का जो ज्ञान रूपी सूर्य अरब में ऊगा था, उसका तेज भारत में चले जाने से वह नाममात्र का रह जायेगा। उसमें प्रकाश ही नहीं होगा। दज्जाल की शक्ति बहुत अधिक बढ़ी होगी और किसी भी व्यक्ति में परब्रह्म के प्रति सच्चा विश्वास नहीं होगा।

**जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजू मगरब ऊया नाहें ।
देखें न माएना अंदर, कह्या रोसन नहीं तिन माहें ।।५० ।।**

बाह्य दृष्टि वाले मुसलमान इसी प्रतीक्षा में बैठे हैं कि अभी तो मक्के में पश्चिम की ओर से सूर्य उगा ही नहीं है। वे आन्तरिक अर्थ नहीं लेते कि जिसमें कहा गया है कि उस सूर्य में तो प्रकाश ही नहीं होगा अर्थात् शरीयत के मुसलमानों को मारिफत के सूर्य से

कोई लाभ नहीं मिल सकेगा।

**तब सूरज पना क्या रह्या, कही बिन रोसन अंधेर।
सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई जो दुनियां घेर ॥५१॥**

उसे सूर्य कैसे कह सकते हैं, जिसमें प्रकाश ही न हो अपितु अन्धकार भरा हो। अरब के लोगों का ईमान न रहने से उनके हृदय में केवल कुफ्र (पाप, नास्तिकता) का ही अस्तित्व रह गया है जिसने सारे संसार को अपने बन्धन में ले लिया है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का आशय यह है कि ब्रह्म ज्ञान का सूर्य कियामत के समय मात्र भारत में ही चमकेगा और अरब में अज्ञानता का अन्धकार छाया रहेगा। वहां मात्र कुर्आन के नाम पर अज्ञानता का ही वर्चस्व रहेगा।

आजूज माजूजका निसान

**कहे आजूज माजूज, जाहेर होसी आखिर।
खाए जासी सब सय को, ऐसा होसी बखत फजर ॥५२॥**

कुर्आन में लिखा है कि कियामत के समय आजूज और माजूज प्रकट हो जायेंगे। उस समय जब इल्म-ए-लदुन्नी (तारतम ज्ञान) के प्रकाश में चारों ओर उजाला होगा, तब ये सम्पूर्ण सृष्टि को ही खा जायेंगे।

**दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम।
पीछे रहे जैसी कागद, सुबा देखे त्योंही कायम ॥५३॥**

अष्ट धातु की दिवाल को याजूज-माजूज निरन्तर ही चाट रहे हैं। सन्ध्या समय तक वह कागज जैसी पतली रह जाती हैं किन्तु प्रातःकाल तक वह पूर्ववत् हो जाती है।

भावार्थ- यह शरीर अष्ट धातुओं यथा, रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र और ओज से बना है। इसी प्रकार, यह ब्रह्माण्ड भी पंचमहाभूतों (तत्त्वों) एवं तीन गुणों (सत्त्व, रज और तम) से बना है। सत्त्व, रज तथा तम गुण भी हैं और पदार्थ थी।

**आजूज माजूज जुफ्त, गिनती लाख चार।
सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार ॥५४॥**

याजूज-माजूज के जोड़ों की गिनती चार लाख है। ये सारी दुनिया को पानी के समान पी जायेंगे। अष्ट धातु की दिवाल टूटने पर नाममात्र के लिये भी नहीं बचेगी।

तीन फौजां तिन होएसी, तूला ताबा साबा की।
दुनी जिमी सब खाए के, तीर आसमान चलावसी ॥५५॥

प्रातः, दोपहर एवं सन्ध्या काल ये इनकी तीन फौजें होंगी। ये धरती पर रहने वाले सभी प्राणियों को खाकर आकाश में भी अपने तीर छोड़ेंगी।

बड़ा कह्या सब चीज से, और आजूज सौ गज का।

चाटे दिवाल अष्टधातकी, कहेसुभां तोड़ून्सा अल्ला ॥५६॥

आजूज को सबसे बड़ा सौ गज का कहा गया है। वह अष्ट धातु की दिवाल को प्रातः से सायंकाल तक चाटता रहता है और सन्ध्या काल तक थक कर कहता है कि यदि अल्लाह ने चाहा तो कल प्रातःकाल मैं इसे तोड़ दूंगा।

कह्या और भी बड़ा सब चीजों से, माजूज बड़ा गज एक।

तंगचस्म चाटे दिवाल को, पीछे फेर कागद जैसी देख ॥५७॥

इन और सभी चीजों से भी बड़ा माजूज है जो एक गज का है। वह आंखें बन्द कर दिवाल को चाटता है और वह भी उसे कागज जैसी पतली देखकर छोड़ देता है।

ए कही औलाद याफिस की, बेटा नूह नबी का जे।

जो बाप कह्या तुरकस्थान का, देखो मिलाए कबीला ए ॥५८॥

याजूज-माजूज को याफिस का पुत्र और नूह नबी का पोता कहा जाता है। याफिस को तुर्किस्तान का पिता अथवा शासक कहा जाता है। हे साथ जी! इनकी वंशावली को मिलाकर देखिए।

इन्सा अल्लाताला जो लों ना कहे, तो लों तोड़ न सके दिवाल।

इन्सा अल्लाताला केहेसी आखिर, तब टूटसी कागद मिसाल ॥५९॥

जब तक याजूज-माजूज इंशा अल्लाह तआला नहीं कहेंगे अर्थात् परब्रह्म की जैसी इच्छा हो, नहीं कहेंगे तब तक इस अष्ट धातु की दिवाल को नहीं तोड़ सकेंगे। जब वो कियामत के समय में इंशा अल्लाह तआला कहेंगे, तब यह कागज के समान पतली दिवाल भी टूट जाएंगे।

भावार्थ- इंशा अल्लाह तआला (जैसी परब्रह्म की इच्छा) का कथन सर्वस्व समर्पण का परिचायक है। कियामत के समय में तारतम ज्ञान का प्रकाश हो जाने पर

ब्रह्मसृष्टियां सर्वस्व समर्पण के मार्ग पर चल देंगी तथा अपने शरीर और संसार से परे होकर अपने प्राणेश्वर को प्राप्त कर लेंगी। सृष्टि के प्रारंभ से ही बड़े-बड़े मनीषियों ने शरीर से परे होने के लिए रात-दिन अथक प्रयास किया। पहले कागज की तरह सूक्ष्म अहंकार ने उनकी अन्तर्दृष्टि को अखण्ड धाम में जाने नहीं दिया। कियामत के समय में ब्रह्मात्माएं इस असंभव कार्य को संभव करके दिखाएंगी। इस संबंध में कीर्तन ग्रन्थ का यह कथन अति महत्वपूर्ण है-

लगी वाली और कछून देखे, पिंड ब्रह्माण्ड वाको है री नाही ।

ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माही ।। कि. 9/4

आजूज माजूज जाहेर हुए, जो नाती नूह पैगंमर ।

खात जात हैं दुनी को, क्यों देखें बातून बिगर ।। ६० ।।

अब कियामत के इस समय में याजूज - माजूज जाहिर हो गए हैं जिन्हें नूह पैगम्बर के पोते कहा जाता है। इनके बारे में यह भी कहा जाता है कि यह सारी दुनिया को खा जाते हैं। किन्तु इसके सूक्ष्म अभिप्राय को जाने बिना वास्तविकता को कैसे जाना जा सकता है?

सोए निसान क्यों देखिए, ऊपर जाहेरी नजर ।

जाए ना इलम हक का, सो देखें क्यों कर ।। ६१ ।।

बाह्य दृष्टि से देखने पर याजूज-माजूज के इस निशान को कैसे जाना जा सकता है? जिनके हृदय में तारतम ज्ञान का प्रकाश नहीं है, वे भला इस रहस्य को कैसे जान सकते हैं?

निसान सब जाहेर हुए, जो दुनी देखे सहूर कर ।

जो खोल देखे आंखे रूहकी, तो देखे हुई फजर ।। ६२ ।।

यदि संसार के लोग गहन चिंतन करके देखें, तो यह विदित हो जाएगा कि कियामत के सभी निशान प्रगट हो गए हैं। यदि अपनी आत्मदृष्टि को खोलकर देखा जाए तो यह विदित होगा कि तारतम ज्ञान से अज्ञान-रूपी रात्रि का विनाश हो गया है और परमधाम के ज्ञान का उजाला फैल गया है।

निसान सब जाहेर हुए, आई बड़ी दरगाह से पुकार ।

चाक चढ़ी सब दुनियां, पर क्यों देखे बिना विचार ।।६३।।

मक्के से भी वसीयतनामें आ गए हैं, जिनमें यह लिखा है कि कियामत के सभी निशान प्रगट हो गए हैं। सारा संसार जन्म-मरण के चक्र में भटक रहा है, किन्तु बिना विचार किए कियामत के निशानों की पहचान कैसे की जा सकती है?

**हुए हिजाब आदम अकलें, हक गुझ पाइए हक इलम ।
ले माएने दुनी उपले, तासों जाहेर होत जुलम ।।६४।।**

इस संबंध में मनुष्य की बुद्धि कुंठित-सी हो गई है। परब्रह्म की गुह्य बातों को तो तारतम ज्ञान से ही जाना जा सकता है। संसार धर्मग्रन्थों के बाह्य अर्थों में ही फंसा रहता है, इससे प्रत्यक्ष रूप में बहुत ही अनर्थ होता है।

**एता दिल मजाजी न बूझहीं, तो नाती नूह नबी के ।
एनिजस हराम क्यों खाएसी, क्यों पावे माएना जाहेरी ए ।।६५।।**

झूठे दिलवाले ये संसार के जीव ये भी नहीं सोचते कि नूह नबी के पोते भला इस गंदी और पाप से भरी दुनियाँ को कैसे खाएंगे? बाह्य शब्दों का अर्थ करने वाले इसके अभिप्राय को कैसे जान सकते हैं?

**पढ़े करें माएना आजूज माजूज, तो नाती नूह नबी के ।
सो क्यों खाए नापाक दुनियां, पाक पैगंमर-जादे ।।६६।।**

शरीयत के ऊपर चलने वाले कुर्आन के विद्वान याजूज-माजूज के संबंध में इस प्रकार का विकृत अर्थ करते हैं। भला यह कैसे संभव है कि ये जो नूह नबी के पोते हों और पवित्र हृदय वाले याफिस पैगम्बर के पुत्र हों, वे इस अपवित्र दुनिया को क्यों खा जाएंगे?

**पढ़े दुनी मुसाफ आखिरी, खोले माएना बीच मुस्लिम ।
कहे पाकों को कुफर, होए ऐसा जाहेरी माएनों जुलम ।।६७।।**

संसार के लोग कतेब के आखिरी ग्रन्थ कुर्आन को पढ़ते हैं और मुसलमानों के बीच उसका बाह्य अर्थ करते हैं किन्तु इस प्रकार के बाह्य अर्थों से बहुत ही अनर्थ होता है क्योंकि वे पवित्र याजूज-माजूज को दुनियाँ को खा जाने वाला पापी कहते हैं।

**होत जुलम मायनों जाहेरी, तो भी छोड़ें ना ए सनंध ।
क्या करें हक इलम बिना, कहा देखीता ही अंध ॥६८॥**

बाह्य अर्थ लेने पर नूह नबी के निर्दोष पोतों पर मिथ्या आरोप लगाने का अत्याचार होता है। फिर भी ये शरीर के विद्वान कुर्आन पाक का बाह्य अर्थ करना नहीं छोड़ते। बेचारे, करें भी क्या? तारतम ज्ञान के अभाव में वे सूक्ष्म अर्थ कैसे कर सकते हैं? वे तो देखते हुए भी नहीं देख पा रहे हैं अर्थात् जानते हुए भी अन्जान बने हुए हैं।

**इनमें लिखी इसारतें, निसान पाइए नजर बातन ।
लिए ऊपर के माएने, क्यों पाइए कयामत दिन ॥६९॥**

कुर्आन पाक में संकेतों में ही सारी बातें लिखी हुई हैं। तारतम ज्ञान की सूक्ष्म दृष्टि होने पर ही कियामत के निशानों की पहचान होती है। कुर्आन मजीद के शब्दों के मात्र बाह्य अर्थ लेने से कियामत के समय को कैसे जाना जा सकता है?

**पढ़े कहें दिन कयामत, हकें रखे अपने हाथ ।
या तो हक आपै खोलहीं, या हादी खोलें जो हक साथ ॥७०॥**

कुर्आन पाक के विद्वान यह कहा करते हैं कि परब्रह्म ने कियामत के समय को निश्चित करना अपने हाथ में ले रखा है। इसके रहस्य को या तो परब्रह्म स्वयं ही उद्घटित (स्पष्ट) करेंगे या उनके साथ आने वाले हादी (इमाम महदी)।

**हक हाथ दिन तो कहे, जो हकें आप छिपाए ।
सो निसान पाए दिन पाइए, सो जाहेर दुनी क्यों देख्या जाए ॥७१॥**

संसार के लोग परब्रह्म के हाथों कियामत के समय को स्पष्ट होना मानते हैं क्योंकि उनकी धारणा है कि स्वयं प्राणेश्वर अक्षरातीत ने ही इस रहस्य को छिपा रखा है। कियामत के निशानों की पहचान हो जाने पर कियामत के आने के समय की भी पहचान हो जाती है, किन्तु संसार की यह जीव सृष्टि न तो निशानों की पहचान कर पा रही है और न ही कियामत के आने की।

**जो जाहेरी देखें जाहेर, माएने तो छिपे निसान ।
निसान देखोगे दिन कयामत, सो क्यों होए जाहेरियों पे हेचान ॥७२॥**

कुर्आन पाक के बाह्य अर्थ करने वाले कियामत के निशानों को भी बाह्य दृष्टि से

ही देखते हैं किन्तु कियामत के चिन्ह तो सूक्ष्म दृष्टि के सूक्ष्म अर्थों में छिपे हैं। कियामत के समय में ही कियामत के निशान प्रकट होने हैं। ऐसी स्थिति में भला शरीयत पर चलने वाले उसकी पहचान कैसे कर सकते हैं?

**जो कयामत देखावते जाहेर, तो निसान भी करते जाहेर।
तो करते ना यों इसारतें, जो दुनी देखावते बाहेर।।७३।।**

यदि परब्रह्म कियामत के समय को स्पष्ट रूप से प्रकट कर देते तो उसके निशानों (संकेतों) को भी प्रत्यक्ष रूप में दिखाना पड़ता। यदि संसार के लोगों को बाह्य रूप से ही सब कुछ दिखाना होता तो कियामत की बातों को संकेतों में लिखने की आवश्यकता ही क्या थी!

**बड़ा कहा सब चीजों से, ले जिमी लग आसमान।
दिन बीच दुनी की दौड़त, सौ तरफ खाहिस जहान।।७४।।**

याजूज को सभी वस्तुओं से बड़ा एवं धरती से लेकर आकाश तक ऊँचा इसलिये कहा गया है क्योंकि दिन के समय मनुष्य की सांसारिक इच्छायें सौ तरफ भागती हैं।

**बड़ा कहा इन माएनों, करी रोसन आकास जिमी।
सौ गज कहे सौ तरफों के, दौड़े खाहिस दिन आदमी।।७५।।**

दिन के समय धरती से लेकर आकाश तक सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश फैला होता है। इस अभिप्राय से उसको बड़ा कहा गया है। दिन में मनुष्य की लौकिक इच्छायें धरती से आकाश तक सौ तरफ भागती हैं। यही कारण है कि याजूज को १०० गज का कहा गया है।

**योंही कहा बड़ा माजूज, हुई रात आकास जिमी ले।
दुनी आंख मूंदे बीच रात में, भई दिस मानिंद एक गज के।।७६।।**

रात के समय धरती से लेकर आकाश तक चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा होता है। यही कारण है कि माजूज को बड़ा कहा गया है। संसार के लोग रात्रि के समय अपनी आंखों को बन्द करके सो जाते हैं। उनकी इच्छाएं एक मात्र सोने की तरफ होने के कारण माजूज को एक गज का गया है।

जो सय आई दिन में, तिन सबों खाहिस सौ तरफ।
सोई सबों एक तरफ रातकी, ए देखो माएने कर हरफ ॥७७॥

दिन के समय प्राणियों के जागते रहने के कारण उनकी सांसारिक इच्छायें सौ तरफ भागती रहती हैं किन्तु रात्रि के समय उनकी इच्छा मात्र सोने की होती है। हे साथ जी! इन शब्दों के गुह्य आशय पर विचार कीजिए।

जो कह्या सौ गज का, सो सब से बड़ा क्यों होए।
और भी कह्या सबसे बड़ा, तो क्यों एक गज कह्या सोए ॥७८॥

यह विचारणीय प्रश्न है कि जिस याजूज को १०० गज का कहा गया है, उसे सबसे बड़ा क्यों माना गया है? माजूज को भी सबसे बड़ा तो कहा गया है किन्तु उसे एक गज का ही लम्बा क्यों माना गया है?

भावार्थ— दिन का अभिप्राय नियम (शरीयत) के मार्ग से है। मनुष्य सौ प्रकार के कर्म के नियमों का पालन करने का प्रयास करता है जिससे वह अष्ट धातु की दिवाल – रूपी शरीर एवं ब्रह्माण्ड से परे होकर प्रियतम से मिलन कर ले। किन्तु सायंकाल तक भी वह इस लक्ष्य तक पहुँच नहीं पाता क्योंकि अहंकार-रूपी पतले कागज के समान दिवाल बची रहती है। रात्रि में सो जाने का तात्पर्य है, उपासना (तरीकत) मार्ग द्वारा अन्तर्मुखी होकर शरीर एवं संसार से परे हो जाना। तभी हृदय में अखण्ड ज्ञान का उजाला होना सम्भव है। किन्तु 'अस्मिता' के कारण कागज की दिवाल पूरी तरह से टूट नहीं पाती है। वस्तुतः न तो याजूज (शरीयत) से दिवाल टूटेगी और न ही माजूज (तरीकत) से। कियामत का समय आने पर जब इल्म-ए-लदुन्नी (तारतम ज्ञान) का अवतरण होगा तो उसके प्रकाश में हकीकत एवं मारिफत का मार्ग प्राप्त होगा जिसके द्वारा प्रेम में डूबकर शरीर एवं संसार से परे हुआ जा सकता है तथा परमधाम का प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर दिव्य ज्ञान के प्रातःकाल का आनन्द लिया जा सकता है। इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेने वाले के लिये संसार का अस्तित्व होते हुए भी नहीं रहता है। आगे की चौपाईयों २८, २९, ३० तथा ३१ में यही भाव व्यक्त किया गया है।

दिवाल कही दुनी उमर, ए टूटे रहे न कोए।
खाएंगे एही सबन को, उमर चाट काटत हैं दोए ॥७९॥

बाह्य अर्थ में दिवाल को संसार की उम्र बताया गया है। इसके टूटने पर कोई भी

नहीं बचेगा। याजूज और माजूज दोनों ही निरन्तर इसको चाटते रहते हैं। इस प्रकार, दिवाल को चाटकर ये सम्पूर्ण संसार को ही खा जायेंगे।

**जाहेरी कहे दिवाल, हद बांधी सिकंदर।
सो तो जाहेर किन देखी नहीं, बिना माएने खुले अंदर ॥८०॥**

कुर्आन का बाह्य अर्थ करने वाले ऐसा कहते हैं कि सिकन्दर जलकरनीन नामक एक बादशाह ने इस दिवाल का निर्माण किया था। किन्तु आश्चर्य है कि आज दिन तक किसी ने भी प्रत्यक्ष रूप से संसार में कोई भी ऐसी दिवाल नहीं देखी है। इस आख्यायिका (आलंकारिक वर्णन) का जब तक यथार्थ रहस्य विदित नहीं हो जाता, तब तक सत्य को नहीं जाना जा सकता।

भावार्थ- आध्यात्मिक साधना की सफलता पिण्ड-ब्रह्माण्ड से परे होने पर ही निर्भर करती है। सूफी मत की साधना में इसे ही अष्ट धातु की दिवाल को तोड़ना कहा जाता है। इस दिवाल के टूटने पर सारी सृष्टि का प्रलय बाह्य रूप से नहीं होगा, अपितु ज्ञान दृष्टि से होगा। छोटा कयामतनामा (१/१०४) में इसी तथ्य को जीते जी मरना कहा गया है-

**जीवते मारिए आपको, यो सबद पुकारत हक ।
जो जीवते न मरेगे मोमिन, तो क्या मरेगे मुनाफक ॥**

प्रश्न यह है कि क्या श्री राज जी सुन्दरसाथ को अपने शरीर को छोड़ने (मरने) के लिये कह रहे हैं या मन से मर जाने (मोह छोड़ने) को कह रहे हैं? यही भाव अष्ट धातु की दिवाल के टूटने के सम्बन्ध में भी लेना चाहिए।

**ए रात दिन काल दुनी के, एही काटें दायम उमर ।
एही खासी सब सय को, दिन पूरे कर फजर ॥८१॥**

कुर्आन पाक का बाह्य अर्थ करने वाले यही समझते हैं कि याजूज-माजूज (दिन-रात) इस संसार के लिये काल रूप है। ये ही इस संसार की उम्र को समाप्त कर देंगे और सारी सृष्टि को खा जायेंगे। जब संसार समाप्त हो जायेगा तो आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान का उजाला होगा।

**आजूज माजूज हुए जाहेर, केता किया दुनी पर मार।
अजून देखे दुनी स्याह दिल, जो पड़ी आलम में एती पुकार।।८२।।**

अब तो याजूज-माजूज भी प्रकट हो चुके हैं किन्तु प्रश्न यह है कि उन्होंने संसार में कितने लोगों को मार कर खा लिया है? अभी भी पक्षपातपूर्ण कालिमा से भरे हुए ये विद्वान इस बात पर विचार क्यों नहीं करते हैं, जबकि संसार में कियामत आने की इतनी तीव्र चर्चा तो हो ही रही है?

**औलाद कही याफिस की, जाके भाई स्याम हाम।
एतीनां से पैदा सब दुनी, एलिख्या बीच अल्ला कलाम।।८३।।**

कुर्आन में लिखा है कि याजूज-माजूज याफिस की सन्तान हैं। इन्हीं याफिस के भाई साम और हाम हैं। इन्हीं तीनों भाइयों से जल-प्रलय के पश्चात् पुनः सारी सृष्टि में मानव जाति का विस्तार हुआ है।

भावार्थ- वेद पक्ष में इन तीनों भाइयों को कल्याण जी (याफिस), श्री कृष्ण जी (साम) तथा बलराम जी (हाम) कहते हैं।

**ए तीनों भाइयों की पेहेचान, दुनी को होसी हक इलमें।
एक दीन होसी सबे, जब लई बूझ सबों दिलमें।।८४।।**

तारतम ज्ञान के उजाले में ही संसार के लोगों को इन तीनों भाइयों की वास्तविक पहचान होगी। जब सभी को यह सत्य विदित हो जायेगा कि कतेब पक्ष के साम, हाम और याफिस ही वेद पक्ष के श्री कृष्ण, बलराम और कल्याण जी हैं तो संसार के सभी लोग अपना वैर त्याग कर एक सत्य मत में स्थित होंगे।

**जो लों ले ऊपर के माएने, तो लों कबू न बूझा जाए।
सक छोड़ न होवे साफ दिल, जो पढ़े सौ साल ऊपर जुबांए।।८५।।**

जब तक शब्दों के केवल बाह्य अर्थ ही लिये जायेंगे, तब तक यथार्थ सत्य को जानना असम्भव-सा है। भले ही कोई अपनी जिह्वा से निरन्तर १०० वर्षों तक कुर्आन क्यों न पढ़ता रहे, किन्तु आन्तरिक अर्थ लिये बिना न तो किसी के संशय मिट सकते हैं और न किसी का हृदय ही निर्मल हो सकता है।

**इसारतें रमूजें अल्लाह की, सो लेकर हक इलम।
सो खोले रूहअल्लाह की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम॥८६॥**

परब्रह्म की संकेतों में कही गयी गुह्य बातों के रहस्यों को तारतम ज्ञान के प्रकाश में वे ब्रह्मात्मायें ही स्पष्ट कर सकती हैं जो परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा श्यामा जी की अंगरूपा कहलाने की शोभा रखती हैं। इनके दिल पर बिना कलम के ही सब कुछ लिखा होता है अर्थात् परब्रह्म की कृपा से इन्हें बिना किसी के बताये स्वतः ही सत्य का बोध हो जाता है।

**महामत कहे ए मोमिनों, खोल दिए चार निसान।
और भी तीन केहेत हों, ले बातून देखो दिल आन॥८७॥**

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! मैंने कियामत के प्रारम्भिक चार निशानों दाब्ह - तुल- अर्ज जानवर का प्रकट होना, काने दज्जाल का गधे पर सवार होना, सूर्य का पश्चिम में उगना एवं याजूज-माजूज के प्रकट होने का रहस्य स्पष्ट कर दिया है। अब इसके आगे के तीन अन्य निशानों के भी विषय में बताने जा रहा हूँ। आप इनके गुह्यार्थ को अपने हृदय में धारण कीजिए।

॥प्रकरण ॥८॥ चौपाई ॥५८८॥

बाब तीन निसानका रूहअल्ला इमाम असराफील

इस प्रकरण में श्यामा जी, इमाम महदी तथा अस्म्राफील के आने के सम्बन्ध में बताया गया है।

**चारों निसान ए कहे, और देखो कहे जो तीन।
ईसा इमाम असराफील, जिन खड़ा किया झंडा दीन॥१॥**

अब तब मैंने कियामत के चारों निशानों का वर्णन किया है। इसके आगे मैं शेष तीन निशानों ईसा रूह अल्लाह (श्यामा जी), आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ तथा अस्म्राफील के प्रकट होने का वर्णन करने जा रहा हूँ। इन तीनों ने ही सत्य धर्म का ध्वज स्थापित किया है।

**निसान लिखे दिन कयामत, सो तो रखे हक हादी हाथ।
या हादी खोलें हक इलमें, या खोलें सुनत-जमात ॥२॥**

कुर्आन पाक में कियामत के निशान (संकेत) तथा समय का विवरण संकेतों में ही है। इसके रहस्य या तो मूल स्वरूप श्री राज जी जानते हैं या हादी श्री प्राणनाथ जी। तारतम ज्ञान के प्रकाश में इसे या तो श्री राज जी प्रकट कर सकते हैं या ब्रह्ममुनि सुन्दरसाथ।

भावार्थ- मूल स्वरूप श्री राज जी या इस संसार में प्रकट होने वाले श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में कोई भी तात्त्विक अन्तर नहीं है। अन्तर केवल इतना है कि मूल स्वरूप परमधाम में नूरमयी हैं जबकि श्री प्राणनाथ जी का तन पंचभौतिक है और इस मायावी जगत में है। श्री मिहिरराज जी के (श्री महामति जी के धाम हृदय) में अक्षरातीत श्री राज जी अपने आवेश स्वरूप से विराजमान हैं जिन्हें श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) कहते हैं।

**तो लिखाया जाहेर कर, इतथें उठ्या झंडा नूर।
खड़ा किया बीच हिंदके, हुआ आसमान जिमी जहूर ॥३॥**

यही कारण है कि परब्रह्म ने अपने अपने आदेश से मक्के-मदीने से वसीयतनामों में यह प्रत्यक्ष रूप से लिखवाकर भिजवाया कि यहां से नूरी झण्डा उठकर हिन्दुस्तान (श्री पन्ना जी) में चला गया है जिसका ज्ञानमयी प्रकाश धरती से लेकर आकाश तक सर्वत्र फैला हुआ है।

**निसान लिखे सो सब मिले, जो कयामत के फुरमाए।
ताएनफा न देवे तोबा पीछली, जो अव्वल झंडे तले न आए ॥४॥**

कुर्आन पाक में कियामत के जो भी संकेत बताये गये हैं, वे सभी पूरे हो गये हैं। जो श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान-रूपी झण्डे की छत्रछाया में पहले नहीं आयेंगे, उन्हें न्याय के दिन तौबा (प्रायश्चित) करने का फल नहीं मिलेगा।

लिख्या फलाने सिपारे, दिन हुए तोबा नफा नाहें।

जो अव्वल आया नूर झंडे तले, सो आया गिरो नाजी माहें ॥५॥

कुर्आन पाक के एक सिपारे में लिखा है कि न्याय के दिन प्रायश्चित करने से कोई लाभ नहीं होगा। जो तारतम ज्ञान की छत्रछाया में पहले आयेगा, वही मोक्ष प्राप्त करने वाले समुदाय में होगा।

भावार्थ- 'बारही सदी फजर तमाम' (बड़ा कयामतनामा, १/१३) कथन के अनुसार वि. सं. १७४५ से पहले तक फजर की लीला समाप्त होनी चाहिए न कि वि. सं. १८४५ तक, क्योंकि बड़ा कयामतनामा (२४/४) का कथन है-

जिन पाई राह रोज कयामत, सो उठे फजर के नूर बखत ।

फजर पीछे जब ऊग्या दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन ॥

फजर की लीला की समाप्ति यदि हम वि. सं. १८४५ तक मानते हैं तो प्रश्न यह होता है कि मारिफत के ज्ञान की दोपहरी का समय कब होगा? निश्चित रूप से यह समय श्री जी की अन्तर्धान लीला से पूर्व ही लेना होगा। अतः वि. सं. १७४५ से १७५१ तक का समय मारिफत के ज्ञान सूर्य की दोपहरी का समय माना जा सकता है। इसी प्रकार, **चरने हैं सो तो आए सही, पर पिछले कारन ए वानी कही ।** प्रकाश हिन्दुस्तानी (३४/२०) के इस कथन से यह स्पष्ट है कि जब तक यह जागनी लीला चल रही है और श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान हमारे समक्ष है, तब तक यही समझना चाहिए कि अभी भी उजाले की ही लीला चल रही है। यह लीला १३वीं सदी के अन्त अर्थात् ई. सन् २०२२ तक निर्बाध रूप से चलती रहेगी। इसके पश्चात् १४वीं सदी में किस प्रकार संसार को ज्ञान मिलेगा और किस समय महाप्रलय होकर सबको अखण्ड मुक्ति मिलेगी, इसका उत्तर केवल श्री राज जी ही जानते हैं। 'ए दिन किया ना किने मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर' (बड़ा कयामतनामा, २४/५) का यही अभिप्राय है।

'तब तो दरवाजा मूंद के गया, पीछे तो नफा काहू को न भया' (बड़ा कयामतनामा, २३/४) का सम्बन्ध सातवें दिन (न्याय) की लीला से है। प्रकट वाणी में निम्न चौपाईयों

द्वार तोबाके खुले हैं अब, पीछे तो दुनिया मिलसी सब ।

जब द्वार तोबाके मूद्यो रैन गई भोर जो भयो ॥ (प्र.हि., ३७/११)

या भली या बुरी, जिनहूँ जैसी फैल जो करी ।
तब आंगू आए सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी ॥ प्र.हि.37/100
तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख लेवे अपने अंग ।
करूँ ब्रह्मसृष्टिको मिलाप, अखंड सूर उदे भयो आप ॥ (प्र.हि. 37/101)

के अनुसार भी यही सिद्ध होता है कि न्याय के दिन प्रायश्चित्त करने से कोई लाभ नहीं होगा। मारिफत सागर (१२/४, ५) की चौपाईयों में नूर झण्डे की छत्रछाया में 'अव्वल' प्रारम्भ में आने का जो प्रसंग है, वह १९वीं सदी से लेकर महाप्रलय के पहले तक का समय है। भले ही श्री जी इस समय पंचभौतिक तन से प्रत्यक्ष रूप से लीला नहीं कर रहे हों, किन्तु 'श्री कुलजुम स्वरूप' के रूप में उनका वाङ्मय कलेवर आज भी उनके स्वरूप की पहचान करा रहा है। 'पौढ़े भेले जागसी भेले' के कथनानुसार आज भी श्री राज जी का आवेश श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर ब्रह्मात्माओं से छठें दिन की जागनी लीला करा रहा है। 'सनद' ग्रंथ की चौपाई

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेहेंदी पाक पूरन ।
खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैन्यन ॥ (सनद, 42/16)

के अनुसार जब तक सभी ब्रह्मसृष्टियों की जागनी नहीं हो जाती, तब तक श्री राज जी का आवेश श्री जी के स्वरूप में यहीं लीला करता रहेगा।

कुल्ल अकल हक इलमें, होए पैदा बका हक दिन ।
इन इलमें जहान जुलमती, करी हिदायत रोसन ॥६॥

परब्रह्म के आवेश स्वरूप द्वारा कहे गये श्री कुलजुम स्वरूप में जागृत बुद्धि का ज्ञान है। इससे दिन के उजाले के समान अक्षरातीत तथा परमधाम की पहचान होती है। इस अलौकिक ब्रह्म ज्ञान के द्वारा मोह सागर से उत्पन्न होने वाली जीव सृष्टि को भी अखण्ड मुक्ति मिलेगी।

जब हक झडा नूर महंमदी, बीच खडा हुआ हिंद के ।
तब अक्स नूर ईमान का, रह्या अंधेर कुफर पीछे ॥७॥

जब मुहम्मद सल्ल. (साहब) के ज्ञान का ब्राह्मी ध्वज (खुदाई झण्डा) हिन्दुस्तान (श्री पन्ना जी) में आ गया, तब मक्के में ज्ञान एवं विश्वास का प्रतिबिम्ब रूप मात्र शरा (कर्मकाण्ड) ही रह गया। वहां के लोगों के हृदय में अज्ञानता के अन्धकार एवं पाप की प्रवृत्ति ने अपना डेरा डाल लिया (निवास बना लिया)।

**तो भी न विचारें दिल मजाजी, जो सखत लिख्या सौं खाए।
हक हादी उठाया वह झंडा, जिनें रात के अमल चलाए॥८॥**

मक्का-मदीना के धर्माधिकारियों ने बहुत ही कठिन सौगन्ध खाकर वसीयतनामें लिखे थे किन्तु इतना होने पर भी औरंगजेब तथा झूठे दिल वाले उसके धर्माधिकारियों ने उन पर विचार नहीं किया। अज्ञानता के अन्धकार में अरब में अद्वैत परमधाम के ज्ञान का जो ध्वज लगाया गया था, उसे परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी ने उठवा दिया।

**हक हादी बिना झंडा हकीकी, और किने न खड़ा किया जाए।
सो इन बखत सदी आखिरी, जिन झंडे रात के दिए उठाए॥९॥**

परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी इस संसार में सत्य के ध्वज को खड़ा नहीं कर सकता है। इस प्रकार, श्री जी ने इस ग्यारहवीं सदी के अन्त में अज्ञानता के अन्धकार में चल रहे सभी झण्डों को हटवा दिया।

भावार्थ- ध्वज गरिमा का प्रतीक होता है। तारतम ज्ञान के अखण्ड सूर्य के समक्ष स्वात्मिक ज्ञान कहाँ ठहर सकता था? इसे संसार ने वि. सं. १७३५ में हरिद्वार में तथा वि. सं. १७३६ में औरंगजेब के अधिकारियों ने अपने सामने स्पष्ट देखा। इस प्रकार, ध्वज उठाने का तात्पर्य है, उनके ज्ञान का निस्तेज, गरिमा हीन हो जाना।

**वह झंडा जो जाहेरी, सो भी हक हादी बिना कौन उठाए।
जिन जैसी नीयत, तिन तैसी दर्ई पोहोंचाए॥१०॥**

शरियत (नियम) के झण्डे को भी श्री जी के अतिरिक्त और कौन उठवा सकता था? जिसकी जैसी भावना होती है, उसको वैसा ही फल प्राप्त होता है।

**लिखियां ए बुजरकियां, ए जो कहियां बीच आखिरत।
सो कहें हाथ हमारे, दुनी फल पावसी कयामत॥११॥**

कुर्आन पाक में ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) की जो महिमा लिखी है, वह कयामत के समय प्रकट होने वाले ब्रह्ममुनियों की है किन्तु अरब के ये शरियत का पालन करने वाले मुस्लिम कहते हैं कि कुर्आन में हमारी ही महिमा गायी है तथा हम ही इस संसार को अखण्ड मुक्ति भी देंगे।

कहें हम खासी उमत, और हमहीं वारस कुरान।

कजा करत हैं हमहीं, हमहीं खावंद ईमान ॥१२॥

हम ही अल्लाहतआला की खास उम्मत (ब्रह्मसृष्टि, मोमिन) हैं तथा कुर्आन के ज्ञान का उत्तराधिकार भी हमें ही प्राप्त है। सबका न्याय भी हम ही करेंगे तथा परब्रह्म पर एकमात्र विश्वास केवल हमें ही है।

ए लिखे जाहेर माएने, सूरज ऊगसी दिलों पर।

पहाड़ पूजें हम निसान, बैत बका देखावें फजर ॥१३॥

कुर्आन पाक में कियामत के सम्बन्ध में यह स्पष्ट रूप से लिखा है कि सबके हृदय पर अज्ञानता के अन्धकार का सूर्य उग जायेगा। वे लोग कहेंगे कि कियामत के निशान के रूप में हम जिस पर्वत की पूजा करते हैं, वही अखण्ड परमधाम दिखलायेगा तथा ज्ञान का प्रकाश करेगा।

हम देखें राह निसान की, जो कहे बड़े कयामत।

देखें पैदा बैत अल्लाह से, जो हमसों करी सरत ॥१४॥

शरियत पर चलने वाले ये लोग कहते हैं कि मुहम्मद स. अ. व. व. ने हमें वचन दिया है कि कियामत के सभी निशान मक्के-मदीने से ही प्रकट होंगे। अब हम कियामत के उन्हीं बड़े निशानों की बाट देख रहे हैं।

लिखे निसान कौल कयामत के, ले माएने बातन।

सो माएने मगज पाए बिना, समझ न परी किन ॥१५॥

कुर्आन पाक में कियामत के सम्बन्ध में जो निशान लिखे हैं, उनके सूक्ष्म अर्थ लेने पर ही उनका वास्तविक आशय प्रकट होता है। इसलिये किसी को भी कियामत की पहचान न हो पाने का कारण यह है कि उन्होंने कुर्आन के कथनों का गुह्य अर्थ ही नहीं जाना है।

सात निसान बड़े कहे, जासों पाइए कयामत।

सोए दुनी तब देखसी, ऊगे सूरज मारफत ॥१६॥

कुर्आन पाक में सात बड़े निशान कहे गये हैं जिनसे कियामत की पहचान होती है। इस प्रकार श्री कुलजम् स्वरूप के रूप में मारिफत के ज्ञान-रूपी सूर्य के उग आने पर

ही संसार के लोगों को कियामत की वास्तविक पहचान हो सकेगी।

**तो लों अंधेरी रात की, छूटे नहीं क्यों ए कर।
देखें निसान बातून माएनों, तब पावें दिन आखिर ॥१७॥**

तब तक संसार के लोग अज्ञानता की रात्रि में ही भटकने के लिये विवश रहेंगे। जब वे तारतम ज्ञान के प्रकाश में कियामत के संकेतों का गुह्य अर्थ समझ जायेंगे, तभी वे कियामत (आखिरत) के आने की पहचान कर पायेंगे।

**जो लों लिया जाहेरियों, माएना ऊपर का।
तब लग फना बीचमें, हुए जिद कर तफरका ॥१८॥**

जब तक शरियत पर चलते वालों ने कुर्आन पाक के कथनों का मात्र बाह्य अर्थ ही लिया, तब तक वे इस नश्वर संसार में भटकते रहे तथा परमधाम की सुगन्धि से वंचित रहे। आपस में अहंकार के कारण वे लड़-झगड़कर अलग-अलग पन्थों में बंट गये।

**कौल तोड़ जुदे हुए, तो नारी कहे बहत्तर।
लिख्या जलसी आगमें, और कहा कहे इन ऊपर ॥१९॥**

कुर्आन पाक के वास्तविक आशय से अलग होने के कारण वे अलग-अलग ७२ फिरकों में बंट गये। उन्हें दोजखी (नरकगामी) कहा जाता है। उनके विषय में कहा गया है कि उन्हें दोजख की अग्नि में जलना पड़ेगा। इससे अधिक कठोर बात और क्या कही जा सकती है?

**हक अर्स बका तब पाइए, जो खुले हक हकीकत।
दिन हुए सब देखिए, सूरज ऊगे मारफत ॥२०॥**

मारिफत के ज्ञान-रूपी सूर्य (श्री कुल्जुम स्वरूप) के अवतरित होने पर ही उसके उजाले में अक्षरातीत की यथार्थ पहचान होती है। तभी अक्षरातीत परब्रह्म तथा अखण्ड परमधाम का साक्षात्कार किया जा सकता है।

**सूरज ऊया मगरब दिलों, होसी जाहेर दाभा जिमी से।
अजूं देखें नहीं दज्जाल को, जो जाहेर हुआ सबमें ॥२१॥**

अरब के लोगों के दिल पर अज्ञानता के अन्धकार को फैलाने वाला सूर्य उग आया है जिससे दाब्-तुल-अर्ज जानवर भी प्रकट हो गया है। किन्तु वे आज भी इस तथ्य को जान नहीं पा रहे हैं कि अज्ञान-रूपी दज्जाल (शैतान) सबके हृदय में प्रकट हो चुका है।

**नूर झंडा महंमदी इमामें, किया खड़ा हकीकी दीन।
क्यों दाखले मिले दिल मजाजी, दिल दुस्मन तोड़े आकीन ॥२२॥**

जब आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ अ. त. फ. श. श्री प्राणनाथ जी ने सत्य धर्म को प्रकाशित करने वाले तारतम ज्ञान का ध्वज भारत में स्थापित कर दिया तो उसे मिथ्या दिल वाले शरीयत के लोग कैसे स्वीकार कर सकते थे? उनके दिल में रहने वाले शैतान (अज्ञान) ने उन्हें श्री जी पर विश्वास आने नहीं दिया।

**सूर बाजत असराफील, क्यों सुने दिल कान बिगर।
ओतों ले ले माएने बातून, निसान धरे कौल पर ॥२३॥**

अब जागृत बुद्धि के तारतम का डंका बज रहा है किन्तु जिन लोगों के न तो दिल है और न कान हैं, भला वे उसे कैसे सुन सकते हैं? अब तो अस्म्राफील फरिश्ता कियामत के संकेतों के गुह्य अर्थों को सार्वजनिक रूप से शब्द रूप में प्रकाशित कर रहा है।

**तो कह्या रसूलें हदीसमें, सूर देसी पहाड़ उड़ाए।
सो पहाड़ जरे ज्यों खाली मिने, फिरे उड़ते ना ठेहेराए ॥२४॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने हदीसों में कहा है कि अस्म्राफील अपने एक सूर में बड़े-बड़े पर्वतों को उड़ा देगा। वे पर्वत शून्य में धूल के कणों की भांति ऊड़ते फिरेंगे और कहीं भी पुनः धरती पर ठहर नहीं पायेंगे।

भावार्थ- तुरही में सूर फूंकने का तात्पर्य है- ज्ञान का अखण्ड रूप से अवतरित होना। अज्ञानता के अन्धकार को प्रसारित करने वाले बड़े-बड़े विद्वान, उलेमा एवं पादरी आदि में विद्यमान द्वेष तथा अहंकार ही पर्वत हैं। तारतम ज्ञान के दिव्य प्रकाश में ये निस्तेज हो जायेंगे तथा अपनी अस्तित्व विहीनता का अनुभव करेंगे। इसे ही धूल के कणों की भांति असहाय अवस्था में उड़ना कहा गया है।

सो मुसाफ मगज असराफीलें, किए जाहेर कई विध गाए।

तो एक सूरें दुनी फना करी, किए दूजे सूरें कायम उठाए॥२५॥

इस प्रकार, अस्माफील फरिश्ते ने कुर्आन के गुह्य भेदों को अनेक प्रकार से गाकर प्रकाशित किया। उसने एक सूर से अज्ञान-रूपी संसार को नष्ट कर दिया तो दूसरे सूर से परमधाम का ज्ञान देकर संसार के जीवों को अखण्ड मुक्ति दिला दी।

भावार्थ- सनद, खुलासा, मारिफत सागर और कियामतनामा में कुर्आन के गुह्य रहस्यों को दर्शाया गया है। इन चारों ग्रन्थों में एक ही तथ्य को अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत किया गया है। सनद तथा खुलासा में वेद और कतेब पक्षों के एकीकरण के रूप में कुर्आन के भेद प्रस्तुत किये गये हैं तो मारिफत सागर एवं कियामतनामा में हकीकत एवं मारिफत की दृष्टि से उन्हीं तथ्यों को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि वे मजहबी दिवालों को तोड़कर सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक लगे तथा सम्पूर्ण मानव समाज के लिये कल्याणकारी बनें। इसे ही कुर्आन के रहस्यों को कई प्रकार से गाया हुआ कहा गया है।

ए पहाड़ जरे ज्यों क्यों हुए, क्यों देखे बिना दिल विचार।

पहाड़ कहे कुफर खुदी के, सो हुए पाक जरे ज्यों निरवार॥२६॥

इन बड़े-बड़े पर्वतों को धूल के कण के समान क्यों माना गया है? कुर्आन पाक के विद्वान अपने हृदय में विचार किये बिना ऐसी धारणा क्यों बना लेते हैं? धर्म के अग्रगण्य लोगों में ईर्ष्या तथा अहंकार की प्रवृत्ति के कारण ही पर्वतों से उनकी उपमा दी गयी है। श्री जी के तारतम ज्ञान के प्रकाश में उनका अहंकार समाप्त होकर धूल के समान नगण्य हो गया और वे पवित्र हो गये।

पाक जो होवें इन बिध, जब उड़े गुमान कुफर।

पाक हलके हुए बोझ डालके, तब आए बीच नूर नजर॥२७॥

यदि संसार के विद्वानों के द्वेष तथा अहंकार नष्ट हो जाय तो वे पवित्र हो सकते हैं। तारतम ज्ञान के प्रकाश में भिन्न-भिन्न पन्थों के अग्रगण्य विद्वानों ने अपने द्वेष तथा अहंकार के बोझ को हटाकर स्वयं को पवित्र कर लिया। इसके पश्चात् उन्हें बेहद में अखण्ड होने का सौभाग्य प्राप्त हो गया।

लिया दुनी पे ईमान, और दुनियां की बरकत।

खैच लिया कुरान को, और फकीरों की सफकत॥२८॥

जिब्रील फरिश्ते ने अरब की धरती से कुर्आन की बरकत (ज्ञान-रूपी लाभ) एवं फकीरों की सफकत (आशीर्वाद) ले लिया, जिससे वहां के लोगों में परब्रह्म के प्रति विश्वास नहीं रह गया और वे परब्रह्म की कृपा-दृष्टि से वंचित रह गये।

**छीन लिया एता मता, तो भी न हुई खबर।
क्यों देखे मजाजी दुनियां, जो लों बातून नहीं नजर॥२९॥**

अरब की धरती से इतनी निधियां छीन ली गयी, फिर भी उन्हें इसकी जानकारी नहीं हुई। संसार के लोगों को जब तक अन्तर्दृष्टि प्राप्त नहीं होती, तब तक वे इस रहस्य को कैसे जान सकते हैं?

**बड़ी दरगाह से नामें वसीयत, पुकार करी केती आए।
तो भी न विचारे दिल मजाजी, जो ऐसे लिखे सखत सौं खाए॥३०॥**

मक्का से वसीयतनामों लिखकर आये और उन्होंने कितनी बार पुकार-पुकार करके कहा कि कियामत आ गयी है। मक्का के धर्माधिकारियों ने बहुत ही कठिन सौगन्ध खाकर वसीयतनामों को लिखा था किन्तु बादशाह और उसके झूठे दिलवाले अधिकारियों ने उस पर जरा भी विचार नहीं किया।

**हिसाब कहा होसी हिंदमें, पुरसिस करसी हक।
हक इलम ले रूहअल्ला, करसी सबों बेसक॥३१॥**

हदीसों में कहा गया है कि हिन्दुस्तान में सबका हिसाब होगा जिसमें स्वयं परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में न्याय करेंगे। परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा श्री श्यामा जी के तारतम ज्ञान से सभी संशय रहित हो जायेंगे।

भावार्थ- हिसाब करने का आशय है, ज्ञान दृष्टि से या कार्य की दृष्टि से समीक्षा करना। इसके पश्चात् ही न्याय हो सकता है। भारत की धरती पर जो न्याय होगा, वह ज्ञान दृष्टि से होगा। तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी मत-पन्थों की समीक्षा होगी कि क्या सत्य है और क्या असत्य है? योगमाया के ब्रह्माण्ड में शुभ-अशुभ कर्मों की विवेचना (समीक्षा) करके बहिश्तों का निर्णय होगा।

**कई बुजरक कहावते रातमें, बैठे बैठअल्ला ले।
हक हममें बैठ करें हिसाब, जानें हमहीं सिर सबके॥३२॥**

अज्ञानता के अन्धकार में मक्का के बहुत से धर्माधिकारी संसार में सर्वोपरि कहलाते थे। वे सर्वदा यही सोचा करते थे कि स्वयं परब्रह्म हमारे मध्य बैठकर सबका हिसाब लेंगे, तत्पश्चात् न्याय करेंगे। वे यही मानते थे कि हम सर्वोपरि हैं। हमारे जैसा कोई नहीं।

भावार्थ— जब एक कट्टरवादी मानसिकता वाला सामान्य मुसलमान भी स्वयं को मोमिन और दूसरे पन्थों के लोगों (गैर मुस्लिमों) को काफिर समझता है तो खलीफा आदि मक्के के धर्माधिकारीगण स्वयं को क्या मानते होंगे, यह सहज ही जाना जा सकता है।

**कहे पहाड़ कुफर खुदी के, बिन हक इलमें जाहेर बढे ।
तब हकें मता छीन ले, पहाड़ किए हलके ॥३३॥**

मनुष्य में छिपे हुए द्वेष एवं अहंकार की उपमा पर्वतों से दी गयी है जो तारतम्य ज्ञान के अभाव में निरन्तर बढ़ते रहते हैं। श्री प्राणनाथ जी ने तारतम्य ज्ञान से इनके संशयात्मक स्वात्मिक ज्ञान को नतमस्तक कर दिया और उनका अहंकार दूर करके उन्हें हल्का कर दिया।

**जब यों बुजरक हलके हुए, हिसाब दिए पाक होए ।
कुफर खुदी जब उड़ गई, तब गुसल किया सब अंग धोए ॥३४॥**

इस प्रकार, जब भिन्न-भिन्न पन्थों के अग्रगण्य व्यक्ति अपने द्वेष-अहंकार को खोकर हल्के हो गये तो उन्होंने पवित्र होकर अपना हिसाब दिया। द्वेष-अहंकार से रहित होकर उन्होंने परब्रह्म के प्रेम-रूपी जल में अपने सभी अंगों को पवित्र किया।

**जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार ।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार ॥३५॥**

जिसने श्री प्राणनाथ जी को जिस रूप में पहचाना, वे उससे उसी रूप में मिले। इस प्रकार, सबको अपनी पहचान के अनुसार ही फल (बदला) मिला। अब जीतना या हारना अपने आचरण के ऊपर निर्भर करता है।

भावार्थ— सुर असुर सबों को एपति, सब पर एकै दया ।
देत दीदार सबन को सांई, जिनहूं जैसा चाह्या ॥ (कि. ५९/७)

श्री प्राणनाथ जी प्राणेश्वर अक्षरातीत हैं। वे हिन्दू-मुस्लिम सभी के लिये समान हैं। उन्हें किसी ने श्री कृष्ण रूप में देखना चाहा तो किसी ने युगल स्वरूप, मुहम्मद साहब या श्री देवचन्द्र जी के रूप में। प्रियतम ने उनकी भावनाओं के अनुसार दर्शन देकर उनके हृदय की प्यास बुझायी। रामनगर एवं उदयपुर के भाग्यहीन राजा भी थे, जिन्होंने अपने आत्म-कल्याण का स्वर्णिम अवसर खो दिया। वहीं शेखबदल, जहान मुहम्मद एवं मिहिन खां जैसे भाग्यशाली भी थे जिन्होंने शरीयत की सीमाओं को तोड़कर अपने आराध्य को पा लिया।

**हिसाब किया देखे नहीं, हादिएं करी फजर।
किए फैल पुकारे बुजरक, बिन ईमान न देखे नजर ॥३६॥**

यद्यपि श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान का उजाला कर दिया है और सबका हिसाब भी कर दिया है किन्तु धर्म के इन अग्रगण्य लोगों को यह दिखायी ही नहीं देता। वे अपने ही कार्यों का ढिंढोरा पीटते रहते हैं। जब उनके पास ईमान ही नहीं है तो उन्हें श्री जी की लीला भला कैसे दिखायी दे सकती है?

**क्यों ए न आवे पढ़ों ईमान, करें न दिल सहूर।
तो छीन ले भेजी वारसी, आप मोमिनो हाथ हक नूर ॥३७॥**

तथाकथित शरीयत के इन विद्वानों को इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी पर विश्वास क्यों नहीं होता है? वे अपने हृदय में इसका विचार क्यों नहीं करते? यही कारण है कि प्रियतम परब्रह्म ने कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को जानने का उत्तराधिकार इनसे छीन लिया है और तारतम ज्ञान के साथ उसे ब्रह्ममुनियों को सौंप दिया है।

**लिख्या सिपारे दूसरे, कहे असराफ मूसा एक हम।
महंमद मेला और कर, देखें क्यों चलावे हुकम ॥३८॥**

कुर्आन पाक के दूसरे सिपारे में लिखा है कि यहूदी कहते थे कि हम और एकमात्र मूसा पैगम्बर ही सर्वश्रेष्ठ हैं। हम देखते हैं कि मुहम्मद साहब किस प्रकार और लोगों को संगठित करके अपने ज्ञान द्वारा निर्देशन देते हैं?

भावार्थ- बिहारी जी तथा उनके अनुयायी यही सोचते थे कि हम ही सब कुछ है। देखते हैं, गादी से दूर रहकर श्री मिहिरराज जी कैसे जागनी कर लेते हैं?

**मिलावा महंमद का, ए जो मिले दरवेस।
देखें हम बिना काम महंमद का, क्यों कर जावे पेस ॥३९॥**

मुहम्मद साहब के अनुयायियों में जो फकीर थे, वे भी यही सोचते थे कि देखते हैं कि हमारे बिना मुहम्मद साहब का काम कैसे सफल होता है?

भावार्थ- मुकुन्द दास जी, गोवर्धन दास जी तथा श्याम भाई आदि के मन में था कि हमारे सहयोग के बिना श्री जी भला शकुमार की जागनी कैसे कर सकते हैं?

**जो मुनाफक ताना मारते, कौल करते थे रद।
मारें याही सिक से, अब नूर झंडे महंमद ॥४०॥**

मुनाफिक लोग पीठ पीछे मुहम्मद साहब के ऊपर व्यंग्य कसते थे और उनके निर्देशों को नहीं मानते थे। इसी बहुदेववाद और अहंकार के कारण उनका पतन हो गया। अन्ततोगत्वा उन्हें मुहम्मद सल्ल. (साहब) के अद्वैत सिद्धान्त को स्वीकार करना पड़ा।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी मस्कत, अब्बासी, दीपबन्दर, उदयपुर, राम नगर आदि जिन-जिन स्थानों पर गये, सभी जगह बहुदेववादी जड़ पूजकों ने उनके लिये कठोर शब्दों का प्रयोग किया किन्तु अन्ततोगत्वा तारतम ज्ञान के प्रकाश में उन्हें अपनी भूल का आभास हुआ और उन्हें श्री जी के चरणों में आने के लिये विवश होना पड़ा।

**रसूल ताना ए सुन के, फेर मेहेर कर बुलाए।
वह तो भी टेढ़ाई न छोड़े, रसूल मेहेर न छोड़ें ताए ॥४१॥**

बहुदेव पूजकों के व्यंग्य भरे कुटिल वचनों को भी मुहम्मद साहब प्रेम से सुनते थे और अपनी कृपा दृष्टि से उन्हें बार-बार बुलाते थे। फिर भी न तो वे अपना टेढ़ापन छोड़ते थे और न मुहम्मद स. (साहब) अपनी प्रेम भरी कृपा छोड़ते थे।

**तब आयत भेजी हक ने, ल्याया जबराईल।
सो देखो आयत में, हक केहेसी असराफील ॥४२॥**

तब परब्रह्म ने एक आयत भेजी जिसे जिब्रील फरिश्ता लेकर आया। उस आयत में लिखा था कि कियामत के समय अस्म्राफील फरिश्ता अक्षरातीत की पहचान करायेगा। हे साथ जी! आप उस आयत को देखिये।

भावार्थ- कुर्आन के पा. ११ सू. १० आ. २५-२६ “वल्लाहु यद्अू इल्ला इला सिरातिम्मुस्तकीमिन् लिल्लजीन अह्सनुल्हुस्ना व जियादतुन् व कतरुंव्व असूहाबुल् - जत्रति हुम् फीहा खलिदून” अर्थात् सलामती के घर की तरफ बुलाता है। जिसको चाहता है उसको अच्छा मार्ग दिखाता है। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और कुछ बढ़ कर भी और गुन्हागारों की तरह उनके मुंह पर स्याही न छाई होगी और न जिल्लत ।वही जन्नती है कि वह उसमें हमेशा रहा करेंगे।

पारः ३० सूरत ६५ आयत १-४ वत्तीनि वज्जैतूनि(१) वतूरि सीनीन(२) व हाजल् - बलदिल् - अमीनि(३) लकद् खलक्नल् - इन्सान फी अह्सनि तक्वीमिन्(४)” कसम है तीन यानि अंजीर और जैतून की, और तूर सीनीन पहाड़ की, और हम अमन शान्ति वाले शहर मक्का की कसम है, कि हमने मनुष्य अच्छी से अच्छी हालत में पैदा किया।

पा. ३० सू. ६६ आ. १-४ “इकूरअू बिस्मि रब्बिकल्लजी खलक अल्लजी अल्लम बिल् - कलमि” “अर्थात् अपने परवरदिगार के नाम से पढ़ो जिसने दुनिया को बनाया, पैदा किया और तुम्हारा परवरदिगार बड़ा करम वाला है, जिसने कलम के जरिये इल्म सिखाया।

लिख्या सखत सौं खाए के, गया हमसों ईमान मुसाफ।

सोहादिएंदेखायाझंडा अपना, करसी हिंद मेंहकइन्साफ।।४३।।

मक्के के धर्माधिकारियों ने कठोर शब्दों में सौगन्ध खाकर वसीयतनामें लिखवाये और हिन्दुस्तान में भिजवाये। उनमें स्पष्ट लिखा था कि हमसे ईमान तथा कुर्आन की शक्ति चली गयी है। इमाम महदी ने हिन्दुस्तान में अपना नूरी झण्डा स्थापित कर दिया है। उनके स्वरूप में स्वयं परब्रह्म ही सबका न्याय करेंगे।

सो भी लिख्या दिन कयामत, यों वारसी दई पोहोंचाए।

सो देखो सिपारे बाईसमें, जो उमी रोसन किएआए।।४४।।

कुर्आन के २२ वें सिपारे में कियामत का समय भी लिखा है, जिसे आप देख सकते हैं। उसमें यह भी लिखा है कि परब्रह्म ने कुर्आन के गुह्य रहस्यों को खोलने का अधिकार उन ब्रह्ममुनियों को दिया है जो अरबी साहित्य के ज्ञान की दृष्टि से अनपढ़ कहे

जाते हैं।

भावार्थ- कुर्आन सि. २२ सू. ३४ आ. २६/३० “व यकूलून मता हाजल्वऽदु इन् कुन्तुम् सादिकीन” और नास्तिक उनसे पूछते हैं कि बताओ अगर तुम सच्चे हो तुम्हारा यह वायदा (कियामत) कब पूरा होगा। “कुल् लकुम् मीआदु यौमिल्ला तसूतअखिरून अन्हु साअतंव्व ला तस्तकदिमून” यानि कह दो कि तुम से एक दिन का वायदा है। न एक घड़ी पीछे रहोगे, न आगे बढ़ोगे।”

पार: १७ सूर: हज्ज २२ आयत ४७ “व यस्तऽजिलूनक बिल्अजाबि व लंय्युख्लिफल्लाहु वऽदह व इन्न यौमिन् इन्द रब्बिक कअल्फि सनतिम्मिम्मा तअुद्दून” यानि और ये तुमसे अजाब के लिये जल्दी कर रहे है। और खुदा अपना वायदा हरगिज खिलाफ नहीं करेगा और बेशक तुम्हारे परवरदिगार के नजदीक एक दिन तुम्हारे ही हिसाब के मुताबिक एक हजार साल के बराबर है।

**खोज्या ना ढूंढ्या ना पढे, दिए मोमिनो हिस्से कर।
जो एता झंडे किया रोसन, तो भी देखे न दुनी नजर।।४५।।**

ब्रह्ममुनियों को कुर्आन के गुह्य रहस्यों को जानने के लिये जगह-जगह विद्वानों के पास जाकर न तो खोजना पड़ता है और न ग्रन्थों में ही ढूंढना पड़ता है। यहां तक कि उन्हें दिन-रात पढ़ना भी नहीं पड़ता है। स्वयं परब्रह्म ने इन्हें अपनी कृपा दृष्टि से दिव्य ज्ञान का अधिकारी बनाया है। यही कारण है कि उन्होंने चारों ओर तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलाया है (झण्डा स्थापित किया है)। इतना होने पर भी संसार के जीव अपनी अन्तर्दृष्टि को खोलकर सत्य की पहचान नहीं कर पा रहे हैं।

**ए सोई हुआ जो फुरमाया, आगूं भी फुरमाया होए।
सो जरा न छूटे फुरमाएसे, तुम देखोगे सब कोए।।४६।।**

कुर्आन पाक में जो कुछ लिखा है, अब तक वही हुआ है और भविष्य में भी होगा। आप सभी अपनी आंखों से स्वयं ही देखेंगे कि कुर्आन पाक के कथन के विपरीत तीनों कालों में कुछ भी घटित नहीं हो सकता है।

**कुरान ल्यावे आखिर, आवसी फुरमान बरदार।
अमल करे कहे माफक, वाको सक नहीं वार पार।।४७।।**

कुर्आन में लिखा है कि कियामत के समय में इमाम मुहम्मद महदी श्री कुल्जुम

स्वरूप के रूप में आखरी कुर्आन ले आयेंगे, जिसमें कुर्आन के गुह्य रहस्य निहित है। इसी समय वे ब्रह्ममुनि भी अवतरित होंगे, जिन्हें कुर्आन के रहस्यों को जानने का पूरा अधिकार है। वे कुर्आन की हकीकत-मारिफत के निर्देशानुसार आचरण करेंगे। उनमें परमधाम तथा परब्रह्म के प्रति किसी भी तरह का संशय नहीं रहेगा।

एता दिल मजाजी न बूझहीं, सोई खोले रमूजें किताब ।

ए बड़े काम कौन करसी, बिना आखिरी खिताब ॥४८॥

झूठे दिल वाले शरियत के ये लोग इतना भी नहीं समझ पा रहे हैं कि एकमात्र श्री प्राणनाथ जी ही कुर्आन के रहस्यों को प्रकट कर रहे हैं। इतना महान कार्य उनके अतिरिक्त और कौन कर सकता है, क्योंकि यह सबसे बड़ी शोभा उन्हीं के लिये है?

ए अव्वल से आखिर लग, दुनी मुई मरेगी जे ।

कर कजा इन मुसाफ सों, कौन उठावसी मुरदे ॥४९॥

संसार के लोग सृष्टि के प्रारम्भ से ही मरते हैं और महाप्रलय तक मरते रहेंगे। किन्तु श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान से वास्तविक सत्य को दर्शाकर अज्ञानता में सोये हुए लोगों को कौन जागृत करेगा?

जो लों न चीन्हें महंमद को, तो लों सुध ना जमाने ।

तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने ॥५०॥

जब तक संसार के लोगों को श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं हो जाती, तब तक उन्हें इस कियामत के युग की महत्ता का पता नहीं चल सकता है कि इस समय इमाम महदी के रूप में स्वयं परब्रह्म का आवेश स्वरूप ही लीला कर रहा है। उन्हें तो यह भी ज्ञात नहीं हो सकता है कि अखण्ड परमधाम क्या है और यह नश्वर जगत क्या है? हमारी हानि-लाभ किसमे है - माया-मोह में फंसने में या परब्रह्म के प्रेम में?

सो पाइए बातून माएने, उपले आखिर नुकसान ।

हक इलमें दिन होवे सब सुध, बिन इलम रात हैवान ॥५१॥

इन प्रश्नों का समाधान धर्मग्रन्थों के सूक्ष्म अर्थों में ही मिलता है, बाह्य अर्थों में नहीं। तारतम ज्ञान के प्रकाश में सम्पूर्ण रहस्यों का बोध हो जाता है। इसके बिना हृदय में संशय एवं अज्ञानता का अन्धकार बना रहता है और मनुष्य पशुवत् विकारग्रस्त जीवन व्यतीत कर रहा होता है।

**ए माएने मुसाफ सोई करे, हकें भेज्या जिन ऊपर ।
कुंजी इलम आई जिनपे, सोई खोल दे खुसखबर ।।५२।।**

कुर्आन पाक के गुह्य अर्थों को मात्र वहीं प्रकाशित कर सकता है जिनके लिये यह भेजा गया है। जिनके पास तारतम ज्ञान का प्रकाश है, वे ही श्री जी के स्वरूप में कुर्आन के रहस्यों को स्पष्ट करके अपने (परब्रह्म के) आने की शुभ सूचना दे रहे हैं।

**रसूल आखिरी अल्लाह का, ल्याया आखिरी किताब ।
खोले रूहअल्ला आखिरी, दे मेहेंदी को लिया सवाब ।।५३।।**

परब्रह्म के अन्तिम संदेशवाहक मुहम्मद सल्ल. (साहब) अन्तिम ग्रन्थ के रूप में कुर्आन को लेकर आये। अक्षरातीत की आनन्द स्वरूपा श्यामा जी (रुहुल्लाहु) ने अपने दूसरे (तन) इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ में विराजमान होकर कुर्आन के रहस्यों को खोला और उन्हें परब्रह्म के रूप में उजागर कर इस महान कार्य की शोभा ली।

भावार्थ- 'ए इलम ले रूह अल्ला आया, खोल माएने इमाम कहलाया' (बड़ा कयामतनामा, १२/३) के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि श्यामा जी ने अपने दूसरे तन में इमाम महदी के स्वरूप में लीला की।

**आई कुंजी इलम ईमामपे, जिन सिर आखिरी खिताब ।
कजा महंमद जुबांए, सब पीवसी सरबत आब ।।५४।।**

इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के द्वारा श्री कुल्जुम स्वरूप का अवतरण हुआ। यह सर्वोपरि शोभा इसी स्वरूप को प्राप्त हुई। तारतम ज्ञान के प्रकाश में श्री जी ने ही सबका न्याय किया। अब सभी लोग अखण्ड धाम के सौन्दर्य (जल) तथा प्रेम (शर्बत) का रसपान करेंगे।

**लिख्या सिपारे तीसरे, ले देखो हक अकल ।
सरा तोरा बनी असराईल का, हकें दई बनी इस्माईल ।।५५।।**

कुर्आन के तीसरे सिपारे में लिखा है कि परब्रह्म ने कर्मकाण्ड का मार्ग यहूदियों से लेकर मुस्लिमों को दे दिया अर्थात् जाहिरी गद्दी श्री मिहिरराज जी से लेकर बिहारी जी को दे दी। हे साथ जी! इस रहस्य को जागृत बुद्धि से समझिए।

भावार्थ- कुर्आन पा. ट सू. ७ आ. ६४ "फकज्जबूहु फअन्जैनाहु वल्लजीन

मअह फिल्फुल्कि व अग्रकूनल्लजीन कज्जबू बिआयातिना इन्नहुम् कानू कौमन् अमीन्” अर्थात् हमने नूह और उनके लोगों को जो किशती में बैठकर सवार कर रहे थे तूफान से बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झूठलाया था, उनको डुबोकर नष्ट कर दिया। वे सब अपना भला-बुरा न देख पाने वाले अन्धे थे।

पारः ३ सूरः ३ आयत २६ “कुलिल्लाहुम-म युहिब्बुलकाफिरीन” यानि कहो कि ऐ खुदा! बादशाही के मालिक! तू जिसे चाहे बादशाही बख्से और जिससे चाहे बादशाही छीन लें और जिसको चाहे इज्जत दे जिसे चाहे जलील करे। हर तरह की भलाई आपके ही हाथ में है। बेशक आप हर पर काबिल है।

फुरकान दई हारून को, सो देखो कौल आखिर।

कोई कहे ए किस्से हो गए, सो कहे बेकौली बेखबर।।५६।।

मूसा पैगम्बर द्वारा हारून को धर्मग्रन्थ दिये जाने का गुह्यार्थ कियामत के समय का है। श्री जी ने बड़ा कयामतनामा ग्रन्थ महाराजा छत्रसाल जी के नाम से अवतरित किया। कुछ लोगों का कहना है कि ये तो पुराने किस्से हैं। ऐसा कहने वाले कुर्आन पाक के रहस्यों से अनभिज्ञ हैं तथा परब्रह्म की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं।

भावार्थ- कुर्आन पा. १ सू. २ आ. ८७ में वर्णन है कि मूसा पैगम्बर ने हारून को धर्मग्रन्थ दिया। “व लकद् आतैना मूसलूकिता व कज्जबुम् व फरीकन तक्तुलून” और हमने मूसा को किताब इनायत की। उनके बाद एक के बाद एक रसूल को भेजा जब तुम्हारे पास कोई रसूल तुम्हारी इच्छाओं के खिलाफ कोई हिदायत लेकर आया, तुमने घमंड किया। फिर, एक गिरोह को तो तुम झूठलाते रहे और एक गिरोह को कत्ल करते रहे।

किस्से कुरान तौरेत के, पढ़े डालत पीठ पीछल।

कहे हो गए किस्से रातमें, यों इनों खोया फजर बका फल।।५७।।

तथाकथित विद्वान कुर्आन एवं तौरेत (Old testament) के किस्सों को भूतकाल की बातें समझ कर निरर्थक मान लेते हैं (पीठ के पीछे फेंक देते हैं) और कहते हैं कि ये किस्से तो अज्ञानता की रात के हैं। इस प्रकार, कियामत के इस स्वर्णिम समय में परमधाम के ज्ञान का जो उजाला फैला है, उससे वे वंचित रह जाते हैं।

**जेता मुसाफ माएना, सब नजूम और बातन।
सो खोले काम कयामत के, दिन होसी सबों रोसन।।५८।।**

कुर्आन का जो भी अर्थ है, वह भविष्य के कथनों एवं गुह्य अर्थों से सम्बन्धित है। इसके घटनाक्रम कियामत के समय से जुड़े हुए हैं जिनका रहस्य श्री प्राणनाथ जी ने प्रकट किया है। उसे आत्मसात् कर लेने वाले सभी लोगों के हृदय में दिन के समान ज्ञान का उजाला हो जायेगा।

**लिख्या सिपारे आठमें, तो लों पढ़या नहीं कुरान।
मगज मुसाफ पाए बिना, सुध ना नफा नुकसान।।५९।।**

कुर्आन के आठवें सिपारे में लिखा है कि जब तक कुर्आन के गुह्य रहस्यों का बोध नहीं होता, तब तक इस बात की सुधि नहीं होती कि हमारा लाभ किसमें है तथा हानि किसमें है? जब तक यह अवस्था नहीं आती है, तब तक यह दावा नहीं करना चाहिए कि हमने कुर्आन पाक को पढ़ लिया है।

**ए किन भेज्या कौन आइया, ल्याया फुरमान किन ऊपर।
साल हजार नब्बे लग, ए पाई ना किन खबर।।६०।।**

हिजरी सन् १०६० (वि. सं. १७३५) तक किसी को भी यह ज्ञात नहीं था कि मुहम्मद सल्ल. कौन है? यह कुर्आन पाक किसने भेजा है? इसे लाने वाला कौन है तथा इसे किसके लिये लाया गया है?

**जाहेर कह्या ईसा आखिर, आए करसी एक दीन।
एही दज्जाल को मारसी, एही देसी सबों आकीन।।६१।।**

कुर्आन में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कियामत के समय परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा (ईसा खुल्लाहु) का श्री देवचन्द्र जी के रूप में प्रकटन होगा। वे सभी को एक सत्य मार्ग में ले चलेंगे तथा तारतम ज्ञान के द्वारा अज्ञान-रूपी शैतान को नष्ट कर देंगे। ये ही सभी को एक सच्चिदानन्द अक्षरातीत पर विश्वास दिलायेंगे।

भावार्थ- कुर्आन के पा. २८ सू. ६१ आ. ६ “व इज् काल औसबनु मर्यम या बनी इस्राईल इन्नी रसूलुल्लाहि मिम्बऽदिस्मूह अह्मदु हाजा सिह्रूम-मुबीनून्” यानि और (उस वक्त को याद कीजिए) जब मरयम के बेटे ईसा ने

कहा कि ऐ बनी इस्माईल! मैं तुम्हरी तरफ खुदा का भेजा हुआ आया हूँ कि तौरात जो मुझसे पहिले उतरी, किताब-इलाही हैं, उस की पुष्टि करता हूँ और एक पैगम्बर की सूचना देता हूँ जो मेरे बाद आयेंगे। जिनका नाम अहमद (सहुल्लाह) होगा! जब वह निशानियां लेकर उसके पास आया तो कहने लगे यह तो जादू है।

मुर्दे एही उठावसी, करसी साबित नबुवत।

और साबित कुरान माजजा, ए करसी ईसा हजरत ॥६२॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (ईसा रूहुल्लाहु) अपने दूसरे तन में अज्ञानता के घोर अन्धकार में मरे हुए प्राणियों के समान भटकने वाले जीवों को परमधाम का दिव्य ज्ञान देंगे जिससे वे जागृत (जीवित) होकर अखण्ड सुख की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार वे कियामत के समय नबी की नबुवत और कुर्आन के चमत्कार को सिद्ध करेंगे।

भावार्थ- कुर्आन मजीद के ज्ञान द्वारा नबी (मुहम्मद साहब) का ही एक लक्ष्य रहा है कि सारा संसार एकमात्र सच्चिदानन्द परब्रह्म की ही उपासना करे। इसे ही नबी की नबुवत और कुर्आन का चमत्कार कहते हैं।

अब देखो कुरान वारसी, लिख्या आखिर बोझ सिर इन।

ए कौन करे मसी बिना, रात उड़ाए के दिन ॥६३॥

हे साथ जी! अब आप ही विचार कीजिए। कुर्आन के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करने का अधिकार श्यामा जी के दोनों स्वरूपों (श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी) को है। इनके अतिरिक्त अन्य कोई भी अज्ञानता की रात्रि को समाप्त कर परमधाम के ज्ञान का उजाला नहीं कर सकता है। कियामत के समय में होने वाली सम्पूर्ण लीला का उत्तरदायित्व इनके ही सिर पर है।

फुरमान आया ईसे पर, ए देखो साहेदी हदीस।

वह लेने न देवे माएने मगज, जिनों दिल दुस्मन अबलीस ॥६४॥

हे साथ जी! आप हदीस में मुहम्मद साहब के कथन की साक्षी देखिए। उन्होंने कहा है कि कुर्आन का ज्ञान श्यामा जी (रूहुल्लाहु) के लिये आया है। संसार के जीवों के हृदय में अज्ञान-रूपी शैतान का स्वामित्व है। वह इसके गुह्य भेद नहीं समझने देता।

सो ईसा कहा आखिरी, ए जो करत आखिर के काम ।
करनी माफक सब को, देसी फल मुसाफ तमाम ॥६५॥

इस प्रकार, श्यामा जी को कियामत के समय प्रकट होकर जागनी का सारा कार्य करने वाला कहा गया है। इनके द्वारा ही दूसरे तन में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर संसार के सभी जीवों को उनकी करनी के अनुसार मुक्ति का फल देने वाला दर्शाया गया है, ऐसा कूर्आन में वर्णन है।

ए कही ईसे की आखिर, अब कहूं इप्तदाए ।
तिन वाएदे रसूलें, फुरमान दिया पोहोंचाए ॥६६॥

यह मैंने श्यामा जी की आखिरत की लीला को दर्शाया है। अब मैं खेल के प्रारम्भ से पूर्व की लीला को व्यक्त करता हूँ। इश्क रब्द के समय श्री राज जी ने ब्रह्मात्माओं से जो वचन दिया था, उसके अनुसार मुहम्मद साहब ने कूर्आन को इमाम महदी (श्यामा जी के दूसरे तन) के पास पहुँचा दिया।

भावार्थ- इश्क-रब्द के समय श्री राज जी ने कहा था-

मैं भेजो किताबत तुमको, सब इतकी हकीकत ।

तुम कहोगे किन खसमें, भेजी किताबत ॥

सो कहां है हमारा खसम, कैसा खेल कौन हम ।

रसूल देसी तुमें साहेदियां, पर मानोगे न तुम ॥खिलवत, ११/२०, २१)

कह्या हकें मासूक भेजोंगा, उतरते रूहों अर्स से।

सिरदार तिनमें रूह अल्ला, हकें तासों कौल किया आपमें ॥६७॥

श्यामा जी परमधाम की आत्माओं में प्रमुख हैं। परमधाम से इस संसार में आते समय श्री राज जी ने उनसे कहा था कि मैं अपने माशूक को भेजूंगा। प्रियतम ने स्वयं भी आने का वचन दिया।

भावार्थ- 'माशूक' का आशय केवल श्यामा जी से ही नहीं अपितु मुहम्मद साहब से भी है-

जिन कोई कहे रसूल को, परदा खुद दरम्यान ।
 आसिक ए मासूक कहा, सो बिन देखे मिले क्यों तान ॥ (सनद २४/६०)
 हकें मासूक कहा तो भी ना समझे । (खुलासा, २/७१)
 एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूटया फंद ।
 दंत बीच जुबां काटहीं, हाए हाए बड़े अंध ॥ (सनद २६/१०)

कहे रसूल रूहअल्ला वास्ते, ल्याया आखिरी फुरमान ।
 रूहअल्ला इमाम आवसी, ले हक इलम पढ़सी कुरान ॥६८॥

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैं श्यामा जी के लिये ही इस अन्तिम ग्रन्थ कुर्आन को लेकर आया हूँ। जब कियामत के समय श्यामा जी एवं इमाम महदी का प्रकटन होगा तो वे तारतम ज्ञान के उजाले में कुर्आन का अवलोकन करेंगे।

मारसी सबों का सैतान, तब होसी एक दीन ।
 सुभेसक भाने लदुन्नी, होसी सब दिलों पाक आकीन ॥६९॥

कियामत के समय श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान के प्रकाश में सबके संशय समाप्त हो जायेंगे जिससे वे पवित्र हृदय वाले होकर परब्रह्म पर अटूट विश्वास करेंगे। तारतम ज्ञान से सबको पीड़ित करने वाला अज्ञान-रूपी शैतान मारा जायेगा और सभी लोग एक परब्रह्म की उपासना करने लगेंगे।

ए हक कौल कहे रसूलें, जो रूहों सों किए इप्तदाए ।
 सो कुंजी दर्ई दिल मसिएं, क्यों औरों खोल्या जाए ॥७०॥

इस मायावी जगत में आने से पूर्व श्री राज जी ने श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं को जो वचन दिया था, उसे मुहम्मद साहब ने कुर्आन में कहा है। इस कुर्आन के रहस्यों को खोलने की कुंजी एकमात्र श्यामा जी के हृदय में है। भला अन्य कोई इसे कैसे खोल सकता है?

कुरान वारस मोमिन कहे, पढ़या या उमी होए ।
 बिन अर्स रूहें हक न्यामत, दूजा ले न सके कोए ॥७१॥

ब्रह्मात्माओं को कुर्आन के ज्ञान का उत्तराधिकारी कहा गया है, चाहें वे

पढ़ी-लिखी हों या अनपढ़। परमधाम की आत्माओं के अतिरिक्त श्री राज जी की हकीकत-मारिफत के ज्ञान की अखण्ड निधि को अन्य कोई भी नहीं ले सकता है।

**हक फुरमान मासूक ल्याइया, कुंजी रूहअल्ला साथ।
सो इमाम खोलें बीच अर्स रूहों, जो एक तन सुनत-जमात ॥७२॥**

मुहम्मद स. अ. व. व. कुर्आन लेकर आये तथा सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर आये। अब श्री प्राणनाथ जी परमधाम के उन ब्रह्ममुनियों के मध्य कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को प्रकट कर रहे हैं, जो निजधाम में वहदत (एकत्व) के स्वरूप हैं और इस संसार में तारतम ज्ञान के अनुसार आचरण करने वाले हैं।

**जब आवें यार ले महंमद, पट खोल दे मुसाफ दीदार।
काजी कजा तब होएसी, दूजा कौन खोले ए द्वार ॥७३॥**

जब कियामत के समय श्री प्राणनाथ जी परमधाम के ब्रह्ममुनियों के साथ प्रकट होंगे, तब वे कुर्आन का आवरण हटाकर उसका दर्शन करायेंगे अर्थात् कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को उद्घाटित करेंगे (दर्शायेंगे)। इसके पश्चात् वे न्यायाधीश के रूप में सबका न्याय करेंगे। उनके अतिरिक्त इस समस्त ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति देने वाला भला और कौन हो सकता है?

**कहे महंमद मैं अव्वल, रूहअल्ला आवसी आखिर।
अहेलबेती मेहेंदी बीचमें, गिरो राखी पनाह कर ॥७४॥**

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैं कुर्आन लेकर सबसे पहले आया हूँ। कियामत (आखिरत) के समय श्यामा जी (रूहुल्लाहु) का प्रकटन होगा। ब्रह्मात्माओं के बीच प्रकट होकर श्री प्राणनाथ जी सभी को अपनी कृपा की छत्रछाया में रखेंगे।

**मजाजियों में ले मुसाफ, क्या हक कजा करसी बीच रात।
जब हक हादी आई उमत, तबही उड़ी जुलमात ॥७५॥**

अज्ञानता के अन्धकार में झूठे दिल वाले जीवों के मध्य भला परब्रह्म कुर्आन लेकर न्याय की लीला कैसे करते? जब इस संसार में श्री राजश्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं का अवतरण हुआ, तभी अज्ञान का अन्धेरा हटा।

**आया फुरमान रूहअल्ला पर, करसी एही कियामत के काम।
मार दज्जाल एक दीन कर, देसी हैयाती तमाम ॥७६॥**

श्यामा जी को साक्षी देने के लिये कुर्आन का अवतरण हुआ। इनके द्वारा अपने दूसरे तन से दिव्य तारतम ज्ञान को प्रसारित करने का कार्य होगा। श्री प्राणनाथ जी अज्ञान-रूपी राक्षस को मारकर संसार में एक सत्य सिद्धान्त की स्थापना करेंगे तथा समस्त ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति देंगे।

**अव्वल ल्याया एहिया, ईसे पर आकीन।
कहें पढ़े सो हो गया, जिने दर्ई जिंदगानी दीन।।७७।।**

सबसे पहले याह्या पैगम्बर ईसा रूहल्लाहु पर विश्वास लाये अर्थात् श्री मिहिरराज जी ने श्री देवचन्द्र जी से तारतम ज्ञान प्राप्त किया। विद्वान कहा करते हैं कि यह तो बीता हुआ प्रसंग है जिसमें याह्या ने धर्म को परिष्कृत किया।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी ने श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा धर्म के वास्तविक स्वरूप को सबके समक्ष दर्शाया।

**एही गिरो पैगंमरों आखिरी, जिन लई महंमद बूंदें नूर।
ए सोई उतरे अर्स से, जिन किए कौल हजूर।।७८।।**

कियामत के समय प्रकट होने वाली ब्रह्मात्माओं ने श्यामा जी के तारतम ज्ञान की अमृतमयी बूंदों को आत्मसात् किया। परमधाम से अवतरित होने वाले ये वही ब्रह्ममुनि है जिन्होंने प्रियतम अक्षरातीत से न भूलने का वायदा किया था।

भावार्थ- एक-एक ब्रह्मसृष्टि की गरिमा १०-१० पैगम्बरों के बराबर मानी गयी है। इस प्रकार, उपरोक्त चौपाई में ब्रह्मसृष्टियों को ही पैगम्बर कह कर सम्बोधित किया गया है।

**कह्या आखिर पैगंमर आवसी,देसी साहेदी अपनी उमत।
जो आए कौल कर हक से, तब जाहेर होसी कयामत।।७९।।**

कुर्आन में कहा गया है कि आखिरत के समय आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ (श्री जी) का अवतरण होगा। वे अपनी उन आत्माओं को कुर्आन की साक्षी देंगे जिन्होंने मायावी जगत में आते समय अपने प्राणेश्वर से कहा था कि 'सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए'(खिलवत, ११/३३)।

**निसान बड़ा ईसा आखिरी, और एही आखिरी किताब ।
महंमद मेहेंदी आखिरी, इमाम आखिरी खिताब ॥८०॥**

श्यामा जी (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) के प्रकट होने को कियामत का बड़ा निशान बताया गया है और श्री कुल्जुम स्वरूप को अन्तिम धर्मग्रन्थ माना गया है। मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) को आखिरी ब्राह्मी स्वरूप माना गया है। इन्हें ही आखिरी इमाम की भी शोभा प्राप्त है।

**एही बड़े पहाड़ दो निसान, बका बतावें बैत-अल्ला ।
दे मुसाफ मगज साहेदियां, दिन देखावें नूरतजल्ला ॥८१॥**

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी की उपमा दो पहाड़ों से की गयी है। ये कियामत के दो बड़े निशान हैं। ये दोनों स्वरूप अखण्ड परमधाम का अलौकिक ज्ञान प्रकट करेंगे। ये कुर्आन के गुह्य भेदों को प्रकट करने के साथ-साथ उसकी साक्षियाँ देकर दिव्य ज्ञान का उजाला करेंगे और अक्षरातीत की पहचान करायेंगे।

**कह्या आवसी असराफील, आखिरी बड़ा निसान ।
जो फूँके जिमी पहाड़ उड़ावसी, दुजी फूँके कायम करे जहान ॥८२॥**

कुर्आन में यह भी कहा गया है कि कियामत के समय में अस्म्राफील फरिश्ता आयेगा। यह कियामत का बहुत बड़ा निशान है। यह अस्म्राफिल फरिश्ता पहली बार के सूर फूँकने में धरती और पहाड़ को उड़ा देगा अर्थात् अपने ज्ञान से बड़े-बड़े विद्वानों के अहंकार को नष्ट कर उनके धर्म स्थानों की महिमा को नगण्य कर देगा। दूसरे सूर में वह सम्पूर्ण ब्रह्मांड को अखण्ड मुक्ति दिलायेगा।

**असराफील चिन्हाए सों, मगज मुसाफी गाए ।
चौदे तबक एक सूर से, करके साफ उड़ाए ॥८३॥**

अस्म्राफील कुर्आन के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करके अपनी पहचान देगा। वह अपने ज्ञान के पहले सूर में चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड को निस्तेज कर देगा (गरिमाहीन कर देगा)।

भावार्थ- चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड को उड़ाने का अर्थ है, उसके ज्ञान की सत्यता, अकाट्यता एवं सार्वकालीनता के समक्ष संसार के विद्वानों का स्वाप्निक ज्ञान कहीं भी ठहर नहीं पायेगा। सभी एक स्वर से यही स्वीकार करेंगे कि तारतम ज्ञान शाश्वत सत्य है। इसकी एक झलक हरिद्वार में वि. सं. १७३५ में देखने को मिली तथा दूसरी झलक काजी शेख इस्लाम से दिल्ली में श्री लालदास जी एवं शेखबदल के बीच होने वाली वार्ता में मिली। उदयपुर एवं औरंगाबाद के पण्डितों का हारना, पन्ना में बद्रीदास का शास्त्रार्थ में हारकर श्री जी को परब्रह्म के रूप में मानना, काजी अब्दुल रसूल का श्री जी के समक्ष नतमस्तक होकर उन्हें इमाम महदी के रूप में स्वीकार करना एवं कालपी के मौलवियों के द्वारा श्री प्राणनाथ जी को आखरूल इमाम मुहम्मद महदी के रूप में मानकर 'महजर नामा' लिखकर देना अम्नाफील की गौरव गाथा को प्रस्तुत करता है।

जब सूर बाजे दूसरा, देवे हक चिन्हाए।

तिन सबों कायम किए, रही आठों भिस्त भराए। १८४॥

जब अम्नाफील दूसरा सूर फूँकेगा तो श्री कुलजम स्वरूप के प्रकाश में सबको एक अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान हो जायेगी। इसके पश्चात् यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आठ बहिश्तों में अखण्ड हो जायेगा।

आया असराफील आखिर, साथ आखिरी इमाम।

माणे मगज मुसाफ के, किए जाहेर सब तमाम। १८५॥

आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ श्री प्राणनाथ जी के साथ अम्नाफील कियामत के समय प्रकट हुआ है और उसने कुर्आन के सभी गुह्य भेदों को सबके समक्ष दर्शा दिया है।

हकें ऐसा साथ इमाम के, दिया फरिस्ता मरद।

उड़ावे जिमी पहाड़ जड़ मूल से, सो होसी फरिस्ता कैसे कद। १८६॥

परब्रह्म ने श्री जी के साथ अम्नाफील के रूप में इतना शक्तिशाली फरिस्ता रखा है जो धरती एवं पर्वतों को जड़ - मूल से समाप्त कर देगा। इससे सहज ही सोचा जा

सकता है कि वह फरिश्ता कितनी गरिमा वाला है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में धरती पर बड़े-बड़े धर्मस्थान एवं पर्वत विद्वानों के ज्ञान के अहंकार के प्रतीक है। तारतम ज्ञान के प्रकाश में सारा संसार स्वाप्निक बुद्धि के ज्ञान की निःसारता को समझ जायेगा। उन्हें देवी-देवताओं के विभिन्न धर्म स्थानों में श्रद्धा नहीं रह जायेगी। वे मात्र परमधाम के प्रति ही अपनी निष्ठा रखेंगे। इसे ही धरती एवं पर्वतों को जड़-मूल से उड़ा देना कहते हैं।

आठों भिस्त कायम करी, बजाए दूजा सूर।

बरस्या आब सबन पर, अर्स अजीम का नूर॥८७॥

जब अस्माफील फरिश्ते ने अपना सूर फूँका तो संसार के लोगों को परमधाम के दिव्य ज्ञान, प्रेम, शोभा एवं लीला में डूबने का आनन्द मिला। इसके परिणामस्वरूप समस्त ब्रह्माण्ड को आठ बहिश्तों में अखण्ड होने को सौभाग्य प्राप्त हो गया।

हैयात किए सब इन ने, ए जो कहे बुजरक।

और बका सब को किए, जिमी आसमान खलक॥८८॥

अस्माफील फरिश्ते ने परमधाम के अलौकिक ज्ञान के द्वारा धरती से लेकर आकाश तक अर्थात् इस ब्रह्माण्ड में उत्पन्न होने वाले सभी महान व्यक्तियों, देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों, योगी-यतियों, भक्तों तथा पीर-पैगम्बरों और फकीरों को अखण्ड होने का सौभाग्य प्रदान किया।

आठों भिस्त कायम करी, कर रोसन जहूर।

पेहेचानो ए फरिस्ता, ले हक इलम सहूर॥८९॥

परमधाम के अनुपम ज्ञान का उजाला करके इस फरिश्ते ने बेहद मण्डल में आठों बहिश्तों को अखण्ड करने का मार्ग प्रशस्त किया। हे साथ जी! आप श्री कुल्जुम स्वरूप के चिन्तन से इस अस्माफील फरिश्ते की पहचान कीजिए।

आसमान जिमी जड़ मूल से, एक फूँके देवे उड़ाए।

कायम करे सब दूजी फूँके, बका भिस्तमें उठाए॥९०॥

अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि का स्वरूप यह अस्माफील फरिश्ता इतना शक्तिशाली है कि वह अपनी एक फूंक से धरती से लेकर आकाश तक को जड़-मूल से उड़ा सकता है अर्थात् उसके ज्ञान के समक्ष समस्त ब्रह्माण्ड के मनीषियों का ज्ञान नगण्य प्रतीत होता है। वह अपने दूसरे सूर में ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों को बेहद मण्डल की अखण्ड बहिश्तों में शाश्वत मुक्ति देगा।

ए साथ महंमद मेहेंदी के, फरिस्ता आया आखिर।

क्यों न चीन्हो तुम इन को, जो करसी दिन फजर ॥९१॥

हे साथ जी! कियामत के समय में यह फरिश्ता श्री प्राणनाथ जी के साथ आया हुआ है। परमधाम के अखण्ड ज्ञान का उजाला करने वाले इस फरिश्ते की आप पहचान क्यों नहीं करते हैं?

कह्या गाए असराफील मुसाफ, किए जाहेर मगज कुरान।

या से पाक होए दुनी कयामतें, फल पाया सुभान ॥९२॥

कुर्आन पाक में कहा गया कि अस्माफील कुर्आन को मधुर स्वर में गायेगा एवं उसके गुह्य भेदों को प्रकट करेगा। उस दिव्य ज्ञान में अवगाहन (स्नान) करके यह समस्त ब्रह्माण्ड परब्रह्म की कृपा से शाश्वत मुक्ति का फल प्राप्त करेगा।

भावार्थ- श्री कुलजम् स्वरूप का अवतरण ही कुर्आन का गायन है। इसके सन्ध, खुलासा, मारिफत सागर और कियामतनामा ग्रन्थों में कुर्आन के गुह्यतम भेद प्रकट किये गये हैं। खित्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार में परमधाम के मारिफत की अलौकिक सम्पदा है तो रास, प्रकाश, कलश एवं कीर्तन में सम्पूर्ण वेद-शास्त्रों का गहनतम् रहस्य है। इसी प्रकार, षटरुती एवं सिन्धी विरह वाणी है। अस्माफील फरिश्ते को जहां वैदिक साहित्य में अक्षर ब्रह्म की जागृति बुद्धि (ज्ञान शक्ति) कहा जाता है तो बाईबिल में उसे 'ट्रम्प्ट आफ गॉड' कहा गया है।

ए पहाड़ निसान आखिरी, जिन देखाई बका बिसात।

दुनी पहाड़ पूजे जाहेरी निसान, कर बैठे बका बीच रात ॥१३॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी की महिमा सर्वोच्च पर्वतों के समान बतायी गयी है अर्थात् इस पृथ्वी पर आज तक इनके समान अखण्ड परमधाम का ज्ञान देने वाला कोई भी स्वरूप नहीं हुआ है। ये कियामत की निशानियों (संकेतों) में से हैं। अरब के लोग जड़ पर्वतों को ही कियामत के निशान मानकर पूजा करते हैं। इस प्रकार, उन्होंने अज्ञानता में इस नश्वर जगत के पर्वतों को ही परमधाम की भांति मानकर पूजा करना प्रारम्भ कर दिया है।

मेयराज हुआ महंमद पर, सो लई सब हकीकत।

हुए इलमें अर्स दिल औलियों, ऊगी बका हक सूरत ॥१४॥

जब मुहम्मद साहब को मेयराज हुआ तो उन्होंने परमधाम का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया अर्थात् हब्शे में श्री महामति जी को प्राणेश्वर अक्षरातीत का साक्षात्कार हुआ और उनके धाम हृदय में विराजमान होकर परब्रह्म ने श्री कुल्जुम स्वरूप के रूप में परमधाम का सारा ज्ञान अवतरित किया। इस दिव्य ज्ञान ने ब्रह्मात्माओं (औलियों) के धाम हृदय में परमधाम तथा अक्षरातीत के युगल स्वरूप की अनुपम छवि को अखण्ड रूप से अंकित कर दिया।

अब देखासी सब नजरों, दोऊ झण्डों करी पुकार।

बातून झण्डा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार ॥१५॥

अब सारा संसार अपनी आंखों से दोनों झण्डों की पुकार (ज्ञान) को देखेगा। अरब में मात्र शरीयत का झण्डा लहरा रहा है तो भारत में श्री प्राणनाथ जी के दिव्य ज्ञान के स्वरूप श्री कुल्जुम स्वरूप का ध्वज लहरा रहा है जो अक्षर धाम से भी परे परमधाम का ज्ञान दे रहा है।

दुनी जाहेरी झण्डे की, तिन पाउं कटाए पुल- सरात।

लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात ॥१६॥

संसार के लोग शरीयत (कर्मकाण्ड) के झण्डों को ही लेकर चल रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप वे निराकार से परे नहीं जा पाते हैं। उनके पांव कट जाते हैं अर्थात् निराकार को पार कर बेहद या परमधाम का साक्षात्कार करने की उनमें सामर्थ्य नहीं रह जाती। परब्रह्म की पहचान न होने से वे कर्मकाण्ड का ही सहारा लेते हैं। इस प्रकार शरीर से होने वाली शरीयत की बन्दगी उन्हें परमधाम के सुख से दूर रखती है।

महामत कहे ए मोमिनो, हादिएं खोले कयामत निसान।

हक अर्स बका जाहेर हुए, फरिस्ते नूरै नूर किया जहान ॥९७॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! श्री प्राणनाथ जी ने कियामत के सभी सात प्रमुख निशानों (संकेतों) का रहस्य स्पष्ट कर दिया है। श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा अक्षरातीत परब्रह्म तथा अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्रकट हो गया है। अस्माफील फरिश्ते ने समस्त जगत को तारतम ज्ञान के अलौकिक प्रकाश से भर दिया है।

॥प्रकरण ॥९॥ चौपाई ॥६८५॥

झंडा हकीकी खड़ा हुआ हिंद में

इस प्रकरण में यह बताया गया है कि 'ज्ञान का ध्वज' ही वास्तविक ध्वज है। कपड़े का स्थूल ध्वज तो मात्र गरिमा का प्रतीक रूप ही होता है। सूक्ष्म ध्वज दो प्रकार के हैं- १. शरीयत का ध्वज व २. हकीकत मारिफत का ध्वज। इनका वर्णन इस प्रकरण में दर्शाया गया है।

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत।

सो आया फिरके नाजी मिने, झण्डा दीन हकीकी जित ॥१॥

जिसे श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में तारतम ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हो जाता है, उसे प्रियतम अक्षरातीत का निर्देशन प्राप्त होता है। इस प्रकार, वह ब्रह्ममुनियों के उस समुदाय (निजानन्द) में सम्मिलित हो जाता है जो परब्रह्म के अखण्ड आनन्द की अनुभूति करने वाला है। इस समुदाय में ही सत्य धर्म का ध्वज फहरा रहा होता है।

लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोले एक दीन।

जब ऊग्या सूर मारफत का, आवसी देख सबों आकीन ॥२॥

कुर्आन पाक में सत्य ज्ञान (हकीकत) का प्रकाश तो है किन्तु वह गुह्य रूप में है। तारतम ज्ञान के द्वारा जब वह प्रकाश में आयेगा तो सभी लोग एक सत्य सिद्धान्त के अनुयायी बन जायेंगे। जब परमधाम की पहचान देने वाले (मारिफत) परम सत्य ज्ञान का सूर्य (श्री कुल्जुम स्वरूप) उग गया है तो अब सबको एक सच्चिदानन्द परब्रह्म पर विश्वास आ जायेगा।

**दीदार हुआ हक सूरत का, देख अर्स नजर बातन।
न्यामत अर्सों की सबे, लई अर्स दिल मोमिन ॥३॥**

तारतम ज्ञान के प्रकाश में अपनी आत्मिक दृष्टि से देखने पर परब्रह्म की अनुपम शोभा का दर्शन होता है। जिन ब्रह्मात्माओं के हृदय को अक्षरातीत का धाम कहा जाता है उन्होंने श्री कुल्जुम स्वरूप के चिन्तन तथा परमधाम की चितवनी के द्वारा परमधाम की सभी निधियों, शोभा-श्रृंगार, आनन्द, प्रेम, एकत्व आदि की रसानुभूति की हुई होती है।

**कहे आयतें हदीसें जाहेर, नूर झण्डा महंमदी जे।
दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल, नूर बढ ताई देखोगे ॥४॥**

कुर्आन की आयतों तथा हदीसों में कहा गया है कि श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान का प्रकाश संसार में प्रतिदिन घड़ी-घड़ी पल-पल निरन्तर बढ़ता ही रहेगा।

भावार्थ- यद्यपि वि. सं. १८४५ के पश्चात् १५० वर्षों तक अर्थात् वि. सं. १९९५ तक तारतम ज्ञान के प्रसार में अवरोध बना रहा, किन्तु पुनः उसके प्रसार में जो तीव्रता आयी है, वह परब्रह्म की कृपा से निरन्तर वृद्धि करती रहे, ऐसी आशा की जाती है।

**महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर।
इन झण्डे कौल महंमद के, आखिर किया चाहिए जहूर ॥५॥**

मुहम्मद अक्षरातीत के नूर (आदेश स्वरूप) हैं और उनके आदेश (नूर) से इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। इस संसार के कल्याणार्थ श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) के

श्री कुलजुम स्वरूप के वचनों का इस कियामत समय में प्रसार होना चाहिए।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का अर्थ हदीस के कथन 'अव्वलमा खलकुल्लहि 'अनामिन नूरल्लाह' 'कुल शैअ मिन्नूरी ' में प्रयुक्त 'सैं के आधार पर हुआ है। यदि पूर्व कथित 'सैंयन ठीक है तो इसका अर्थ इस प्रकार होगा- परब्रह्म की अंग स्वरूपा श्यामा जी हैं तथा समस्त ब्रह्मात्मायें श्यामा जी की ही अंगरूपा (नूर स्वरूपा) हैं। कियामत की इस बेला में श्री प्राणनाथ जी के अमृतमयी वचनों का संसार में प्रसार किया जाना अत्यावश्यक है।

लैलत कदर बीच मोमिनो, आए खोली रूह नजर।

हक इलम ले रूहअल्ला, करी इमामें फजर॥६॥

स्वयं प्राणेश्वर अक्षरातीत ने इस नश्वर जगत में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आकर ब्रह्मात्माओं की दृष्टि को खोला है। श्यामा जी तारतम ज्ञान का प्रकाश लेकर आयीं और अपने दूसरे तन से श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर उन्होंने अखण्ड ज्ञान से उजाला कर दिया है।

भावार्थ- श्री राज जी के आवेश स्वरूप ने श्यामा जी के दोनों तनों में जागनी लीला की है।

जब लिया माएना बातून, रूह नजर खुली तब।

दिन मारफत हुआ आलम में, नूर रोसन किया अब॥७॥

जब श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में कुर्आन का गुह्यार्थ (बातिनी अर्थ) प्रकट हो गया तो ब्रह्मात्माओं ने उसे आत्मसात् कर अपनी अन्तर्दृष्टि को खोल लिया। अब संसार में दिन के उजाले के समान परमधाम के ज्ञान का प्रकाश फैल गया है।

तब सबोने देखिया, जो कछू हक बिसात।

हक खिलवत जाहेर हुई, अर्स बका हक जात॥८॥

अब सभी आत्माओं ने परमधाम के ज्ञान के आधार पर ध्यान (चितवनी) के द्वारा निज धाम की सम्पूर्ण शोभा का दर्शन किया। उन्होंने अखण्ड परमधाम के २५ पक्षों, युगल स्वरूप, ब्रह्मसृष्टियों के मूल तनों तथा मूल मिलावे का प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य

प्राप्त किया है।

**फुरमाया सब हो चुक्या, मिले सब निसान।
हादी करसी जाहेर, खोल माएने मगज कुरान ॥१॥**

कुर्आन में जो कुछ कहा गया था, वह सब पूरा हो चुका है। कियामत के सभी संकेत (चिन्ह) प्रकट हो चुके हैं। अब श्री जी कुर्आन के गुह्य रहस्यों को खोलकर संसार में प्रकाशित करेंगे।

**झंडा नूरका महंमदी, ताए कबू न होए नुकसान।
जेते दिन जित फुरमाया, रह्या तेते दिन तित ईमान ॥१०॥**

श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान का जो ध्वज भारत में स्थापित किया है, उसमें कभी भी ह्रास (क्षति) का होना सम्भव नहीं है। जितने समय के लिये जिस स्थान पर ध्वज के रहने का निर्देश होता है, उतने ही समय के लिये वहां के लोगों में विश्वास (ईमान) रहता है। ईमान के हटते ही ध्वज भी कहीं और चला जाता है।

**और ठौर हुकमें खड़ा किया, सो जाए लग्या नूर आसमान।
जो एक ठौर कदी न देखिए, तो और ठौर बिलंद हुआ जान ॥११॥**

परब्रह्म के आदेश से परमधाम के ज्ञान का नूरी ध्वज मक्के-मदीने से हटकर भारत में पद्मावती पुरी धाम में आ गया। वहाँ तारतम ज्ञान का प्रकाश आकाश तक अर्थात् सारे संसार में फैलने लगा है। यदि जागनी लीला में भी तारतम ज्ञान का ध्वज कहीं एक स्थान पर न दिखाई दे तो समझ लेना चाहिए कि वह ध्वज कहीं और चला गया है और तारतम ज्ञान का प्रकाश कर रहा है।

भावार्थ- अटूट विश्वास के लिए वाणी का चिंतन अनिवार्य है। जिन स्थानों पर तारतम वाणी का चिंतन और युगल स्वरूप के ध्यान की प्रक्रिया बंद हो जाएगी, वहाँ शरीयत (कर्मकाण्ड) का बोलबाला हो जाएगा और नूरी ध्वज वहाँ से हट जाएगा। भले ही कोई धार्मिक स्थान कितना ही वैभवशाली और अध्यात्मिकता के लिए प्रसिद्ध क्यों न रहा हो, किन्तु वाणी का चिंतन एवं चितवनी की प्रक्रिया के हटते ही आस्था और विश्वास का महल भरभराकर गिर जाता है। अतः जागनी लीला की निरंतरता बनाए रखने के लिए

यह अति आवश्यक है कि मंदिरों और आश्रमों को राजमहलों की तरह सजाकर उन पर स्वर्ण कलशों और स्वर्ण सिंहासनों में धन राशि व्यय करने की अपेक्षा सादगी भरे ज्ञान केन्द्रों की स्थापना की जाए तथा चितवनी और वाणी चिंतन को सर्वोपरी महत्ता दी जाए।

**लिख्या जाहेर हदीस में, नूर झण्डा निसान।
सो हदीस देखे सेंती, करसी दिल पेहेचान॥१२॥**

हदीसों में नूरी झंडे का निशान स्पष्ट रूप से लिखा है। उस हदीस को देखकर ब्रह्ममुनि अपने दिल में सत्य की पहचान कर लेंगे।

**अव्वल झण्डा कहा सरीयत, जाके तले दुनी पाक होए।
जो रहे तले फुरमाए के, ताकी सिफत करे सब कोए॥१३॥**

सबसे पहले अरब की धरती पर अद्वैत परब्रह्म के ज्ञान के आधार पर शरीयत का झंडा लहराया गया, जिसकी छत्रछाया में लोग ईमान रखकर पवित्र हो जाया करते थे। जो कुर्आन के निर्देशों के अनुसार निष्ठाबद्ध होकर शरीयत के नियमों का पालन करते रहे, उनकी सभी प्रशंसा करते थे।

**सरीयत झण्डा नासूत में, पोहोंच्या न लग मलकूत।
पकड़ें पुल-सरातने, छोड़ ना सके नासूत॥१४॥**

केवल शरीयत का झंडा पृथ्वी से ऊपर उठकर बैकुण्ठ (मलकूत) नहीं जा सकता है। शरीर और इन्द्रियों से होने वाली कर्मकाण्ड की भक्ति संसार के जीवों को पृथ्वी से ऊपर नहीं उठा सकती है।

**जो लेवे राह तरीकत, ताके फैल हाल दिल से।
सो पाक होए पोहोंचे मलकूत, फरिस्तों के अर्स में॥१५॥**

जो लोग उपासना (तरीकत) का मार्ग अपनाते हैं, उनकी करनी और रहनी हृदय से होती है। इस प्रकार, वे पवित्र हृदय होकर देवी-देवताओं के धाम बैकुण्ठ में पहुँच जाते हैं।

बीच चौदे तबकों, कहे सात आसमान।

कोई सुरिया उलंघ ना सक्या, देखो सोलमें सिपारे बयान ॥१६॥

कुर्आन के १६वें सिपारे में चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में सात आकाशों का वर्णन किया गया है। हे साथ जी! इस बात पर विचार कीजिए कि उपासना के मार्ग पर चलने वाला कोई भी व्यक्ति ज्योति स्वरूप (आदिनारायण) को पार नहीं कर सका है।

भावार्थ- यदि पृथ्वी लोक से बैकुण्ठ लोक तक सात आकाश माने जाएं तो पृथ्वी पर सात पाताल लोक (समुद्र के किनारे के भाग) माने जाएंगे तथा पृथ्वी से ऊपर भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक तथा बैकुण्ठ के बीच में एक-एक आकाश को मानना पड़ेगा। दूसरी विचारधारा यह है कि बैकुण्ठ के ऊपर एक के ऊपर एक सात आकाश आएंगे। सभी आकाश एक-दूसरे की अपेक्षा सूक्ष्म होते जाएंगे, तभी सात आकाशों का विभाजन संभव है। वैदिक मान्यता के अनुसार सात आकाश इस प्रकार माने जाएंगे- १. पृथ्वी आदि स्थूल भूतों में व्याप्त आकाश, २. इसके ऊपर सूक्ष्म आकाश, ३. समष्टि आकाश, ४. समष्टि तन्मात्रा मण्डल, ५. समष्टि अहंकार मण्डल, ६. समष्टि महत्तत्त्व मण्डल और ७. कारण प्रकृति (मोह सागर)।

यदि प्रणव की सातों व्याहृतियों भूः भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः तथा सत्यम् आधार पर सात लोकों की मान्यता है और सभी को एक-दूसरे की अपेक्षा सूक्ष्म माना गया है तो इस आधार पर सात आकाशों की मान्यता बन सकती है। किन्तु अष्टावरण के ऊपर सात शून्य की मान्यता वेदानुकूल नहीं है।

आसमान जिमी बीच फना के, हवा लग ला-मकान।

ला लग पोहोंचे तरीकत, मुसाफ हकीकत बका बयान ॥१७॥

धरती से लेकर आकाश तक के सभी लोक-लोकान्तर नश्वर हैं। यहां तक कि अनन्त कहा जाने वाला निराकार मण्डल भी नश्वर ही है। उपासना (तरीकत) के मार्ग द्वारा निराकार तक पहुँचा जा सकता है। कुर्आन में वर्णित हकीकत के मार्ग से अखण्ड धाम की प्राप्ति का वर्णन है।

देखो सिपारे तीसरे, होवे हकीकत सों एक दीन।

सो आन मिलाए सब हुकमें, आए तले मारफत झण्डे आकीन ॥१८॥

कुर्आन पाक के तीसरे सिपारे में लिखा है कि हकीकत (यथार्थता) के ज्ञान से संसार में एक अद्वैत आधारित सत्य धर्म की स्थापना हो सकती है। परब्रह्म के आदेश से संसार के सभी मत-मतान्तर परमधाम के ज्ञान की छत्रछाया में आ गये हैं और एक अक्षरातीत पर विश्वास लाये हैं।

**फुरमाया सरीयत तरीकत, किया रात बीच अमल।
ना पोहोंचे बका दिन को, बिना हकीकत अर्स असल ॥१९॥**

अरब में जो रात्रि के समान अज्ञानता का अन्धकार था, उसमें कुर्आन द्वारा निर्देशित शरीयत एवं तरीकत को प्रचलित किया गया। जब तक दिन के उजाले के समान परमधाम का यथार्थ ज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक निजधाम का साक्षात्कार करना असम्भव है।

**माएने हकीकत मुसाफ के, पावें हक के इलम।
सो पोहोंचे जबरूत में, होए सुध हक हुकम ॥२०॥**

तारतम ज्ञान के प्रकाश में कुर्आन की हकीकत (यथार्थता) को जो जान जाता है, वह परब्रह्म के आदेश से उनकी पहचान करके बेहद मण्डल का अधिकारी बनता है।

भावार्थ- हकीकत के मार्ग में सत्य ज्ञान का आधार लेकर परब्रह्म का ध्यान किया जाता है तथा जब ध्यान में प्रेम का रस जुड़ जाता है तो वह मारिफत की बन्दगी कहलाती है जो परमधाम का साक्षात्कार कराती है। शुष्क ध्यान परमधाम-बेहद नहीं ले जा सकता है। बेहद में जाने के लिये भी अहम्-अस्मिता का लय होना अनिवार्य होता है। यदि अनादि काल से अक्षर ब्रह्म को मेयरज से पूर्व मूल मिलावे में जाने का अवसर नहीं मिल सका तो बिना प्रेम के अन्य किसी के लिये तो सम्भव ही नहीं है। परमधाम के साक्षात्कार की हकीकत तथा मारिफत की अवस्था का प्रसंग अलग है। परमधाम एवं युगल स्वरूप के ध्यान-समाधि में डूबना जहां हकीकत है वहीं श्री राज जी के दिल में स्वयं के अस्तित्व को मिटाना मारिफत है। एक ईश्वरीय सृष्टि के लिये अक्षर ब्रह्म के ध्यान में स्वयं का अस्तित्व मिटाना भी मारिफत (विज्ञान) की ही अवस्था है।

**गिरो फरिस्ते नजीकी, बका नूर मकान।
उतरे मलायक इत थें, सो पोहोंचसी कर पेहेचान ॥२१॥**

अक्षर धाम (बेहद मण्डल) अखण्ड है, जिसमें हमारे निकटस्थ रूप में ईश्वरीय सृष्टि का निवास है। इसी सत्स्वरूप से ईश्वरीय सृष्टि माया का खेल देखने के लिये आयी

है। वह तारतम ज्ञान से अक्षरातीत की पहचान करके अपने धाम जायेगी।

**जब हक इलमें मारफत खुली, तब देख्या बका अर्स सूर ।
सो सूर हुआ सिर सबन के, बरस्या बका हक नूर ॥२२॥**

जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में परमधाम की मारिफत के रहस्य स्पष्ट हो गये, तब ब्रह्मात्माओं ने चितवनी के द्वारा अखण्ड परमधाम के सूर्य अर्थात् प्रियतम अक्षरातीत का दर्शन किया। जब अक्षरातीत का युगल स्वरूप सबके धाम हृदय में दृष्टिगोचर होने लगा तो सबकी अन्तरात्मा में श्री राज जी के प्रेम, सौन्दर्य, आनन्द, शक्ति आदि अलौकिक निधियों की अखण्ड वर्षा होने लगी।

भावार्थ- मारिफत का इल्म (ज्ञान) किस प्रकार प्रियतम का दीदार कराता है, यह श्रृंगार की इस चौपाई से स्पष्ट होता है-

**मारफत देवे इस्क, इस्कें होए दीदार ।
इस्कें मिलिए हक सों, इस्कें खुले पट द्वार ॥ (श्रृंगार, २५/८६)**

**खासल खास अर्स अजीम, हक सूरत नूरजमाल ।
इत हादी रूहें खिलवत, एवाहेदत जात कमाल ॥२३॥**

जब चितवनी में आत्मिक दृष्टि परमधाम पहुँचती है तो वह अपने प्राणेश्वर तथा ब्रह्मात्माओं की अनुपम छवि को देखती है। श्यामा जी सहित सभी ब्रह्मात्मायें खिल्वत स्वरूपा हैं अर्थात् परब्रह्म की अभिन्न स्वरूपा होने से इनके साथ दिव्य प्रेम एवं आनन्द की लीला होती है। श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं में पूर्ण एकत्व की लीला है। ये सभी स्वरूप प्रेम, सौन्दर्य, आनन्द आदि की दृष्टि से पूर्णातिपूर्ण हैं।

**इन विध झण्डा खड़ा किया, हादी मोमिनोँ इत आए ।
औल्लिए अंबिए पैगंमर, गोस कुतब मिले सब धाए ॥२४॥**

इस प्रकार, श्री प्राणनाथ जी तथा ब्रह्ममुनियों ने भारत में परमधाम के ज्ञान का ध्वज खड़ा कर दिया है (प्रसार कर दिया है)। अब सभी औल्लिए, अंबिए, पैगम्बर, गौस, कुतुब आदि दौड़-दौड़कर इल्म-ए-लदुन्नी (तारतम ज्ञान) के ध्वज की छत्रछाया में आ रहे हैं।

भावार्थ- औलिये, अंबिए, गौस, तथा कुतुब आदि मुस्लिम फकीरों के अलग-अलग समुदाय हैं जो अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों के अलग-अलग स्तरों के कारण वर्गीकृत किये गये हैं।

**आगूं जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक।
सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न माहें खलक॥२५॥**

बड़े-बड़े योगियों, सन्तों तथा फकीरों ने कठोर साधनायें करके कियामत के इसी समय में मानव तन पाने के लिये परब्रह्म से प्रार्थना की थी। अब वही श्रेष्ठ समय आ गया है जिसमें स्वयं परब्रह्म 'श्री प्राणनाथ जी' के स्वरूप में आत्माओं के साथ आये हुए हैं। हे साथ जी! देखिए, अब श्री जी के चरणों में बड़े-बड़े सन्त-महापुरुष दौड़े हुए इस प्रकार चले आ रहे हैं कि हम कहीं पीछे न रह जायें।

**अब दुनियां पीछी क्यों रहे, जब हुई हक कजाए।
हुआ सब पर हुकम महंमदी, सो सब लेसी सिर चढ़ाए॥२६॥**

अब इस समय जब स्वयं परब्रह्म सबका न्याय करने के लिए बैठें हैं, तो संसार उनके चरणों में आने से पीछे कैसे रह सकता है? अब न्यायाधीश के रूप में श्री जी जो भी आदेश देंगे, सारा संसार उसे शिरोधार्य करेगा।

**उठी कही जेती न्यामतें, सो आई बीच हिंदुस्तान।
जो झण्डा महंमदी नूर का, नूर रोसन ईमान॥२७॥**

अरब की धरती से कुर्आन की बरकत तथा फकीरों की शफकत आदि सभी निधियां उठकर भारत वर्ष में पन्ना जी में आ गई। चारों ओर श्री प्राणनाथ जी के श्री कुलजुम स्वरूप के दिव्य ज्ञान का प्रकाश फैल गया, जिससे सभी के अंदर परब्रह्म के प्रति विश्वास भर गया।

**बेसक मेला इत होएसी, महंमद सरा अदल।
तिन कायम करी दुनी फानी को, ले हक इलम अकल॥२८॥**

इसमें कोई शक नहीं कि श्री प्राणनाथ जी के सच्चे न्यायालय में संसार का बहुत बड़ा समूह एकत्रित होगा। श्री जी ने जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान के प्रकाश में संसार के नश्वर जीवों को भी बेहद की अखण्ड मुक्ति का सुख दिया है।

**जो कहा सरा दीन महंमदी, तामें सकसुभे कोई नाहें।
सो सब सुध देवे हक बका, सकसुभे न अर्स दिल माहें ॥२९॥**

श्री प्राणनाथ जी के द्वारा संसार को दिया हुआ जो निजानन्द दर्शन है, उसकी पद्धति में किसी भी प्रकार का संशय नहीं है। यह निजानन्द दर्शन अक्षरातीत तथा परमधाम की सम्पूर्ण पहचान देता है। इसी प्रकार जिन ब्रह्मात्माओं के हृदय ने धाम की शोभा को प्राप्त कर लिया होता है, उनके अंदर किसी भी प्रकार का संशय नहीं होता है।

**ना सक महंमद दीन में, ना सक महंमद सरीयत।
ना सक सुनत जमात में, कहें यों आयतें हदीसें सूरत ॥३०॥**

कुर्आन की आयतों, हदीसों तथा सुरतों में लिखा है कि श्री प्राणनाथ जी के द्वारा प्रवर्तित निजानन्द सम्प्रदाय (पंथ) और उसकी पद्धति में किसी भी प्रकार का संशय नहीं है। इसी प्रकार, श्री कुल्जुम स्वरूप के निर्देशों का पालन करने वाले ब्रह्ममुनियों के कथनों में भी कोई संशय नहीं होता है।

**अब क्यों झण्डा छिपा रहे, हुआ जाहेर तजल्ला नूर।
जाहेर किया नूर अर्स का, अर्स दिल महंमद जहूर ॥३१॥**

जिस तारतम ज्ञान के प्रकाश में संसार को अक्षरातीत की पहचान मिली है, भला अब वह कैसे छिपा रह सकता है, श्री महामति जी के धाम हृदय में प्रकट होने वाले श्री कुल्जुम स्वरूप ने परमधाम की शोभा, शृंगार तथा लीला को प्रकट कर दिया है।

**खिलवत भी जाहेर करी, जो हक पातसाही वाहेदत।
छिपी सब जाहेर हुई, जो हक दिल बीच न्यामत ॥३२॥**

श्री कुल्जुम स्वरूप ने परमधाम की खिलवत, वहदत (एकत्व) को प्रकट कर दिया है। इसके अतिरिक्त परमधाम में विराजमान श्री राज जी के स्वामित्व का भी बोध हो गया है। श्री राज जी के हृदय में निहित प्रेम, ज्ञान, एकत्व, निसबत, शोभा आदि की मारिफत की जो बातें अनादि काल से अब तक छिपी पड़ी थीं, वे सभी प्रकट हो गयी हैं।

भावार्थ- प्रिया-प्रियतम का मिलन स्थान खिलवत कहलाता है। बाह्य रूप से सम्पूर्ण परमधाम, पांचवी भूमिका या मूल मिलावे को खिलवत कहते हैं किन्तु आन्तरिक रूप से प्रिया-प्रियतम का हृदय ही एक दूसरे के लिये खिलवत होता है। परमधाम में सभी श्री राज जी के ही हृदय के स्वरूप हैं, अतः सभी के अन्दर समान रूप में प्रेम, सौन्दर्य,

आनन्द, विचार आदि हैं, इसे ही वहदत कहते हैं। श्री राज जी का दिल (हृदय) ही परमधाम के २५ पक्षों, खूब-खुशालियों एवं पशु-पक्षी आदि के अनन्त ऐश्वर्य के रूप में क्रीड़ा करता है जिसे उनका स्वामित्व कहते हैं।

सिपारे चौथे मिने, कही गैब हक खिलवत।

सो जाहेर करसी मोमिन, उतर के आखिरत ॥३३॥

कुर्आन के चौथे सिपारे में परब्रह्म की गुह्य खिलवत अर्थात् मूल मिलावे का सांकेतिक वर्णन है। कुर्आन में लिखा है कि परमधाम के ब्रह्ममुनि जब कियामत के समय इस संसार में आयेंगे तो वे ही इसके रहस्य को प्रकट करेंगे।

भावार्थ- कुर्आन सि. ४ सू. ३ आ. १६५ “फस्तजाब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी अिन्दिल्लाहि बल्लाहु अिन्दह् हुसुनुस्सवबि” अर्थात् परवरदिगार ने उनका दुआ कबूल कर ली। और मैं तुममें से शुभ कर्म करने वाले के कर्म को बेकार जाने नहीं देता, चाहें वह स्त्री हो या पुरुष। जिन लोगों ने मेरे लिये कुर्बानी की मैं उनके गुनाह दूर कर दूंगा, और उनको बहिश्त में दाखिल करूंगा, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। यह खुदा के यहाँ से उनके किये का बदला है और अच्छा बदला तो खुदा के पास ही है”

हुई ढील होते फजर, वास्ते आवने हक न्यामत।

सो आया अर्स बका मता, हुआ बीच बारहीं सदी बखत ॥३४॥

परमधाम की अखण्ड निधि रूप खिलवत, परिक्रमा, सागर तथा शृंगार के अवतरण के कारण प्रातःकाल का उजाला करने वाले मारिफत सागर के ज्ञान के अवतरण में देर हो गयी। इस प्रकार, १२वीं सदी के प्रारम्भ हो जाने पर वि. सं. १७४८ में अखण्ड परमधाम का गुह्य ज्ञान मारिफत सागर के रूप में अवतरित हुआ।

भई रोसनाई रूहअल्ला की, सुरू दसई अग्यारहीं विस्तार।

होते सदी बीच बारहीं, आया बका मता बेसुमार ॥३५॥

श्यामा जी (श्री देवचन्द्र जी) का प्रकटन दसवीं सदी वि. सं. १६३८ में हुआ। ग्यारहवीं सदी में उनके ज्ञान का विस्तार हुआ। बारहवीं सदी के प्रारम्भ होने पर मारिफत सागर के रूप में परमधाम का अथाह ज्ञान अवतरित हुआ।

झण्डा महंमदी नूर का, सो पोहोंच्या नूर बिलंद।

हुआ दिन दिल महंमद मारफत, उड़ी रात फरेबी फंद ॥३६॥

श्री प्राणनाथ जी के द्वारा स्थापित तारतम ज्ञान रूपी झण्डे की गरिमा परमधाम तक पहुँच गयी। दिन के उजाले की भाँति श्री महामति जी के हृदय में परमधाम के ज्ञान का प्रकटीकरण हुआ। अब उनका हृदय मूल स्वरूप श्री राज जी के समान ही मारिफत (परम सत्य) का स्वरूप बन गया। इस अलौकिक ज्ञान के उजाले में सबको अपने बन्धनों में फँसाये रखने वाली अज्ञान-रूपी रात्रि नष्ट हो गयी।

भावार्थ- तारतम ज्ञान रूपी झण्डे का परमधाम पहुँचने का आशय है परमधाम की अखण्ड सम्पदा (खिल्वत, परिक्रमा, सागर एवं श्रृंगार) का अवतरित होना।

**सिपारे उनईस में, लिखे एक ठौर बयान तीन।
ए जो देखो दिल देय के, तो दिल नकस होए आकीन ॥३७॥**

कुर्आन के १६ वें सिपारे में एक ही तन (श्री मिहिरराज जी, महामति) में तीन सूरतों (बसरी, मल्की तथा हकी) के लीला करने का वर्णन है। हे साथ जी! यदि आप पूर्ण मन से इस पर विचार करें तो आपके हृदय में श्री प्राणनाथ जी के प्रति अटूट विश्वास अंकित हो जायेगा।

भावार्थ- कुर्आन के सि. १६ सू. आ. १-२ “काफ-हा-या-ऐन-साद जिकरू रहमति रब्बिक अब्दैहू जकरिया” यानि काफ, हा, या, ऐन, साद यह आपके परवरदिगार की मेहरबानी का बयान है। जो अपने बन्दे जिकरिया पर की। कुर्आन पाक तजुर्मा तफसीर-ए कमालुद्दीन यानि कि तफसीर-ए-हुसैनी में मुल्ला हुसैन बिन अली वाइज काशिफी फरमाते हैं कि-

किताब इलाही में मजकूर (वर्णन) है। कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम (संदेश वाहक जिन पर एवं उनके समुदा पर अनुशंसाए) मुहहब्ब (प्रिय) सुफियान (पवित्र) की तीन सूरतें (आकृतियाँ) हो एक (प्रथम) सूरत (आकृति) बशरी (मानवीय) जैसा कि हक तआला (परमेश्वर) ने फर्माया (वर्णन) किया कि ऐ मुहम्मद! (प्रशंसित) सिवाए (अतिरिक्त) इसके नहीं कि मैं भी बशर (मानव) हूँ आपकी तरह (भाँति) दूसरी (द्वितीय) मलकी (दैवीय/देवदूत) जैसा कि खुद (स्वयं) हजरत (श्री मान) ने फर्माया (वर्णित किया) बेशक (निःसंदेह) मैं नहीं हूँ आप में से किसी की मिसल (समान) व मैं रहता हूँ अपने रब (परब्रह्म) के पास (समीप) वह खिलाता है। मुझे और

पिलाता (खानपान प्रदान करता) है। मुझको और तीसरी (तृतीय) हकी (सत्य/यथार्थ) हकीकत जैसा कि खुद (स्वयं) अपने (वर्णन) फर्माया (सिफ) मेरे वास्ते (हेतु) अल्लाह (परब्रह्म) के साथ एक वक्त (समय) है कि नहीं गुंजाईस (स्थान) रखता। उस वक्त (समय) मेरे साथ (समीप) कोई मुर्करम (नियुक्त) फिरिश्ता (देवदूत) न नबी (अवतार) भेजा (अवतरित) हुआ और इससे भी खुली हदीस (नवीन वार्ता) यह है कि “जिसने मुझको (मुहम्मद सल्ल.) को देखा उसने हक (परब्रह्म) देखा (दर्शन किया) और हजरत (श्री मान) ने हक तआला (परमात्मा) को हर (प्रत्येक) सूरत (आकृति) में जनाब (श्री मान) रसूल-ए-अकरमम सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम के साथ कलाम (वार्ता) और है। सूरत बसरी (मानवीय दृष्टि) जैसे कल्मः (वचन) जैसे “कुल हूँ अल्लाहू अहद” मलक हरूफ के निशान यह है कि अल्लाह एक है हकीकी फिर (पुनः) वही भेजी अपने बन्दे की तरफ व यकूलून्न मता हाजल्व अदु इन कुन्तुम् सादिकीन (२६) कुललकुम ओआदु यौमिल्ला तस-तअ-खिरु-न अन्हु साअ-तंव-व ला तस्तक दिमून (३०) यानि और कहते हैं। अगर आप सच्चे हो तो यह कियामत का वायदा कब पूरा होगा कह दो कि तुमसे एक दिन का वायदा है जिससे न एक घड़ी पीछे रहोगे न आगे बढ़ोगे (३०)। या अय्युहल्लजी-न व आमनुत्तकुल्लाह वल्लनअुर नफ्सुम्मा कद-द-मत लिग दिन “वत्तकुल ला ह” इन्नहल्लाह खबीसम-बिमा तअ-मलून (१८)। यानि ऐ ईमान वालो! खुदा तआला से डरते रहो, और हर शख्स को देखना चाहिए कि उसने कल (कियामत) के लिये क्या भेजा है और खुदा तआला से डरते रहो, बेशक खुदा तआला आपके सभी आमाल से खबरदार है (१८)।

नोट:- इन तीन पारः एवं तीन सूरतों की चारों आयतों का मिलान करने से मालूम होता है कि कल को कियामत होगी। वह कल हजार साल के बराबर एक दिन को कहा है।

“व यस्तअ-जिलू न-क बिल अजाबि व लय्युख लिफल्लाहु व अ-दहू व इन-न यौम अि-द रब्बिक क-अ लिफ सनतिम्मिम्मा त-अद्दून (४७)। यानि और (यह) तुमको अजाब के लिये जल्दी कर रहे हैं और खुदा तआला अपना वायदा हर्गिज खिलाफ नहीं करेगा, बेशक आपके परवरदिगार के नजदीक एक दिन तुम्हारे हिसाब के मुतबिक हजार (१०००) साल (वर्ष) के बराबर है। एवं

“तन्नज्जुल मलाइकत व र्सहु फीहा बि इज्जि रब्बिहिम मिन कुल्लि अम्मिन (४) सलामुन

हिय हत्ता मतलैल फज्जि” (५) यानि इस (रात्रि) में फरिश्ते व रूहें अपने परवरदिगार के हुक्म से उतरते (अवतरित होते) हैं।

यह (रात) सुबह के होने तक सलामती (मोक्ष काल) है।

आवे अर्स आकीन हक महंमद पर, जो देखो हकीकत मारफत ।

इलम लदुन्नी हक के, होए हक हिदायत ॥३८॥

यदि आप श्री कुल्जुम स्वरूप में निहित हकीकत एवं मारिफत (ज्ञान-विज्ञान) का चिन्तन करें तो आपको प्रियतम श्री राज जी एवं इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के प्रति अटूट विश्वास हो जायेगा। श्री राज जी द्वारा अवतरित तारतम ज्ञान के प्रकाश में आत्मा को प्रियतम अक्षरातीत का निर्देशन प्राप्त होता है।

इन विध झण्डा महंमदी, खड़ा हुआ बीच हिंदुस्तान।

चौदे तबक जुलमत परे, नूर पोहोंच्या लाहूत आसमान ॥३९॥

इस भारत वर्ष में श्री जी के श्री कुल्जुम स्वरूप का ध्वज स्थापित हुआ। इसका अखण्ड प्रकाश चौदह लोकों, निराकार और बेहद मण्डल को पार कर परमधाम में जा पहुँचा अर्थात् श्री कुल्जुम स्वरूप चौदह लोकों, निराकार, बेहद से भी परे परमधाम तक का संशय रहित ज्ञान देता है।

महामत कहे मदीने से, लिखे खालीफों पर फुरमान।

उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान ॥४०॥

मेहमत साहिबुज्जमाँ श्री महामति जी कहते हैं कि मदीने से स्वयं को इस्लाम का प्रतिनिधि (उत्तराधिकारी) मानने वाले औरंगजेब तथा उसके अधिकारियों के पास वसीयतनामों आये। उनमें लिखा था कि अरब की धरती से सौभाग्य, फकीरों की सफकत (आशीर्वाद), कुर्आन पाक का ज्ञान तथा परब्रह्म से सच्चा विश्वास उठ (चला) गया है।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ७२५ ॥

झण्डा शरीयत का उठ्या

इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है किस प्रकार अरब की धरती से शरीयत का ध्वज (ईमान के साथ शरीयत का ज्ञान) उठ गया। यद्यपि अरब में घर-घर कुर्आन पढ़ी जाती है, नमाज सहित शरीयत के सभी नियमों का पालन भी कट्टरता से होता है किन्तु वहां के सभी लोगों में परब्रह्म के प्रति न तो अटूट विश्वास है और न ही कुर्आन का यथार्थ ज्ञान। वे महजबी कट्टरता से ग्रसित अवश्य है किन्तु धर्म के शाश्वत कल्याणकारी रूप से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं।

कह्या झण्डा उठ्या ईमान का, कौल किया जिन सरत ।

महंमद मेहेंदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत ॥१॥

मक्के-मदीने से जो वसीयतनामें लिखकर आये थे, उनमें कहा गया था कि यहां से ईमान (विश्वास) का ध्वज उठ गया है। मुहम्मद साहब ने ग्यारहवीं सदी में कियामत के प्रकट होने तथा इमाम महदी के साथ आने का वचन जो दिया था, अब उसी कथन के अनुसार हिन्दुस्तान में मुहम्मद साहब तथा आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) प्रकट हो चुके हैं।

यों हादी लिखे कर जाहेर, दिन देखाए देवें कयामत ।

सो लिखे सखत सौं खाए के, सो भी वास्ते इन बखत ॥२॥

इस प्रकार हादी (मुहम्मद साहब) ने कुर्आन में स्पष्ट लिखा है कि इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी स्वयं आकर कियामत का आना सिद्ध करेंगे और संसार के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगे। वसीयतनामों में भी कठोर सौगन्ध खाकर लिखा गया है कि इमाम महदी कियामत की इस घड़ी ग्यारहवीं सदी में आने वाले हैं।

भावार्थ- कुर्आन के पार: १७ सूर: २२ आयत ४७ “व यस्तऽजिलूनक बिलुअजाबि.....सनतिम्मिम्मा तअुद्दून” अर्थात् तुम ने सजा की जल्दी मचा रखी है कि कहाँ है तुम्हारा खुदाई अजाब? क्योंकि खुदा कभी भी अपनी वादा के खिलाफ नहीं करता है। तुम्हें कभी भी शंका नहीं होनी चाहिये कि परवरदिगार के यहाँ का एक दिन तुम लोगों के हिसाब के अनुसार हजार वर्ष के बराबर है।

पार: २८ सूर: ५६ आयत १८ “अय्युहल्लजीन आमनुत्तकुल्लाह वल्लन्जुर, ...

.. खबीरुम् - बिमा तऽमलून” अर्थात् ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और हर आदमी को देखना चाहिये कि उसने कल यानि आखिरत के लिए क्या संदेश भेज रखा है और अल्लाह से डरते रहो। बेशक जो कुछ तुम करते हो उसे उसकी खबर है।

पारः २२ सूरः ३४ आयत २६,३० “व यकूलून मता आजलूवऽदु साअतंत्वं ला तस्तकूदिमून” अर्थात् कोई तुमसे पूछते है कि बताओ अगर तुम सच्चे हो तो यह कियामत का वादा कब पूरा होगा ? तुम उनसे कह दो कि तुम्हारे साथ एक दिन का वादा निश्चित है। तुम न उसके एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे।

**मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार।
झण्डा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार ॥३॥**

मुहम्मद स. अ. व. व. तथा उनके मित्रों एवं अनुयायियों ने इस्लाम मत का ध्वज स्थापित करने में बहुत परिश्रम किया। इनकी छत्रछाया में बहुत से (अनन्त) लोग आये।

**दुनियां जो जैसी हुती, सो तिसी विध लई समझाए।
तोरा किया सिर सबन के, दर्ई सरीयत राह चलाए ॥४॥**

उस समय अरब में पशु वृत्ति के जिस प्रकार के लोग थे, उन्हें उसी प्रकार से समझाया। सभी के ऊपर शासन के बल से शरियत का मार्ग चलाया।

**अग्यारै सदी लग अमल, चल्या सरीयत का।
सो फरदा रोज सदी बारहीं, कौल पोहोंच्या फजर का ॥५॥**

ग्यारहवीं सदी तक शरियत का शासन चलता रहा। मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कल के दिन अर्थात् बारहवीं सदी में कियामत के आने एवं परमधाम के ज्ञान का उजाला होने का कथन किया था। अब वह समय आ गया है।

भावार्थ- कुर्आन के पा. १७ सू. २२ आ. ४७ “व यस्तऽजिलूनक बिल्अजाबि तऽमल् - कुलूबुल्लती सनतिम्मिम्मा तअुद्दून”, पा. ३० सू. ६७ आ. ४-५ “तनज्जलुल्-मलाइकतु हत्ता मत्लइल् - फज्रि”, पारः २१ सूरः ३२ सज्दा आयत ५ “युदबिर्ल - अमूर् मिनस्साइ इललअर्जि सुम्म यऽरुजु अलैहि फी

यौमिन कान मिक्दारुल अल्फ सनतिम्मिइ तअुद्दून”, अर्थात् वही आसमान से जमीन तक के हर काम का इंतजाम करता है। फिर वह एक दिन जिसकी मिलकर (गणना) तुम्हारी गिनती के मुताबिक हजार (१०००) साल की होगी, उसकी तरफ चढ़ाई करेगा।

सो नूर झण्डा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम।

इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम ॥६॥

इस प्रकार परब्रह्म ने भारत वर्ष के पन्ना धाम में तारतम ज्ञान का ध्वज स्थापित किया। उस ज्ञान के प्रकाश में ‘निजानन्द’ का मार्ग प्रशस्त (निर्धारित) हुआ। यहीं पर परब्रह्म की सभी निधियां ज्ञान, प्रेम, विश्वास आदि आ गयीं तथा श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में परमधाम का ज्ञान भी अवतरित हो गया।

भावार्थ- ‘इस्लाम’ का शाब्दिक अर्थ शान्ति या समर्पण होता है। इस प्रकार, इस्लाम तथा निजानन्द समानार्थक हैं क्योंकि परमधाम के आनन्द में ही शाश्वत शान्ति को पाया जा सकता है। सम्प्रदाय का तात्पर्य है परम्परागत रूप से चले आ रहे ज्ञान का प्रवाह। दर्शन का आशय उस सिद्धान्त से है जिसका प्रत्यक्ष अनुभव हुआ हो। इस प्रकार, सम्प्रदाय और दर्शन का अभिप्राय मूलतः एक ही है, किन्तु व्यावहारिक रूप में इन्हें अलग-अलग माना जाता है।

तो दरगाह से खादिम बुजरकों, लिखे सखत सौं खाए।

सो जमाना सदी अग्यारहीं, किने न देख्या दिल ल्याए ॥७॥

मक्का-मदीना से धर्माधिकारियों ने कठोर सौगन्ध खाकर वसीयतनामों लिखकर भिजवाया, जिनमें लिखा था कि ग्यारहवीं सदी का यह समय आखरूल इमाम मुहम्मद के प्रकट होने का है किन्तु सत्ता के मद में चूर औरंगजेब तथा उसके अधिकारियों ने उस पर पूरे मन से ध्यान नहीं दिया।

करी अव्वल लिख इसारतें, दूजे लिख्या केहेर देखाए।

तीसरे उठाया झण्डा आकीन, चौथे हिंद में खड़ा किया आए ॥८॥

कियामत को दर्शाने के लिये परब्रह्म के आदेश से चार प्रमुख कार्य हुए : १. मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कुर्आन पाक में संकेतों में कियामत का समय कल (फरदा रोज, १२वीं सदी) निश्चित किया है। २. कुर्आन तथा हदीसों में अरब की धरती पर

कहर (अजाब) का वर्णन है। ३. अरब की धरती से ज्ञान और विश्वास का ध्वज उठ गया। ४. वह ध्वज भारत की धरती पर आ गया।

भावार्थ- मुहम्मद (सल्ल.) के देहान्त के पश्चात् अरब की धरती पर भयंकर रक्तपात हुआ। चारों खलीफाओं (अबू वक्र, उमर, उस्मान तथा अली) की हत्या की गयी। इमाम हुसैन के ७२ साथियों को अत्याचारी यजीद की ७०,००० सैनिकों वाली सेना से लड़ते हुए करुण मृत्यु का शिकार होना पड़ा। सम्पूर्ण अरब की धरती पर पशु वृत्ति छा गयी अर्थात् दाब्ह-तुल-अर्ज (छलिया/मायावी) जानवर प्रकट हो गया।

लिख्या अपने हाथों तेहेकीक, गई चारों हक न्यामत ।

सिर देखें राह गजब की, क्यों न अजू आवत ॥९॥

मक्के-मदीने के धर्माधिकारियों ने पूर्ण निश्चय के साथ अपने हाथों से वसीयतनामों लिखकर भिजवाये। उनमें लिखा था कि अरब की धरती से परब्रह्म के द्वारा दी गयी चारों नेमतें (निधियां) यथा, १. बरकत (सौभाग्य), २. फकीरों की सफकत (आशीर्वाद), ३. कुर्आन का ज्ञान एवं ४. ईमान उठ कर भारत चली गयी हैं। वे तो कियामत के संकेत के रूप में खुदाई कहर (दैवी आपदा) की बाट देख रहे हैं कि वह अभी तक क्यों नहीं आया?

भावार्थ- शरियत के अनुयायी कुर्आन पाक के बाह्य अर्थों से ऊपर उठने का प्रयास भी नहीं करते हैं। वे कियामत का अर्थ महाप्रलय (रोज-ए-हश्त्र) से लेते हैं। वस्तुतः कियामत का अर्थ है पुनरोत्थान अर्थात् परमधाम में हमारी जो जागृत अवस्था थी, वैसी ही हो जाना कियामत है। जीव सृष्टि के सन्दर्भ में अवश्य ऐसा कहा जा सकता है कि परमधाम के उस ज्ञान की प्राप्ति जो उसे अज्ञान-रूपी नींद से जगाकर बेहद मण्डल में अखण्ड करने के योग्य बना दे, उसे कियामत आना कहा जाता है।

जाहेरी कहें अजू न आइया, हक सेती गजब ।

आकीन बिना देखे नहीं, जो छीन लिया मता सब ॥१०॥

कुर्आन पाक का बाह्य अर्थ करने वाले कहते हैं कि अब तक कियामत के निशान के रूप में खुदाई अजाब क्यों नहीं आया? वस्तुतः कुर्आन का ज्ञान इनसे छिन गया है,

और विश्वास न होने से ये गहन चिन्तन भी नहीं कर पाते हैं।

**दुनी बरकत सफकत फकीरों, और लिया छीन कुरान।
बाकी इसलाम में क्या रह्या, जो रह्या न काहू ईमान ॥११॥**

जब अरब की धरती से बरकत, फकीरों की सफकत और कुर्आन का ज्ञान छीन लिया गया तथा किसी के मन में परब्रह्म के प्रति विश्वास ही नहीं रहा तो इस्लाम में शेष रहा ही क्या?

**अजूं राह देखे गजब की, जानें हुआ नहीं फुरमाया।
इसलाम मता सब से गया, तो भी नजरों किनहूँ न आया ॥१२॥**

वे आज भी किसी खुदाई प्रकोप के आने की राह देख रहे हैं। वे सोचते हैं कि जब कुर्आन में कियामत के समय खुदाई अजाब के आने का कथन है तो अब तक वह आया क्यों नहीं? इस प्रकार, उनके पास इस्लाम का सच्चा ज्ञान ही नहीं है।

**जुदे पड़े राह बीच रात के, जिद फितने खोया आकीन।
तो दुनी बरकत सफकत फकीरों, हक कलाम लिए छीन ॥१३॥**

अहंकार के कारण होने वाले झगड़ों में इन्होंने परब्रह्म एवं मुहम्मद सल्ल. (साहब) से अपना विश्वास खो दिया। अज्ञानता के कारण वे मतभेदों का शिकार हुए और अलग-अलग फिरकों में बंट गये। यही कारण है कि इनसे बरकत, फकीरों की सफकत तथा कुर्आन पाक का ज्ञान छीन लिया गया।

**ईमान बिना देखे नहीं, रही या गई न्यामत।
नफा नुकसान तो देखहीं, जो होए इसलाम लज्जत ॥१४॥**

ईमान न रहने से वे इस बात का विचार ही नहीं करते हैं कि परब्रह्म की दी हुई निधियां अभी उनके पास ही हैं अथवा चली गयी हैं? वे अपनी हानि या लाभ के विषय में तो तब सोचें जब उन्हें सच्चे इस्लाम (सत्य मार्ग) का रस मिल रहा हो।

**सुध न पाइए बिना लज्जत, नफा या नुकसान।
निसबत रहे ना जुबान की, जहां हक मारफत नहीं पेहेचान ॥१५॥**

जब तक धर्म के सच्चे स्वरूप का रसास्वादन नहीं होता, तब तक अपनी हानि या लाभ का भी बोध (अहसास) नहीं हो सकता। जिस व्यक्ति को परब्रह्म के स्वरूप की पूर्ण पहचान नहीं होती है, उसमें यथार्थ बोलने की भी सामर्थ्य नहीं रहती।

**अजूं चाहे दुनियां माजजा, देखे ना खड़ा झण्डा नूर।
तब उतथें अक्स पुकारिया, कहे हुए इसलाम से दूर ॥१६॥**

आज भी संसार के लोग कियामत की पहचान के लिये किसी चमत्कार की आशा लगाये बैठे हैं। उन्हें हिन्दुस्तान (श्री पन्ना जी) में तारतम ज्ञान का लहराता हुआ ध्वज दिखायी नहीं दे रहा है। अरब की धरती पर इस्लाम का मात्र प्रतिबिम्ब ही रह गया है, वहां से ही आने वाले वसीयतनामें यह बात पुकार-पुकार कर कह रहे हैं।

**फजर हुए खुले हकीकत, खुलें हकीकत होए कयामत।
हुए हक बका अर्स जाहेर, सूर ऊग्या दिन मारफत ॥१७॥**

जब श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा यथार्थ सत्य का ज्ञान प्रकट होगा, तभी अज्ञानता के अन्धकार की काली रात मिट सकती है और अखण्ड ज्ञान के प्रातःकाल का उजाला फैल सकता है। इस अवस्था में ही कियामत का आना कहा जा सकता है। अब तो मारिफत (परम सत्य) के ज्ञान-रूपी सूर्य (श्री कुल्जुम स्वरूप) के ऊग आने से दिन का उजाला फैल गया है और संसार को परब्रह्म तथा अखण्ड परमधाम की पहचान हो गयी है।

**फुरमान जबराईल ल्याइया, बरारब से बीच हिंद।
आए नूर झण्डा खड़ा किया, गया कुफर फरेबी फंद ॥१८॥**

जिब्रील फरिश्ता अरब से कुर्आन पाक का ज्ञान लेकर हिन्दुस्तान में आया है और यहाँ श्री कुल्जुम स्वरूप के रूप में तारतम ज्ञान का ध्वज स्थापित कर दिया है, जिससे लोगों में विद्यमान नास्तिकता एवं छल-प्रपंच के बन्धनों का नाश हो गया है।

**सरा चल्या हक हुकमें, किया कौल जिन सरत।
सो आए पोहोंची सदी बारहीं, भई फरदा रोज कयामत ॥१९॥**

इतने समय तक परब्रह्म के आदेश से शरियत का प्रभाव रहा। मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कल के दिन अर्थात् बारहवीं सदी में कियामत के आने का जो जो वायदा

किया था, वह समय यही है।

**यों झण्डा नूर बिलंद का, किया खड़ा हक हादी मोमिन ।
देखावे नामे वसीयत, नूर हिंद में बरस्या रोसन ॥२०॥**

इस प्रकार, श्री प्राणनाथ जी और सुन्दरसाथ ने परमधाम के ज्ञान का दिव्य ध्वज स्थापित किया है। वसीयतनामों भी इस बात की साक्षी दे रहे हैं कि हिन्दुस्तान में तारतम ज्ञान की अखण्ड वर्षा हो रही है।

भावार्थ- यद्यपि हक हादी का अर्थ श्री राज जी और श्यामा जी होता है किन्तु उसका आशय श्री जी से भी है क्योंकि वे हक (परब्रह्म) भी हैं और हादी (हिदायत दिशा निर्देश करने वाले) भी।

**मुसाफ मता महंमदी मोमिनों, पोहोंच्या वारसी आखिरी इमाम ।
झण्डा पोहोंच्या अर्स अजीम लग, देखाए हक बका अर्स तमाम ॥२१॥**

कुर्आन पाक में श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं से सम्बन्धित जो भी गुह्यतम ज्ञान छिपा हुआ था, उसे खोलने का अधिकार मात्र हजरत आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ श्री प्राणनाथ जी को था, इसलिये वह अलौकिक ज्ञान श्री महामति जी (मेहमत साहब) के धाम हृदय में विद्यमान हो गया। तारतम ज्ञान का ध्वज परमधाम तक पहुँच गया। श्री कुलजुम स्वरूप ने अक्षरातीत के युगल स्वरूप तथा सम्पूर्ण परमधाम का ज्ञान संसार में प्रकट कर दिया।

**अर्स देखाया चढ़ उतर, हुआ मेयराज महंमद पर ।
क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोले रूह नजर ॥२२॥**

जब मुहम्मद सल्ल. (साहब) को परब्रह्म का साक्षात्कार हुआ तो वे अपनी आत्मिक दृष्टि से परमधाम गये और वापस आये। ऐसा करके उन्होंने स्पष्ट रूप से दर्शा दिया कि परमधाम इस संसार से पूर्णतया अलग है। किन्तु अपनी आत्मिक दृष्टि को खोले बिना मिथ्या दिल वाले ये जीव भला इस रहस्य को कैसे समझ सकते हैं?

**जेता अर्स दिल मोमिन, बिन मेयराज न काढ़ें बोल ।
बिन पूछे देवें सब को, अर्स अजीम पट खोल ॥२३॥**

जिन ब्रह्ममुनियों का हृदय ही प्रियतम का धाम कहलाता है, वे अपने आराध्य के साक्षात्कार के अतिरिक्त अन्य कोई लौकिक बात ही नहीं करते हैं। वे बिना पूछे ही सभी को निराकार से परे अखण्ड परमधाम का ज्ञान देते हैं।

**करने हैयात सबन को, देवें हक इलम बेसक।
सो पोहोंचे बका बीच भिस्त के, नूर नजर तले हक।।२४।।**

सबको अखण्ड मुक्ति के लिये ब्रह्ममुनि उस संशय-रहित तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं जो अक्षरातीत की पहचान कराता है। उस ज्ञानामृत का रसपान करने वाला श्री राज जी की कृपा दृष्टि से अक्षर ब्रह्म के बेहद धाम में अखण्ड बहिश्तों का अधिकारी बनता है।

**जो आया झण्डे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अर्स अजीम बीच जोत।।२५।।**

जो व्यक्ति श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान की ध्वजा की छत्रछाया में आ जाता है, वह उसी समय अखण्ड मुक्ति का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है। श्री कुलजुम स्वरूप के चिन्तन के द्वारा उसे प्रियतम अक्षरातीत के हृदय के गुह्यमत रहस्यों का बोध हो जाता है और उसकी आत्म-ज्योति (आत्मिक-दृष्टि) चितवनी के माध्यम से सम्पूर्ण परमधाम का साक्षात्कार कर लेती है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण में 'ज्योति' शब्द का आशय आत्म-ज्योति अर्थात् आत्मिक स्वरूप से है।

**अपनी सूरत देखी अर्स की, जो रूहें तले हक कदम।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले कदम।।२६।।**

जो ब्रह्मांगनाएँ मूल मिलावे में श्री राज जी के चरणों में बैठी हुई है, वे चितवनी के द्वारा परमधाम में विद्यमान अपनी परात्म की शोभा को देखती हैं। जब श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में परब्रह्म की पहचान देने वाले परम सत्य का सूर्य अवतरित हो गया है, तो सभी लोग श्री जी के निर्देशन में चलने लगे हैं।

महामत कहे ए मोमिनो, कही दो झण्डों की बिगत।

अब खोल देऊं फरदा रोज की, जो फुरमाई थी इसारत ॥२७॥

श्री महामति (मेहमत) जी कहते हैं कि हे साथ जी! मैंने आपसे शरीयत एवं हकीकत-मारफत के ज्ञान-रूपी दो झण्डों की वास्तविकता को बताया है। अब मैं उस फरदा रोज अर्थात् कल के दिन का रहस्य स्पष्ट कर रहा हूँ, जिसके विषय में मुहम्मद साहब ने संकेतों में कहा है।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ७५२ ॥

बाब फरदा रोज का

इस प्रकरण में उस फरदा रोज (कल के दिन) की व्याख्या की गई है, जिसके ऊपर कियामत के प्रकट होने का मुद्दा है।

फरदा रोज पेहेले कहा, ए जो बखत कयामत।

एक दिन एक रात की, फजर है आखिरत ॥१॥

कुरआन में पहले से ही फरदा रोज अर्थात् कल के दिन कियामत के प्रकट होने का समय लिखा है। मुहम्मद साहब के देहान्त के एक दिन और एक रात के पश्चात् कियामत का समय निश्चित होता है, जिसमें तारतम ज्ञान के प्रकाश में प्रातःकाल (फज्र) की लीला प्रारम्भ होती है।

साल हजार दुनीय के, गिनती चांद और सूर।

सो हक के एक दिन में, आवे नूर बिलंद से नूर ॥२॥

सूर्य और चन्द्रमा की गणना के अनुसार संसार के हजार वर्षों के बराबर परब्रह्म का एक दिन माना जाता है। इस प्रकार ११वीं सदी में परमधाम से श्री कुलजम स्वरूप का अवतरण निश्चित होता है।

इन किल्ली रूहअल्ला अर्स के, पट खोल करे रोसन।

खोली हकीकत मारफत, किया अर्स बका हक दिन ॥३॥

तारतम ज्ञान की कुंजी से श्यामा जी ने निराकार का आवरण हटाकर परमधाम का ज्ञान दिया। उन्होंने अपने दूसरे तन में हकीकत एवं मारिफत के गुह्य रहस्यों को खोला तथा अखंड परमधाम और श्री राज जी की शोभा का वर्णन कर दिन के समान ज्ञान का उजाला कर दिया।

दिन रब का दसमी सदी लग, दुनियां के साल हजार।

मास हजार लैल के, तीसरे तक़रार॥४॥

हिजरी सन् दसवीं के अन्त तक जब संसार के १,००० वर्ष पुरे हो पुरे थे, उस समय तक परब्रह्म का केवल एक दिन हुआ था। कुर्आन में लैल-तुल-क़द्र के तीसरे भाग में हजार महिने से भी अधिक लम्बी रात्रि का वर्णन किया गया है।

कछू मास हजार से बेहेतर, ए जो कही लैलत क़दर।

ए फ़रदा रोज़ कयामत, ए जो कही फ़जर॥५॥

लैल-तुल-क़द्र के इस तीसरे भाग की इस रात्रि को हजार महिने से कुछ अधिक अर्थात् १०० साल की कहा गया है। ११वीं सदी के बाद ही कल का दिन कयामत का समय होगा, जिसमें अखंड परमधाम का ज्ञान अवतरित होने से प्रातःकाल का उजाला फैल जाएगा।

दसमी सदी भी हिसाब में, गिनती में आई।

इतथें सुरू हुई, रूहअल्ला की रोसनाई॥६॥

इस प्रकार दसवीं सदी की यह गणना पूरी होती है, जिस के पूर्ण होने में जब सवा नौ वर्ष (६ वर्ष ३ माह) अभी कम थे तो इस संसार में श्यामा जी का प्रकटन होता है।

हजार मास जो लैल के, हुए सदी अग्यारहीं भर।

लिखी जो इसारतें, भई पूरी मिल बेहेतर॥७॥

हजार महिने से अधिक की जो रात्रि कही गयी है, वह ११ वीं सदी है। कुर्आन में ये बातें संकेतों में लिखी है जो अपने समय पर पूर्ण होती गयी है।

और आई सदी बारहीं, इनमें फ़जर भई।

लिख्या मुसाफ़ बीच आयतों, और हदीसों में कही॥८॥

१२ वीं सदी विक्रम संवत् १७४५ के पश्चात् प्रारंभ होती है, जिसमें परमधाम का ज्ञान अवतरित होने से प्रातःकाल का उजाला फैल जाता है। यह बात कुर्आन की आयतों तथा हदीसों में कही गयी है।

**असराफील गावे फुरकान, जाहेर करे निसान।
मगज मुसाफ के बातून, कर देवे पेहेचान॥९॥**

असराफील कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को श्री कुलजम स्वरूप के रूप में प्रस्तुत कर रहा है (गा रहा है) और कियामत के निशानों को भी स्पष्ट रूप में दर्शा रहा है।

**खुलासा मुसाफ का, असराफील बतावे।
तब सूरज मारफत का, हक अर्स दिल नजरों आवे॥१०॥**

जब असराफील फरिश्ता कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों का स्पष्टीकरण करेगा तो जिन ब्रह्मात्माओं का हृदय धाम कहलाता है उन्हें अपने हृदय मन्दिर में मारिफत (परम सत्य) के सूर्य प्राणेश्वर अक्षरातीत का दर्शन प्राप्त होगा।

**तो हदीसें हक इलम की, भांत भांत करे बड़ाई।
बाब भिस्त जो हैयाती, सो याही कुंजी से खोल्या जाई॥११॥**

इस प्रकार, हदीसों में श्री कुलजम स्वरूप की अनेक प्रकार से महिमा गायी गयी है। कुर्आन में अखण्ड बहिश्तों के जो प्रसंग हैं वे तारतम ज्ञान रूपी कुंजी से ही यथार्थ रूप में जाने जा सकते हैं।

भावार्थ- कुर्आन में बहिश्तों में दूध और शहद की नहरों का वर्णन है। अपनी लौकिक बुद्धि से कुर्आन के विद्वान इसके रहस्यों को समझ नहीं पाते हैं। वे भौतिक दृष्टि से ही बहिश्तों के सुख को देखते हैं तथा आयतों का विकृत अर्थ करके मांस, शराब एवं हूरो की कल्पना कर लेते हैं। उस समय तो स्थिति बहुत ही हास्यास्पद हो जाती है जब आतंकवादियों को यह कहकर भड़काया जाता है कि शहीद होने पर तुम्हें जन्नत में इस संख्या का कक्ष मिलेगा। यहां तक कि उस कक्ष की चाबी (कुंजी) भी उन्हें दे दी जाती है।

**हक इलम जो लदुन्नी, बका अर्स असल।
एही दानाई हक की, कही जो कुल्ल अकल॥१२॥**

श्री कुलजुम स्वरूप में निहित तारतम ज्ञान अक्षरातीत की निज बुद्धि एवं अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि (कुल्ल अकल) का कौशल है। इसके द्वारा ही अखण्ड परमधाम का यथार्थ-सा लगने वाला वर्णन हो पाया है।

**ठौर सबों के सब को, फरिस्ता बतावे।
पाक असराफील इन विध, कुरान को गावे ॥१३॥**

अक्षर ब्रह्म का यह पवित्र फरिस्ता अस्माफील तीनों सृष्टियों के धाम की सम्पूर्ण शोभा एवं लीला को दर्शाता है। इस प्रकार वह कुरान के गुह्यतम रहस्यों को श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में गाता है (व्यक्त करता है)।

**खासलखास रूहें उमत, गिरो फरिस्तों खास कहावे।
गिरो रूहों गिरो फरिस्ते, दोऊ अपने ठौर पोहोंचावे ॥१४॥**

ब्रह्मात्माओं को अति विशिष्ट और ईश्वरीय सृष्टि को विशिष्ट कहा गया है। इस प्रकार अस्माफील तारतम ज्ञान के द्वारा दोनों सृष्टियों को उनके धाम में पहुँचायेगा।

**एही सुंनत-जमात, महंमद बेसक दीन।
सकसुभे ना इनमें, जित असराफील अमीन ॥१५॥**

निःसन्देह श्री प्राणनाथ जी के द्वारा प्रवर्तित निजानन्द दर्शन (सम्प्रदाय) का मार्ग संशय रहित है। श्री कुलजुम स्वरूप के निर्देशों के अनुसार आचरण करने वाले सुन्दरसाथ में किसी भी प्रकार का संशय नहीं होता है क्योंकि इनके साथ हमेशा ही सत्यनिष्ठ अस्माफील रहता है।

भावार्थ- असराफील जबरआईल, भेज दिया आमर ।

निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बन्दों पर ॥ (खुलासा, ४/६०)

उक्त कथन से यह सिद्ध होता है कि जिब्रील एवं अस्माफील प्रत्येक ब्रह्मात्माओं के साथ निरन्तर रहते हैं।

**ए जो सुंनत-जमात, होए सके न जुदे खिन।
ए गिरो फोड़ क्यों जुदे पड़ें, जिनों असल अर्स में तन ॥१६॥**

सुन्दरसाथ का यह समूह कभी भी एक दूसरे से एक क्षण के लिये भी अलग नहीं हो सकता। जिन ब्रह्ममुनियों के मूल तन परमधाम में हैं, भला वे अन्य सांसारिक जीवों की तरह टूट कर विरोध (मनमुटाव आदि से) करके अलग कैसे हो सकते हैं?

कई सरे अमल बीच रात के, चली जो सुभे सक।

सो फजर हक इलमें, बेसक करी खलक॥१७॥

अज्ञानता के अन्धकार में जब शरीर्यत का ही प्रभुत्व था, उस समय बहुत से पन्थ संसार में थे जिनमें संशय ही संशय भरा हुआ था। किन्तु अब श्री कुलजम स्वरूप के ज्ञान के प्रकाश में सबके संशय मिट गये हैं।

छे दिन की पैदास (छः दिनों का प्रसंग)

पैदास कही छे दिन की, सो इन आलम का विस्तार।

दिन जुमां के बीच में, पाई साइत जो कही अपार॥१८॥

कुर्आन में छः दिन की सृष्टि का वर्णन है, जिसमें इस जगत का विस्तार हुआ है। छठें दिन शुक्रवार को परमधाम के एक ऐसे 'पल' का प्रसंग आता है, जिसे अनन्त अवधि वाला कहा गया है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के कथन में यह संशय होता है कि संसार में तो सात दिन होते हैं किन्तु यहां छः दिनों का ही वर्णन क्यों है तथा छठें दिन के एक पल को अनन्त समय की अवधि वाला क्यों कहा गया है?

उपरोक्त संशय का समाधान इसी प्रकरण की बाइसवीं तथा तेइसवीं चौपाई में दिया गया है। वस्तुतः ये छः दिन साप्ताहिक नहीं हैं अपितु ब्रह्म लीला से सम्बन्धित छः मुख्य घटक (प्रसंग) हैं जिनमें छठें दिन में अर्थात् ब्रह्मात्माओं के द्वारा होने वाली जागनी लीला में ही महाप्रलय होना है, जिसमें सभी ब्रह्मात्मायें अपने उस निजधाम में जागृत हो जायेगी जहां मूल मिलावे में बैठकर एक पल में ही उन्होंने इस मायावी जगत की लीला को देखा है, इसमें पहले प्रसंग (दिन) में उन्हें ब्रज में आना पड़ता है तथा दूसरे दिन में रास में आना पड़ता है। तीसरे दिन में मुहम्मद साहब, चौथे दिन में रूहुल्लाहु अर्थात् श्यामा जी की

लीला, पांचवे दिन में इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की जागनी लीला के पश्चात् जो छठा दिन होगा, उसी में महाप्रलय के पश्चात् जब सभी सुन्दरसाथ परमधाम में जागृत होंगे तो सबको यह पता चलेगा कि अभी तो हमारा एक पल भी नहीं हुआ था। इस चौपाई में उसी पल का प्रसंग है।

आए एक साइत लैलत कदर में, उसी साइत में दूजी बेर ।

उसी साइत में तीसरे इन इंड, महंमद आए इत फेर ॥१९॥

परमधाम के उसी एक पल में सर्वप्रथम इस मायावी जगत में ब्रह्मात्माओं का आगमन हुआ। इसके पश्चात् उसी पल में उन्हें महारास के लिये योगमाया के ब्रह्माण्ड में जाना पड़ा। परमधाम के उसी पल में इस तीसरे ब्रह्माण्ड (जागनी ब्रह्माण्ड) में मुहम्मद पुनः आए।

भावार्थ- इस चौपाई के चौथे चरण में 'फेर' शब्द से यही आशय निकलता है कि मुहम्मद इसके पहले भी इस नश्वर जगत में ब्रज लीला के समय आये थे। वस्तुतः मुहम्मद एक व्यक्ति नहीं अपितु परब्रह्म का आदेश स्वरूप है, जिसे अनन्त महिमा वाला कहा गया है। अक्षरातीत इस स्वाप्निक जगत में अपने नूरमयी स्वरूप से नहीं आ सकते, इसलिये जब उनकी इच्छा से उनके अंग रूपों अक्षर ब्रह्म अथवा श्यामा जी या महामति जी (श्री इन्द्रावती जी) की आत्मा के साथ परब्रह्म का आवेश या जोश लीला करता है तो उसे 'मुहम्मद' कहा जाता है। इस स्वरूप को अनन्त महिमा वाला इसलिये कहा जाता है क्योंकि परमधाम से बाहर कालमाया अथवा योगमाया में यही अक्षरातीत का स्वरूप माना जाता है जिसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती है।

इस प्रकार, उपरोक्त समीक्षा के आधार पर हम कह सकते हैं कि ब्रज एवं रास में भी मुहम्मद थे। मात्र अरब के स्वरूप को मुहम्मद समझना भूल है। अरब में जिस तन में मुहम्मद की लीला हुई वह 'मुस्तफा' का तन था। यह भी सत्य है कि इस्लाम के अनुयायियों ने इस्लाम के नाम पर जो खून की नदियां बहायी हैं, क्रूरता और घृणा का जो नग्न नृत्य किया है, वह मानव इतिहास का सबसे अधिक कलंकित समय है। मुहम्मद गोरी, महमूद गजनवी, बाबर, अकबर, हूमायुं, तैमूर लंग, नादिर शाह, अहमद शाह अब्दाली आदि के

अत्याचारों के कारण सम्पूर्ण गैर- मुस्लिम जगत 'इस्लाम' और मुहम्मद से ही घृणा करने लगा है। किन्तु इसमें मुहम्मद का क्या दोष है? जिन कट्टरपन्थियों ने गैर-मुस्लिमों पर अत्याचार किया, उन्होंने ही तो मुहम्मद साहब की पुत्री को भी प्रताड़ित करने में कोई कमी नहीं की। उनके दोहत्तों हसन-हुसैन की निर्दयता पूर्वक हत्या भी इन्हीं कट्टरपन्थियों की देन है। जब 'महमंद हक के नूर से, कहे अंग महमंद नूर' (खुलासा, ५/४४) के कथन के आधार पर परमधाम में भी श्यामा जी को 'मुहम्मद' कहा जाता है तो ब्रज-रास के कृष्ण को 'मुहम्मद' क्यों नहीं कहा जा सकता? 'मुहम्मद' शब्द को किसी धर्म विशेष से नहीं जोड़ा जा सकता। इसी प्रकार, यह नहीं कहा जा सकता कि 'अल्लाह' केवल मुसलमानों का है और सच्चिदानन्द या परब्रह्म केवल हिन्दुओं के हैं। कर्मकाण्ड (शरीयत) को ही सर्वोपरि मानने वाले संकुचित भाषायी मानसिकता वाले ये लोग भले ही संचार में कट्टरता की कर्मनाशा प्रवाहित करें, किन्तु सत्य तो कुछ और ही है।

एक दिन कहा रब का, दुनी के साल हजार।

इतथें आगे लैलत कदर, ए जो फजर तीसरा तकरार ॥२०॥

संसार के १००० वर्षों के बराबर परब्रह्म का एक दिन कहा जाता है। इसके पश्चात् लैल-तुल-कदर (इस प्रकार की लम्बी रात्रि) के तीसरे भाग में ज्ञान दृष्टि से प्रातःकाल होने की लीला होती है।

एक कौल में कहे तीन दिन, सो भी बीच साइत इन।

इन रोज रब कर ज्यारत, पोहोंचे अपने वतन ॥२१॥

कुरआन के एक कथन में तीन दिनों की लीला का वर्णन है। वह भी परमधाम के उसी पल के अन्तर्गत है। इन तीन दिनों में परब्रह्म ने अपनी लीला की और अपने धाम गये।

और तीन दिन कहे रसूल लों, चौथें रूहअल्ला आए इत।

रोज पांचमें इमाम जमा किए, सो पाई जुमां बीच साइत ॥२२॥

पूर्वोक्त तीन दिन मुहम्मद साहब तक माने गये हैं अर्थात् ब्रज, रास एवं अरब की

लीला के ये तीन दिन है। चौथे दिन रूहुल्लाहु (श्यामा जी) का इस संसार में प्रकटन हुआ। पांचवें दिन इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ने ब्रह्ममुनियों को एकत्रित किया। परमधाम के उसी पल के अन्तर्गत ब्रह्ममुनियों के द्वारा जागनी लीला सम्पादित की गयी।

**छठे दिन मोमिन जमा हुए, तब गिरो आई सब कोए।
सो साइत जुमां बीच खोल के, इस्कें पोहोंचे पाक होए॥२३॥**

छठे दिन की लीला में श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान द्वारा सभी ब्रह्ममुनि परब्रह्म के चरणों में आये। उनके साथ ही ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि भी जागृत हुई। परमधाम के उसी पल में छठवें दिन (शुक्रवार) की लीला में परब्रह्म के प्रेम में पवित्र होकर सभी अपने-अपने धाम जायेंगे।

**कहे तीन रोज तीन तकरार के, चौथे फरदा रोज फजर।
दे दीन दुनी सबों सलामती, पाक हुए खोल रूह नजर॥२४॥**

प्रथम तीन दिन लैल-तुल-कद्र के तीन भागों को माना गया है। इस तीसरे भाग (तकरार) के चौथे दिन में कल अर्थात् फरदा रोज १२वीं सदी में ज्ञान के प्रातःकाल (फज्र) की लीला होती है। इस समय तारतम ज्ञान (इल्म-ए-लदुन्नी) के प्रकाश में संसार एवं धर्म (सभी मत-मन्थों) दोनों को ही कल्याण का मार्ग प्राप्त होता है और सभी लोग अपनी अन्तर्दृष्टि को खोलकर पवित्र होते हैं।

**छे दिन कहे और कौल में, कह्या तिन का बेवरा ए।
हादी मोमिन कर सबों बका, अपने अर्स बका पोहोंचेंगे॥२५॥**

कुर्आन में अन्य स्थान पर जो छः दिनों का कथन है, उसका यह विवरण है। श्री प्राणनाथ जी तथा ब्रह्ममुनि संसार के सभी जीवों को बेहद की बहिश्तों में अखण्ड करके अपने धाम जायेंगे।

**ए रोज कहे बंदगीय के, आए पोहोंचे सावचेत होए।
ए दिन समझ रोजे रखे, कह्या तिन पर गुनाह न कोए॥२६॥**

ये छः दिन बन्दगी के कहे गये हैं। इनसे अपनी आत्म-जागृति के प्रति सावचेत

रहकर लक्ष्य तक पहुँचा जाता है। इन छः दिनों का रहस्य समझ कर जो स्वयं को प्रियतम अक्षरातीत के प्रति पूर्णरूप से समर्पित कर देता है, उसे कोई पाप नहीं लगता है, ऐसा कुर्आन का कथन है।

भावार्थ- परब्रह्म के प्रति पूर्णतया समर्पित होने वाला पाप कर ही नहीं सकता है, क्योंकि उसका तन-मन अपना होता ही नहीं। ऐसी अवस्था में पाप भी नहीं लगेगा। सभी कर्म अहंकार से ही होते हैं। समर्पण की अवस्था में अहंकार रहता ही नहीं है तो पाप कर्म कैसे हो सकते हैं?

एही भूल फना दुनी की, डाले बीच निजस अल्ला कलाम।

तरफ न पावे जिनकी, कहे सो हम बका इसलाम॥२७॥

इस नश्वर जगत के लोगों की यही भूल है कि वे कुर्आन की हकीकत की बन्दगी के कथनों को भी शरीर से होने वाली शरीयत की बन्दगी के लिये घटित करते हैं। जिस परमधाम के विषय में ये जानते भी नहीं हैं कि वह कहाँ है तो फिर भी यह कहना कि हम अखण्ड शान्ति के धाम में रहने वाले हैं, उनकी भूल है।

दुनी यों खेलाई हक ने, क्या करे बिना अखत्यार।

ए सब कछू हाथ कादर के, वही नचावनहार॥२८॥

इस प्रकार, परब्रह्म के आदेश से लीला चक्र में संसार के लोग इस प्रकार अन्धकार में भटक रहे हैं। जब उन्हें कुर्आन के गुह्य रहस्यों को खोलने का अधिकार ही नहीं है तो क्या करे? सबकुछ सर्व शक्तिमान प्रियतम परब्रह्म के हाथ में है। जैसा वे नचायें, वैसा ही सबको नाचना पड़ता है, अर्थात् परब्रह्म की जो इच्छा होती है, वही होता है।

रात दिन फुरमाए हक ने, आप अपने हिसाब।

सो डाले बीच निजस, ए जो रात का ख्वाब॥२९॥

श्री राज जी ने यह रात और दिन का जो कथन किया है, वह अपनी लीला के अनुसार (हिसाब से) किया है। किन्तु संसार के लोग ब्रह्म लीला के इन छः दिनों को संसार के छः दिन मान लेते हैं जो अज्ञानमयी स्वप्न में बना है।

भावार्थ- मोह का आशय अज्ञान से है। मोह सागर में ही आदिनारायण (अजाजील) का प्रकटन होता है। उनके स्वप्न में इस जगत का निर्माण होता है। संसार के

लोग अपनी स्वाभिक बुद्धि के कारण परमधाम की लीला के छः घटकों (दिनों) को संसार के साप्ताहिक दिनों के छः दिन मान लेते हैं और छठें दिन शुक्रवार (जुमा) की नमाज को विशेष महत्व देते हैं कि मात्र इससे ही बहिश्त (जन्नत) की उपलब्धि जायेगी।

छे रोज कहे एक कौल में, और तीन रात कौल एक।

ए हिसाब होए बीच फजर, हुए जाहेर साहेब नेक ॥३०॥

कुर्आन में एक स्थान पर छः दिन की लीला का वर्णन है तो एक स्थान पर तीन रातों (तीन लीला की रात्रि) का वर्णन है। कियामत के समय परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने पर जब श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान से उजाला हो जायेगा तो उस समय इन गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण होगा।

भावार्थ- तीन रात्रि का तात्पर्य है तीन लीलाओं की रात्रि। तारतम ज्ञान के अवतरण से पूर्व ब्रज, रास एवं जागनी की लीला रात्रि में ही मानी गयी है। लैल-तुल-कद्र अर्थात् इस प्रकार की लम्बी रात्रि में ब्रह्मसृष्टियों और ईश्वरीय सृष्टियों का इस मायावी जगत में आगमन होता है। इस प्रकार, एक ही रात्रि के तीन भाग (तीन तक़रार) होते हैं- १. ब्रज की रात्रि, २. रास की रात्रि और ३. जागनी ब्रह्माण्ड की रात्रि। श्री कुल्जुम स्वरूप के अवतरण से पूर्व अन्धकारमयी रात्रि थी। वि. सं. १६३८ से १६७८ तक घना अन्धकार था। १६७८ से १७१५ तक पूर्णमासी के चन्द्रमा का प्रकाश था, किन्तु उसके पश्चात् ब्रह्मवाणी के अवतरण के साथ ही उजाला होना प्रारम्भ हो गया।

कहे एक कौल में दोए दिन, बीच कही जो रात।

ए हिसाब दे सब फजर, सो कही कयामत बीच साइत ॥३१॥

कुर्आन में एक स्थान पर दो दिन तथा बीच में रात्रि का वर्णन है अर्थात् ब्रज और जागनी लीला के मध्य महारास की रात्रि। कियामत के समय जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में अज्ञानता की रात्रि हटेगी और प्रातःकाल होगा, उस समय श्री जी इन सभी रहस्यों को स्पष्ट करेंगे। परमधाम के एक पल में ही ये सभी लीलायें हुई हैं।

ए दिन देखो हक के, जो कहे हैं बातन।

कह्या हक अर्स दिल मोमिनो, देखो कलाम अल्ला रोसन ॥३२॥

हे साथ जी! परब्रह्म की लीला के इन छः दिनों (प्रसंगों) को देखिये जो कुर्आन में

गुह्य रूप से कहे गये हैं। कुरआन में तो यह बात स्पष्ट रूप से कही गयी है कि ब्रह्मांगनाओं का हृदय ही परब्रह्म का धाम होता है।

हकें काम लिया जो दिल में, सो जब हुआ पूरन।

मकसूद सबों हो रह्या, तब वाही फजर कह्या दिन ॥३३॥

श्री राज जी ने अपने हृदय में ब्रह्मात्माओं को अपने स्वरूप की पूर्ण पहचान देने का निश्चय किया था। कियामत के समय जब वह कार्य पूर्ण हो गया तथा सबकी इच्छायें पूर्ण हो गयी, तब उसे प्रातःकाल के उजाले का समय कहा गया है।

जब थें आया रसूल हक का, तिन बीच हुए कई काम।

जहां जो पूरन हुआ, दिन सोई कह्या अल्ला कलाम ॥३४॥

ब्रज से लेकर अरब में मुहम्मद स. अ. व. के आने तक परब्रह्म के कई काम हुए। जिस लीला में जो कार्य पूर्ण हुआ, कुरआन में उसे ही दिन कहा गया है।

भावार्थ- श्री राज जी के प्रमुख कार्य इस प्रकार थे -

१. ब्रज में ब्रह्मात्माओं को माया दिखाना तथा अक्षर ब्रह्म को प्रेम लीला की अनुभूति कराना।
२. रास में ब्रह्मात्माओं को विरह तथा अक्षर ब्रह्म को परमधाम की प्रेम लीला का विलास दिखाना।
३. जागनी लीला में अपने हृदय के मारिफत (परम सत्य) स्वरूप की पूर्ण पहचान देना अर्थात् इश्क, इल्म, वहदत, निसबत की मारिफत को दर्शाना। खेल बनने का महाकारण भी यही है।

जो बात निजस नाबूद, हक कलाम न कहे तिन में।

जो हक दोस्त गिरो मासूक, कहे हक कलाम तिन से ॥३५॥

नश्वर मानवीय तनों के लिये जो बातें धर्मग्रन्थों में कही गयी है, उनमें परब्रह्म के वचन नहीं है। ब्रह्ममुनि परब्रह्म के मित्र हैं एवं श्यामा जी के अंगरूप हैं, उन्हीं के लिये कुरआन में परब्रह्म के द्वारा हकीकत के ज्ञान के शब्द कहे गये हैं।

भावार्थ- यद्यपि कुर्आन में शरीयत एवं तरीकत का ही विशेष रूप से ज्ञान है जो जीव सृष्टि के लिये ही कहा गया है। हकीकत का ज्ञान कहीं-कहीं संकेतों में छिपाकर रखा गया है, जो तारतम ज्ञान से ही जाना जा सकता है। मारिफत का ज्ञान कुर्आन में लिखा ही नहीं गया। उपरोक्त चौपाई का आशय यह है कि छः दिनों का प्रसंग हकीकत से सम्बन्धित है जो जीव सृष्टि के लिये है ही नहीं।

**कह्या हदीस कुदसीय में, जब बन्दा करे फिकर।
वह फिकर मुझसों रखे, हकें फुरमाया यों कर ॥३६॥**

कुदसी हदीस में परब्रह्म ने इस प्रकार कहा है कि जब मेरी बन्दगी करने वाले को किसी कारणवश संसार की चिन्ता करनी पड़े, उसे सबकुछ छोड़कर प्रेमपूर्वक एकमात्र मेरा ही चिन्तन करना चाहिये। मैं उसकी सभी लौकिक चिन्तायें मिटा दूंगा।

**कहे हदीस कुदसी, और आयतें हदीसों सूरत।
इन का रोजा निमाज हक दोस्ती, एक जरा न बिना मारफत ॥३७॥**

कुदसी हदीस सहित अन्य हदीसों एवं कुर्आन की भिन्न-भिन्न सूरतों तथा आयतों में कहा गया है कि ब्रह्ममुनियों के लिये समर्पण (रोजा) तथा प्रार्थना मात्र परब्रह्म से प्रेम करने के लिये है। वे परब्रह्म की पूर्ण पहचान के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं चाहते हैं।

**आंखे दई हकें इन को, और दिए कान अकल।
ज्यों दुनियां मुद्दा वजूद पर, त्यों कहे मोमिन साहेब दिल ॥३८॥**

श्री राज जी ने इन ब्रह्मात्माओं को अंतःचक्षु, अंतःश्रवण और जागृत बुद्धि प्रदान की है। जिस प्रकार संसार के जीव अपने बाह्य शरीर पर ही केन्द्रित रहते हैं, उसी प्रकार ब्रह्ममुनि अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत के हृदय पर केन्द्रित रहते हैं अर्थात् उनके हृदय में स्वयं को डुबोना और अपना सर्वस्व समर्पण करना ही उनका एकमात्र लक्ष्य है।

**जेते अंग हैं वजूद के, तेते अंग बातून दिल।
नजर खुली जब रूह की, हुआ दिल मोमिन अर्स असल ॥३९॥**

ब्रह्मात्माओं के पंचभौतिक शरीर में जो-जो अंग होते हैं, वे सभी अंग उसकी आत्मा के सूक्ष्म हृदय में हैं। जब आत्मा की दृष्टि खुल जाती है तो उस ब्रह्मात्मा का हृदय

परात्म के हृदय जैसा ही हो जाता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में आत्मा के दिल का वर्णन है, जीव के दिल का वर्णन नहीं है। आत्मा परात्म की प्रतिबिम्ब स्वरूपा है, इसलिए परात्म के अन्दर जो भी अंग होते हैं वे सभी अंग आत्मा के अंदर भी है। किन्तु उपरोक्त चौपाई में आत्मा ने जिस जीव को धारण किया है, उसके पंचभौतिक तन के अंगों का वर्णन है और उसी के दृष्टांत से यह दर्शाया गया है कि आत्मा के भी अंग होते हैं। किन्तु वे अतीन्द्रिय होते हैं और मन, बुद्धि से उनके स्वरूप का वर्णन करना संभव नहीं है। उपरोक्त तथ्यों को श्री कुलजम स्वरूप की निम्न चौपाईयों से समझा जा सकता है -

अंतस्करन आतम के, जब ए रहयो समाए।

तब आतम परआतम के, कछु न रहे अंतराय ॥ (सागर, २१/४४)

सिफ्त ऐसी कही मोमिनो की, जाके अक्स का दिल अर्स ॥ (श्रृं २१/८१)

जब पूरन स्वरूप हक का, आए बैठा माहिं दिल ।

तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल ॥ (श्रृंगार ४/७०)

हाथ पांउं बाहेर अन्दर, सब अंगों हक नूर।

कहे इन विध मोमिन अर्स में, जिन का हक आप करें जहूर ॥४०॥

परमधाम में ब्रह्मात्माओं के हाथ-पैर आदि सभी अंगों के अंदर-बाहर सबमें श्री राज जी का नूर ही शोभायमान रहता है। इस प्रकार, परमधाम में इन ब्रह्मात्माओं की शोभा होती है। स्वयं अक्षरातीत इन्हीं ब्रह्मात्माओं की शोभा, प्रेम, एकत्व आदि गुणों की महिमा संसार में प्रकट करते हैं।

महामत कहे ए मोमिनो, हादिएं खोल दिए दिन बातन।

कयामत दिन जाहेर कर, देखाया अर्स बका वतन ॥४१॥

मेहमत साहिबुज्जमाँ श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! श्री प्राणनाथ जी ने छः दिनों का गुह्य अर्थ स्पष्ट कर कियामत का समय भी प्रकट कर दिया है और अपने मूल घर अखण्ड परमधाम का भी साक्षात्कार करवा दिया।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७९३ ॥

बाब हादी गिरो की पेहेचान

इस प्रकरण में श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं की पहचान दी गयी है।

**भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत।
तो सरा चल्या तोरे बल, कहा हम फेर आवसी आखिरत ॥१॥**

जिस समय अरब में मुहम्मद स. अ. व. व. आये हुए थे, उस समय उनके भाई कहे जाने वाले ब्रह्ममुनियों में कोई एक भी नहीं था। इसलिये राजसत्ता के बल पर उन्होंने शरीयत का मार्ग चलाया और कियामत के समय पुनः आने का वचन देकर संसार से चले गये।

**मोमिन का दुनी मजाजी, उठाए न सके भार।
मारे उसी सिर्क से, तो कहे बीच नार ॥२॥**

संसार के मिथ्या जीव कभी भी ब्रह्ममुनियों के समकक्ष नहीं हो सकते। स्वयं उनके बराबर समझने के अपराध से उन्हें दोजक (नरक) का कष्ट भोगना पड़ता है।

भावार्थ- 'भार उठाना' एक मुहाविरा है जिसका अर्थ होता है उनके समान स्वयं को प्रदर्शित करने का प्रयास करना।

**तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत।
तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती कयामत ॥३॥**

यदि मुहम्मद सल्ल. (साहब) अरब की धरती पर ही हकीकत और मारिफत के भेद स्पष्ट कर देते तो उसी समय ज्ञान का उजाला हो जाता और कियामत का प्रकट होना सिद्ध हो जाता।

**आए सदी बीच आखिरी, जो रसूलें करी थी सरत।
बखत हुआ बीच बारहीं, भई फरदा रोज कयामत ॥४॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने जैसा वचन दिया था, उसके अनुसार वे ग्यारहवीं सदी में आये। जब बारहवीं सदी का समय आया तो कल (फरदा रोज) के वचन के अनुसार कियामत प्रकट हो गयी।

ए इसारतें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत ।

ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत ।।५।।

कुर्आन पाक में संकेतों में कही गयी बातों का आशय श्री कुलजम स्वरूप के हकीकत-मारिफत के ज्ञान के प्रकाश में ही स्पष्ट होता है। यदि परमधाम से मूल सम्बन्ध अर्थात् ब्रह्मात्मा का अंकुर हो, तभी श्री राज जी की कृपा से तारतम ज्ञान के द्वारा कुर्आन के रहस्यों को जाना जा सकता है।

ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बूझ्या जाए।

हक खिलवत बातें गैब की, दें अर्स दिल मोमिन बताए ।।६।।

बिना तारतम ज्ञान के परमधाम की गुह्य बातों को कैसे जाना जा सकता है? श्री राज जी की खिलवत सम्बन्धी गुह्य बातों को केवल वे ब्रह्ममुनि ही बता सकते हैं जिनका हृदय प्रियतम का धाम होता है।

वाहेदत भी इनको कहे, जो हादी हक जात ।

त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात ।।७।।

श्री राज जी एवं श्यामा जी के अंगरूप कहे जाने वाले इन ब्रह्ममुनियों को एकत्व (वहदत) का स्वरूप भी कहा जाता है। श्यामा जी की अंगरूपा इन ब्रह्मात्माओं के समूह में अन्य कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता है (इनके समकक्ष नहीं हो सकता है)।

सुंनत जमात इन को कही, गिरो एक तन जुदी न होए।

ए हक इलमें बेसक हुए, याकी सरभर करें नारी सोए ।।८।।

इन ब्रह्मात्माओं को सुन्नत जमात परंपरावादी अर्थात् परब्रह्म के निर्देशों के अनुसार आचरण करने वाला कहा जाता है। परमधाम में एक तन अर्थात् वहदत के अन्तर्गत होने से ये कभी एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते। ये तारतम ज्ञान के प्रकाश में पूर्णतया संशय-रहित हो जाते हैं किन्तु आश्चर्य है कि नारी (दोजकी) फिरके वाले संसारी जीव स्वयं को इनके समान ही मानते हैं।

वाहिद तन मोमिन कहे, एही जमात सुंनत ।

एही फिरका नाजी कहा, इनों हक हिदायत ।।९।।

इन ब्रह्मात्मों को वहदत (एकदिली) का तन कहा जाता है। यही सुन्नत जमात है

अर्थात् ब्रह्ममुनियों का यह समुदाय परब्रह्म के निर्देशों का पूर्णतया पालन करता है। इन्हें अखण्ड सुख प्राप्त करने वाला समुदाय भी कहते हैं। श्री कुलजुम स्वरूप के रूप में परब्रह्म का निर्देश इन्हीं के लिए है।

**ए जो कौल तोड़ बहत्तर हुए, कहें हम सुंनत-जमात ।
दिन मारफत हुए पछताएसी, सिर पटकें जिमी सों हाथ ॥१०॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) के कथनों को तोड़कर जो बहत्तर (७२) फिरके बन गए हैं, वे कहते हैं कि हम ही सुन्नत जमात हैं। श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान से जब उन्हें परम सत्य का ज्ञान होगा, तब वे अपनी इन भूलों के लिए अपना सिर धरती पर पटक कर तथा अपने हाथों से माथा पीट-पीटकर बहुत अधिक पश्चाताप करेंगे।

**मेहेरबान ना देवे दुख किन को, मारे सबों तकसीर ।
क्या राए राने पातसाह, क्या मीर पीर फकीर ॥११॥**

श्री राज जी कृपा (मेहर) के सागर हैं, वे किसी को भी दुःख नहीं देते। सभी अपने अपराधों के कारण ही दुःखी होते हैं, चाहे भले ही कोई राणा हो, राजा हो या बादशाह हो, या मीर हो अथवा फकीर हो।

**सुंनत-जमात जात हक की, ए मुख से कहें हम सोए ।
कह्या गुनाह बड़ा इन कौल का, तो कह्या जलना याको होए ॥१२॥**

परमधाम के ब्रह्ममुनि परब्रह्म के ही स्वरूप होते हैं किन्तु संसार के मिथ्या जीव अपने मुख से कहते हैं कि हम भी वही हैं। इस प्रकार, अहंकार-वश मिथ्या बोलने से इनको बहुत अधिक दोष लगता है। इसलिए, इनको प्रायश्चित की अग्नि में जलना ही होगा।

भावार्थ- सर्वस्व समर्पण की भावना से परब्रह्म से प्रेम करने के लिए स्वयं को ब्रह्मात्मा मानने में कोई दोष नहीं है, किन्तु विरह, प्रेम, समर्पण से रहित होकर अहंकार-वश स्वयं को ब्रह्मात्मा कहने में दोष अवश्य है।

**कुंन केहेते जुलमत से, कहे पल में पैदा मोहोरे खेल ।
सो सरभर करें हक जात की, तो लटकाए गले में जेल ॥१३॥**

परब्रह्म के कुन्न कहने मात्र से मोह सागर में पल भर में अनंत जीवों की उत्पत्ति हो

जाती है। ऐसे स्वाप्निक जीव परब्रह्म की अंगस्वरूपा ब्रह्मात्माओं की बराबरी करते हैं। इस अपराध से उन्हें अपने गले में गुनाहों का फंदा लगाना पड़ता है।

**और गिरो महंमद मोमिनो, ए उन पर हुए मेहेरबान।
तो दोस्त कहे दुस्मनो, ए मोमिनो बड़ी पेहेचान ॥१४॥**

इसके विपरीत श्यामा जी और ब्रह्मात्माओं का समूह उन पर अपनी कृपा ही बरसाता है। ब्रह्ममुनियों की यही पहचान है कि वे अपने शत्रु को भी अपने मित्र की ही तरह देखते हैं।

**एही औलिया अंबिया, एही कहे हैयात।
दूजा हैयात जरा नहीं, बिना वाहेदत हक जात ॥१५॥**

इन्हीं को ही औलिया और अंबिआ कहते हैं। इन्हें ही अखण्ड स्वरूप वाला भी कहा जाता है। एकत्व (वहदत) स्वरूपा परब्रह्म की अंगरूपा इन ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा अखण्ड स्वरूप वाला है ही नहीं।

**कोई कायम जरा दूजा कहे, सो मुसरक और काफर।
एक जरा कोई कहूं नहीं, वाहेदत हक बिगर ॥१६॥**

इनके अतिरिक्त यदि कोई नाममात्र भी अपने को अखण्ड कहता है, तो वह मूर्ति पूजक और काफिर की तरह दोषी है। परब्रह्म की हृदय (वहदत) स्वरूपा इन आत्माओं के अतिरिक्त कहीं भी एक कण मात्र भी अखण्ड नहीं है।

**जो पातसाही हक की, नूरतजल्ला नूर।
इन दोऊ असों बका जिमी, सो सब वाहेदत नूर हजूर ॥१७॥**

परब्रह्म का स्वामित्व परमधाम और अक्षर धाम इन दोनों धामों में है। इन दोनों धामों की सम्पूर्ण धरती अखण्ड है। सारी शोभा वहदत (एकदिली) और नूर से भरपूर संपूर्ण है।

भावार्थ- परमधाम में सबकी शोभा, प्रेम, आनंद एवं मन एक समान है। क्योंकि सभी एक ही श्री राज जी के दिल के स्वरूप हैं।

वाहेदत की रूहों वास्ते, खेल झूठा देखाया और।

सो रूहें वाहेदत भूल के, जाने झूठाई हमारा ठौर ॥१८॥

परमधाम की वहदत की आत्माओं की माया का खेल देखने की इच्छा पूरी करने के लिए ही यह झूठा संसार बनाया गया है। वे परमधाम की आत्माएँ अपनी एकदिली की लीला को भूलकर इस झूठे संसार को ही अपना घर समझ बैठी है।

**एही कबीला एही घर, एही पूजें पानी आग पत्थर।
जानें एही फना नासूत को, कछू नाहीं इन बिगर ॥१९॥**

वे माया में भ्रमित होकर अपने घर-परिवार को ही अपना सब कुछ मानती हैं। अज्ञानता-वश अग्नि, पानी और पत्थरों को परमात्मा मान कर पूजा करती हैं। इस नश्वर मृत्युलोक को ही अपना धाम मानकर वे यही सोचती हैं कि इसके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं।

**आसमान जिमी बीच फना के, ए सबमें सब्द पुकार।
फेर याही को दूजा कहें, जो हक इलमें न खबरदार ॥२०॥**

सभी धर्मग्रन्थों में यह बात पुकार-पुकार कर कही गयी है कि धरती से लेकर आकाश तक के सभी लोक-लोकान्तर नश्वर है। पुनः संसार के जीव इस मिथ्या जगत को 'दूसरा' भी कहते हैं। यह भूल उनसे इसलिये होती है क्योंकि तारतम ज्ञान के अभाव में उन्हें यथार्थ सत्य का बोध नहीं हो पाता। वे यह जान ही नहीं पाते हैं कि स्वलीला अद्वैत परमधाम के समक्ष इस त्रिगुणात्मक नश्वर ब्रह्माण्ड को अस्तित्व वाला (दूसरा) कैसे कह सकते हैं?

**मोमिन और दुनी के, एही तफावत।
मोमिन तन अर्स में, दुनी तन पेड़ गफलत ॥२१॥**

ब्रह्ममुनियों में तथा संसार के जीवों में यही अन्तर है कि ब्रह्ममुनियों का मूल तन परमधाम में है और सांसारिक जीवों का तन मोह तत्व (नींद) से बना हुआ है।

**मोमिन सुरत पीछी फिरे, उठ खड़ा होए अर्स तन।
जो दुनिया दम पीछी फिरे, तो जाए ला-मकान बीच सुन ॥२२॥**

जब ब्रह्मात्मायें इन नश्वर जगत और शरीर का परित्याग करती हैं तो वे अपने परमधाम के मूल तन परात्म में जागृत हो जाती हैं। इसके विपरीत जब संसार के जीव अपने तन का त्याग करते हैं तो वे महाशून्य में विलीन हो जाते हैं।

**एक तन मोमिन अर्स में, दूजा तन सुपन।
लैल फरामोसी बीच में, भूल गए अर्स तन॥२३॥**

ब्रह्ममुनियों का एक अखण्ड तन परमधाम में परात्म के रूप में है तो दूसरा स्वाप्निक तन संसार में है। माया की नींद के कारण वे अपने वास्तविक तन को भूल गये हैं।

**दे हक इलम जगाए मोमिनो, देखी अर्स बका न्यामत।
एक जरा छिपी ना रही, देखी अर्स हक खिलवत॥२४॥**

श्री प्राणनाथ जी कुलजुम स्वरूप का ज्ञान देकर ब्रह्मांगनाओं को जगा रहे हैं। तारतम ज्ञान के प्रकाश में आत्माओं ने सम्पूर्ण परमधाम की शोभा एवं लीला का रस लिया है। उन्होंने अपने प्राणेश्वर की खिलवत (मूल मिलावे) को भी देखा है, जिसमें युगल स्वरूप ब्रह्मात्माओं के बीच विराजमान हैं। अब परमधाम की कोई भी बात उनसे छिपी नहीं है।

**सकसुभे कछू ना रही, पट बका दिए सब खोल।
दई साहेदी आयतो हदीसों, सो सब रूहअल्ला कहे बोल॥२५॥**

श्री जी ने तारतम ज्ञान के प्रकाश में अखण्ड परमधाम के सभी अवरोधक रूपी आवरणों को हटा दिया है। बोध के लिये उन्होंने कुर्आन की आयतों तथा हदीसों की साक्षी भी दे दी है। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने भी इसी प्रकार परमधाम का ज्ञान दिया था।

भावार्थ- परमधाम के पट (आवरण, द्वार, पर्दा) खोलने का आशय यह है कि जब तक हम आत्मिक दृष्टि से निराकार बेहद से परे नहीं होते, तब तक परमधाम का साक्षात्कार नहीं हो सकता। द्वार खोलने या पर्दा हटाना एक मुहाविरा है जिसका आशय है निराकार को पार करना क्योंकि यही माया का सूक्ष्मतम रूप है जो हमारी आत्मिक दृष्टि को परमधाम का साक्षात्कार नहीं करने देता।

**वजूद मोमिन जो ख्वाब के, सो किए रूबरू अंग असल।
खोले बातून देखे रूह नजरो, किए दोऊ मुकाबिल॥२६॥**

श्री जी ने तारतम ज्ञान का प्रकाश देकर चितवनी के द्वारा ब्रह्मात्माओं की अन्तर्दृष्टि को खोल दिया है जिससे उन्होंने अपने स्वाप्निक तन में विद्यमान अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने मूल तन के अंग-अंग को अपने सामने देखा। इस प्रकार, परात्म का तन तथा आत्मा का तन दोनों एक-दूसरे के सम्मुख हो गये।

भावार्थ- चितवनी में शरीर नश्वर जगत में ही रहता है। मन, जीव सहित आत्मा भी यहीं रहती है किन्तु उसकी दृष्टि आत्मा का स्वरूप लेकर परमधाम में युगल स्वरूप, पच्चीस पक्षों एवं अपने मूल तन को प्रत्यक्ष देखती है। उसे यही बोध होता है कि मैं प्रत्यक्ष रूप से संसार को छोड़कर आयी हूँ। यह वैसे ही है जब ज्ञान दृष्टि से जागृत होने पर आत्मा को यह बोध होता है कि मैं परमधाम से साक्षात् आयी हूँ जबकि यथार्थता यह है कि परात्म का तन वहीं है। परात्म की अन्तर्दृष्टि आत्मा के रूप में परात्म का श्रृंगार लेकर संसार में आयी है तथा आत्मा अपनी अन्तर्दृष्टि से परात्म के मूल स्वरूप को देखती है। उस समय परात्म का तन आत्मा का चितवनी वाला तन तथा आत्मा का स्वरूप (संसार) तीनों एक समान होते हैं।

सेहेरग से नजीक कहे इनको, जाकी असल हक कदम ।

जो हुआ असल पर हुकम, सोई नकल देत इत दम ॥२७॥

इन ब्रह्मांगनाओं के मूल तन मूल मिलावे में श्री राज जी के चरणों में विद्यमान हैं। यही कारण है कि परब्रह्म को इनकी प्राणनली (शाहरग) से भी अधिक निकट कहा गया है। मूल तन (परात्म) पर परब्रह्म का जैसा आदेश होता है, नकल रूप स्वाप्निक तन वैसा ही करता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में यह संशय होता है कि परब्रह्म परात्म के लिये शाहरग से भी अधिक निकट है अथवा आत्मा के स्वाप्निक तन के लिये?

परात्म परमधाम की वहदत में है, इसलिये श्री राज जी तथा परात्म में कोई भेद नहीं है। परमधाम में दूर या निकट जैसी कोई वस्तु भी नहीं है। इस नश्वर जगत में आत्मा परात्म का श्रृंगार लेकर ही आयी है किन्तु वह इसे भूलकर जीव के पंचभौतिक रूप को ही अपना रूप समझ बैठी है। जब वह चितवनी में अपनी परात्म का श्रृंगार सजा कर अपने आराध्य को अपने धाम हृदय में देखती है तो उसे यह आभास होता है कि प्रियतम मेरे लिये मेरी प्राणनली (शाहरग) से भी अधिक निकट है। 'सागर' ग्रन्थ का निम्न कथन इस सन्दर्भ

में बहुत उपयोगी है-

अन्तस्करन आतम के, जब ए रहयो समाए।

तब आतम परआतम के, रहे न कुछ अन्तराए॥ (सागर, ११/४४)

असल दुनी जिन गफलत, ताए इलमें करो पेहचान।

ताको नजीक सेहेरग से, सुन्य हवा ला-मकान॥२८॥

हे साथ जी! अज्ञानता के अन्धकार में भटकने वाले संसार के इन जीवों की तारतम ज्ञान से पहचान कीजिए। इन जीवों के लिये शाहरग से भी अधिक निकट निराकार शून्य है।

नहीं करें बराबरी है की, क्यों मिलें दाखला ताए।

है नींद उड़े उठे अर्स में, फना नींद उड़े उड़ जाए॥२९॥

स्वाप्निक जीव अनादि काल से अखण्ड स्वरूप वाली ब्रह्मात्माओं से अपनी तुलना करते हैं। भला इनमें समानता कैसे हो सकती है? महाप्रलय में आत्मा के ऊपर से नींद का आवरण हटते ही वह अपने मूल तन (परात्म) में जागृत हो जायेगी, जबकि जीव नींद के हटते ही अस्तित्वविहीन हो जायेगा।

सुपन उड़े जब मोमिनो, उठ बैठे अर्स वजूद।

खासलखास बंदे नजीकी, ए कदमों हमेसा मौजूद॥३०॥

ब्रह्ममुनियों का जब स्वप्न हटेगा तो वे अपने मूल तन (परात्म) में जागृत हो जायेंगे। वे प्रियतम अक्षरातीत के अति-विशिष्ट एवं निकटतम प्रेमी हैं जो अनादि काल से सर्वदा ही उनके चरणों (सानिध्यता) में रहते आये हैं।

ए रूहें फरिस्ते दो गिरो, जो बीच उतरी लैलत कदर।

और दुनी फूँके उड़ावे असराफील, दूजी फूँके उठावे बका कर॥३१॥

परमधाम से ब्रह्मसृष्टि तथा अक्षर धाम (सत्स्वरूप) से ईश्वरीय सृष्टि रात्रि-रूपी माया के संसार में आयी है। अस्माफील फरिश्ता अपने पहले सूर से संसार को समाप्त कर देगा और दूसरे सूर को फूँक कर बहिश्तों में अखण्ड करेगा।

भावार्थ- यद्यपि संसार का प्रलय करना अस्माफील के लिये सामान्य-सी बात है किन्तु उपरोक्त चौपाई में सूर फूँक कर संसार को उड़ाने का आशय संसार की अज्ञानता

एवं ज्ञानियों के अहंकार को नष्ट करने से है।

**महंमद कहे भाई मेरे, आवेंगे आखिरत।
गिरो रबानी अहमदी, याकी बीच आयतों हदीसों सिफत ॥३२॥**

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मेरे भाई अर्थात् परमधाम के ब्रह्ममुनि कियामत के समय आयेंगे। ये परब्रह्म की अंग-स्वरूपा श्यामा जी के अंगरूप हैं। कुर्आन तथा हदीसों में इनकी ही महिमा गायी गयी है।

**खेल किया महंमद वास्ते, जैसे खेल के कबूतर।
खासलखास गिरो रबानी, वह इनों की करे बराबर ॥३३॥**

माया का यह संसार श्यामा जी तथा उनके अंगरूप ब्रह्ममुनियों को दिखाने के लिये ही बनाया गया है, जबकि संसार के जीव खेल के कबूतरों के समान नश्वर हैं। ब्रह्मसृष्टियां परब्रह्म की अंगरूपा (हृदय स्वरूपा) हैं। संसार के स्वाप्निक जीव भ्रमवश अपनी तुलना इन ब्रह्मात्माओं से करने का प्रयास करते हैं।

**खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत।
ताए एक दम न्यारी ना करें, मेहेर कर धरी तीन सूरत ॥३४॥**

माया का यह खेल श्यामा जी लिये ही बनाया गया है। श्यामा जी का अवतरण अपनी अंगरूपा ब्रह्मांगनाओं के लिये हुआ है। परब्रह्म अपनी आत्माओं को अपने से पूर्णतया अलग नहीं कर सकते हैं, इसलिये उन्होंने अति कृपा करके तीन सूरतें-बसरी (मुहम्मद साहब), मल्की (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) तथा हकी (श्री प्राणनाथ जी) - धारण की हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का सामंजस्य न बैठ पावे के कारण श्यामा जी की तीन सूरतें मानने का प्रचलन पड़ा है। यह पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि परब्रह्म की इच्छा या आदेश का स्वरूप ही मुहम्मद है जो अनादि काल से था और अनन्त काल तक रहेगा। इस सम्बन्ध में एक हदीस है-

‘अव्वल में खलकुल्लाह नूरी’ अर्थात् मैं (मुहम्मद) अल्लाह के नूर से सबसे पहले बना। अब सोचिये अक्षर ब्रह्म पहले बने या श्यामा जी या राज जी, से कौन पहले बना?

‘नूर अनामीन अल्लाह व कुल शैय मिनूरी’ अर्थात् मैं अल्लाह के नूर से तमाम

चीजें मेरे नूर के जहूर से बनी है। वस्तुतः परमधाम में सब कुछ अनादि है।

परब्रह्म ने ही अलग-अलग समय में तीन सूरतें धारण की हैं, इसलिये इन्हें हुक्म की तीन सूरतें कहते हैं। उपरोक्त चौपाई की ही तरह सनद (३६/६४) में भी चौपाई एक है जिसे भ्रान्तिवश श्यामा जी के लिये प्रयुक्त किया जाता है-

ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी-जुदी हम कारण ।

आखिर खेल देखाए के सब समझाई रहन ॥

उपरोक्त चौपाई में हादी का अर्थ श्यामा जी न लेकर श्री राज जी लेना चाहिए।

इन उमत भाइयों वास्ते, महंमद आए तीन बेर।

दुनी क्या जाने बिना निसबत, बिना इलम रात अंधेर ॥३५॥

ब्रह्मसृष्टियों को अपना भाई मानने वाले मुहम्मद साहब इनके लिये ही तीन बार तीन सूरतें धारण करके आये। बिना मूल सम्बन्ध के संसार के जीव भला इस रहस्य को क्या जान सकते हैं? उनके पास तो तारतम ज्ञान का प्रकाश ही नहीं है। वे बेचारे तो अज्ञानता के अन्धकार में सर्वदा ही भटकते रहे हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का अर्थ ऐसा भी नहीं समझना चाहिए कि अरब वाले मुहम्मद साहब तीनों सूरतों के रूप में आये हैं। वस्तुतः तीनों सूरतें श्री राज जी के आदेश स्वरूप के द्वारा धारण की गयी हैं। इन तीनों सूरतों के रूप में वे स्वयं ही छिपे भेष में रहे हैं। इतना अवश्य है कि मारिफत की दृष्टि से सभी एक ही हैं किन्तु हकीकत की दृष्टि से जैसे अक्षर ब्रह्म और श्यामा जी में भेद है, उसी प्रकार इन सूरतों में भी भेद है।

जब जोड़े मिले मुकाबिल, तब जाहेर हुए रात दिन।

रात कुफर फना मिट गई, हुआ हक बका अर्स रोसन ॥३६॥

जब एक हजार वर्ष का दिन तथा एक हजार महीने की रात का जोड़ा गुजरा, तब ग्यारहवीं सदी में ज्ञान का प्रकाश फैलने से यह विदित हो गया कि दिन क्या है तथा रात्रि क्या है? अज्ञानता का अन्धकार और नास्तिकता के मिट जाने से संसार अखण्ड मुक्ति का अधिकारी बना। इसके साथ ही अक्षरातीत परब्रह्म तथा परमधाम की शोभा का ज्ञान भी संसार को प्राप्त हो गया।

असल जाकी अर्स में, सो सेहेरग से नजीक होए।
जो पैदा तारीकी हवा से, क्यों हक नजीक आवे सोए॥३७॥

जिनके मूल तन परमधाम में हैं, उनके लिये परब्रह्म प्राणनली (शाहरग) से भी अधिक निकट हैं। जो निराकार (मोह सागर) से उत्पन्न होने वाली जीव सृष्टि है, भला परब्रह्म उसके निकट कैसे हो सकते हैं?

सोई फना कही दुनियां, जाकी असल अर्स में नाहें।
सोई हैयात हमेसगी, जो अर्स बका माहें॥३८॥

संसार के जीवों को नश्वर इसलिये कहा जाता है क्योंकि परमधाम में इनके मूल तन नहीं हैं। अखण्ड कहलाने की शोभा मात्र उनकी है, जिसके मूल तन परमधाम में है।

भावार्थ- प्रकृति पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम ।

ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की पर आतम ॥ (कि. ६५/१०)

उक्त चौपाई से यह संशय होता है कि त्रिगुण सहित प्रकृति का भी अखण्ड स्थान सबलिक है। ऐसी अवस्था में संसार के जीव भी सबलिक में अखण्ड क्यों नहीं माने जा सकते?

इसके समाधान में यही कहा जाना चाहिए कि सबलिक के स्थूल (अव्याकृत के महाकारण) में आदि नारायण की परात्म है अर्थात् महाप्रलय के पश्चात् अव्याकृत का स्वाप्निक मन जो आदिनारायण के रूप में सृष्टि का संचालन कर रहा था। अपने मूल स्थान मूल स्वरूप अव्याकृत के महाकारण सुमंगला पुरुष को प्राप्त हो जाता है। संसार के जीव तो जिस मोह सागर से उत्पन्न हुए हैं, उसी मोह सागर में लीन हो जाते हैं। अन्ततोगत्वा मोह सागर भी नहीं रहता।

कीर्तन ग्रन्थ की उपरोक्त चौपाई में जिसे प्रकृति या माया कहा गया है, वह सबलिक ब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति है, जिसे चिद्रूप माया कहते हैं। वह भी सबलिक ब्रह्म की तरह चेतन है। उसे कालमाया की जड़ प्रकृति नहीं मान लेना चाहिए। त्रिगुण का तात्पर्य भी यहां सत्व, रज और तम नहीं है अपितु सत्व, रज और तम के प्रतीक स्वरूप विष्णु, ब्रह्मा तथा शिव हैं। आदिनारायण से प्रकट होने के कारण इन्हें आदिनारायण का प्रतीक

मानकर ही वर्णित किया गया है।

वे इंतजार उसी कौल के, ढूँढ़त फिरें रात दिन।
आराम न होए बिना मिले, जेती रूह मोमिन॥३९॥

प्रियतम परब्रह्म ने कियामत के समय आने का वचन दिया था। ब्रह्ममुनियों ने कुर्आन के उसी कथन को आधार बनाकर दिन-रात खोजने का प्रयास किया। जो भी ब्रह्मात्मा है, उसे तब तक शान्ति नहीं मिलती है, जब तक वह अपने प्राणेश्वर को पा नहीं लेती है।

महंमद मोमिनो वास्ते, ले आया फुरमान।
इलम किल्ली ल्याए रूहअल्ला, किए छिपे जाहेर बयान॥४०॥

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ब्रह्ममुनियों को साक्षी देने के लिये ही कुर्आन लेकर आये। श्यामा जी के द्वारा भी तारतम ज्ञान का अवतरण इसलिये हुआ कि इससे धर्मग्रन्थों के छिपे हुए रहस्यों को उद्घाटित किया जा सके।

एते दिन किन ना कहा, के रसूल आया इन पर।
ना किन फुरमान सिर लिया, ना किन लई खबर॥४१॥

आज तक किसी ने भी यह नहीं कहा था कि मुहम्मद स. अ. व. व. ब्रह्ममुनियों के लिये ही आये थे। किसी ने भी स्पष्ट रूप से कुर्आन के वचनों को न तो शिराधार्य किया और न ही मुहम्मद साहब के द्वारा परमधाम के ज्ञान को शुद्ध हृदय से ग्रहण ही किया।

नब्बे साल हजार पर, जब लग बीते दिन।
एते दिन किन ना कहा, जो कुरान न पकड़्या किन॥४२॥

हिजरी सन् १०६० (वि. सं. १७३५) तक किसी ने भी आज दिन तक कुर्आन पाक के सम्बन्ध में यह बात नहीं कही थी। किसी ने भी कुर्आन को अब तक यथार्थ रूप से समझा ही नहीं था।

बोहोतो किया कुरान अपना, ना किन लई हकीकत।
ना किन पाया इलम हक का, ना किन खोली मारफत॥४३॥

बहुत से लोगों ने कुर्आन को अपना मानकर कण्ठस्थ किया किन्तु इसका यथार्थ ज्ञान (हकीकत) उन्हें प्राप्त नहीं हो सका। जब किसी को तारतम ज्ञान का प्रकाश ही नहीं मिल सका तो इसकी मारिफत को भला कैसे जान सकते थे?

जो रूहें उतरीं अर्स से, तामें केते कहे पैगंमर।

सिरदार सबों में रूहअल्ला, कहें हदीसें यों कर ॥४४॥

हदीसों में ऐसा कहा गया है कि परमधाम से जो भी आत्मायें माया का खेल देखने के लिये आयी हैं, उनमें श्यामा जी सबसे प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त उनमें कई पैगम्बर भी हैं अर्थात् परमधाम के ज्ञान को संसार में फैलाने वाले हैं।

एहुज्जत जाहेर किन ना करी, हम रूहें अर्स से आई उतर।

कौल किया हकें हमसों, बोलावे बख़त फजर ॥४५॥

आज तक किसी ने भी यह दावा नहीं किया था कि हम परमधाम की आत्मायें हैं तथा माया का खेल देखने के लिये संसार में आयी हैं। परब्रह्म ने हमसे यह वायदा किया था कि ज्ञान के प्रातःकाल (फज़्र) के समय मैं स्वयं आकर तुमसे मिलूंगा।

कह्ना रसूलें रूहअल्ला, माहें सिरदार सब रूहन।

मैं फुरमान ल्याया इनों पर, ए करसी साफ सबन ॥४६॥

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कहा है कि श्यामा जी सभी ब्रह्मात्माओं में प्रमुख हैं। मैं इनके लिये ही कुर्आन लेकर आया हूँ। इनके द्वारा इसके रहस्य खोल कर सबको निर्मल किया जायेगा।

मारें एही दज्जाल को, और एही करें एक दीन।

साफ करे सब दिलों को, हक पर देवे आकीन ॥४७॥

श्यामा जी के द्वारा ही अज्ञान-रूपी दज्जाल को मार कर संसार में एक सत्य मत (निजानन्द) की स्थापना की जायेगी तथा सबके हृदय को निर्मल करके एक पर विश्वास दिलाया जायेगा।

एही खोले हकीकत मारफत, करे माएना जाहेर बातन।

करे अर्स बका हक जाहेर, एही फजर कही हक दिन ॥४८॥

श्यामा जी के द्वारा ही दूसरे तन से श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर कुर्आन के बाह्य तथा आन्तरिक आशय को प्रकट किया जायेगा तथा परमधाम की हकीकत एवं मारिफत के भी भेद दर्शाये जायेंगे। श्री प्राणनाथ जी श्री कुलजम स्वरूप के द्वारा अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान करायेंगे जिससे अज्ञानता की रात्रि मिट जायेगी और ज्ञान का प्रातःकाल होगा। इसे ही ज्ञान का सवेरा होना या परब्रह्म का एक दिन भी कहते हैं।

**मेट दई रात अंधेरी, और अगले अमल सरे दीन।
हक बका अर्स चिन्हाए, ऐसे हक इलमें किए अमीन ॥४९॥**

श्री श्यामा जी ने अपने दूसरे तन से अज्ञानता का अन्धकार मिटा दिया तथा कर्मकाण्ड (शरीयत) पर आधारित भिन्न-भिन्न पन्थों को समाप्त कर दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने तारतम ज्ञान के द्वारा अक्षरातीत एवं अखण्ड परमधाम की पहचान कराकर सबको धर्मनिष्ठ बना दिया।

**हकें करी अर्समें रूहोंसों, पेहेलें रदबदल।
सो इलमें जगाए दिल अर्स कर, हकें दई कुल्ल अकल ॥५०॥**

श्री राज जी ने परमधाम में ब्रह्मात्माओं से इश्क के सम्बन्ध में वार्तालाप किया था। अब इस संसार में उन्होंने निज बुद्धि देकर तारतम ज्ञान के प्रकाश में उन्हें जागृत किया तथा उनके हृदय को अपने धाम की शोभा दी।

**जल बिन जल जीव ना रहे, ना थल बिन जीव थल।
तो अर्स रूहें अर्स बिन क्यो रहें, जिनों हक बका अर्स असल ॥५१॥**

जल के जीव न तो जल के बिना रह सकते हैं और न स्थल के जीव स्थल के बिना रह सकते हैं, उसी प्रकार परमधाम की आत्मायें भी अपने परमधाम के बिना संसार में कैसे रह सकती हैं? इनका तो मूल घर ही अक्षरातीत का अखण्ड धाम है।

**ढूढ़े अपने रसूल को, और अपना फुरमान।
और ढूढ़ें हक इलम को, जासों बातून होए बयान ॥५२॥**

ये ब्रह्ममुनि अपने संदेश वाहक और कुर्आन में गुह्य रूप से विद्यमान अखण्ड ज्ञान को खोजते हैं। वे श्री कुलजम स्वरूप की चाहना करते हैं जिससे सभी धर्मग्रन्थों एवं परमधाम के गुह्य रहस्यों को जाना जा सके।

**राह देखें रूहअल्लाह की, और दूढ़ें आखिरी इमाम ।
हक हकीकत मारफत, चाहें फल कियामत तमाम ॥५३॥**

वे श्यामा जी के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते हैं, साथ ही हजरत आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ से मिलने की चाहत रखते हैं। परब्रह्म की हकीकत तथा मारिफत का ज्ञान प्राप्त करके वे कियामत का सम्पूर्ण फल पाने की इच्छा करते हैं।

**फना बीच से निकस के, बीच आवें बका असल ।
दुनी दुख छोड़ ले हक सुख, एरूहें क्योँ छोड़ें अपना फल ॥५४॥**

यदि संसार के जीव इस नश्वर एवं दुःखमयी जगत को छोड़कर अखण्ड बेहद की बहिश्तों में ब्रह्मानन्द को पा सकते हैं तो परमधाम की ये आत्मायें कियामत के समय में परब्रह्म की पूर्ण पहचान एवं जागृति से मिलने वाले सुख को कैसे छोड़ सकती हैं?

**दिल बका या फना दम, सब असल अपनी चाहे ।
कोई दोजख कोई भिस्त में, या कोई अर्स बीच उठाए ॥५५॥**

चाहे अखण्ड हृदय वाली कोई परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो या नश्वर जीव, सभी अपने मूल घर को प्राप्त होना चाहते हैं। कोई जीव या तो दोजक में जायेगा अथवा अखण्ड बहिश्त का सुख भोगेगा। इसी प्रकार, ब्रह्मसृष्टि परमधाम में अपने मूल तन में जागृत होगी।

**ए जो फना मोहोरे खेल के, मैं मेरी कर खेलत ।
याही को देखे सुनें, सुध ना बका वाहेदत ॥५६॥**

इस नश्वर जगत के अग्रगण्य देवी-देवता भी 'मैं और मेरा' के बन्धन में फंसे पड़े हैं। इस नश्वर जगत को देखने और सुनने में ही उनका समय चला जाता है। उन्हें परमधाम के वहदत की कोई सुधि ही नहीं है।

**रूहें गिरो तिनमें मिल गई, हक बका न जानें तरफ ।
चौदे तबक फना बीच, कोई कहे न बका एक हरफ ॥५७॥**

परमधाम से आकर ब्रह्मसृष्टियाँ उन जीवों में आकर मिल गयी हैं जो अक्षरातीत तथा अखण्ड परमधाम के विषय में कुछ भी नहीं जानते। चौदह लोकों के इस नश्वर ब्रह्माण्ड में परमधाम का एक शब्द भी कहने वाला कोई नहीं है।

ना शे अव्वल ना होसी आखिर, ए जो बीच में देत देखाए।

सो भी कहे किताबें अबहीं, आखिर देसी उड़ाए॥५८॥

वर्तमान में यह जो संसार दिख रहा है, पहले नहीं था और अंत में भी नहीं रहेगा। ऐसा सभी धर्मग्रन्थों का कथन है कि आखिरत के समय में प्रलय में यह सारा ब्रह्माण्ड लय हो जाएगा।

अव्वल आखिर नाबूद, बीच फरेब सो भी नाबूद।

सो बरकत महंमद मोमिनो, पाए कायम भिस्त वजूद॥५९॥

यह मिथ्या जगत पहले भी नश्वर था, वर्तमान में भी नश्वर है और अंत में भी नश्वर रहेगा। श्यामा जी और ब्रह्ममुनियों की कृपा से इस ब्रह्माण्ड के सभी जीव योगमाया की बहिश्तों में अखण्ड तन प्राप्त करेंगे।

ओ उतरे कहे अर्स से, ए कुंन केहेते पैदास।

जाहेर देखी तफावत, ए आम वे खासलखास॥६०॥

ब्रह्ममुनि परमधाम से आए हैं जबकि जीव 'कुन्न' कहने से पैदा हुए हैं। यह दोनों में प्रत्यक्ष अंतर देखा जाता है कि जीव सृष्टि को साधारण और ब्रह्मसृष्टियों को अति-विशिष्ट कहा जाता है।

असल तन इनों अर्स में, ठौर ठौर लिखी इसारत।

बीच जंजीरों मुसाफ की, करें आयतें इनों सिफत॥६१॥

इन आत्माओं का मूल तन परमधाम में है। कुर्आन में स्थान-स्थान पर संकेतों में यह बात लिखी है। कुर्आन के अलग-अलग पारों की आयतों में इन ब्रह्मात्माओं की महिमा लिखी हुई है।

तो जाहेर करी बीच लैल के, हक की गैब खिलवत।

फजर होसी इत थें, दिन याही हक मारफत॥६२॥

इन ब्रह्मात्माओं के माध्यम से इस मायावी जगत में भी श्री राज जी की खिलवत की गूह्य बातें हुईं। तारतम ज्ञान के प्रकाश से ही अज्ञानता की रात्रि का समापन होगा और ज्ञान का सवेरा होगा। इस दिन की लीला में श्री राज जी के स्वरूप की पूर्ण पहचान होगी।

**अव्वल फुरमाया रसूल को, कहो हरफ तीस हजार।
राह रात की चलाओं सरीयत, बका फजरें रखो करार।।६३।।**

जब मुहम्मद साहब को परब्रह्म का दर्शन हुआ तो उन्होंने निर्देश दिया कि मेरे द्वारा कहे गये केवल ३०,००० हरूफों को ही संसार में बताओ। अज्ञानता की इस रात्रि में सभी को शरियत के मार्ग पर चलाओ। अखंड परमधाम के ज्ञान से जब तक उजाला न हो जाए, तब तक धैर्य रखो अर्थात् हकीकत-मारिफत का कोई ज्ञान नहीं देना है और तब तक शरियत पर ही चलाते रहना है।

**राह रात की चलाओ सरीयत, ले तरीकत पोहोंचे हकीकत।
तब फजर दिल महंमदे, दिन होसी मारफत।।६४।।**

अज्ञानता की अंधकार भरी रात्रि में तुम संसार के लोगों को शरीयत के मार्ग पर चलाओं। जब तरीकत अर्थात् उपासना का मार्ग लिया जाएगा, तभी हकीकत (ज्ञान) तक पहुँचा जा सकता है। कियामत के समय जब श्री महामति जी के धाम हृदय से तारतम ज्ञान का प्रकाश होगा, उस समय प्रातःकाल होगा और तभी मेरे स्वरूप की पूर्ण पहचान होगी।

**सिपारे उनईसे में, लिख्या रात हवा मजकूर।
सूरज महंमद दिल मारफत, उड़े रात हवा देख नूर।।६५।।**

कुर्आन पाक के १६वें सिपारे में माया रूप निराकार की चर्चा है। श्री प्राणनाथ जी का हृदय मारिफत के ज्ञान का सूर्य है, जिसके प्रकाश से अज्ञानता की रात समाप्त हो जाएगी।

**अग्यारें सदी जाने आरिफ, लिखी हदीसों बीच सरत।
इस राह पोहोंचावे हकीकत, होसी फजर दिन मारफत।।६६।।**

विद्वान लोग जानते हैं कि हदीसों में ११वीं सदी का वर्णन है जिसमें यह बताया गया है कि उस समय ज्ञान का प्रकाश होने से प्रातःकाल का सवेरा हो जाएगा और परब्रह्म की पूर्ण पहचान का ज्ञान प्रकट होगा, जिससे हकीकत के मार्ग पर सरलतापूर्वक चला जा सकता है।

**दुनी हजार साल हक दिन के, कही सौ साल एक रात।
बारें फरदा रोज फजर, होएं जाहेर हादी हक जात।।६७।।**

संसार के हजार वर्ष परब्रह्म के एक दिन के बराबर कहे गये हैं तथा संसार के सौ वर्ष की बराबर परब्रह्म की एक रात कही गयी है। फरदा रोज अर्थात् कल का समय १२वीं सदी है, जिसमें तारतम ज्ञान के प्रकाश में अज्ञान-रूपी अंधकार की रात्रि मिटकर प्रातःकाल हो जाएगा। इस समय श्री राज जी तथा उनके अंगरूप श्यामा जी और ब्रह्ममुनि उजागर हो जाएंगे।

**और पेहेले छिपे रखाए हक ने, ए जो हरफ तीस हजार।
सो दिल बीच रखे महंमदें, कहा तुमहीं पर अखत्यार ॥६८॥**

परब्रह्म ने मुहम्मद सल्ल. (साहब) से हकीकत के ३०,००० हरफों को छिपाए रखने के लिए कहा और यह कहा कि इनके भेद खोलना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर करता है। मुहम्मद साहब ने उन ३०,००० हरफों को अपने हृदय में छिपाए रखा।

**तीस हजार और गुझ कहे, ताकी आई न किन को बोए।
जबराईल से छिपाए, ए आखिर जाहेर किए सोए ॥६९॥**

मारफित के जो ३०,००० हरफ थे, किसी को उसकी सुगन्धि भी नहीं मिल पाई। यहाँ तक कि उसे जिब्रील से भी छिपा दिया गया। श्री प्राणनाथ जी ने उन ३०,००० हरफों को श्री कुलजम स्वरूप के चार ग्रंथों - खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार के माध्यम से कियामत के समय प्रकट किया।

**ए साहेदी नामें मेयराज में, बीच लिखे माएने बातन।
हक इसारतें रमूजें, सो बूझे हादी या मोमिन ॥७०॥**

यह साक्षी मेराजनामः ग्रंथ में लिखी हुई है, जिसके गुह्य अर्थ लेने पर यह तथ्य प्रकट होता है। श्री राज जी के द्वारा संकेतों में कही हुई गुह्य बातों को एकमात्र श्यामा जी और ब्रह्ममुनि ही जानते हैं।

**हक इलम लदुन्नी जिन पे, सोई समझे हक रमूज।
जो तन खिलवत अर्स के, सोई जानें हक दिल गुझ ॥७१॥**

जिनके पास परब्रह्म का तारतम ज्ञान होता है, एकमात्र वे ही श्री राज जी की गुह्य बातों को जानते हैं। इसी प्रकार, परमधाम के मूल मिलावे में जिनके मूल तन विद्यमान हैं,

एकमात्र वे ही श्री राज जी के हृदय की गुह्य बातों को जानते हैं।

**एही करें खिलवत जाहेर, दूर करें तारीकी रात।
क्यों फना रहे बका नजरों, ऊग्या सूर बका हक जात॥७२॥**

ये ब्रह्ममुनि ही संसार की अज्ञानता की रात्रि को दूर करेंगे और परमधाम की खिलवत (मूल मिलावे की शोभा) को सबके समक्ष प्रकट करेंगे। जब ब्रह्मात्माओं के हृदय में परमधाम के ज्ञान का सूर्य उग गया तो उसके तेज के समक्ष नश्वर संसार का अन्धकारमयी अज्ञान कैसे रह सकता है?

**अर्स न्यामत जाहेर हुई, जोए कौसर अर्स हौज।
हक इलमें कछू ना छिपे, किया जाहेर फरदा रोज॥७३॥**

परब्रह्म के आवेश स्वरूप से अवतरित श्री कुलजुम स्वरूप ने कियामत के समय परमधाम की अखण्ड निधि रूप यमुना जी, हौज कौसर, रंगमहल आदि की अनुपम निधि को प्रकट किया। अब परमधाम की कोई भी निधि शोभा, प्रेम, आनन्द, एकत्व आदि छिपी नहीं रही।

**ए जो दुनी पैदा जुलमत, सो इनों की करे सरभर।
मजाजी क्यों होए सके, रूहें हक बराबर॥७४॥**

मोह सागर से उत्पन्न होने वाले जीव इन ब्रह्ममुनियों से अपनी समता दिखाने का प्रयास करते हैं। भला ये मिथ्या अर्थात् स्वाप्निक जीव परब्रह्म की आत्माओं के समान कैसे हो सकते हैं?

**ए जो मोमिन नूर बिलंद के, दिल जिनों अर्स हक।
सरभर इनों की दुनी करे, हुआ सिर गुनाह बुजरक॥७५॥**

परमधाम से आने वाले इन ब्रह्ममुनियों का हृदय परब्रह्म का धाम कहलाता है। जब संसार के जीव इनसे अपनी बराबरी करते हैं तो इनके सिर पर बहुत बड़ा दोष (अपराध) लगता है।

**जब लिया बातून माएना, खोली रूह नजर।
तब हुआ अर्स दिल मोमिनो, जाहेर हुई फजर॥७६॥**

जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्ममुनियों ने कुर्आन के गुह्य अभिप्राय को जानकर अपनी आत्मिक दृष्टि को खोल लिया तो उनका हृदय प्रियतम का धाम बन गया अर्थात् उन्हें अपने धाम हृदय में युगल स्वरूप की छवि दृष्टिगोचर होने लगी। इस प्रकार ज्ञान के प्रातःकाल की लीला प्रकट हुई।

**ए जो अमल चलते थे रात के, ले राह सरीयत।
सो हुए सब मनसूख, खोले हकीकत॥७७॥**

श्री कुलजम स्वरूप ने यथार्थ सत्य का मार्ग प्रस्तुत किया जिससे अज्ञानता के अन्धकार में कर्मकाण्ड का आधार लेकर चलने वाले सभी मत-पन्थ रद्द (निरर्थक) हो गये।

**कह्ना फजर को होएसी, फरदा रोज आखिरत।
होसी खोले हकीकत, हक अर्स लज्जत॥७८॥**

कुर्आन पाक में कहा गया है कि जब परमधाम के अलौकिक ज्ञान से अज्ञानता की रात्रि मिट जायेगी और प्रातःकाल हो जायेगा तो यह समझ लेना चाहिए कि कल का समय आ गया है। कियामत का समय भी वही होगा। सबको परमधाम का सत्य मार्ग मिल जाने से परमधाम एवं प्रियतम अक्षरातीत का स्वाद मिलने लगेगा अर्थात् उनका दर्शन होने लगेगा।

भावार्थ- कुर्आन के पा. ३० सू. ६७ आ. ४-५ में कहा गया है कि “तनज्जलुल-मलाईकतु.... हत्ता मत्लइल-फज्जुरि।” इसके अर्थ के लिए प्रकरण १४ चौपाई ५ का भावार्थ देखें।

**सो आए जब इत दिन में, भया नूर रोसन।
सिफायत महंमद की, फजर पोहोंची तिन॥७९॥**

जब कियामत एवं फज्र की लीला का स्वर्णिम समय वि. सं. १७४५ के पश्चात् आया तो वि. सं. १७४८ में ‘मारफत सागर’ ग्रन्थ का अवतरण हुआ। श्री प्राणनाथ जी की अपार कृपा के फलस्वरूप सबको अखण्ड ज्ञान के उजाले का लाभ मिला।

**तो कह्ना अमल रात का, सुध आप ना हक।
हुता न इलम लदुन्नी, जिनसे होइए बेसक॥८०॥**

कुर्आन में कहा गया है कि अज्ञानता के अन्धकार में कर्मकाण्ड का चलन था जिसमें किसी को भी यह पहचान नहीं थी कि हम कौन हैं तथा परब्रह्म कौन हैं? उस समय

सबको संशय-रहित करने वाला तारतम ज्ञान था ही नहीं।

भावार्थ- कुर्आन के सि. २६ सू. ६१ आ. १३-१७ “फइजा नुफि-रव फिस्सूरि नफ रवतुव्वा हिदुव..... वल्मलकु अला अर जा इहा व महिमुल अर-श रब्बि क फौकहुम यौमइज्जि समानिया” यानि जब सूर में एक फूंक मार दी जाएगी और उसके किनारे पर और आपके रब के अर्श को आठ फरिश्ते उस दिन उठाएंगे। यहां पर सूर फूंकना विद्वता का अहं नष्ट करना है एवं आठ फरिश्तों से तात्पर्य पन्ना जी गुम्मत मन्दिर के आठ गुर्जों एवं मध्य गुम्मत में पंजा जी के साथ जागनी रास का मूल मिलावे से है।

हक इलम से होत हैं, अर्स बका दीदार।

पट खोलत सब वार के, और नूर के पार॥८१॥

श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान मृत्यु लोक से लेकर अक्षर ब्रह्म तक के दरवाजों का आवरण हटा देता है अर्थात् मार्ग दर्शाता है। इसका आधार लेकर प्रेममयी चितवनी करने पर अखण्ड परमधाम का प्रत्यक्ष दर्शन होता है।

भावार्थ- केवल कुल्जुम स्वरूप को पढ़ लेने मात्र से ही दर्शन नहीं होता। पढ़ने से ज्ञान प्राप्त होता है जो दर्शन का लक्ष्य निर्धारित करता है और चितवनी का मार्ग दर्शाता है। इस प्रकार प्रेममयी चितवनी के मार्ग पर चलकर प्रत्येक व्यक्ति को परब्रह्म के दर्शन करने का अधिकार है।

सुध होए हक कुदरत, और आप चिन्हार।

इलम लदुन्नी हक का, खोल देवे सब द्वार॥८२॥

श्री राज जी के तारतम ज्ञान से योगमाया के ब्रह्माण्ड तथा अपने स्वरूप की पहचान होती है। इस प्रकार तारतम ज्ञान सभी द्वारों को खोल देता है अर्थात् सभी आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति कराता है।

भावार्थ- जीवन के आध्यात्मिक लक्ष्य इस प्रकार हैं- इस पृथ्वी लोक से परे निराकार, बेहद एवं परमधाम का ज्ञान प्राप्त करना तथा परमधाम का साक्षात्कार करना। परब्रह्म के धाम, स्वरूप एवं लीला का ज्ञान तथा उनका प्रत्यक्ष दर्शन करना। स्वयं के स्वरूप को जानना और उसका साक्षात्कार करना।

कायम न्यामत हक की,न थी रात के माहें।

अमल दुनी में सरीयत, ए चल्या है तब ताहें॥८३॥

पहले संसार में अज्ञानता के अन्धकार के कारण कर्मकाण्ड के आधार पर ही धार्मिक पन्थ संचालित हो रहे थे। उस समय परब्रह्म की अखण्ड निधि श्री कुलजुम स्वरूप की वाणी का ज्ञान नहीं था।

**बुत पुजावते रात के, गई जड़ मेख तिन।
सो क्यों जाहेरी आगे चल सकें, हुए हक बका दिन रोसन ॥८४॥**

अज्ञानता की रात में पहले जड़ मूर्तियों की पूजा हुआ करती थी किन्तु उस जड़ पूजा का मूल से ही उच्छेद हो गया। श्री कुलजम सरूप के द्वारा अक्षरतीत तथा परमधाम के ज्ञान का प्रकाश फैल जाने पर भला कर्मकाण्ड का मार्ग कैसे चल सकता था?

भावार्थ- इसे समाज का दुर्भाग्य कहा जाय या विवेकहीनता कि श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा संसार को सत्य मार्ग दिखाने के स्थान पर अब मूर्ति पूजा को बढ़ावा देने का प्रयास हो रहा है।

**झण्डा खड़ा था दीन का, मक्के मदीने।
सो जमात ले शरीयतें, पकड़्या था अकीने ॥८५॥**

मक्के-मदीने में पहले अटूट विश्वास (ईमान) के आधार पर धर्म का ध्वज स्थापित था। शरीयत की राह पर चलने वालों ने अब ईमान को छोड़कर शरीयत के नियमों को ही प्राथमिकता दे दी है।

**हुकम किया था रसूल ने, जिन पड़ो जुदे तुम।
सो कौल तोड़ बहत्तर हुए, रात के मुस्लिम ॥८६॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने मुसलमानों को यह आदेश दिया था कि तुम्हें आपस में अलग-अलग नहीं होना किन्तु शरीयत के अनुयायी मुसलमानों ने अपनी अज्ञानता के कारण उनके वचनों को नहीं माना और बहत्तर (७२) अलग-अलग फिरकों (पन्थों) में बंट गये।

**इन मजाजी-जमात ने, छोड़े हक हादी कदम।
सो टूक टूक जमात जुदी हुई, हाए हाए ऐसा किया जुलम ॥८७॥**

इन झूठे लोगों ने परब्रह्म तथा हादी मुहम्मद साहब के चरणों का सहारा छोड़ दिया और सम्पूर्ण समुदाय टुकड़ों-टुकड़ों में बंट गया। हाय! हाय! शरीयत पर चलने वालों ने

इस प्रकार अत्याचार किया।

**हाए हाए देख्या न हक हादी सामी, ना हदीसे कुरान।
तो आए लिखे नामें वसीयत, इत ना रह्या किन का ईमान॥८८॥**

हाय! हाय! शरीयत पर चलने वाले इन लोगों ने न तो परब्रह्म एवं मुहम्मद स. अ. व. व. की ओर ध्यान दिया और न ही कुर्आन पाक एवं हदीसों के निर्देश की तरफ। यही कारण है कि मक्के-मदीने से आने वाले वसीयतनामों में लिखा था कि यहां पर किसी का भी ईमान नहीं रह गया है।

**एक सात जने ईमानसों, मुए मुसलमान।
आए पोहोंच्या सोई बखत, जो कह्या था नुकसान॥८९॥**

मक्के-मदीने से आने वाले तीसरे वसीयतनामों में यह बात स्पष्ट रूप से लिखी है कि मुसलमानों में ईमान इतना अधिक गिर चुका है कि ७०,००० मुसलमानों में से केवल सात ही ईमान से मरें। अन्य सभी बेईमान होकर मरे। मुहम्मद साहब ने धर्म का नुकसान होने की जो बात कही थी, अब वह समय आ गया है।

**और लिख्या जो पीछे रहे, तिन दिलों नहीं आकीन।
सो ए लिख्या सौं खाए के, अब लग था झण्डा दीन॥९०॥**

वसीयतनामों में यह भी लिखा है कि जो धर्म मार्ग पर पीछे रहे गये, उनके हृदय में भी विश्वास नहीं रहा। यही कारण है कि इतनी कठोर सौगन्ध खाकर उन्होंने लिखा था कि अब तक तो ईमान का झण्डा था, किन्तु अब नहीं है।

**जो कह्या था रसूल ने, सोई हुआ बखत।
आए लिखे नामें वसीयत, जाहेर करी कयामत॥९१॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कयामत के सन्दर्भ में जो कुछ कहा था, अब वही समय आ गया है। वसीयतनामों में लिखे हुए तथ्यों ने कयामत के संकेतों को प्रकट कर दिया है।

**तो आए नामें वसीयत, जो पेहेले फुरमाए।
सो ए देखो बीच आयतों, दिलसों अर्थ लगाए॥९२॥**

मुहम्मद साहब ने पहले से ही जो कह रखा था, उसके अनुसार ही वसीयतनामों लिखकर आये हैं। हे साथ जी! इसे जानने के लिये आप कुर्आन की आयतों को मन लगाकर समझिए।

**ए जो मजाजी दुनियां, क्या करसी विचार।
तो क्यों देखे बिना मारफत, बीच राह अंधार॥१३॥**

संसार के ये स्वाप्निक जीव भला इस विषय पर क्या विचार कर सकते हैं? श्री कुलजम स्वरूप के ज्ञान से रहित ये लोग अज्ञानता के अन्धकार में भटकने वाले हैं। भला ये इस सम्बन्ध में गहन विचार कैसे कर सकते हैं?

**जिनों मुसाफ लदुन्नी खोलिया, पाई हकीकत।
तब जानो फजर हुई, आए पोहोंची सरत॥१४॥**

जिन्होंने तारतम ज्ञान के प्रकाश में कुर्आन के वास्तविक आशय को समझा है, यह मान लेना चाहिए कि अब उनके हृदय से अज्ञानता की रात्रि का अन्धकार मिट चुका है और ज्ञान का सवेरा हो गया है।

**तुम जुदे जिन पड़ो, रहियो गिरोह साथ।
सो होएगा दोजखी, जो छोड़सी जमात॥१५॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कहा था कि हे मुसलमानों! तुम अपने समुदाय में मिलकर रहो। आपस में कभी अलग नहीं होना। जो समाज को छोड़कर अलग होगा, वह दोजक में जायेगा।

**सो तो जिद कर जुदे हुए, फिरके जो बहत्तर।
ताको नारी आयतों हदीसों, लिख्या है यों कर॥१६॥**

किन्तु, अपने अहंकार के कारण ये लड़-झगड़कर बहत्तर (७२) फिरकों में बंट गये। कुर्आन एवं हदीसों में इन्हें दोजक में जाने वाला कहा गया है।

**सो देवाई हादिएं साहेदी, पुकारे सिरदार।
फैल कहे तिनो मुख अपने, दुनी सब हुई खवार॥१७॥**

अब श्री प्राणनाथ जी ने वसीयतनामों के द्वारा इसकी साक्षी भी दिला दी है। मक्के

के अग्रगण्य लोगों ने वसीयतनामों में अपने मुख से स्वयं ही वहां के लोगों के आचरण के सम्बन्ध में लिखा है कि ईमान के न रहने से सभी की दुर्दशा हो रही है।

**कह्या दुनी पढ़सी, आप दिल विचार।
चिट्ठी लेसी पीछली हाथ में, केहेसी फैल पुकार ॥९८॥**

मुहम्मद साहब ने कहा था कि जब संसार के लोग कुर्आन को पढ़कर उस पर स्वयं ही सच्चे हृदय से विचार करेंगे तो उन्हें अपने शुभ-अशुभ कर्म दिखायी देंगे तथा पुकार-पुकार कर अपनी भूलों पर प्रायश्चित्त करेंगे।

**फिरका जो तेहेत्तरमां, कह्या नाजी हक इलम।
मोमिन दिलों पर लदुन्नी, लिख्या बिना कलम ॥९९॥**

तिहेत्तरवां नाजी फिरका (अखण्ड सुख पाने वाला) फिरका होगा। उसके पास श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान होगा। ब्रह्ममुनियों के हृदय पर बिना लेखनी के ही सारा ज्ञान लिखा होगा अर्थात् उनके हृदय में युगल स्वरूप की शोभा के विराजमान होने से दूसरों से पढ़े बिना ही उच्च आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो जायेगा।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के कथन का यह अनुचित आशय कदापि नहीं लेना चाहिये कि शिक्षण कार्य व्यर्थ है। वस्तुतः जो सुन्दरसाथ प्रेममयी चितवनी में डूबे रहते हैं, उनके हृदय में श्री राज जी की कृपा से ज्ञान का प्रकटन स्वतः होता रहता है। वाणी की निम्न चौपाई -

**महामति कहे ऐ मोमिनो, ऐ ऐसी कुंजी इलम ।
ऐ मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम ॥ (सागर, १३/५३)**

इसी तथ्य को प्रकट करती है। सामान्य व्यक्ति को इस कथन का दुरुपयोग न करके स्वाध्याय में लगे रहना चाहिए।

**तिन दिलों पर सूरज, ऊग्या मारफत।
जिनो पाई अर्स इलमें, हक की हिदायत ॥१००॥**

इन ब्रह्मात्माओं के हृदय में मारिफत के ज्ञान का सूर्य उगा रहेगा, क्योंकि इन्होंने परमधाम के ज्ञान को आत्मसात करके श्री राज जी के निर्देशानुसार विरह-प्रेम में डूबकर चितवनी का मार्ग अपनाया होता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई को पढ़कर सुन्दरसाथ को अपनी अन्तरात्मा से यह स्वतः ही पूछना होगा कि वे प्रेममयी चितवनी के मार्ग पर चलकर अपने हृदय में मारिफत के ज्ञान-रूपी सूर्य को उगते हुए देखना चाहते हैं अथवा वैष्णवों की नकल करके कण्ठी, तिलक एवं मन्त्र जप आदि के कर्मकाण्डों में ही अपने जीवन के अनमोल क्षणों को व्यर्थ करना चाहते हैं? ऐसा करके वे शयन लीला में भाग ले रहे हैं अथवा जागनी लीला में?

**रूहें फरिस्ते अर्स के, सोई महंमद दीन।
तिनमें सकसुभे नहीं, नूर पूर आकीन॥१०१॥**

ब्रह्ममुनि परमधाम से आये हैं तथा ईश्वरीय सृष्टि अक्षर धाम से। ये ही श्री प्राणनाथ जी के द्वारा दर्शाये गये निजानन्द के पुनीत मार्ग पर चलने वाले हैं। इनमें नाममात्र भी संशय नहीं होता है क्योंकि इन्होंने दृढ़ विश्वास के साथ तारतम ज्ञान को अपने हृदय में आत्मसात् किया होता है।

**ए जो बेसक महंमदी, सुंनत जमात।
वाहिद तन कुल्ल मोमिन, छोड़ें न हाथों हाथ॥१०२॥**

श्री जी के निर्देशों पर चलने वाले निजानन्दी सुन्दरसाथ पूर्णतया संशय-रहित होते हैं। इन्हें ही कुर्आन में सुन्नत जमात कहा गया है। सभी ब्रह्ममुनि एक तन एक दिल होते हैं और कभी भी एक-दूसरे का हाथ (साथ) नहीं छोड़ते हैं।

**वसीयत नामें आए के, इत करी पुकार।
राह बीच की छोड़ बहत्तर हुए, छूट गया करार॥१०३॥**

मक्का से आये हुए वसीयतनामों ने भारत में पुकार-पुकार कर कहा कि मुसलमानों ने सत्य का मार्ग छोड़ दिया है और लड़-झगड़कर बहत्तर फिरकों में बंट गये हैं। उनका समुदाय अशान्त हो गया है।

**नाजी फिरका हक इलमें, बेसक हुआ एक।
मारफत माएना मेयरज का, सब पाया विवेक॥१०४॥**

यह नाजी फिरका (निजानन्द का अनुयायी) श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान से पूर्णतया संशय रहित हो गया है। परब्रह्म से दर्शन के उपरान्त मुहम्मद साहब को मारिफत के जिन

३० हजार हस्फों का ज्ञान मिला किन्तु उसे कहने का अधिकार नहीं मिला था, वह सुन्दरसाथ ने श्री कुल्जुम स्वरूप के माध्यम से अच्छी तरह से जान लिया।

**वसीयत नामें में सखत, लिखे सौगन्द खाए।
सो कौन देखे नाजी बिना, दिल सों अर्थ लगाए ॥१०५॥**

वसीयतनामों में बहुत कठोर शब्दों के साथ सौगन्ध खाकर जो लिखा गया था, उसे निजानन्दियों के अतिरिक्त और कौन है जो सच्चे मन से उसके अभिप्राय पर ध्यान दे?

**सो नूर झण्डा खड़ा कर, इत दिया देखाए।
सो ईमान बिना देखे नहीं, पीछे रोसी पछताए ॥१०६॥**

अतः श्री प्राणनाथ जी ने श्री पन्ना जी में तारतम ज्ञान का ध्वज खड़ा कर दिया और उसके माध्यम से समस्त संसार को उसके मार्गदर्शन में चलने के लिये प्रेरित किया। जिनके हृदय में अपने प्राणेश्वर के प्रति विश्वास ही नहीं है, उन्हें वह ध्वज दिखायी ही नहीं देगा। बाद में उन्हें पश्चाताप के आंसू बहाने पड़ेंगे।

**सो नूर झण्डा खड़ा हुआ, बीच हिंदुस्तान।
जित जबराईल ले आइया, न्यामत चारों कुरान ॥१०७॥**

इस प्रकार, हिन्दुस्तान में श्री ५ पद्मावती पुरी धाम में श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान का (नूरमयी) ध्वज स्थापित हो गया। वहीं पर जिब्रील फरिश्ता कुर्आन के ज्ञान सहित बरक्त, फकीरों की सफक्त (आशीर्वाद) और ईमान के रूप में सभी निधियां लेकर आया।

**जिमी आरब से ल्याइया, दुनियां की बरक्त।
और न्यामत बड़ी ल्याया, फकीरों की सफक्त ॥१०८॥**

जिब्रील फरिश्ता अरब की धरती से दुनियां की बरक्त (सौभाग्य) एवं फकीरों की सफक्त के रूप में बड़ी निधि लेकर भारत आया।

**ए जो दुनियां बरक्त, सो तो कहा ईमान।
और फकीरों की सफक्त, सो आखिर मेहेर मेहेरबान ॥१०९॥**

अक्षरातीत तथा कुर्आन के प्रति विश्वास को ही दुनिया की बरक्त कहा गया है। इसी प्रकार प्रियतम अक्षरातीत की कृपा ही आखिरत में फकीरों की सफक्त है।

भावार्थ- कुर्आन के प्रति ईमान रहने पर ही दुनिया में बरक्त होती है। यही कारण है कि यहां बरक्त और ईमान को एक कहा गया है किन्तु ईमान के द्वारा और भी आध्यात्मिक उपलब्धियां हैं। इस प्रकार किसी रूप में ईमान को बरक्त से अलग किन्तु पूरक भी कहा जा सकता है।

उतथें उठाए जबराईल, ल्याया बीच हिंद।

गिरो सितारे महंमदी, कहे जो सूरज चंद॥११०॥

जिब्रील फरिश्ता परब्रह्म की मेहर, ईमान तथा कुर्आन के ज्ञान आदि निधियों को हिन्दुस्तान में लेकर आया, जहां पर सूर्य, चन्द्रमा एवं सितारों के समूह की मनोहर लीला हो रही है।

चांद सूरज दोऊ हादी कहे, महंमदी सूरत।

कही गिरो सितारों की, खासलखास उमत॥१११॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी को पूर्णमासी का चन्द्रमा कहा गया है। श्री जी का स्वरूप दोपहर का तपता हुआ सूर्य है। अति-विशिष्ट कही जाने वाली ब्रह्मसृष्टियां ही तारा-समूह है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में यह संशय हो सकता है कि श्री देवचन्द्र जी तो उस समय नहीं थे, पुनः यहाँ कैसे उनका प्रसंग आया है? वस्तुतः श्यामा जी के पहले तन श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप को यहां पूर्णमासी का चन्द्रमा कहा गया है और दूसरे तन (मिहिरराज जी) से होने वाली लीला को दोपहर का तपता हुआ सूर्य माना गया है। जिस महामति जी के धाम हृदय में दोनों स्वरूप श्री राज जी और श्यामा जी विराजमान होकर लीला कर रहे हैं उनमें श्री राज जी (हकी स्वरूप) ही सूर्य है और श्यामा जी चन्द्रमा।

सिपारे सत्ताईस में, जाहेर कहा रोसन।

सो तुम देखो अर्स दिलमें, जाहेर हक हादी मोमिन॥११२॥

कुर्आन के सताइसवें सिपारे में प्रत्यक्ष रूप से श्री राज जी, श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं का वर्णन किया गया है। हे साथ जी! आप अपने धाम हृदय में इसका विचार कीजिए।

**कह्या बीच हिंद के, हक करसी हिसाब।
खासलखास उमत, सब लेसी सवाब॥११३॥**

कुर्आन में कहा गया है कि स्वयं परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सबका न्याय करेंगे। अति-विशिष्ट कही जाने वाली ब्रह्मसृष्टियां सबको अखण्ड मुक्ति देने का सुयश प्राप्त करेंगी।

**अव्वल कह्या रसूलें, कजा होसी इत।
दीदार तब तिन होएसी, खोलें हक मारफत॥११४॥**

सबसे पहले मुहम्मद साहब ने कहा था कि परब्रह्म इमाम महदी के स्वरूप में सबका न्याय करेंगे। उस समय संसार को उनका प्रत्यक्ष दर्शन होगा तथा वे परब्रह्म की पहचान देने वाले मारिफत के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट करेंगे।

**सिपारे उनईस में, लिख्या सूरज मारफत।
सो दिल रोसन महंमद का, होसी खोलें हकीकत॥११५॥**

कुर्आन के १६वें सिपारे में लिखा है कि श्री प्राणनाथ जी का हृदय मारिफत ज्ञान के तेज से प्रकाशित होगा। वे संसार को यथार्थ सत्य का मार्ग दर्शायेंगे।

भावार्थ- कुर्आन के सि. १६ सू. २५ आ. २६ में लिखा है कि 'अल्लमुल्कु चौमइजि-निल्-हक्कू लिर्हामानि व का-न चौमन अ-लल-काफिरी न असीरा' अर्थात् और जिस दिन (अंजाम से बेखबर) जालिम अपने हाथ काट-काट खाएगा (और) कहेगा कि काश! मैंने पैगम्बर के साथ रास्ता अपनाया होता।

**ज्यादा हुआ फुरमाए से, जो कौल किया अव्वल।
सो जोड़ देखो आयतों हदीसों, ले दिल अर्स अकल॥११६॥**

श्री राज जी ने मूल मिलावे में इश्क-रब्द के समय आत्माओं को जो वचन दिया था, उससे भी अधिक काम हुआ। हे साथ जी! अपने हृदय में जागृत बुद्धि के साथ कुर्आन की आयतों एवं हदीसों के कथनों को जोड़ कर देखिए।

**और भी देखो साहेदी, ए जो लिखी आयत।
ए जो किस्से कुरान के, आयतें सूरत॥११७॥**

कुर्आन की आयतों में और भी अधिक साक्षियां मिलती हैं जिन्हें आप देखिए। कुर्आन की सूरतों तथा आयतों में जो किस्से दिखायी पड़ते हैं कि वे कियामत के समय में

घटित होने हैं।

और सुकन बोलों नहीं, बिना हक फुरमाए।
सोई देखेगा मोमिन, जो दिल अर्स केहेलाए॥११८॥

श्री महामति जी कहते हैं कि बिना राज जी के कहे मैं और कोई भी बात नहीं कह सकता हूँ। मेरे कहे हुए वचनों का वही चिन्तन करेगा, जिसका हृदय प्रियतम का धाम कहलाता है।

महामत कहे ए मोमिनो, देखो अपनी निसबत।
असल तन अर्समें, जो हक की गैब खिलवत॥११९॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! आप प्राणेश्वर अक्षरातीत से अपने मूल सम्बन्ध के विषय में चिन्तन कीजिए। आपके मूल तन परमधाम के उस मूल मिलावे में प्रियतम के चरणों में बैठे हैं, जिसे अत्यन्त गुह्य रहस्य वाला कहा जाता है।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ११२ ॥

बाब असराफील का (अस्माफील का प्रकरण)

तो असराफीलें आखिर, कुरान को गाया।
ऐसा बड़ा काम तो किया, जो आखिर को आया॥१॥

अस्माफील फरिश्ता कियामत के समय श्री महामति जी के धाम हृदय में विद्यमान हुआ और श्री कुलजुम स्वरूप के अवतरण में अपनी विशेष भूमिका का निर्वहन किया। इस प्रकार उससे कियामत के समय अवतरित होकर इस प्रकार का महान कार्य किया।

भावार्थ- श्री कुलजुम स्वरूप के सनद, खुलासा, मारिफत सागर एवं कियामतनामा ग्रन्थों में कुरान के गुह्य रहस्यों को प्रकट किया गया है। अतः उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरणों में 'कुरान' के गायन का उल्लेख है।

तो रसूल ने अव्वल, ऐसा फुरमाया।
सो अपनी सरत पर, फरिस्ता आखिरी आया॥२॥

मुहम्मद साहब ने कुरान में पहले ही कह दिया था कि अस्माफील फरिश्ता कियामत के समय प्रकट होगा। उनके इसी कथन के अनुसार वह अपने निश्चित समय पर

अवतरित हुआ है।

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबू आवाज।
ए फरिस्ता कबू न आइया, ए जो आया आज॥३॥

कुर्आन के एक (३०वें) सिपारे में लिखा है कि अस्माफील इतने मधुर स्वर में श्री कुल्जुम स्वरूप को गायेगा कि आज दिन तक किसी ने भी इतनी मोहक आवाज नहीं सुनी होगी। इस समय जो अस्माफील आया हुआ है, आज दिन तक इस सृष्टि में पहले कभी भी नहीं आया था।

भावार्थ- कुर्आन सि. ३० सूर: नवा ७८ आ. १८ “युयौम युन्फखु फिस्सूरि फतअलून अफ्वाजप्” यानि जिस दिन सूर फूँका जायेगा तो तुम मौजूद होगें।

जो कौल फुरमाया अव्वल, सो सब आए के किया।
सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया॥४॥

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने कुर्आन पाक में अस्माफील से सम्बन्धित जिन-जिन कार्यों का उल्लेख किया था, उसने आकर वह सब कुछ दिया। उसने शुद्ध मन से (पूर्ण एकाग्रता) तारतम ज्ञान का सूर फूँका और परब्रह्म के निदेशों को स्वीकार किया।

मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया।
गाया खुस आवाज सो, कौल सिर चढ़ाया॥५॥

उसने कुर्आन के छिपे हुए गुह्य भेदों को प्रकट किया और परब्रह्म का आदेश मानकर श्री कुल्जुम स्वरूप को बहुत ही मधुर स्वरों में गाया (अवतरित किया)।

लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए।
तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए॥६॥

कुर्आन में लिखा है कि कियामत के समय चारों पैगम्बर ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद श्री महामति जी के धाम हृदय में आकर विद्यमान होंगे। इन चारों पैगम्बरों ने परब्रह्म के निर्देशों का पालन किया है और उचित समय पर आ गये हैं।

पढ़ें किताबें अपनी, पैगंमर तीन।
सो आए बीच आखिर, ए जो हकीकी दीन॥७॥

ईसा, मूसा और दाऊद ये तीनों पैगम्बर अपनी किताबों इंजील, तौरेत और जंबूर के साथ कियामत के समय में आये हैं और उन्हें पढ़ रहे हैं तथा सत्य धर्म की स्थापना में सहयोग दे रहे हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का कथन आलंकारिक भाषा में है। श्री कुलजम स्वरूप के सनद, कीर्तन तथा श्रृंगार आदि ग्रन्थों में इसी प्रकार की आलंकारिक भाषा है जिसमें यह कहा गया है कि ये सभी पैगम्बर श्री प्राणनाथ जी के अन्दर हैं।

वस्तुतः अक्षरातीत को अपने कार्यों के लिये पैगम्बरों की शक्ति की आवश्यकता नहीं है। 'मारिफत सागर' (३/८३) ग्रन्थ में एक कथन है- 'अस्वार महमद की जलेब में, चले प्यादे पैगंमर' ऐसी स्थिति में यह कैसे माना जा सकता है कि श्री प्राणनाथ जी के तन में ये सभी पैगम्बर रह रहे हैं? सभी पैगम्बर तो परब्रह्म स्वरूप इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के आने की बाट देख रहे थे। श्रृंगार (१/३६) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'दाऊदें मांग्या मेहंदी जमाना, उस बखत उठाइयो सुभान' से यही निष्कर्ष निकलता है।

पैगम्बरों के द्वारा अपनी किताबों को पढ़ने का आशय है, अपने ग्रन्थों को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करके साक्षी देना जिससे तारतम ज्ञान के प्रकाश में उनके वास्तविक आशय को जाना जा सके। उपरोक्त कथन एकीकरण की भावना से व्यक्त किया गया है जिससे पैगम्बरों के अनुयायी अपनी साम्प्रदायिक कट्टरता का परित्याग कर तारतम ज्ञान के प्रकाश में वास्तविक सत्य को ग्रहण कर सकें।

आया असराफील आखिर, महंमद मेहेंदी साथ।

मुसाफ असराफील को, दिया अपने हाथ॥८॥

कियामत के समय अस्राफील फरिश्ता भी श्री प्राणनाथ जी के साथ आया हुआ है। स्वयं श्री जी ने कुरआन के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करने का उत्तरदायित्व अस्राफील को सौंप दिया है।

भावार्थ- अपने हाथों से देने का अर्थ है उत्तरदायित्व सौंपना।

हुआ सोई सरत पर, पैगंमरों मिलाप।

सो पढ़े किताबें फुरमाए से, अपनी ले आप॥९॥

कियामत के इस निश्चित समय पर पैगम्बरों का इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी से मिलाप हुआ। वे श्री जी के निर्देश पर अपनी-अपनी किताबों तौरेत, इंजील तथा जंबूर को

पढ़ रहे हैं अर्थात् उनकी साक्षियां दे रहे हैं।

**एक तौरेत और अंजील, तीसरी जो जंबूर।
सो ए किया सब जाहेर, छिपा था जो नूर॥१०॥**

इन पैगम्बरों की तीनों किताबों तौरेत, इंजील और जंबूर में जो गुह्य रहस्य थे श्री जी ने उन्हें तारतम ज्ञान के प्रकाश में अपनी तीन किताबों कलश, रास तथा प्रकाश के रूप में स्पष्ट करके संसार को अनमोल निधि दी।

**एक मूसा और रूहअल्ला, तीसरा जो दाऊद।
ए तीनों पैगंमर, आए बीच जहूद॥११॥**

पहले मूसा, ईसा एवं तीसरे दाऊद पैगम्बर का अवतरण यहूदियों में हुआ था।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में 'रूहअल्ला' शब्द का अर्थ श्यामा जी मानना उचित नहीं है। ईसा बिन मरियम और ईसा मसीह के भावों में अन्तर है। 'रूहअल्ला' कुर्आन का शब्द है जिसका अर्थ है 'अल्लाह की रूह अर्थात् श्यामा जी।' यरूशलम में श्यामा जी का अवतरित होना कदापि सम्भव नहीं है क्योंकि वे अपनी आत्माओं को परमधाम छोड़कर अकेले इस संसार में कैसे आ सकती है? यदि यरूशलम में भी आना मानते हैं तो ब्रज, रास एवं जागनी के अतिरिक्त उनका चौथी बार आना मानना पड़ेगा जो उचित नहीं होगा।

जिस प्रकार मूसा पैगम्बर को कलीम अल्लाह, इब्राहीम को खलील अल्लाह, मुहम्मद साहब को रसूल अल्लाह, अली को को वली अल्लाह, नूह को नबी अल्लाह एवं आदम को सफी अल्लाह कहते हैं, उसी प्रकार ईसा मसीह को भी ईसा रूहअल्लाह कहा जाता है। किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वे श्री राज जी की आनन्द स्वरूपा श्यामा जी हैं। उपरोक्त सभी पैगम्बरों में मुहम्मद साहब के अतिरिक्त किसी ने भी न तो परमधाम को देखा है और न ही कोई परमधाम से आया है। कुर्आन में ईसा मसीह को परमात्मा का पुत्र न मानकर मात्र रूह (जीव) माना गया है। यही कारण है कि उनका नाम रूहअल्लाह पड़ा।

ए किताबें जो आखिरी, आखिरी रसूल ल्याए।

सो मगज मुसाफ जाहेर कर, असराफीलें गाए॥१२॥

आखिरी किताब कुर्आन को मुहम्मद साहब लेकर आये। उसके गुह्य भेदों को अम्नाफील फरिश्ते ने श्री कुलजम स्वरूप में अवतरित किया (गाया) है।

सो साहेदी सिपारे चौबीस में, लिखियां ठौर ठौर।

हक हादी मोमिन बिना, जाने कौन और॥१३॥

इस तथ्य की साक्षी कुर्आन के चौबीसवें सिपारे में अलग-अलग स्थानों पर लिखी है जिन्हें श्री राजश्यामा जी और ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं जान सकता है।

मेयराज किन पर ना हुआ, पैगंमर आखिरी बिन।

और पैगंमर कई हुए, कई कहावें रोसन॥१४॥

आखिरी पैगम्बर मुहम्मद साहब के अतिरिक्त अन्य किसी भी पैगम्बर को अक्षरातीत परब्रह्म का साक्षात्कार (मेयराज) नहीं हुआ है। यद्यपि संसार में बहुत से पैगम्बर हुए हैं, जिनमें कई बहुत ही महिमावान कहे जाते हैं।

पर ए जो अर्स अजीम, रहें हमेसा मोमिन।

ए रूहें नजीकी हक के, इनों अर्स बीच तन॥१५॥

किन्तु, ये ब्रह्ममुनि हमेशा से ही उस सर्वोपरि परमधाम के रहने वाले हैं। ये परब्रह्म के अति निकटस्थ हैं (उनके अंगरूप हैं)। इनके मूल तन परमधाम में हैं।

महंमद की हदीस में, खबर दई भाँत इन।

कह्या सिरदार रूहअल्ला, बीच अर्स रूहन॥१६॥

मुहम्मद साहब की हदीस में इस प्रकार से लिखा हुआ है कि परमधाम की आत्माओं में श्यामा जी प्रमुख हैं।

बीच बका लाहूत में, जो रूहें मोमिन।

तीन सूरत महंमद की, सो कहे एक तन॥१७॥

अखण्ड परमधाम में ब्रह्मात्माओं का निवास हैं। मुहम्मद की तीनों सूरतें परमधाम से ही अवतरित हुई हैं। ये तीनों एक ही वहदत की अंगरूपा कही जाती हैं।

भावार्थ- 'मुहम्मद' एक शोभा का नाम है। श्री राज जी की इच्छा से जो तन धारण किया जाता है, 'वह मुहम्मद' कहा जाता है। बसरी सूरत के रूप में अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी तो मल्की में श्यामा जी की आत्मा और हकी सूरत में श्री इन्द्रावती जी की। परमधाम की आनन्द की वहदत में श्यामा जी और इन्द्रावती जी की आत्मा एक है तथा सत् की वहदत में अक्षर ब्रह्म, श्यामा जी और श्री इन्द्रावती जी एक समान है।

**अव्वल सूरत एक बसरी, पीछे सूरत मलकी।
कही तीसरी आखिर, सूरत जो हकी॥१८॥**

पहली सूरत बसरी मुहम्मद सल्ल. (साहब) हैं। दूसरी सूरत मल्की (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) हैं तथा तीसरी अन्तिम सूरत हकी (श्री जी) की है।

**ए तीनों बातून में एक हैं, जो देखिए हकीकत।
तब सबे सुध पाइए, होए बका मारफत॥१९॥**

यदि वास्तविकता को देखा जाय तो ये तीनों सूरतें आन्तरिक दृष्टि से एक ही हैं। किन्तु इसका बोध तो तब होगा जब परमधाम की मारिफत का ज्ञान हो।

भावार्थ- इन तीनों सूरतों को आन्तरिक रूप से एक कहने का अभिप्राय यह है कि इन्हें स्वयं परब्रह्म ने ही धारण किया है। भले ही अलग-अलग सूरतों में अलग आत्मायें रहीं हों किन्तु सबमें श्री राज जी का जोश या आवेश ही लीला करता रहा है। भिन्नता इसलिये प्रतीत होती है कि बसरी सूरत अरब की धरती पर आती है तो भारत में अवतरित दोनों सूरतों में तन की लौकिक दृष्टि से गुरु-शिष्य का सम्बन्ध दिखायी देता है।

**ए सबे बीच अर्स के, कहावें वाहेदत।
एक तन रूहें अर्स की, हक हादी सूरत॥२०॥**

ये तीनों सूरतें परमधाम में (सत की) वहदत में हैं। श्री राजश्यामा जी एवं ब्रह्मात्मायें आनन्द की वहदत में एक ही तन हैं।

**और न कोई पोहोचिया, बड़े अर्स में इत।
आगे जाए जबराईल ना सक्या, कहे पर मेरे जलत॥२१॥**

इन तीनों सूरतों के अतिरिक्त अन्य कोई भी परमधाम में नहीं जा सका है। जिब्रील सत्स्वरूप से आगे नहीं जा सका। उसने कहा कि यदि मैं आगे जाता हूँ तो मेरे पर जलते हैं।

भावार्थ- 'पर जलना' एक मुहाविरा है। यह कथन अशक्तता (असमर्थता) का सूचक है। जिब्रील कोई पक्षी नहीं है जिसके पंख हो। यह कथन वैसे ही है जैसे यह कहा जाता है कि मैंने इस व्यक्ति के पर काट दिये हैं अर्थात् मैंने इस व्यक्ति को असमर्थ कर दिया है।

**और हुए कई फरिस्ते, और कई पैगंमर ।
जिन किनों पाई बुजरकी, ना जबराईल बिगर ॥२२॥**

यद्यपि संसार में बहुत से देवता और संदेशवाहक (पैगम्बर) हो चुके हैं किन्तु बिना जिब्रील की छत्रछाया के किसी को भी श्रेष्ठता नहीं मिली है।

भावार्थ- इस जिब्रील की सहायता से ही शुकदेव जी ने महारास का वर्णन करने का प्रयास किया तो योगेश्वर श्री कृष्ण जी ने गीता एवं कबीर जी ने बीजक का ज्ञान दिया।

**और सबे ताबे कहे, जबराईल के।
जिन देव या आदमी, या बुजरक फरिस्ते ॥२३॥**

सभी जिन्न, देवगण, मनुष्य या मैकाईल, अजराईल आदि बड़े फरिश्ते भी इसी जिब्रील के अधीनस्थ माने गये हैं।

**खास उमत महंमद की, जो कही अर्स रबानी।
दूजी गिरो फरिस्तन की, जो कही नूर मकानी ॥२४॥**

श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) के समुदाय को ब्रह्मसृष्टि कहते हैं, जो परमधाम से आयी है तथा परब्रह्म की अंगस्वरूपा कही जाती है। इस संसार में दूसरी सृष्टि ईश्वरीय है जो अक्षर धाम से आयी है।

**और बुजरक फरिस्ता आखिरी, कहा जो असराफील।
किए जाहेर मगज मुसाफ के, सकसुभे न आडी खील ॥२५॥**

कियामत के समय में आने वाला सबसे बड़ा फरिश्ता अस्सराफील है जिसने कुर्आन के भेदों को इस प्रकार स्पष्ट किया है कि कील की नोक के बराबर (नाममात्र) भी अब

संशय नहीं रह गया है।

**असराफीलें बीच अर्स के, सब हकीकत लई।
सो ए मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही॥२६॥**

श्री महामति जी के धाम हृदय में विद्यमान होकर अस्म्राफील ने परमधाम की सम्पूर्ण वास्तविकता को ग्रहण किया और कुर्आन के गुह्य भेदों को श्री कुल्जुम स्वरूप के अन्दर प्रकट किया (गाया)।

भावार्थ- अक्षर ब्रह्म की बुद्धि ही अस्म्राफील है। 'तारतमें सब सुध परी, लीला अन्दर की घर' (क. हि. २३/१०३) के इस कथन से यही स्पष्ट होता है कि अस्म्राफील ने श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान श्री राजश्यामा जी के चरणों की कृपा से पच्चीस पक्षों की शोभा और अष्ट प्रहर की लीला का ज्ञान प्राप्त किया है। 'मेरे हिरदे चरन धनी के, इने ए फल पाया इत' (प्र.हि. २०/१५) का यह कथन इसी सन्दर्भ में है।

**ना तो जबरईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया।
पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया॥२७॥**

अन्यथा जिब्रील फरिश्ता मुहम्मद साहब के पास कुर्आन का ज्ञान लेकर आया किन्तु उसके गुह्य भेदों को श्री प्राणनाथ जी की कृपा से अस्म्राफील ने प्राप्त किया।

**देखो पैगंमर आखिरी, रसूल केहेलाया।
सो असराफीलें गाए के, बातून सब बताया॥२८॥**

हे साथ जी! कुर्आन लाने वाले अन्तिम पैगम्बर को संदेशवाहक (रसूल) कहा जाता है किन्तु कुर्आन के गुह्य भेदों को अस्म्राफील ने श्री कुल्जुम स्वरूप में गाया है।

**कह्ना पैगंमर आखिरी, असराफील भी आखिर।
ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहूर कर॥२९॥**

मुहम्मद सल्ल. (साहब) को आखिरी पैगम्बर कहा गया है तथा अस्म्राफील को आखिरी फरिश्ता। हे साथ जी! आप विचार करके देखिए। इन दोनों को अलग कैसे कहा जा सकता है?

असराफील फिरवल्या, अर्स अजीम के माहें।

और जबराईल जबरूत की, हद छोड़ी नाहें॥३०॥

अम्राफील श्री महामति जी के धाम हृदय में विद्यमान होकर परमधाम में सर्वत्र घूमा। पहले वह मुहम्मद साहब के साथ यमुना जी तक जा सका था। जिब्रील मुहम्मद साहब के साथ सत्स्वरूप तक ही पहुँच सका था।

**एक नूर और नूरतजल्ला, कहे ठौर दोए।
ए नाहीं जुदे वाहेदत से, हैं बका बीच सोए॥३१॥**

अक्षर धाम और परमधाम दोनों ही अखण्ड धाम कहे जाते हैं। ये दोनों ही वहदत से अलग नहीं है।

भावार्थ- केवल अक्षर ब्रह्म का स्वरूप ही सत् की वहदत में है। उनके आनन्द अंग सहित सभी स्वरूप अक्षर धाम, परमधाम, श्यामा जी, राज जी एवं ब्रह्मात्मायें सभी आनन्द की वहदत में हैं।

**एक जाहेर आम खास ज्यों, और अंदर खिलवत।
ए सोई जानें हक अर्स की, जाए खुली मारफत॥३२॥**

संसार में प्रत्यक्ष रूप में दिखायी देने वाली जीव सृष्टि है तो दूसरी सत्स्वरूप से आयी हुई ईश्वरीय सृष्टि। परमधाम की खिलवत से ब्रह्मसृष्टि आयी हुई है। जिन्हें मारिफत का ज्ञान मिल गया होता है, एकमात्र वे ही इस रहस्य को जानते हैं।

**जिनों खुले मगज मुसाफ के, माएने हकीकत।
सकसुभे तिन को नहीं, जिनों हुई हक हिदायत॥३३॥**

जिन्हें तारतम ज्ञान के प्रकाश में कुर्आन के गुह्य रहस्यों सहित वास्तविक आशय ज्ञात हो जाते हैं और परब्रह्म का मार्गदर्शन प्राप्त होता है, उन्हें कभी भी संशय नहीं होता है।

**सकसुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन।
ना तो मिलो सब आदमी, या देव फरिस्ते जिंन॥३४॥**

भले ही संसार के सभी मनुष्य, देवगण, फरिश्ते या जिन्न क्यों न मिल जाय, किन्तु बिना श्री कुलजम स्वरूप के किसी के भी संशय नष्ट नहीं हो सकते।

**असराफील के अमल में, सकसुभे नहीं कोए।
कयामत फल पाया इतहीं, मगज मुसाफी सोए॥३५॥**

अस्राफील द्वारा प्रकट होने वाले तारतम ज्ञान में किसी भी प्रकार का संशय नहीं होता। कियामत के समय इसकी शीतल छाया में आने वाला कोई भी व्यक्ति संसार में इसके फलरूप कुर्आन के गुह्य भेदों को जान जाता है।

**आखिर फल जो पावहीं, कहे सोई कुरान।
दिन होवे तिन मारफत, हक अर्स पेहेचान॥३६॥**

कियामत के फलरूप कुर्आन के गुह्य रहस्यों को जो जान जाता है, वही कुर्आन की विवेचना कर सकता है। उसके हृदय में परमधाम के मारिफत के ज्ञान का उजाला हो जाता है तथा उसे अक्षरातीत एवं परमधाम की वास्तविक पहचान हो जाती है।

**तो कह्या असराफील, आवसी आखिर।
सो फल लैलत कदर का, पाया तीसरे फजर॥३७॥**

पाक कुर्आन मजीद में ऐसा कहा गया है कि अस्राफील कियामत के समय (आखिरत) में आयेगा। उसे लैल-तुल-कदर की रात्रि के तीसरे तक़रार (जागनी ब्रह्माण्ड) में होने वाली फज़्र (ज्ञान के प्रातःकाल) की लीला में कियामत का वास्तविक फल मिला अर्थात् परब्रह्म के धाम, स्वरूप, लीला एवं कुर्आन के गुह्य भेदों को जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

**लिखे सबों के मरातबे, ए जो बीच फुरकान।
सो ए जाने रूहें मोमिन, या जानें हादी सुभान॥३८॥**

कुर्आन में जिब्रील, अस्राफील आदि की श्रेष्ठता के स्तर का वर्णन किया गया है, जिन्हें या तो ब्रह्मसृष्टियां जानती हैं या श्यामा जी एवं श्री राज जी ही जानते हैं।

**ए जो गिरो फरिस्तन की, जाको नूर मकान।
रूहें बीच नूरतजल्ला, सूरत रेहेमान॥३९॥**

ईश्वरीय सृष्टि का मूल घर अक्षर धाम (सत्स्वरूप) है। ब्रह्मसृष्टियां परमधाम में अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत के साथ रहती हैं। इनके हृदय में प्रियतम की छवि बसी होती है।

जबराईल आइया, सबों पैगंमरों पर।
सो ए रह्या बीच नूर के, ना चल्या महंमद बराबर॥४०॥

जिब्रील फरिश्ता सभी पैगम्बरों का पथ-प्रदर्शक है। वह अक्षर धाम (सत्स्वरूप) तक ही जा सका। वह मुहम्मद साहब की भांति परमधाम में नहीं जा सका।

और कोई अर्स अजीममें, पोहोंच ना सकत।
जित हक हादी रूहें, महंमद तीन सूरत॥४१॥

जिस परमधाम में श्री राजश्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं का निवास है, वहां मुहम्मद की तीनों सूरतों के अतिरिक्त आज दिन तक कोई भी नहीं पहुँच सका है।

और मोमिन बोल ना बोलहीं, एक मेयरज बिन।
जिनपे इलम हक का, लदुन्नी रोसन॥४२॥

जिन ब्रह्ममुनियों के हृदय में प्रियतम अक्षरातीत के वचनामृत रूप श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान बस जाता है, वे अपने मुख से अपने सर्वस्व के दर्शन (मेयरज) के अतिरिक्त अन्य कोई बात ही नहीं करते हैं।

सोई अर्स हक का, हादी रूहों वतन।
इत हक हादी रूहों सूरत, अर्स के तन॥४३॥

स्वलीला अद्वैत अनादि परमधाम में श्री राजश्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं का अखण्ड निवास है। यहां उनके अखण्ड, नूरमयी स्वरूप एवं तन विराजमान हैं।

फरिस्ते अर्स सूरत नहीं, इनों जुदी असल।
पैदास कही फरिस्तन की, पेड़ से नकल॥४४॥

परमधाम में ईश्वरीय सृष्टि का स्वरूप नहीं है। इनकी उत्पत्ति सत्स्वरूप (अक्षर धाम) से हुई है। ब्रह्मसृष्टियों के मूल तनों के प्रतिबिम्ब के समान ही इनका स्वरूप हो जायेगा।

रूहें असल हक कदमों, है अर्स में सूरत।

तो कहे हक हादी रूहें, अर्स की वाहेदत॥४५॥

ब्रह्मसृष्टियों का मूल तन (स्वरूप) परात्म है जो मूल मिलावे में श्री राज जी के चरणों में बैठा हुआ हैं। यही कारण है कि श्री राज जी, श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं को परमधाम की वहदत (एक तन, एक दिली) का स्वरूप माना जाता है।

बीच अर्स अजीम के, सूरत बका हक।

मोमिन हक इलम से, चीन्हें मुतलक॥४६॥

परमधाम में श्री राज जी का अखण्ड स्वरूप है जिसकी निश्चित पहचान ब्रह्ममुनियों को श्री कुलजुम स्वरूप के ज्ञान से होती है।

मोमिन अर्स रूहों जैसा, कोई नहीं बुजरक।

हक इलम यों केहेवहीं, इनमें नाहीं सक॥४७॥

श्री कुलजुम स्वरूप का ज्ञान कहता है कि यह अटल सत्य है कि परमधाम के ब्रह्ममुनियों जैसा श्रेष्ठ कोई भी नहीं है।

लिख्या अमेतसालून में, बड़ाई रूहन।

देखो इत दिल देय के, निसां करो मोमिन॥४८॥

कुर्आन के अम अत सालून सिपारे में ब्रह्मांगनाओं की महिमा लिखी है। हे साथ जी! इस विषय पर सच्चे मन से विचार कीजिए, जिससे आपको पूर्णरूप से संतुष्टि मिल जाय।

हक हादी वाहेदत बीच में, कहे जो मोमिन।

इलम कहे इनों सिफतें, और नाहीं सुकन॥४९॥

श्री राज जी और श्यामा जी की एक दिली (एकत्व) में ही ब्रह्ममुनियों का स्वरूप है। तारतम ज्ञान कहता है कि इनकी महिमा को व्यक्त करने के लिये और कोई शब्द ही नहीं है।

सोई कहिए अर्स वाहेदत, जो हैं हक की जात।

हक हादी रूहों बीच में, कोई और न समात॥५०॥

परमधाम की वहदत (एकत्व) में उसे ही मानते हैं जो परब्रह्म की अंगरूपा हो। श्री

राजश्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं के मध्य संसार का अन्य कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता है।

पातसाही एक हक बिना, और नहीं कोई कित।

दूजा हुकम कादर का, कई करत कुदरत॥५१॥

परमधाम के २५ पक्षों में श्री राज जी का स्वामित्व ही दृष्टिगोचर होता है। अक्षर धाम में उनके आदेश का स्वरूप अक्षर ब्रह्म है जो अपनी प्रकृति (योगमाया) के द्वारा अनन्त ब्रह्माण्ड बनाते-मिटते रहते हैं।

भावार्थ- परमधाम की सम्पूर्ण शोभा, लीला, ऐश्वर्य एवं प्रेम आदि के मूल में एकमात्र श्री राज जी का हृदय ही है। इसी को उनका स्वामित्व कहा जाता है।

सो करें जाहेर हक की, कई भांतों सिफत।

फानी छल झूठा नजरों, हुकमें देखत॥५२॥

परब्रह्म के आदेश स्वरूप अक्षर ब्रह्म अपनी सृष्टि रचना की लीला द्वारा अनेक प्रकार से अक्षरातीत की महिमा को प्रकट करते हैं। वे इस नश्वर प्रपंचमयी मिथ्या जगत को अपनी दृष्टि से देखते हैं।

महंमद रूहों को देखाए के, करसी सब फना।

आंखां खोले ज्यों उड़ जाए, नींद का सुपना॥५३॥

श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं को माया का यह खेल दिखाकर श्री राज जी इसका लय कर देंगे। यह वैसे ही नष्ट हो जायेगा जैसे आंखें खुलने पर नींद चली जाती है और स्वप्न समाप्त हो जाता है।

चौदे तबक की दुनियां, और जिमी अंबर।

ऐसे खेल पैदा फना, होवें कई नूर नजर॥५४॥

धरती से लेकर आकाश तक चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड जैसे असंख्यों चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म की दृष्टि में एक पल में पैदा होते हैं और लय हो जाते हैं।

फरिस्ते देव जिन आदमी, ए जो चौदे तबक।

पैदा फना हो जात हैं, नूर के पलक॥५५॥

अक्षर ब्रह्म के एक पल में फरिश्तों, देवताओं, जिन्नों और मनुष्यों से युक्त चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड जैसे असंख्यों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होते हैं और लय हो जाते हैं।

कायम एक वाहेदत, हक की पातसाही।

दूजी काहूं कितहूं, जरा कही न जाई॥५६॥

एक मात्र स्वलीला अद्वैत परमधाम ही अखण्ड है, जहां वहदत (एकत्व) की लीला है और परब्रह्म का स्वामित्व है। इसके अतिरिक्त अन्य दूसरा (बेहद को छोड़कर) कहीं भी कोई अखण्ड स्थान नहीं है।

देखाया रूहन को, देखो नौमें सिपारे।

ए हक हादी रूहें निसबती, जो बन्दे अपने प्यारे॥५७॥

हे साथ जी! कुर्आन पाक के दूवें सिपारे में देखिये, जिसमें यह लिखा है कि श्री राज जी ने अपनी आत्माओं को माया का खेल दिखाया है। परमधाम की ब्रह्मात्माओं का श्री राजश्यामा जी से अनादि काल से अटूट सम्बन्ध है। वे युगल स्वरूप की अंगरूपा हैं तथा उनसे अति प्रेम है।

हक बिना जो कछु कहे, सो होवे मुसरक।

और जरा नहीं कहूं कितहूं, यों कहे इलम हक॥५८॥

अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत को छोड़कर कोई भी सुन्दरसाथ यदि किसी अन्य को अपना आराध्य बनाता है तो बहुदेववादी बनकर वह अपने अखण्ड प्रेम को कलंकित करने का अपराध करता है। श्री कुल्जुम स्वरूप का दिव्य ज्ञान तो यही कहता है कि अक्षरातीत के अतिरिक्त अन्य कोई भी कहीं भी हमारा आराध्य नहीं है।

हुकमें देत देखाई, कुदरत पसारा।

ए देखत सब पैदा फना, हक न्यारे से न्यारा॥५९॥

प्रियतम श्री राज जी के आदेश स्वरूप अक्षर ब्रह्म की प्रकृति का ही विस्तार रूप यह नश्वर जगत है। जिस ब्रह्माण्ड को आप देख रहे हैं, वह पहले उत्पन्न हुआ है और

भविष्य में नष्ट हो जायेगा। इस जगत से भी परे बेहद है और उससे भी परे परमधाम है जिसमें अक्षरातीत की आनन्दमयी लीला है।

**सिपारे ओगनतीस में, हकें लिख्या है जेह।
सो देखो नीके कर, अपना दिल देय॥६०॥**

हे साथ जी! कुरआन के २६वें सिपारे में श्री राज जी ने जो लिखवाया है, उसे आप अपना दिल देकर अच्छी तरह से देखिए।

भावार्थ- कुरआन के सि. २६ सू. ७७ आ. २३ “इन आ नहनु नज्जलना अलैकल कुरआन तन्जीला” (मुहम्मद स.) हमने आप पर कुरआन धीरे-धीरे नाजिल किया इनन हाजि ही तज्किन्खुन त फमन शा अत-ख ग इला रब्बिही सबीला” यह तो नसीहत है जो चाहे अपने परवरदिगार की तरफ पहुँचने का रास्ता अख्तियार करें।

**जब आई आयत हकीकत, तब पीछली करी मनसूक।
ए हुकम तोड़े सो क्यों देखे, जो फोड़ जमात हुए टूक टूक॥६१॥**

जब हकीकत के ज्ञान की आयतें अवतरित हुई, तब शरीयत की पिछली आयतें रह कर दी गई। मुहम्मद साहब के निर्देशों को न मानने वाले भला इस सच्चाई को कैसे देख सकते हैं? ये लोग तो समुदाय में विरोध कराकर टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं।

**हादी देखाए भी तो देखे, जो दिल होए आकीन।
सो सखत बखत ऐसा हुआ, जो छोड़ फिरे सब दीन॥६२॥**

श्री प्राणनाथ जी ऐसे लोगों को भी परम सत्य का साक्षात्कार करवाना चाहते हैं, किन्तु इन्हें सत्य का बोध तो तब हो जब इनके हृदय में विश्वास हो। अब तो ऐसा कठिन समय आ गया है कि सभी लोग अपने धर्म और सिद्धांत को छोड़कर अलग हो गए हैं।

**न मानो सो देखियो, अगले अमल सरे दीन।
मनसूख लिख्या सबन को, जो गए छोड़ आकीन॥६३॥**

जिसे मेरी बात पर विश्वास न हो वे कुरआन में जाकर देख लें कि शरीयत के अगले नियमों में क्या लिखा है? जो लोग परब्रह्म पर ही विश्वास छोड़ दिए, उन्हें रह किया हुआ

लिखा है अर्थात् वे आध्यात्मिक उन्नति से रहित हो गये।

**लिख्या सिपारे तीसरे, होसी खोलें हकीकत।
एक दीन होसी सबे, कही इन सरत॥६४॥**

कुर्आन के तीसरे सिपारे में लिखा है कि जब हकीकत के ज्ञान के सभी रहस्य स्पष्ट रूप से विदित हो जायेंगे तो सारा जगत एक निजानन्द के मार्ग को स्वीकार कर लेगा।

**दुनी राह न पावे रात की, जाहेर फना नाबूद।
ऊग्या दिन मारफत का, सबों हुआ मकसूद॥६५॥**

अज्ञानता के अन्धकार (मोह) से उत्पन्न हुआ यह जगत् नश्वर एवं स्वाप्निक (अस्तित्वविहीन) है। इसमें रहने वाले जीवों को अखण्ड धाम का मार्ग ही नहीं मिलता था। अब मारिफत के ज्ञान-रूपी सूर्य (श्री कुल्जुम स्वरूप) के उग आने से सबकी इच्छायें पूर्ण हो गयी हैं।

**दूर किए तारीकी रात के, सितारा करता था मैं मैं।
डुबाया मारफत सूरजें, नाबूद डूब्या मैं मैं सें॥६६॥**

अज्ञानता की रात्रि में उगा हुआ कर्मकाण्ड का तारा अहंकार में डूबा हुआ था। वह स्वयं को ही सर्वोपरि मानता था, किन्तु मारिफत ज्ञान के सूर्य के उगते ही वह अदृश्य हो गया। अहंकार के सागर में इतराने वाला कर्मकाण्ड का तारा नष्ट हो गया।

**सो सितारा सरीयत का, करता था रात की रोसन।
सो नाबूद हुआ देख सूरज, ऊगे मारफत दिन॥६७॥**

अज्ञानता के अन्धकार से परिपूर्ण रात्रि में कर्मकाण्ड का तारा ही सबको प्रकाशित करने वाला माना जाता था। वह मारिफत के सूर्य ज्ञान रूपी के उगने से दिन का उजाला फैलते हुए देखकर छिप गया।

भावार्थ- पौराणिकों की देखा-देखी हमारे समाज में भी कण्ठी, तिलक, भागवत कथा, मन्त्र जप, परिक्रमा एवं पूजा पाठ का बहुत जोर से महिमा मण्डन किया जाता है किन्तु ऐसा करने वाले श्री प्राणनाथ जी, श्री कुल्जुम स्वरूप एवं चितवनी की महिमा बताने

में या तो चुप्पी साध जाते हैं या संकोच करते हैं। उपरोक्त चौपाई को पढ़कर उन्हें आत्म-मन्थन करना चाहिए कि स्वयं वे किस दिशा में जा रहे हैं? उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि यदि ज्ञान एवं भक्ति रूपी नदी की धारा को रोकने का अनुचित प्रयास किया जाता है तो अवरोधक बने पत्थरों को या तो मार्ग देने के लिये विवश होना पड़ता है या साथ में बहना पड़ता है अन्यथा उन्हें बालू बन कर अपना अस्तित्व खोना पड़ता है।

**अर्स बका देखाए के, करसी सबों हैयात।
असराफील खोल मुसाफ, करसी सिफात॥६८॥**

असराफील फरिश्ता कुर्आन के रहस्यों को खोलकर सबको अखण्ड परमधाम की पहचान करायेगा तथा सभी को बहिश्तों में अखण्ड होने का सौभाग्य प्रदान करेगा।

**कलाम अल्ला का बातून, देखो हक इलम ले।
महंमद सिफायत रूहों को, इनों करसी विध ए॥६९॥**

हे साथ जी! कुर्आन पाक के गुह्य रहस्यों को श्री कुलजम स्वरूप से समझिए। श्री जी इस प्रकार ब्रह्मात्माओं को अखण्ड ज्ञान फैलाकर सबको मुक्ति देने का सुयश देंगे।

**चारों किताबों के माएने, और माएने चारों वेद।
लिख्या सबोंमें जुदा जुदा, कयामत एकै भेद॥७०॥**

कतेब पक्ष के चारों ग्रन्थों (तौरेत, इंजील, जंबूर तथा कुर्आन) एवं चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) में अखण्ड मुक्ति का एक ही सिद्धान्त दिया गया है। परब्रह्म को यथार्थ रूप से जानकर उसका साक्षात्कार करना, किन्तु इस तथ्य को सभी धर्मग्रन्थों में अलग-अलग प्रकार से लिखा गया है।

भावार्थ- यजुर्वेद के पुरुष सूक्त में कहा गया है कि 'तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय' अर्थात् उस परब्रह्म को जाने बिना मृत्यु के बन्धन से छूटने का अन्य कोई भी मार्ग नहीं है। इसी प्रकार, कतेब ग्रन्थ न्याय के दिन परब्रह्म की पहचान कराकर अखण्ड मुक्ति (कियामत) का वर्णन करते हैं।

किताबें दुनियाँ मिने, कहूं केती गिनती अनेक।

तिन सबोंमें आखिरी, कलमा अल्ला विसेक॥७१॥

यद्यपि इस संसार में इतने अधिक धर्मग्रन्थ हैं कि मैं उनकी संख्या कहा तक बताऊँ? इन सभी धर्मग्रन्थों में श्री कुलजुम स्वरूप की विशेषता सर्वोपरि है, क्योंकि यह परब्रह्म के आवेश स्वरूप द्वारा कहा गया है तथा जागृत बुद्धि का ज्ञान है।

तिन सबों किताबों बीचमें, बिध बिध लिखी कियामत।

तिन सबों जिकर करी, आखिर बड़ी सिफत॥७२॥

उन सभी ग्रन्थों में कियामत (अखण्ड मुक्ति) के सम्बन्ध में अनेक प्रकार से लिखा है। सभी ग्रन्थों ने कियामत के समय की बहुत अधिक महिमा गायी है।

भावार्थ- पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र, बृहत्सदाशिव संहिता तथा बुद्ध गीता आदि ग्रन्थों में कहा गया है कि परब्रह्म इस संसार में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर परमधाम के दिव्य ज्ञान से समस्त ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति देंगे। कुर्आन में वर्णित कियामत का सिद्धान्त भी यही है। इस प्रकार दोनों पक्षों (वेद-कतेब) के कथनों में एकरूपता है।

असराफीलें मुसाफ का, किया जाहेर खुलासा।

तो हुआ ए नजीकी, खासों में खासा॥७३॥

अस्राफील फरिश्ते ने कुर्आन के गुह्य रहस्यों का प्रत्यक्ष रूप से स्पष्टीकरण किया जिससे यह परब्रह्म का अति-विशिष्ट निकटस्थ बन गया।

भावार्थ- परमधाम के गुह्य रहस्यों को जानना और संसार में उसे प्रसारित करना एक महान कार्य है। यही कारण है कि उसे परब्रह्म का अति-विशिष्ट कहलाने की शोभा मिली। यदि अक्षर ब्रह्म का एक फरिश्ता इतनी बड़ी शोभा को प्राप्त कर सकता है तो परमधाम की ब्रह्मात्मा कहलाने वाले सुन्दरसाथ अपनी अकर्मण्यता एवं नकारात्मक चिन्तन के कारण हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे रहते हैं? वे ब्रह्मज्ञान के प्रकाश से संसार को प्रकाशित करने के लिये कमर कसकर क्यों नहीं खड़े होते? क्या अपने प्राणेश्वर को रिझाने के लिये

वे इतनी-सी सेवा भी नहीं कर सकते?

जिन देव या आदमी, या जिमी आसमान फरिस्ते।

तीन सूरत महंमद की, है हादी सिर सब के॥७४॥

धरती से लेकर आकाश तक के इस ब्रह्माण्ड में चाहे कोई जिन्न, देवता, मनुष्य या फरिश्ता ही क्यों न हो, सबके सिर पर श्री प्राणनाथ जी की छत्रछाया है। मुहम्मद सल्ल. की तीनों सूरतें इन्हीं में समाहित हैं। इनके जैसा कोई नहीं।

या जिमीन का तिनका, या बड़ा दरखत।

कही सिर सबन के, महंमद हिदायत॥७५॥

चाहे धरती का कोई तिनका हो अथवा कोई बड़ा वृक्ष, सबके सिर पर श्री जी का निर्देशन है अर्थात् एकमात्र वे ही सबके आराध्य हैं।

जमाना खाली नहीं, बिना महंमदी कोए।

करत रोसन सबन में, चिराग नबी की सोए॥७६॥

कोई भी युग परब्रह्म के आदेश स्वरूप अक्षर ब्रह्म (मुहम्मद) की महिमा से रहित नहीं है। सारे संसार में उन्हीं की ज्ञान ज्योति प्रकाशित हो रही है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का सूक्ष्म अर्थ श्री प्राणनाथ जी के लिये होगा जो इस प्रकार है : यह जागनी ब्रह्माण्ड श्री जी की महिमा से भरपूर है। सूर्य के समान प्रकाश स्वरूप बनकर श्री कुलजुम स्वरूप समस्त संसार को परमधाम का ज्ञान दे रहा है।

‘फिरत चिरागां इनमें, एक चांद दूजा सूर’ (सनद, ४१/४५) के आधार पर चिराग का अर्थ प्रकाश का स्रोत होता है। नबी का सूक्ष्म अर्थ श्री प्राणनाथ जी के सन्दर्भ में होगा।

इन विध केहेवें हदीसें, और हक फुरमान।

ले मगज माएने मोमिन, सब विध करें पेहेचान॥७७॥

कुर्आन तथा हदीसों में श्री जी के सम्बन्ध में इस प्रकार कहा गया है। इनके गुह्य अर्थों को लेकर ब्रह्ममुनि हर प्रकार से श्री प्राणनाथ जी की पहचान करते हैं।

लिख्या आयतों सूरतों, और हदीसों माहें।

हादी इन महंमद बिना, और कोई किन सिर नाहें ॥७८॥

कुर्आन की सूरतों, आयतों तथा हदीसों में लिखा हुआ है कि सबके निर्देशक (हादी) श्री प्राणनाथ जी के बिना कहीं भी कोई आराध्य नहीं हैं। वे सबके लिये इस संसार में परब्रह्म के स्वरूप हैं।

**अव्वल कहा महंमद, और बीच आखिर।
खाली नहीं बिना खलीफे, महंमद के बिगर ॥७९॥**

बसरी, मल्की एवं हकी के स्वरूप में मुहम्मद (सल्ल.) (महिमावान्) की ही लीला है। श्री प्राणनाथ जी एवं उनके ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त अन्य कोई भी प्रशंसित नहीं है।

**यों लिख्या बीच हदीस के, जो मैं काम करता हों अब।
सो मैं आखिर आए के, तमाम करोंगा सब ॥८०॥**

हदीसों में लिखा है कि मुहम्मद साहब कहते हैं कि अद्वैत सिद्धान्त को प्रचारित करने का जो काम मैं इस समय कर रहा हूँ, वही कार्य मैं आखिरत (कियामत) के समय आकर करूंगा।

**मैं आऊंगा यारों वास्ते, खोलों नजूम मेरा मैं।
मेरे कूच नजूमी कोई ना रह्या, मेरा नजूम खुले मुझ से ॥८१॥**

मैं अपने मित्रों को माया के बन्धन से निकालने के लिये पुनः आऊंगा और अपनी कही हुई गुह्य बातों का भेद खोलूंगा। संसार में मेरे प्रस्थान करने के बाद अब कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो मेरे कहे गये गुह्य तथ्यों का रहस्य स्पष्ट करें। मेरी गुह्य बातें एकमात्र मुझसे ही खुलेगी।

**मोमिन जिन जिन मुलकों, जुदी जुदी जुबां ले आए।
ताही जुबां से तिन को, महंमद दें समझाए ॥८२॥**

ब्रह्ममुनि अलग-अलग क्षेत्रों में अवतरित हुए हैं। उनकी भाषा भी अलग-अलग हैं। श्री प्राणनाथ जी उसी भाषा में उनको परमधाम का तत्त्व ज्ञान समझायेंगे।

**नूर महंमद कहा हक का, दुनी सब महंमद नूर।
जरा एक महंमद बिना, नहीं कांहू जहूर ॥८३॥**

मुहम्मद श्री राज जी के नूर (आदेश स्वरूप, अक्षर ब्रह्म) हैं। यह सारा जगत अक्षर ब्रह्म के आदेश से बना हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुहम्मद के अतिरिक्त इस जगत में कुछ नहीं है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में मुहम्मद सल्ल. (अक्षर ब्रह्म) की महिमा दर्शायी है। सम्पूर्ण जगत जिसके आदेश से बनता है, उसका कण-कण उसकी महिमा का गायन करता है। इस चौपाई में यही भाव व्यक्त किया गया है।

**कही सूरत महंमद की, खावंद जमाने तीन।
इन तीनों सिर खिताब, गिरो रबानी हकीकी दीन॥८४॥**

मुहम्मद की तीन सूरतें हैं जो बसरी, मल्की तथा हकी कही जाती हैं। अपने-अपने समय में ये तीनों ही सबके आराध्य के रूप में पूजित हुई हैं। ब्रह्मसृष्टियों को सत्य धर्म का ज्ञान देने के लिये इनकी महान शोभा है।

**बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत।
ए तीनों महंमद की, बीच अर्स वाहेदत॥८५॥**

इन तीनों सूरतों बसरी, मल्की तथा हकी में श्री राज जी के ही स्वरूप ने लीला की है। मुहम्मद सल्ल. के नाम से सम्बोधित की जाने वाली ये तीनों सूरतें परमधाम की एक दिली (वहदत) में हैं अर्थात् परमधाम की वहदत में अक्षर ब्रह्म, श्यामा जी एवं श्री इन्द्रावती जी एक ही स्वरूप हैं।

**और गिरों रूहें फरिस्तें, दोऊ कही रबानी।
माहिं तीन सूरत महंमद की, जिन मुरग बूदें लई पेहेचानी॥८६॥**

ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि को क्रमशः अक्षरातीत एवं अक्षर ब्रह्म की अंगरूपा कहा जाता है। मुहम्मद की तीनों सूरतों ने इनमें लीला की हैं। इन दोनों सृष्टियों ने श्यामा जी के तारतम ज्ञान-रूपी बादल से बरसने वाली अमृतमयी बूंदों को पहचाना और ग्रहण किया।

**ए तीनों सूरत दोऊ गिरो मिने, कहे जो सिरदार।
ए सब हक इलमें, कर देखो विचार॥८७॥**

तीनों सूरतों को ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि का प्रमुख माना जाता है। हे साथ

जी! इस रहस्य को श्री कुल्जुम स्वरूप के प्रकाश में देखकर चिंतन कीजिए।

ए दूजा खेल जो दुनियां, बीच जिमी आसमान।

ए तो नाहीं कछुए, एक जरे भी समान॥८८॥

धरती से लेकर आकाश तक यह जो द्वैत का जगत दिख रहा है, वह अद्वैत परमधाम के समक्ष एक कण के समान भी नहीं है।

लिख्या चौथे सिपारे, ए चौदे तबक कहे जे।

ए जरे जेता नहीं, दो टूक होवें जिनके॥८९॥

कुर्आन पाक के चौथे सिपारे में लिखा है कि चौदह लोकों का यह जो ब्रह्माण्ड दिखाई दे रहा है, यह परमधाम के समक्ष एक ऐसे कण के भी बराबर नहीं है जिसके दो टुकड़े किए जा सकें।

रात अमल सरीयत का, चल्या लदुन्नी बिन।

हक इलमें रात मेट के, किया जाहेर बका दिन॥९०॥

तारतम ज्ञान के न होने से आज दिन तक अज्ञानता के अंधकार में शरीयत (कर्मकाण्ड) का व्यवहार चलता रहा। श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान ने अज्ञानता के अंधकार को नष्ट कर दिया और परमधाम के दिव्य ज्ञान से दिन का उजाला कर दिया।

कह्या दिल महंमद का, सूरज मारफत।

हकीकत खोले पीछे, होसी हक लज्जत॥९१॥

मेहमत साहिबुज्जमां श्री महामति जी का हृदय मारिफत के ज्ञान का सूरज है। श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान से यथार्थ सत्य का प्रकाश होने पर श्री राज जी के अखण्ड सुखों का रसास्वादन होगा।

एही लदुन्नी हक इलम, करसी फजर।

देखसी मोमिन अर्स को, रूह की खोल नजर॥९२॥

श्री राज जी का यह तारतम ज्ञान अज्ञानता के अंधकार को हटाकर, सत्य ज्ञान का उजाला कर देगा, जिससे ब्रह्ममुनि चितवनी द्वारा अपनी आत्मिक दृष्टि खोलकर अपने मूल घर को देखेंगे।

ए सिपारे उनईस में, लिखी हकीकत।
सो आए देखो नीके कर, जो कह्या दिन मारफत ॥१३॥

कुर्आन पाक के १६वें सिपारे में यह वास्तविकता दर्शायी गई है कि मारिफत के ज्ञान का प्रकटीकरण होना ही दिन होना है, इसे आप अच्छी तरह से देखिए।

दरम्यान जो साया कही, आगे ऊग्या दिन।
सूरज दिल महंमद का, हुआ नूर रोसन ॥१४॥

१२वीं सदी से पूर्व अंधकार का कुछ धुंधलापन था। परमधाम की चारों किताबों - खिल्वत, परिक्रमा, सागर तथा शृंगार के अवतरित होने के पश्चात् दिन का उजाला फैलने लगा। श्री महामति जी का हृदय ही परमधाम के ज्ञान का सूर्य है, जिसका प्रकाश चारों ओर संसार में फैलेगा।

ए जो चल्या बीच रात के, अमल सरीयत।
सो कहे दिल मजाजी, जो पैदा जुलमत ॥१५॥

अज्ञानता की रात्रि में मात्र कर्मकाण्ड और शरीयत का ही वर्चस्व रहा है। मोहसागर से पैदा होने वाले जीव ही झूठे दिल के होते हैं और ये कर्मकाण्ड का प्रचलन करते हैं।

अर्स दिल मोमिन कहे, सो दिल हकीकी जेता।
रूहें फरिस्तें अर्स से, इजने उतरे तेता ॥१६॥

ब्रह्ममुनियों के हृदय को धाम कहा जाता है और इनका दिल पूर्णतया सत्यनिष्ठ होता है। ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि दोनों श्री राज जी के आदेश से अपने-अपने धाम से इस माया का खेल देखने आयी है।

रूहें गिरो दरगाह बीच, अर्स अजीम जेताई।
एही अर्स दिल हकीकी, महंमद के भाई ॥१७॥

ब्रह्मसृष्टियां परमधाम के रंगमहल में रहती हैं। इनका हृदय सत्यनिष्ठ होता है और

प्रियतम का धाम कहलाता है। मुहम्मद साहब ने इन्हें ही अपना भाई कहा है।

एही बीच वाहेदत के, खिलवत खुदाई।
जो हक हादी रूहन की, नूर बका पातसाई॥१८॥

ये ब्रह्ममुनि परमधाम की खिलवत में वहदत (एकदिली) के अन्तर्गत हैं। उस अखण्ड नूरी परमधाम में श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं का स्वामित्व है।

अव्वल हादी रूहन सों, कौल हैं हक के।
सो ए लिखी रदबदलें, कहें आयतें हदीसें ए॥१९॥

इस मायावी खेल में आने से पहले श्री राज जी के साथ श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं ने प्रेम संवाद किया था जिसमें श्री राज जी ने खेल में अपने आने के सम्बन्ध में जो कुछ कहा था, वह सब कुरान की आयतों एवं हदीसों में लिखा है।

रूहें हमेसा रेहेत हैं, अर्स बका दरगाह मिने।
ए रदबदल हकसों, करी उतरते तिने॥१००॥

ब्रह्मांगनायें सर्वदा ही अखण्ड परमधाम के रंगमहल में रहती हैं। उन्होंने परमधाम से मायावी जगत में आते समय अपने प्राणेश्वर के साथ ये बातें की थीं।

अर्स अजीम नूर बिलंद से, रूहें उतरीं जब।
ए माएने आयत हदीस में, लिख भेज्या है तब॥१०१॥

अक्षर धाम से भी परे सर्वोच्च परमधाम से जब ब्रह्मसृष्टियां इस नश्वर जगत में आने वाली थी, तब श्री राज जी ने इन बातों को कुरान की आयतों एवं हदीसों में लिखवाया।

भावार्थ- मुहम्मद सल्ल. (साहब) के समय कोई भी ब्रह्मसृष्टि खेल में नहीं आयी थी, केवल परमधाम में फरामोशी जैसी स्थिति में थीं। अतः उपरोक्त चौपाई में 'उतरी' का आशय होगा- 'उतरने वाली थी।'

हक हादी रूहनसों, जो हुई मुकाबिल।
सो सुकन सब कुरान में, लिखी रदबदल॥१०२॥

श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं में जो प्रेम-संवाद के रूप में वार्ता हुई, वहीं सारी बातें कुरआन में लिखी गयी हैं।

**हकें लिख भेजी साथ हादी के, रूहों ऊपर इसारत।
और कोई समझे नहीं, बिना हक वाहेदत॥१०३॥**

श्री राज जी ने मुहम्मद स. अ. व. व. के हाथ से ये बातें संकेतों में लिखकर भेजी जिन्हें ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई समझ ही नहीं सकता।

**ए समझे कहिए तिन को, जो कोई दूसरा होए।
ए बारीक बातें वाहेदत की, केहेते बंधाए सोए॥१०४॥**

इश्क-रब्द की बातों को संकेतों में कहे गये अभिप्राय को समझने की बात तो तब की जाय जब कोई दूसरा हो। स्वाप्निक जीवों का कोई अस्तित्व ही नहीं होता, ऐसी अवस्था में उन्हें दूसरा कैसे कह सकते हैं? परमधाम के वहदत की ये गुह्य बातें हैं। इन्हें कहने के प्रयास में जीव को न कहने के बन्धन में बंधना पड़ता है क्योंकि शब्दातीत अद्वैत को व्यक्त करने या मानवीय बुद्धि से जानने में जीव असमर्थ है।

**ए सुकन बिना समझे, केहेते होए मुसरक।
ए बारीक बातें खिलवत की, अर्स की गुझ हक॥१०५॥**

परमधाम के प्रेम-संवाद को समझे बिना यदि कोई अपनी लौकिक बुद्धि से कहने का प्रयास करता है तो वह बहुदेववादी की भांति दोषी होता है। परमधाम की खिलवत एवं प्रियतम अक्षरातीत के हृदय की गुह्य बातों को संसार के जीव अपने दृष्टिकोण से ही समझने का प्रयास करते हैं जो अनुचित है।

**ए बातून माएने हक के, जानें हादी मोमिन।
होए ना और किन को, बिना अर्स के तन॥१०६॥**

श्री राज जी की गुह्यतम बातों को मात्र श्यामा जी और ब्रह्ममुनि ही जानते हैं। जिनके मूल तन परमधाम में नहीं हैं, उन्हें इन बातों का ज्ञान नहीं हो सकता है।

**दूजा तो कहूं जरा नहीं, कहिए किन की बिध बात।
कहें वेद कतेब और हदीसें, कछू नाहीं बिना हक जात॥१०७॥**

जब स्वलीला अद्वैत परमधाम के अतिरिक्त अन्य कुछ है ही नहीं, तो इनसे भिन्न अन्य की बात करने का प्रयोजन ही क्या है? वेद, कतेब एवं हदीसों में कहा गया है कि श्री राज जी, श्यामा जी व ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं।

**ए जो खुदी बीच दुनी के, मैं तैं करत।
ए वेद कतेबों देखिया, जरा न काहूं कित॥१०८॥**

संसार के जीव अज्ञानता के वशीभूत होकर ही 'मैं' और 'तुम' कहा करते हैं। वेद-कतेबों में स्पष्ट लिखा है कि परब्रह्म के अतिरिक्त कहीं भी कुछ कण मात्र भी नहीं है।

**लिख्या वेद कतेब में, ए चौदे तबक कहे जे।
बंझापूत सींग खरगोस, बोहोत भाँतों कहा ए॥१०९॥**

वेद-कतेब में कहा गया है कि चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड उस बन्ध्या के पुत्र एवं खरगोश की सींग के समान है, जो यथार्थ में होते ही नहीं है। यह केवल काल्पनिक है।

**बसरी मलकी और हकी, ए कही सूरत तीन।
इनों किया हक इलम से, महंमद बेसक दीन॥११०॥**

बसरी, मल्की और हकी ये तीन सूरतें कही गयी हैं। इन्होंने ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में श्री कुलजुम स्वरूप के द्वारा संशय रहित निजानन्द सम्प्रदाय की स्थापना की है।

**और भी करी बेसक, ए जो कही सुनत जमात।
इनों लई सब दिलमें, बेसक अर्स बिसात॥१११॥**

परब्रह्म के निर्देशों का पालन करने वाले निजानन्दी सुन्दरसाथ को श्री जी के कुलजुम स्वरूप ने संशय-रहित कर दिया है। इन्होंने अपने धाम हृदय में परमधाम की सम्पूर्ण सामग्री, शोभा एवं लीला को बसा लिया है।

**तब हुआ रूहन का, हक अर्स कलूब।
याही हक अर्समें, रूह नजरों मिले मेहेबूब॥११२॥**

ऐसा कर लेने पर ब्रह्मात्माओं का हृदय प्रियतम का धाम बन जाता है। ऐसे धाम हृदय में आत्मिक दृष्टि से देखने पर प्राणेश्वर अक्षरातीत से मिलन होता है।

तब सुनत जमात की, बातें सवे बनि आई।

महंमद की तीन सूरतें, करी पूरी पनाही॥११३॥

तब परब्रह्म के निर्देशों का पालन करने वाले सुन्दरसाथ की सम्पूर्ण आत्मिक इच्छायें पूर्ण हो गयी। श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में तीन सूरतों ने उन्हें अपनी छत्रछाया में रखा।

**अव्वल रोसन रसूल, रूहअल्ला आखिर।
गिरो पाक करी बीच इमामें, दुनी सचराचर॥११४॥**

सबसे पहले मुहम्मद साहब ने संसार में आकर परमधाम का संक्षिप्त ज्ञान दिया। उसके पश्चात् श्यामा जी ने परमधाम का मार्ग दिया। तत्पश्चात् श्री प्राणनाथ जी ने श्री कुलजम स्वरूप के ज्ञान के द्वारा ब्रह्मसृष्टियों एवं ईश्वरीय सृष्टि सहित सम्पूर्ण चराचर जगत को पवित्र किया।

**तीन सूरत महंमद की, मिल फुरमाया किया।
भिस्त खोल दुनी फानी को, कायम सुख दिया॥११५॥**

मुहम्मद की तीनों सूरतों ने परब्रह्म के निर्देशों के अनुसार कार्य किया है। उन्होंने इस स्वापिक जगत के जीवों को बेहद की अखण्ड बहिस्तों में मुक्ति देकर शाश्वत सुख का रसपान कराया।

**चौदे तबक के बीचमें, तरफ न पाई किन।
हादी गिरो अर्स बीचमें, बैठाए इलमें कर रोसन॥११६॥**

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में आज तक कोई भी यह नहीं जान सका था कि परमधाम कहाँ हैं? मूल स्वरूप श्री राज जी ने अपने अलौकिक ज्ञान के द्वारा श्यामा जी सहित सभी ब्रह्मसृष्टियों को उनके धाम हृदय में ही अनुभूत करा दिया।

**सेहेरग से नजीक हक अर्स, बीच हक इलम देवे बैठाए।
ऐसा इलम लदुन्नी, रूहअल्ला ले आए॥११७॥**

श्री राज जी से श्यामा जी ऐसा तारतम ज्ञान लेकर आयी हैं जो इस नश्वर जगत में

भी यह अनुभूति कराता है कि अक्षरातीत का परमधाम उनकी प्राणनली (शाहरग) से भी अधिक निकट है।

रूहअल्ला आप उतर, इलम ल्याए हक।

तिन समझाई सब उमतें, हक कौल बेसक॥११८॥

परमधाम से स्वयं श्यामा जी की आत्मा ने श्री राज जी का दिया हुआ दिव्य तारतम ज्ञान अवतरित किया है। उससे उन्होंने प्रियतम के संसार में आने के वचनों को अच्छी प्रकार समझाया है।

तीन सूरत महंमद की, मिल करी ऐसी सिफात।

उमतें पोहोंचाई दोऊ वतनों, दुनी सब करी हैयात॥११९॥

तीनों सूरतों ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में ऐसी कृपा की है कि ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि को उनके धाम पहुँचाया और ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

अव्वल भी महंमद कहा, बीच और आखिर।

वेद कतेब सबों कौलों, केहेवत योंही कर॥१२०॥

वेद (हिन्दू धर्मग्रन्थों) एवं कतेब के सभी वचनों में यही कहा जाता है कि प्रारम्भ में बसरी सूरत, मध्य में मल्की सूरत एवं अन्त में हकी सूरत के रूप में परब्रह्म के आदेश (इच्छा) स्वरूप (मुहम्मद) ने ही लीला की है।

हक कहे मुख अपने, महंमद मेरा मासूक।

ए हक गुझ मोमिन जानहीं, जो दिल आसिक हैं टूक टूक॥१२१॥

स्वयं श्री राज जी ने अपने मुखारविन्द से कहा है कि मुहम्मद मेरा माशूक है। श्री राज जी के इस कथन के गुह्य रहस्य को मात्र वे ब्रह्ममुनि ही जानते हैं जिनका हृदय अपने प्राणेश्वर का वह आशिक (प्रेमी) है जो मात्र सर्वस्व समर्पण की ही भाषा जानता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में 'माशूक' का तात्पर्य केवल श्यामा जी ही नहीं है अपितु मुहम्मद के वे तीनों स्वरूप हैं जो ब्रह्मात्माओं के लिये स्वयं श्री राज जी के द्वारा

धारण किये गये हैं। तीनों सूरतों में अलग-अलग आत्माओं अक्षर ब्रह्म, श्यामा जी एवं महामति ने लीला की है, किन्तु इन तीनों सूरतों ने श्री राज जी की लीला को संसार में प्रकाशित किया है और स्वयं को उनके प्रेम में लगाया है। यही कारण है कि परमधाम के सम्बन्ध से इन्हें आशिक और माशूक दोनों ही कहा है।

महामत कहे ए मोमिनो, रूहें आसिक इस्क वतन।

बहस करी रूहों इस्क की, आसिक इस्क के तन॥१२२॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! परमधाम अनन्त प्रेममयी है। ब्रह्मात्मायें अपने प्राणेश्वर से अनन्त प्रेम करती हैं। उनके तन भी इश्कमयी (प्रेममयी) हैं। उन्होंने एक आशिक (प्रेमी) के रूप में अपने प्रेम को बड़ा बताने के लिये ही श्री राज जी से संवाद किया था।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ १०३४ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन

प्रकरण ४९८, चौपाई १८०१०

॥ मसौदा लिख्या है ॥

जो हक हुकम से भाई केशवदास ने रिवाइत करी है। जो हादी ने जुबान मुबारकसेंती “ चौपाई ” एक हजार चौंतीस (१०३४) फुरमाई थी, सो यार मोमिनो ने इसके बाब चौदे (१४) माफक अकल अपनी के गम दिल से बांध कर किताब तमाम करी। अब भाई मोमिन इन चौपाइयों के हरफ हरफ के माएने मगज जाहेर के और बातून के, रूह की नजर खोल के लेंगे दिल अर्स में और हक के बेसक इलम लदुन्नी सों विचारेंगे और फैल में ल्यावेंगे, तबहीं हाल ले हादी के कदमों कदम धरेंगे। किस वास्ते के आखिर के मोमिन आकल हैं, और हिदायत हक की लई है। सब बिधों कामिल हैं, जिनके दिल अर्स में सूरत खुदाए की ऊगी है और ए कलाम भी हादी ने मोमिनो को कहे हैं। तो हुकम से मोमिनो को जरूर सिर लेना है। तिस वास्ते जो कोई अरवा अर्स अजीम की होए और इलम लदुन्नीसों जाग्रत हुई होए। और हुकम मदत करे और हक हादी हिंमत देवें, तो सुरत हक हादी के कदमों बांध के। इस फानी वजूद को उड़ावे और बीच अर्स अजीम के उठ खड़ी होए और

मिलाप हमेसगी का सुख लेवें। हादी ने दरवाजा बका का खोल्या है। केतेक यारों को लेय के आप अर्स सिधारे और अपने जो तन हैं, तिन को बुलावते हैं।

ताकी साख ए चौपाई छोटा कयामतनामें (१/४५) की-

सुनत बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड।

धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो ना हीं वतनी अखंड ॥

और आज हमारे हादी को बीच परदे के हुए दो महीने और दस रोज हुए। सो आज हमारे मेहेबूब की साल गिरह का दिन है। याने जन्म उच्छव छेहंतरमा तमाम हुआ। पचहत्तर बरस और नव महीने और बीस रोज। इस फानी के बीच हम गिरो रबानी के वास्ते। कई कसाले सेहे सेहे गुजरान किया और कई न्यामते बका की। इन रूहों के वास्ते जाहेर करी। सो कहां लों लिखों, बानी में जाहेर लिख्या है, जो देखेगा तिनकी निसां होगी। सदी महंमद सलिल्लाह अलेह वसल्लम की अग्यारे सै और छे (११०६) महीना मुहर्रम, तारीख सत्ताईसमी (२७) पोहोर दिन चढ़ते और हिंदवी तारीख संवत सत्रह सै इक्यावना बरस (१७५१) भादरवा वद चौदस (१४) वार गुरौ, पहर दिन चढ़ते किताब मारफत सागर तमाम हुई। हुकम हक हादी के सें-चौपाई एक हजार चौतीस (१०३४) मुकाम परना में। लिखतंग गिरो रबानी की पांउं खाक हमेसा चाहत केसवदास की परनाम कोटान कोट दंडवत साथ सबको अविधारजो जी प्रीत की रीत सों झाझा सनेह प्यार से।

मसविदा (मसौदा) लिखा है

स्वयं श्री केशवदास जी ब्रह्ममुनि अपने मसविदे में लिखते हैं कि अपने प्राणेश्वर के आदेश से यह मसविदा मैंने लिखा है। इसमें श्री जी के ही कथन का आधार लिया गया है। स्वयं श्री जी ने इस मारिफत सागर ग्रन्थ में १०३४ चौपाईयां कही थी जिन्हें सुन्दरसाथ ने १७ प्रकरणों में उसे लिपिबद्ध किया है। प्रियतम की अन्तर्धान लीला की व्यथा से पीड़ित होते हुए भी अपनी बुद्धि के अनुसार उन्होंने इस पवित्र कार्य को क्रियान्वित किया है। अब सुन्दरसाथ से यही आशा की जाती है कि वे अपनी आत्मिक दृष्टि से इस मारिफत सागर ग्रन्थ की प्रत्येक चौपाई के एक-एक शब्द के गुह्य भेदों और सूक्ष्म अर्थों को समझेंगे तथा

अपने धाम हृदय में धारण करेंगे। सुन्दरसाथ से यह भी अपेक्षा की जाती है कि सबको संशय-रहित करने वाले तारतम ज्ञान के प्रकाश में वे श्री मारिफत सागर ग्रन्थ के कथनों का विचार करके उस पर आचरण करें। तभी वे उस अवस्था में पहुँच सकते हैं कि वे श्री जी के दर्शाये हुए पुनीत मार्ग का अनुसरण कर सकें। उन्हें ऐसा क्यों करना चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि कियामत के इस स्वर्णिम समय में प्रकट होने वाले आप सभी सुन्दरसाथ बहुत ही बुद्धिमान हैं। आपने अपने आराध्य के निर्देशों का पालन भी किया है। हर तरह से आप सामर्थ्यवान हैं। आपके धाम हृदय में आपका प्राणेश्वर बसता है। आपके लिये ही तो प्रियतम अक्षरातीत ने इस ग्रन्थ को अवतरित किया है।

अब अपने प्राणवल्लभ के निर्देश को शिरोधार्य करना आपका परम कर्तव्य है। ऐसा मैं इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि आपमें परमधाम की जो भी ब्रह्मात्मा हैं, तारतम ज्ञान के प्रकाश में यदि वह जागृत हो चुकी हो, उस पर श्री राज जी के आदेश का वरदहस्त हो और युगल स्वरूप प्रेरित करें तो उसे चाहिये कि वह युगल स्वरूप के चरणों से अपनी अन्तर्दृष्टि को जोड़ कर स्वयं को अपने नश्वर शरीर से परे कर ले और अपनी परात्म के श्रृंगार से सम्पूर्ण परमधाम की शोभा को देखे। वह ऐसा प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करे कि मैं तो हर पल अपने आराध्य, अपने सर्वस्व, अपने प्राणेश्वर के सम्मुख ही रहूँ। स्वयं प्रियतम प्राणनाथ ने ऐसा करने के लिये हमें परमधाम की चितवनी द्वारा साक्षात्कार करने का यह मार्ग दर्शाया है। वे स्वयं अपने ही धाम को अपने ही नेत्रों से देख रहे हैं। कुछ सुन्दरसाथ ने भी धाम की शोभा में स्वयं को इतना डूबा दिया कि उन्हें अपने शरीर का वहन करना बहुत ही कष्टदायी लगा और उसका परित्याग भी कर दिया। अब प्राणेश्वर अक्षरातीत अपने ही तन कहे जाने वाले ब्रह्ममुनियों को प्रेरित कर रहे हैं कि जैसे मैं परमधाम को निरन्तर देख रहा हूँ, तुम भी देखो। क्या तुमने छोटा कयामतनामा (१/४५) की यह चौपाई नहीं पढ़ी है -

सुनत बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिण्ड ।

धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो ना हीं वतनी अखण्ड ॥

अवश्य ही मैं तुम्हारे भौतिक नेत्रों से तुम्हें दिखायी नहीं पड़ रहा हूँ। किन्तु मैं तो तुम्हारे धाम हृदय में बैठा हूँ। तुममें से जो कोई भी अपने शरीर का मोह छोड़कर युगल स्वरूप की शोभा में नहीं डूबेगा उसकी बुद्धि को धिक्कार है। उसे तो परमधाम की ब्रह्मात्मा ही कहलाने का अधिकार नहीं है।

आज की तिथि तक प्रियतम को अन्तर्धान हुए दो माह दस दिन हो गये हैं। आज के दिन प्रियतम के द्वारा धारण किये गये पंचभौतिक तन का ७६वां जन्मोत्सव है। उन्होंने लोकाचार में ७५ वर्ष ६ माह बीस दिन व्यतीत किया है। प्रियतम ने इस नश्वर जगत में हम ब्रह्मात्माओं के लिये अनेक प्रकार के कष्टों को सहा है। उन्होंने हमें परमधाम की अनेकों अखण्ड निधियां प्रदान की हैं। मैं आपसे कितना कहूँ? कुलजुम स्वरूप में सबकुछ लिखा है, जो उसे देखकर विचार करेगा, उसे सन्तोष हो जायेगा कि मेरा कथन उचित है। आज मुहम्मद स. अ. व. व. की हिजरी सन् ११०६ है, मुहर्रम मास की २७वीं तारीख है। समय लगभग प्रातः काल ६ बजे का है। इसी प्रकार हिन्दुस्तानी गणना के अनुसार वि. सं. १७५१ भाद्र मास, कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी है, दिन शुक्रवार है। प्रातः काल ६ बजे का समय है, जब मैं इस मारिफत सागर ग्रन्थ का लेखन कार्य पूर्ण करने जा रहा हूँ। यह सारा कार्य मैंने अपने प्राणनाथ, जिनके स्वरूप में स्वयं युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी की लीला होती रही है, के आदेश से किया है। इस मारिफत सागर ग्रन्थ में कुल १०३४ चौपाईयां हैं। यह लेखन कार्य पन्ना जी में हुआ है। लिपिबद्ध करने वाला मैं केशवदास सर्वदा ही आप सभी ब्रह्मसृष्टियों की चरण धूलि चाहता हूँ। हे साथ जी! मैं आप सभी को करोड़ों बार दण्डवत् प्रणाम करता हूँ। परमधाम का प्रेम निभाते हुए बहुत अधिक प्रेम से इसे स्वीकार कीजिए।

॥ मारिफत सागर संपूर्ण ॥